

शाश्वतानन्ददायक—सकलमन्म—संग्राहिराजपतेश्वर—शीसुखचक्रेश्वरो चमो नमः ।

सकलसमीदितपूरक—श्रीशहुश्वरपार्बताशो विजयेतमाम् ॥

## ॥ श्रीकृताताध्यमकथाङ्के द्वितीयविभागे प्रस्तावना ॥

दुर्लभ मानवजीवन—

अनादिअनंतकालये परिश्रमण करनार जीनोने जन्म—जरा—मण—शोक—दुःख—दरिद्रता—दौभास्य—आधि—व्याधि—उपाधि आदि अनेकविष दुःखदायि भवचकनी परंपरामा अनुकूल साधन—सामग्री—संयोगोयी भरपूर मानवजीवन मलबुं ते अतीव दुर्लभ छे, छतो आ पास थयेल मनुष्यजीवनमाँ आर्थिदेश—उचमकुल—दीर्घमजाति—परिपूर्णशक्तिशालिपांचइन्द्रियो—देवलुलम्बनी जोगवाइ—वीतरागवाणीं आरण—शासनमान्यशदा—श्रद्धातुसारपरिणति केळवीने प्रवृत्ति—निवृत्तिमय जीवन जीवबुं ए विग्रेर सर्वनी प्राप्ति यवामां तथाभवत्व—प्रलुब्धार्थ—प्रहृष्टप्रयादि निग्रे अगोष कारणो भाग भजवे छे, ए गुलबा जेबुं नयी,

मोक्षप्राप्तिमो ग्रहार—

शासनमान्य साधन—सामग्री—संयोगोयी भरपूर मानवजीवनते उजाळनाराओए समर्थ गीतार्थ शानीओना समागममाँ रहीने स्वयं शानी बनबुं आर ते गीतार्थ भगवन्तोनी निशा स्त्रीकारीने हेय—उपादेय पदार्थोंको विवेक करीने अगुकमे निश्चित—प्रशिपमय

॥ ३ ॥

जीवन जीवनूँ, कारण के-तेवुं जीवन जील्या बगर कोइ पण जीव मोक्षमार्गिने अनुकूल कल्याण साधी शक्यो नयी, अने साधी शक्यो नहिं. आ परसंगते स्पष्ट करतां शास्त्रकारोए जणावृत्तुं ले के “ पहांगो गीयत्री वीजो गीयत्र्यनित्यिसांगो ” आ परचनो जावाई ए ले के-मोक्षमार्गिना अभिलापिओ माटे ब्रैलोक्यनाथ भगवंतोए चार घनथाती कर्म तोडीने केवलज्ञान पामवाना, अने ते पछी सकल कर्मना क्षयपूर्वक मोक्ष मेळववाना वेज मार्ग कहेला ले, त्रीजा मार्गनी अनुज्ञा ते मार्गवंतोए आपीज नयी. ते वे मार्ग क्या ?, प्रथम मार्ग गीतार्थनो, अने वीजो मार्ग गीतार्थनी निश्चानो ले. आर्थी जेओ मोक्षे गया छे, जाय छे अने जसो ते वायाओए उपरना वे मार्ग लीकार्दै अने स्वीकारेल्य लीकार्दै ए वीजा निःसंदेहपणे स्वीकार्दै अने स्वीकारेल्य लीकार्दै.

— ३४ —

जैनशासनमान्य-मोक्षसत्त्वनी परिणविपूर्वकना तत्त्वसंवेदनतुं आस्थादन करीने मोक्षमार्गे गयेलाजोनी अने मोक्ष सन्मुख थएलाखोली परंपरातुं विवेकपूर्वक अवलोकन करीए तो उपरनी स्पष्ट वात नज़र सन्मुख खड़ी थाय है। इन्द्रभृतिे भ्रमु महानीनो, नवसरने गुनिसमाप्तनो, घनासार्थवाहने धर्मघोपस्थूरिजीनो, जग्मूखस्वामिते श्रीमुहन्दमृतिनो अने पंदरसो त्रण तापसोने श्रीहन्दमृतिनो तमगम थयो ते समग्रमनी साथे वीतरागनी बाणीन्तुं श्रवण, अद्वापृत्वकनी परिणति, अने वीरोऽलासपूर्वक संयमन्तुं सेवन यथार्थी अतुकमे पामवा लायकनी अमोघ चीज पामी गया हें; एमां चतुर्विधसंघनी कोइपण व्यक्तिने जा निःशंक-सत्य समझाया वगर रहेहुंज जिनेवरेनी, केवलियोनो, पूर्वियोनो, अने बहुशुत्थर-गीतार्थनो समागम थबो ए एक अलौकिक पुण्यनो प्रभाव हे, ते प्रबल पुण्यादिप्रभावनाना वेरि साधन-सामग्री-संयोग पामीने उचरोपर उत्कृष्ट कोटिना पुण्यना-संवरना-निर्जराना भागी बनीने तेलो स्वबीचनले

द्वितीय-  
विभागे-  
प्रस्ताव०  
मोक्ष-  
प्राप्तिनो  
शक्ता।

अने ते पछी समागममां आवनारा अनेक जीवोंने कल्याणमार्ग प्रामाण्डवामां प्रबल उद्धमवन्त याय छे. प्रभु महावीरना कल्याणकारि-समागमयी इन्द्रमृति अने सुधर्मानिमता ब्राह्मणो शासनना मालीक-संचालक बन्या, प्रभु सुधर्मास्त्वामि गणपतरना कल्याणकारि समागमयी श्रीज्ञान्त्वामि नवाणु कोड सोनैया-आठ ढीओ छोडवानुं सामर्थ्य केळवीने शासनमां अनित्म केवली बन्या; शासनमान्य महापुरोना कल्याणकारि समागमयी प्रादुभर्दि पामेळ श्रुतांगा-सरिताओ आजे पण शासनमां ठामठाम अस्त्वलितपणे वही रही छे, के ले सरिताना मुखासम जलनुं पान करीने पापी आत्माओ पोतानां पापो खपावता अघापि-पर्यंत पावन थई रखा छे, अने भाविमां पण जारु योग्य आत्माओ पावन थशे एमां लवलेय शंकाने स्थान ज नयी.

### श्रुतांगानुं मृङ—

वर्तमानशासनमां सप्तऋषि श्रुतांपदाओना प्रवाहदसमान मृङ तरीके ब्रैलोक्यनाथ भगवन्त श्रीबीरविषु छे, अने शासनसंचालक-पंचमगणपर श्रीसुधर्मास्त्वामिजी छे; कारण के अर्थयी आधेदेशना देनारा मगवन्त श्रीमहावीर महाराजा छे, ते देवताने अनंतर शीलनारा थी सुधर्मास्त्वामिजी छे, अने ते देवताने परंपराए शीलनारा श्री जग्नूस्त्वामिजी विगेरे छे. आपी ज अर्थयी-सूत्रयी आत्मगम-अनंतरागम-परंपरागमना मेद समझनाराने स्पष्ट मालम पहे छे के अर्थयी आसागम श्रीमहावीर महाराजाने छे, अने सब्बी आसागम पंचगणणधर श्री सुधर्मास्त्वामिजीने छे.

आसायोपकारि श्रीमहावीरमहाराजाना निर्वाणसमयों २४७९ लाग्ग वर्षों पसार यह गया छतां शासन स्थापनाना अवसरे अर्थयी-सूत्रयी आसागमादि बेदोने अनुसारीने अस्त्वलित प्रवाहरूपे परंपरागत ते ते सर्वज्ञमापित-अथेनि अने गणधरमापितस्त्रयोने

द्वितीय- विभागे  
प्रस्ताव० धर्मकथा०

॥ ३ ॥

प्राप करवानुं सुंदरतम्—सौभाग्य प्राप्त करनार होय तो चर्तमानकालीन शासनमान्य—सूत्र अर्थ अने परंपराये प्रमाणमूल शेतान्वर-  
मन्दिरमार्गीय संपदाय हहो, हे, अने रहेहो.

धर्मकथाओं धर्मकथाओंगनी विशिष्टता—

वर्तमानमा शुतसंपदाओंने साचवी राखनारा अनेकविष्य अन्योमां आगीआर अंगोरुं प्रथान्यष्टुं अतीव प्रसिद्ध हे. ते अंगोमां छहुं अंग “ श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्क ” नामे प्रसिद्ध हे, अने साथे शाखकारोए ठाम ठाम जणावेलुं छे के आ छहुं अंग सर्वब्यापक-  
योगनी गरज सारे हे. शासनमां प्रवेश करनाराओ माटे, प्रवेश करेलायोना बीयोङ्गासी वृद्धि माटे, अने शासनाभिमुल बनाववाना  
आशययी अनेकानेक भव्यात्माओ माटे आ छहुं अंग वसु ने वसु उपकारक थयेल हे, याय हे अने यसे ते निःसदेह बीना अर्थओए  
स्थितपट पर स्थिर करवा जेवी हे. सर्वज्ञकथित सिद्धान्तोमां शुं रहस्य हे ; ते ते सिद्धान्तोरुं पालन करनाराओने केवो लाभ  
यपो ; तेनी विलद्व वर्तनाराओने केवुं तुकशान यष्टु ;, आपतिकालां धैर्य गुमावनारनी शी हालत यई ;, अने विज्ञोनो विजय  
करनार कहु रितिए आगल वस्तो ;, विग्रेर विनोरे चरणकरणानुयोगादिना अनेकविष्य प्रसंगोधी श्रीरामाना, वाचकोना, तथा अम्यासकोना  
जीवनने नवप्रवित बनाववार होय तो आ धर्मकथातुयोग स्वरूप—श्रीछहुं अंग श्रीज्ञातासुद्व हे.  
द्वितीयविभागनी सामग्रीओ—

आ छटा अंग—‘ श्री ज्ञाताधर्मकथाहनी प्रथम आवृत्ति स्व. पूज्य गुहदेव आगमोद्वारकाचार्यनी पुनीत दृष्टियी बहार पडेली हहती,  
परनु अनेक वाचकोनी मारणीना सद्भावामां आ अन्यनुं पुनः द्वितीय आवृत्तिल्लो वे विभागमां छहेच्छीने प्रकाशन करेल हे. आ अंगना

प्रथम श्रुतस्कन्धना प्रथम अध्ययनाथी आठ अध्ययनों संपूर्ण साथे तेने अनुकूलनी प्रस्तावना—परिशिष्टो अने आठ अध्ययनोंना सारांश—  
विषयात्मकमयुक्त—श्रीसिद्धचक्रसाहित्यप्रचारकसमितिए गत वर्षमां प्रसिद्ध कर्मो छे, अने वांचको—विचारको—आम्बासकोनी मांगणी वीजाभागती शरु थतां आ बीजो भाग पण तेज समितिए प्रसिद्ध कर्मो छे.

आ बीजा भागमां वाकी हेला प्रथम श्रुतस्कन्धना नवमा अध्ययन सुधीना नदै अध्ययनोना मूलसूत्र—  
वृत्ति साथे अने प्रमिकथाओयो भएपूर बीजा श्रुतस्कन्ध पैकी दश वर्गोना सर्व अध्ययनोना मूलसूत्रवृत्ति साथे आ द्वितीय विभाग संपूर्ण शाय छे. साथे साथे आ बीजा विभागमां आवेल अध्ययनोनो सारांश वांचकोने अनुकूल पडे ते हेतुथी आपचामां आवेल छे.

### प्रथम विभाग माथेनो संघन्ध—

आ छाडा अंगना प्रथम विभागमां प्रथम श्रुतस्कन्धना आठ अध्ययनो मूल सूत्र—वृत्ति—सारांश परिशिष्टो आपेलां छे, ते अवसरे विस्तृत प्रस्तावनानु आलेखन करेलु छे. आ द्वितीय विभागनी प्रस्तावना संघन्ध राखे छे, माटे विवेकि—वांचकोने ते त्यहे वांचवा आश्रहपूर्वकनी अत्र भलामण करवायां आवे छे; अने तेथी आ चालु प्रस्तावनामां उपयोगी प्रकरणोंनु आलेखन करीने पुनरावर्तन कर्तु नथी. प्रथम विभागनी प्रस्तावनामां आलेखन करेला मानवजीवनी महणा, श्रवणनी आवश्यकता, समर्थ वकानो योग, आय सदुपदेशक, आय संचालक—श्रीसुधर्मास्वामिजीतुं जीवन, अंतिम केवलिनी जीवनचर्या, सद्वरचनानी मर्यादा, श्रुतसंपदाना मालीक, कंगोनो अनुसूत संघन्ध, आ ग्रन्थानु नाम, आ ग्रन्थाना वृत्तिकार, अने ग्रन्थसामग्रीना प्रकारो विग्रे प्रकरणोने वांचवायी आ ग्रन्थना रचयिता सूतकारनी, सबोने अनंतर झीलनारा श्रीजन्मद्वच्छामिजीनी, अने वृत्तिकारना विशाल—जाशयोनी साथे

नवाही-  
१०० शीघ्रता-

धर्मकथाः—  
७४॥

अतीव महण स्तु समजादो ते व्यातमां राखवा जेवुं छे.

उपसंहार—

आ प्रत्याघानी परिसमाप्ति साथे वांचकोए, विचारकोए अने अभ्यासकोए एक वात स्ट्रिपट-पर स्थिर करवा जेवी छे, अने ते ए हे के स्थाद्वादि-चैतदर्शने प्रकला ज्ञानने अर्थिओ माटे ज्ञानाचारना आठै आचारेने अपनाव्या छे, अने तेवी किमत पण एकसारी अकिली छे. शब्दशुद्धि, आलेखनशुद्धि, उचारशुद्धि, अर्थशुद्धि अने वांचनशुद्धिना नासे “ काले भण्डुं, अकाले नहि भण्डुं, विनय-वहुमानपूर्वक मण्डुं अने एक अक्षररना देनार गुहजोनो अपलाप पण न करवो ” ए विगेरे पांच आचार प्रत्ये वेदरकारी सेवनरायो स्व-परिहित साधी शक्क्या नयी, साधी शक्करी नहि, अने साधी शक्कता नथी ते निर्विवाद छे. आधी आठ आचारेना सेवन साथे आ ग्रन्थने भण्डो-भण्डो ते आसाओ उचोचर लुन्दर साधन-सामग्री-संयोगो पामीने माचिमां कफरयाण-मांगलिकमालाओ कमयः प्राप्त करीने अव्याधाप मुखना भोका बनो, एज एक शुभेच्छा.

सापरदुष्कला ( सोराप्त्र )  
स्वैमात्रपंचमी नि. चतव. २००९  
ता. १३-१०-५१

७४० रव० गुरुदेव प. पू. आगमोद्वारक—  
श्रीआनन्दसागरद्वारीश्वर-चरणारचिन्दचञ्चरीकः—

चन्द्रसागरस्तुरिः ।

द्वितीय-  
विभागे-

प्रस्ताव०  
उपसंहार |

॥ ४ ॥

श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्कद्वितीयविभागे—

## प्रकाशिकानुं निवेदनं.

—४५६—

नृतनवर्षमां प्रवेश—

प्रातःस्नानीय—पूज्यपाद—तपागच्छगणनदिनमणि—श्रीदेवतुरसंघपरम्परासंरक्षक—श्रीसिद्धस्त्रैजैनागममन्दिरतीर्थ-संस्थापक, भागमोद्दारक, स्वर्गस्थ—श्रीआनन्दसागरबूरीश्वरजीना हादिक आशीर्वादभी अने तेजोश्चीना परमविद्वद्विद्विनेय, श्रीसिद्ध-चक्रारपनतीर्थ—श्रीचन्द्रमासपाटणतीर्थोद्दारक, श्रीसिद्धचक्र—नवपदाग्राघकसमाजसंस्थापक, वैयाकरणकेशवी, श्रीआनन्दवोधिनी बृत्तिकार, श्रीबद्ममानतपोमाहात्म्य अने विश्वतितिविशिका—पंचाशकशास्त्रसारांशादिविषयसामग्रीरूप सहित्यना आलेखनकार—पूज्यपाद—आचार्य-देवश्री—चन्द्रसागरद्वयरिजीनी शासनसंरक्षक प्रेरणाभी अमारी समितिना मुखपत्र श्रीसिद्धचक्र मासिकनो प्रादुर्भाव थयो, अने आराधकोनी आराधना आराध्यपदने अनुसरवानी साथे अतीव उज्ज्वल अने ते हेतुथी शासनमान्य साहित्यना प्रकाशनार्थ साथे साथे अमारी श्रीसिद्धचक्रसाहित्य—प्रचारक—समितिनो पण जन्म थयो. आ समितिनी अने आ मासिकनी सुन्दर कार्यवाहीओयी चतुर्विषयसंधना आशीर्वाद साथे तन—मन—धननी अनेकविध सहायथी ते बले ( समिति अने मासिक ) प्रफुल्ल वर्नने ओगणीसमा नृतन वर्षमां प्रवेश करेल छे.

द्वितीय-  
विभागो-  
प्रस्ताव०  
उपसंहार।

नवाही-  
१०० श०

अतीव महण स्पष्ट समजारे ते ध्यानमां राखवा लेवु छे.

उपसंहार—

श्रीकाशगा-  
र्भमंडपाङ्गे

॥ ४ ॥

आ प्रस्तावनानी परिसमाप्ति साथे वांचकोए, विचारकोए अने आभ्यासकोए एक बात स्फुटिपट-पर स्थिर करवा जेवी छे, अने ते ए छे के स्थाद्वाद-जैनदरीने एकला ज्ञानने अपनान्वु नथी, परंतु ज्ञानना अर्थांको माटे ज्ञानाचारना आठे आचारोने अपनाव्या छे, अने तेनी किमत पण एकसरखी आकिली छे. शब्दशुद्धि, आलेखशुद्धि, अर्थशुद्धि, अने वांचशुद्धिना नामे “ काले भण्वु, अफाले नहि भण्वु, विनय-यहुमानपूर्वक भण्वु अने एक अक्षरना देनार गुरुओनो अपलाप पण न करवो ” ए विग्रेरे पांच आचार प्रत्ये वेदरकारी सेवनाराओ स्व-परहित साधी शक्या नथी, साधी शक्यो नहिं, अने साधी शकता नथी ते निर्विवाद छे. आधी आठ आचारोना सेवन साथे आ ग्रन्थने भण्डो-भण्डावसे ते आलाको उचोरेर सुन्दर साधन-सामग्री-संयोगो पार्नीने माविमा कहयाण-मांगलिकमालाओ कमरा: प्राप्त करीने अब्याचाध सुखना मोक्षा वानो, एज एक शुभेच्छा.

लिं० रव० गुरुदेव प. पू. आगमोद्वारक—  
श्रीआनन्दसागरसुरीश्वर-चरणारविन्दचञ्चरीकः—  
चन्द्रसागरसुरिः ।

सायरकुण्डला ( शौराष्ट्र )  
सौभाग्यपचमी वि. सवत् २००६,  
ता. १३-१०-५१

॥ ४ ॥

श्रीनाताभर्मकथाङ्गदितीयविभागे—

## प्रकाशिकानु निवेदन.

—१६५—

नृतनवर्पमा प्रवेश—

प्रातःस्मरणीय—पूज्यपाद—तपागच्छगगनदिनमणि—श्रीदेवसुरसंघपरम्परासंरक्षक—श्रीसिद्धदेव—सुरेण्यपूरस्थितश्रीजैनगममन्दिरतीर्थ—  
संस्थापक, ज्ञागमोद्धारक, स्वर्गस्थ—श्रीआनन्दसागरस्वरीश्वरजीना हार्दिक आशीर्वादिथी अने तेजोश्चीना परमविद्वद्विद्वेष, श्रीसिद्ध-  
चक्राग्राघनतीर्थ—श्रीचन्द्रमासपाटणतीर्थोद्धारक, श्रीसिद्धचक्र—नवपदाराघकसमाजसंस्थापक, वैयाकरणकेशरी, श्रीआनन्दवोधिनी वृत्तिकार,  
श्रीवर्द्धमानतपोमाहात्म्य अने विश्वातिविशिष्ठा—पंचाशक्याल्लासारांशादिविविष्टसामधीरूप साहित्यना आलेखनकार—पूज्यपाद—आचार्य-  
देवथी—चन्द्रसागरस्वरीजीनी शासनसंरक्षक प्रेरणाथी अमारी समितिना सुखपत्र श्रीसिद्धचक्र मासिकनो प्रादुर्भाव थयो, अने  
आराघकोनी आराघना आराघ्यपदने अबुसरचानी साथे अतीव उड्चल वने ते हेतुयी शासनमान्य साहित्यना प्रकाशनाथ साथे साथे  
अमारी श्रीसिद्धचक्रसाहित्य—प्रचारक—समितिनो पण जन्म थयो। आ समितिनी अने आ मासिकनी सुन्दर कार्यवाहीओयी चतुर्विषयसंख्या  
आशीर्वाद साथे तन—मन—धननी अनेकविषय सहाय्यथी ते बन्ने ( समिति अने मासिक ) प्रकुप्ळ बन्नी ओगणीसमा नृतन वर्षमा  
प्रवेश करेल छे।

द्वितीय-  
विभागे  
प्रकाशिका-  
नि निवेदन।

### हार्दिक सन्मान—

नवाहो-

१००

श्रीज्ञाता-

कर्मकथा-

के

॥ ५ ॥

विशेषमां हमारी समितिना मुखपत्र श्रीसिद्धचकमासिकमां मुख्यते स्व० आगमोद्वारकनी अमोघदेशनादि विग्रेरेणुं चांचन एक सरली रीते मलयाथी अने प० आचार्यदेवश्री-चन्द्रसागरमुरिजीनी विवेकमरी नजर नीचे शासनमान्य अनेकविषय साहित्य साम्राज्ञीओं तथे साथे चांचकोने सुधास्वादन थंडुं रहेवायी चांचकोनी संख्यामां दिनप्रतिदिन थंडि थयां ज करे छे, अने प्रकाशनोने वेगावंता चनावचा माटे आर्थिकसहायकोनी हरिकाइ यह रही छे; तेयी चनेनी (समितीनी अने मासिकनी) उज्ज्वल कार्यवाहिजोनी नोंधनो कातीव आदरमध्ये सत्कार आपवा माटे शासनमान्य-चतुर्विधसंघनी व्यक्तिजोने आदरपूर्वक हार्दिक सन्मानीय छीए.

ग्रन्थप्रसिद्धि अने उपसंहार—

“समितिनो अने मासिकनो जन्म, चनेनी प्रशंसनीय कार्यवाहि अने संचालनतुं पुण्यकार्य” आ ब्रणी प्रकरणो आ ग्रन्थना प्रथम विभागनी प्रस्तावनामां जापेलां छे, तेने चांचकोए पुनः विवेकपूर्वक विचारवानी जरुर छे, एम तेजोने आग्रहपूर्वकनी मलामण छे. कारण के तेमां समितिना-मासिकना विशाल उद्देशो-हेतुओ स्पष्टपणे माछ्स पढे छे, साथे साथे पुण्यवन्ध करवाना परमनिमित्तरूप संचालना सुन्दर कार्यनी ढारी जबाबदारीतुं अने ते बजे साथेना सेवामाचना संबन्धनुं ज्ञान चांचकोने स्पष्टरीतिए थह शके छे. आ द्वितीय विभागरूपे छहुं अंग श्रीज्ञाताथर्मकथाङ्गु नामे प्रकाशन थतो आ ग्रन्थ द्वितीय आवृत्तिरूपे प्रसिद्ध थाय छे, अने तेयी प्रथमावृत्तिना संबन्धमां विस्तृत आलेखन प्रथम विभागती प्रस्तावनामां कोरेल छे, तेयी अन ते संबन्धना आलेखनतुं पुनरावर्तन करुं उचित नन्ही.

आ द्वितीय विभागना प्रकाशनार्थे १० आचार्यदेव—श्रीचन्द्रमागरस्मृतिजीना परमविनेय ४० उपाध्याय श्रीदेवेन्द्रमागरजी गणिकरना सहृदयेत्युभी अमदवाचाद शाहसुर-मंगल पारेखना लांचा विषे जावेल उपाश्रयना वहीचटदारोप, रु० २५०) वसो ने पचास रुपयीका आपेल छे, ते सिवाय मददना अमावे पहतर किमतना भावे अमारी समिति तरफथी आ ग्रन्थ वांचको माटे अने अम्बासीओ माटे प्रसिद्ध कराय छे।

आ ग्रन्थने प्रकाशक करवामा संपादनतुं भगीरथ कार्य ५, आचार्यदेव श्री चन्द्रमागरस्मृतिजी६, करेल होजाथी, प्रकादि संशोधन अने सारांशतुं कार्य करनार ५, मुनि३ी चन्द्रनमागरजी ८, ने, नियमित अवसरे प्रकाशन करवामा श्री महोदय भी। ऐस भालीकहने अने प्रेस-माणसोने यत्र याद करीने वांचको—विचारको—अम्बासको यांचवा पहेलां शुद्धिप्रक्रक्ती शोधीने वांचे—विचारे—अम्बास करे एज एक शुभेच्छा।

निवेदक—

पानाचन्द्र रूपचन्द्र द्वाठहेरी  
श्रीसिद्धचक्र-मातिकना—तन्त्री अने श्रीसिद्धचक्रसाहित्यप्रचारक समितिना प्रधान—संचालक,

१३४ दोप्रमेयण स्ट्रीट,  
सुंयाई नं. २.  
सोभाग्यपश्चमी, २००९

नवाही-

४० य०

श्रीज्ञातो-

सर्वकथाक्षेत्र-

॥ ६ ॥

१ श्रीहेमचन्द्रकुमारयली.

२ श्रीचर्द्मानतपोमाहारम्.

३ श्रीपंचप्रतिकमणसुवनाणि विधिसद्ग (कमीशन घगर)

४ श्रीपंचाशकम्बालसारांश-विभाग० १,

५ श्रीआनंदचन्द्रसुधासिन्धु-विभाग० ३,

६ श्रीआनंदचन्द्रसुधासिन्धु- " २,

७ श्रीप्रभावतीसुखनी पाखप्रस्तावनाथी शरु

८० श्यालयानो

८ श्रीआगमोद्धारक.

९ श्रीतपोद्यापन.

१० श्रीप्रभासपट्टणतीर्थमाहात्म्य.

११ श्रीसिद्धकनी बांधेली फाल्लो. वर्द ११ यो १८

प्रत्येकता. ४०-०-०

१७ श्रीसिद्धेमचन्द्र शब्दानुशासनम्

( श्रीआनंदवीधिनी टोका ) भाग १,

१८ श्रीसिद्धेमचन्द्रकवृत्तस्थादिसमुच्चययुतम्

— नृतन प्रकाशनो —

३-८-०  
३-०-०  
३-०-०  
३-०-०  
३-०-०  
३-०-०  
३-०-०  
३-०-०  
३-०-०  
३-०-०

१२ श्रीआनंदचन्द्रसुधासिन्धु विभाग० ३  
१३ श्री शताब्द भा. १-२ नो सारांश तथा  
श्रीचूपडांगासुन भा. १ नो सारांश.

२-८-०  
२-८-०  
२-८-०  
२-८-०  
२-८-०  
२-८-०  
२-८-०  
२-८-०  
२-८-०  
२-८-०

— पत्राकार —

१३ श्रीआताधर्मकथाइग सटीक भाग ३, सारांशसद ८-०-०  
१५ श्रीआताधर्मकथाइग „ भाग २, „ ७-०-०

१६ श्रीसिरियालचरितम् ३-०-०

— व्याकरणानि —

१७ श्रीसिद्धेमचन्द्र शब्दानुशासनम्  
( श्रीआनंदवीधिनी टोका ) भाग १,

१८ श्रीसिद्धेमचन्द्रकवृत्तस्थादिसमुच्चययुतम्  
श्रास्त्रियन — श्रीसिद्धकनी-साहित्य-प्रचारक-समिति

C/o संघवी चीमनलाल सचाईचंद्र, गलेमदी गोलखोरी, सुरत ( गुजरात ) W. Ry.

३०-०-०  
१-०-०

१-०-०

१-०-०

१-०-०

१-०-०

श्रीगुरुभावनाथाय नमः ।

## ॥ श्रीज्ञातोधर्मकथाङ्के द्वितीयविभागस्य सारांशः ॥

### १—श्रीमाकन्ददारकाठ्यव्यन—सारांशः ।

पूर्वे आठमा अध्ययनमा मायार्थी अनर्थ कही गया, हवे आ नकामा अध्ययनमां मोगोर्थी पाला नहि हठनारने थतो अनर्थ, अने गोगोर्थी पाला हठनारने थतो लाभ अथ दर्शाय छे।  
हे जम्य ! ते कले अने ते समये चपा नामनी नारी हरी। त्वं माकडी नामनो सार्थवाह वसतो हतो, तेते भद्रा, नामनी गार्थ हरी, अने तेन जिनपालित अने जिनरक्षित नामना वे पूछो हता। ते बन्ने पूरोए अन्योअन्य विचार करीने लचणसमुद्रना वाहणवटावाला प्रथामाटे आपणे चारपी वसत पण जबुं तेहु नफी कँयूं, अने मातापितोरी रजा मारी। मातापिताए प्रथु सेमजाल्यु पण मान्यु नही, जार्थी जनिच्छाए मातापिताए रजा आपी; अने ते चसे गया। समुद्रमा घणे दुरु गया पछी चावटोलीआ चिगेरेतो सलन उपद्रव थयो, अने चदाणो मारी गया, अने चपा माणमो झूरी गया, तथा लावेला करीयाणो पण चांदे समुद्रने तल्लीए गया। मारुन्दीना ते बने पुरोगा दाथामां एक पाटीउं आब्यु ते पाटीयानी सदायायी तरता तरता रतन्दीपे गया। रतन्दीपा पर्वतविषे याक खाइने फलादिनी शोष करीने। गेल्याई—खाइने नालीयेरो पाणीयी दुस्त थया, अने नालीयेरु तेल काढी अन्योअन्य नालीयेरु करी चावेनो पाणीयी स्तान करी स्वस्य

यथा एक शिला पर चैरीने “चंपानगरीमां मातापितामां पासे समुद्रनी सुसाफरीना बहेवार माटे जवानी मागणी करवी, मातापितामां निषेध करवु, अने अति आशहेथी रजा मेळनवी, लवण्समुद्रमां उत्तरां, वावंटोलीयाना उपद्रवथी जानमालनी थेयेली उकशानी, तरता तरता अहि आवांतु अने खोराकमां फलादिनु खावु विगोरेनो” विचार करे छे—

ते समये आ रत्नदीपना भद्रमागमां रत्नदीप देवता नामे देवी वसे छे, ते अति पापी अने स्वभावे भयंकर छे. सदरह देवी अवधिज्ञानयी आ माकान्दृनी वन्ने पुत्रोने त्यां आवेला जोहने भयंकरलैप विकुर्वनि त्यां आवीने कठोर वच्नोयी ते वन्नेते कहेवा लागी के-हे वन्ने माकंदियदारको ! तमे घ्वारी साथे विषुल भोगो भोगवता घ्वारी पासे रहो, नहीं तो तमाहं मस्तक आ तलचारयी कापी नाखीश ! भय पामेला ते वन्ने श्रेष्ठिपुत्रोए कहुं के तमारी आज्ञा प्रमाणे हमे रहीघु. आ केवुलात लेइ ते देवी पोताना प्रासादे लह गह अने ते वन्नेनी साथे विषुल एवा भोगवे छे, अने हंसेशां ताजा भीठां फलो लावी-आपिने दृसि करावे छे.

एक समये शकेन्द्रना आदेशयी लवणाधिपति सुरिथत नामना देवे रत्नदीपनी ते देवीने आदेश कर्यो के “ हारे २१ एकवीयवार लवणसमुद्रविषे फरी-फरीने घास-पादडां-लकडां-कचोरो अने अशुचि वगेरे जे कंइ दुर्गन्धवालुं होय ते चोकखुं करी देवु ! ” आज्ञा आदेशयी ते वन्ने श्रेष्ठिपुत्रोने ते देवीए कहु के-हु शकेन्द्रना हुकमथी समुद्रनी शुद्धि माटे जाउ छु, तमे अन चुले रहेहो. कदाच तमने न गमे तो तमे पूर्व-पश्चिम-उचर दिशाओनो बनखंड विषे फरवा जयो तो त्यां उदी उदी कतुओना फलो छे, तेनाथी दृसि करशो; अने मारी राह ओवे जोशो. परन्तु दक्षिण दिशामां जंशोज नहिं, कारण के त्या एक भयंकर दृष्टिविषपर्य रहे छे, ते तमारा शरीरो नारा करदो. आ प्रमाणे त्रणवार सावचेती आपी ते देवी समुद्र तरफ गइ.

वले शेषिंगुनो ग्रणी वनस्पतिमाँ करै छे अने आंदंद करै छे एक समय द्याँ त्रेण दिशाना बैनखडोमाँ पण नहीं आंदंद पानता तेमने दक्षिण दिशामाँ जवा नकी कर्यु, अने दक्षिणदिशामाँ केटलेक दूर गाया पठी मरेला सर्प करतां पण वायु दुर्गन्ध आवरतां दोताना वस्त्रवडे नाक चंप करीने आगळ चालचा मांडपु, आगळ चालतां अनेक हाडकांशी ल्यास एवा वयस्थानमाँ रुलीवडे मेदाएलो कहुणस्वरने करतो एक पुलप जोयो. उत्पल थयो छै मय जेने एवा ते वले शेषिंगुनो ए हकीकत पूछतां ते शुलीस्थित पुर्णे कर्यु के— “हुं भारतवर्दीनी काकंदीनी अश्वतणिक छुं. कर्तीयाणा अने अश्वो वहाणोमाँ भरी लेणसमुद विमे धंधा अथ आदेलो, अने पछी रलद्वीप देवता नामनी देवीना भोग-समुदना तोफानथी वहाणो डुची गयां, अने हुं पाटीयाना ओघारि अही ओवी पहोच्यो; अने पछी रलद्वीप देवता नामनी देवीना दोग-विलासमां सपडायो. घणो समय तेनी साथे भोगादिमां गयो, पण एक समये सामान्य अपराध आवरतां आ अवस्था पायो छुं, गाटे भाविमां तमारा शरीरोनु कोण जाणे शुं थरो !” आ सांभलीने भयभीत थयेला बले भाइओए एना संकंजामांथी छूटवानो उपाय पूछ्यो. तेना जवाद्यमाँ ते शब्दीयी मेदाएलो पुर्णे कर्यु के युवंदिशामाँ शैलक नामना यक्कुन्तु मनिर हें तेमाँ अश्वलपने धारण करतो यस्ता वसें छे. ते शैलक यक्क चौदश-आठम-अमाचास्था-पूर्णिमाना दिने प्राप्त थयेला समये मोटा शब्दभी एवी रीते बोले हे के-कोने ताहं !, कोनुं रक्षण करुं ; त्याँ तमे जाव अने तेनी सेवा करो अने ऊरे ते बोले त्यारे जवावमाँ कहेजो के हमने तारो ! हमाहुं रक्षण करो ! रलद्वीप देवतां हायमांशी हमोने तारो ! आ प्रमाणे ते पुरायी श्रवण करी शैलकयशना मनिदंरमाँ गया अने ते पुरापना कया गुजव सर्वे कर्यु. शैलकयके तेकोनी मांगणी कबुली अने कहुं के समुद्रमध्ये थइ जतां ते देवी प्रतिकूल-अगुकूल उपसर्गो कररो, तसे जगा पण क्षोभ पायो नहीं, तेम चलायमान पण थशो नहीं, अने थशो तो हुं खारी पीठ परथी नीचे नाखी दइश। आ वातने ते

द्वितीय-  
विभागे  
रत्नदी  
माकन्दी  
अवध्यन

॥ २ ॥

बैलेए कवूल करी, एटले अश्वलय विकुर्विति ते यसे पोतानी पीठ उपर वेसाड्वा अने आकाशमार्गे समुद्र पर थइ चाल्यो. हवे ते रत्नदीप देवता पोतानुं कार्य संपूर्ण करी उयां पोताना प्रासादमां आवी त्यां तेओने देख्या नहीं, अने आजुनाऊ तपासतां पण तेमने देख्या नहीं, एटले अवधिज्ञानयी उपयोग मूकतां दरीया पर थइने शैलक यज्ञनी साये जता ते बन्नेने जोया, अने तलवार हाथमां लह तेमनी पासे आवी.

कंडक कोमळ छद्यवाळा जिनरक्षितने जाणी अनेक प्रकारना अनुकूल उपसगों करवा लागी अने यसां जिनरक्षितनुं मन चलायमान थयुं एटले शैलकयष्टे तेने फेंकी दीयो. ते देषीए अनेक प्रकारे विरसकार करी तलवार वडे तेना दृकडे दृकडा करी नांख्या, अने चारे दिशाओने विळिदान अर्पण कर्यु.

अन् योजना—

एवी रीते हे श्रमणो ! जे हमारी पासे संयम अहण करी पाणा मनुज्य सम्बन्धिम गोगोमां आस्वाद करे छे यावत् तेनी अभिलाषा करे छे, ते आ भवमां घणा एवा साखु, साव्ही, आवक अने आविकाओने निदवा लायक थाय छे; यावत् घणो संसार रख्दे छे. रत्नदीप देवता नामनी देवीए तेवार पछी जिनपालितने अनुकूल-प्रतिकूल घणा उपसगों करवा मांड्या, पण सर्व उपसगों सहन करी जिनपालिते निष्फल कर्या, तेना परिणामनुं नहि चलितपूं थवाथी शकिने ते देवी चाली गह. शैलकयष्टे निविजे जिनपालितने चंपाना उद्यानमां लावी पोतानी पीठ परयी उतार्ये अने जिनपालितनी रजा लह पोताना स्थाने चाल्यो गयो.

नवाही-  
३० व०  
भीजावा-  
वर्षमिथ्याक्षे

॥ २ ॥

दूर कर्यों। एक समये मात्रापिताएँ जिनपालिते पृथुं के जिनरक्षिततुं मरण केवी रीते थएुं !, त्यारे ते जिनपालिते ठेठ सुधीनी बार्ता करी।  
एक समये प्रसु अमण भगवान् महाकीर त्यां पश्यार्या-समवसर्या तेमनी पासे जिनपालिते धर्म अव्वण करी संयमने ग्रहण कर्यु  
अने आगीयार अंग भण्णो; यावत् महीनातुं अनशन करी काळघर्म पासी सौधर्म देवलोकमां वे सागरोपमना आयुष्यवाङ्को देव ययो।  
हे जन्म् ! त्यांयी ते च्यवी महाविदेहस्येत्रविष्ये मोक्ष यामशे।

योजना:—एषी रीते जे साधुओ मनुप्य सचन्नी मोगोनो त्याग करी तेनी चांच्छा आदि करता नथी ते जिनपालिती माफक  
आ भवमां पण सुखी थाय छे, अने परभवमां मोक्षनां अनुपम सुखोने मोगवे छे।

इति नवम-अध्ययन सारांशः समाप्तः

— अंत ई —

### १० श्री चन्द्रज्ञाताऽध्ययनसारांशः

पूर्वना अध्ययनमां अविरतिने वश थनारने थतो अनर्थ, अने वश न थनारने यतो लभ वर्णन्यो, आ दशमा अध्ययनमां प्रथादीने  
थती गुणनी हानी अने अपमादीने थती गुणनी वृद्धि वर्णवाय छे।  
ए प्रमाणे निष्ठये करिने हे जन्म् ! श्रमण भगवान् महाकीर राजगृही नगरीमां समवसर्या हुता, त्यारे श्री गौतमस्वामिएँ तेजोर्थीने  
पृथुं के-हे भगवन् ! जीवो गुणनी हानि केवी रीते पासे छे, अने गुणनी वृद्धि केवी रीते पासे छे !, आवा प्रकारना प्रश्नना जवाबमां  
प्रसु कहे छे के:—

नवाही  
३० श्वर्णियः

हे गौतम ! पूर्णिमाना चन्द्रने छोड़ीने वदी पक्षनो पड़वानो चन्द्र वर्ण—सौम्यता—तेज—कान्ति—शुति—छाया—यावत् मंडले करी हीण थाय छे; तेम वदी पक्षना बीजनो चन्द्र तेभी करी पण वर्णादिए करी हीणादि थाय छे; यावत् अमावास्यानो चन्द्र संपूर्ण हीण थाय छे.

तेवी रिते ने साधुओ अथवा साध्वीओ सेयम ग्रहण कर्या छतां क्षमा—गुकि—गुसि—आर्जीप—मार्जीव वगेरे सेयमना गुणोथी हीण थाय छे, तेओ वदी पक्षना पड़वाना चन्द्रथी मांडी यावत् अमावास्याना चन्द्रनी जेम सर्व गुणोथी हीण थाय छे.

हे गौतम ! जेवी रिते अमावास्याना चन्द्रने छोड़ीने शुक्र पक्षना पड़वानो चन्द्र—वर्णादिए करी अधिक थाय छे, यावत् पूर्णिमा चन्द्र सर्वस्वरूपे संपूर्ण थाय छे; तेवी रिते जे साधु अथवा साध्वी सेयम ग्रहण करी पोताना क्षान्ति आदि गुणोत्तमी बृद्धि करे छे ते अनुकमे पूर्णिमाना चन्द्रनी जेम संपूर्ण गुणोने पासे छे.

अब निगमन—योजना टीकाकारे जणावी छे, ते नीचे प्रमाणोः—

चंदोवकालेपक्षे परिहाई पए पए पमायपरो । तह उघ्घरविंशरतिरंगणो विं त य इन्दिल्य लेहहह ॥ २ ॥

भावार्थः—कृष्णों पक्ष विमे जेम चन्द्र हाणी पासे छे, तेवी रिते आरंभ परिग्रहमा अनासक्त एवो पण साधु प्रगादमा तप्तर होय तो हाणी पासे छे, अने इन्दिल्लने पामी शक्तो नवी.

जह चंद्रों तह साह राहुवरोहो जंहा तह पांसाओ । चण्णोहु गुणगणो जह तहा रखमाई समणधमो ॥ २ ॥

भावार्थः—जेवी रिते राहुयी ग्रसायेलो चन्द्रमा तेज रहित थाय छे, तेवी रिते साधु प्रगादथी साधु गुण रहित थाय छे, जेवी

द्वितीय-

श्री-

चन्द्रअ-

सारांशः

विमाग

रीते चन्द्रमानो वाणादि गुणनो समूह घटे छे, तेवी रीते ते साधुना क्षमादि दश प्रकारना धार्मिक गुणो घटे छे।  
गुणोवि पद्दिणं जह हायंतो सधाहा ससी नस्से । तह पुण चरितावि हु कुसीलसंमिगमाईहि ॥ ३ ॥

**भावार्थ—**पूर्ण एको पण चन्द्रमा बद पक्षमा दिने दिने घटतो सर्वथा नष्ट थाय छे, तेवी रीते पूर्ण एका चारित्रिकालो पण कुशीलोनी सोबतथी सर्वथा नष्ट-चारित्रिकाल थाय छे।

जणियपमाओ साहु हायंतो पहादिणं खमाईहि । जायेह नहुचरितो तचो दुक्खाईं पावेह ॥ ४ ॥

**मावार्थ—**उत्पत्त थयो छे प्रमाद जेने पचो साधु क्षमादि गुणोयी हंसेशा हीण थतो नष्ट-चारित्री थाय छे, अने दुःखोने पासे छे। हीणगुणावि हु होऊ सुहगुरुजोगाइजणियसंवेगो । पुणसरुवो जायेह विचहुमाणो मसहरोघ ॥ ५ ॥

**भावार्थ—**हीण गुणवालो पण उचम गुरुमहाराजकी उत्पत्त थयेलो छे संवेग जेने ते वथतो एका चन्द्रनी जेम पूर्ण चरुप-वालो थाय छे।

इति दशामाध्ययनस्य सारांशो समाप्तः ॥५॥

### ११—श्रीदावद्रव—अध्ययन—सारांशः

आनी पूर्वना अध्ययनमा प्रमादिने गुणहानि, अने अप्रमादिने गुणनी वृद्धि जणावी छे; आ अध्ययनमां मार्गनी आराधना, अने मार्गनी विराधनायी गुणनी हानि-वृद्धि कहे छे। जे जच्चु । ते काल अने समये राजपृष्ठी नगरी विषे गौतमस्वामिए पश्च कर्यो के-हे प्रमु ! जीवो आराधको अने विराधको केकी रीते थाय छे! ।—

द्वितीय-  
विभागे-

श्री-

दावद्रवञ्च  
सारांशः

हे गौतम ! ( १ ) जेवी रीते समुदना एक काटे दावद्रव नामनो वृक्षो थाय छे, ते वृक्षो पत्र-पुण्यो-फलो आदिथी अत्यन्त शोभे छे. ज्यारे द्वीप सम्बन्धिना उदी उदी दिलाओथी हलवा अने महानायरा वाय छे, त्यारे पणा एवा ते वृक्षो फलादिथी सुशोभित याय छे, अने तेमाना केटलाक वृक्षो सुकाइने म्लान पामे छे; तेवी रीते जे साधु अथवा साढ़ी प्रवज्ञा अंगीकार कर्ये छते घणा एवा स्वशासनना साधु-साढ़ीयी सहन करे छे. अने अन्यतिर्थीओथी तेम गृहस्थोथी सहन करवाना अवसरे सहन नयी करता ते साधु-साढ़ी देवविराघक याय छे. ( २ ) जेवी रीते समुदना एक काटे दावद्रव नामना वृक्षो थाय छे ते प्रादिथी अतिशय शोभे छे परन्तु ज्यारे वायरायी घणा एवा जूळा सुकाइ गयेला वृक्षो म्लान पामे छे, अने केटलाक वृक्षो शोभाने पामे छे तेवी रीते जे साधु अथवा साढ़ी प्रवज्ञा अंगीकार कर्ये छते अन्यतिर्थीओथी तेम गृहस्थोथी सम्प्रकृ प्रकारे सहन करे छे, 'किन्तु-साधु-साढ़ीयी सहन कर्ता नयी ते देवआराधक याय छे. ( ३ ) जेवी रीते समुदना किनारे सर्व दावद्रव नामना वृक्षो प्रादि वडे शोभे छे परन्तु वायरो वाये सर्वे म्लान पामे छे, तेवी रीते जे साधु अथवा साढ़ी, साधु-साढ़ीयोथी तेम अन्यतिर्थीओ आदिथी सहन करतो नयी ते मर्वविराघक याय छे. ( ४ ) जेवी रीते समुदना किनारे सर्व दावद्रव वृक्षो प्रादिवडे शोभे छे, अने ज्यारे वायरा वाय त्यारे पण शोभे छे परन्तु म्लानी पामता नयी तेवी रीते जे साधु अथवा साढ़ी प्रवज्ञा अंगीकार कर्ये छते साधु-साढ़ीयी तेम शावक शाविका अने अन्यतिर्थीओथी यता परिणहो सहन करे छे ते सर्वआराधक थाय छे.

इति एकादशा-अध्ययन-सारांशा समाप्तः

नवांगी-

३०

श्रीछाता-

र्षमकथाः

॥ ४ ॥

## १२—श्रीउदक—अध्ययन—सारांशः ।

पूर्वे अगीयारमा अध्ययन विषे चारित्र घर्मतुं विराषकपणुं अने आराधकपणुं कहुं, अहीं स्वभावे करीने मलीन एवा भव्य—  
आत्माओं सद्गुरुना संस्कारथी चारित्रनुं आराधकपणुं थाय छे ते उदकना द्रष्टांतथी कहे छे।  
• हे जम्बु ! ते काले अने ते समये चंपानगरीना पूर्णभद्र चैत्य विषे श्रीबीरप्रसु समवसर्या, ते नगरी विषे जितशत्रू नामनो राजा  
राज्य करे छे, जने तेने धारिणी नामनी राणी तथा अदीनशत्रू नामनो शुचराज हतो; तथा अमणोपासक-सुबुद्धि नामनो मुख्य  
प्रधान हतो. ते नगरीनी बहार इशान दिशाए एक खाळ छे ते धणी गन्धाती छे, ते जोइने गौतमहस्तामीए मसुने प्रश्न कर्यो के-  
हे प्रसु ! आ आज रुपे हे ! प्रसुए कहुं के—ए अर्थमा समर्थता नथी, एथी अतिक्षणिएगन्धवाळी पण थाय, अने सुरभि-  
गन्धवाळी पण थाय।

एक समये जितशत्रू राजा धणा एवा क्षत्रियो-श्रेष्ठीआओ साथे उंदर पर्वुं भोजन कर्या पछी ते मोजनथी आश्वर्य  
पानेला राजाए ते भोजनना धणा वर्खाण कर्या, अने पणा वीजाओए पण वर्खाण कर्या; ल्यारे सुबुद्धि मंत्रीने मौन रहेलो  
जोइने वे ब्रणवार राजाए पूछ्युं. ते समये सुबुद्धि मन्त्रीए कहुं के—हे राजन् ! सारा लागता शह्वना परिणमे छे, तेम  
अने खराव लागता शह्वना पुद्गालो सारापणे परिणमे छे; सारा लागता लघवाका पुद्गालो खराव लघपणे परिणमे छे,  
खराव लागता लघवाका पुद्गालो सारापणे परिणमे छे, तेम सुगंधीदार पुद्गालो दुर्गन्धी पुद्गालपणे परिणमे छे, अने  
दुर्गन्धवाळा पुद्गालो सुगंधवाळा पुद्गालोपणे परिणमे छे; तेवी रीते रस अने स्पर्शना पुद्गालोमा पण थाय छे. आथी

नवाही-  
३० श्र० श्रीशता-  
षर्मकथाः

५५ ॥

द्वितीय-  
विभागे  
उदका-  
द्य०  
सारांशः ।

आ आहारोमा आश्वर्ये शु पामवानु छेः । अर्थात् आथी मने जाश्वर्य थहु नथी. सुबुद्धि मन्त्रीनी आवी वाणीने राजाए मौन रहने स्त्रीकारी नहीं. एक समये जितशत्रू राजा घणा परिचार सार्थे घोडा उपर वेसी फरवा निकल्यो, नगरती ( लाङ्ड ) खाइ आवता तेनी दुर्गान्धी राजाए पोलानु नाक कपडता छेडायी ढाकी दीधु, अने बीजी बाजु फरी गया. साथे वधाये कहेवा लाग्या के— मेरेला सर्व करतां पण वयु खाव गन्ध आनी छे, तेवी शेते तेनु रूप, स्पर्श अने रस पण निदनीय छे आ समये पण मौन रहेला सुबुद्धि मन्त्रीने राजाए पूछ्यु त्यारे तेणे पहेलनी जेमज जावाव आप्यो. आ वखते राजाए सुबुद्धि मन्त्रीने कहु के-हे सुबुद्धि ! आवी जितशत्रू राजा—सत्य तथ्य—अवितय—सद्गुरु एवा जुही निर्यागिनिवेश वातो न कर ! सुबुद्धि मन्त्रीने विचार थयो के—अहो ! आ जितशत्रू राजा काहक उपाय करु ॥ ॥ आ प्रमाणे इच्छीने विश्वासु नाणसो द्वारा कुमारनी दुकानेथी नवा घडा मगाव्या अने संह्याकाळे मनुष्यनी अवरज्वर यथ थये ते खाइ( लाङ्ड )माथी पाणी मगाल्यु, अने गङ्गावी ते घडाओमा मधु० सर गवि हुधी तेने झरवा दीधु अने भस्म—रक्षा विग्रेरे चूर्ण नाली फरी पण ते रीतिए नवा घडाओमा भयु, एम वारवार साल चखत करता ते पाणी हृष्ट्यु-स्फटिकरत्न जेनु मनोहर अने स्वादिष्ट थयु. आ पाणीने मन्त्रीए चाली जोइ खात्री की, अने पाणीने सुगारी करवावीला दृव्योथी ते पाणीने सुगारीवालु कर्तु. जितशत्रू राजाना जलरक्षकने वोलावी भलामण करी आ पाणी हु मोजनवेळाए राजाने आपजे । जितशत्रू राजाए गोजनवेळाए आ पाणी फी ते पाणीना घणा वखाण कर्या, अने आ पाणी क्या स्थानीयी लाववामां आव्यु छे, तेनी तपाए करता जलरक्षके सुबुद्धिमन्त्रीए आ पाणी आप्यानु जाहेर कर्यु. राजाए सुबुद्धिमन्त्रीने चोलाव्यो अने कहु के-हे मन्त्रीचर ! हु तमर्ने क्या कारणे अनिष्ट थयो हु के-तमे हमेशा मोजनवेळाए आ उदकरलने उपस्थित

करता नथी । आ पाणी तमे क्यायी पास कहुँ ॥ आ प्रश्नना जवाबमा मन्त्रीए सर्व बीना कही । त्यारे ते बात पर विश्वास नहीं लावता राजाए पोताना अस्थनर तुलपने बोलावी मन्त्रीना कहाँ प्रमाणे पाणी लावी कहाँ प्रमाणे करवा एचब्युँ । ते प्रमाणे तेणे तैयार करेला पाणीनो आस्वाद राजाए करी मन्त्रीना बचने उपर श्रद्धा करी, अने मन्त्रीने बोलावीने आ तमे क्याथी शील्हा ॥ जाण्युँ ॥ तेउं पूछ्युं ॥

सुबुदि मन्त्रीए जिनवचननथी वस्तुना स्वभावो में जाण्या छे तेउ जणाब्युँ जीतशत्रु राजाए जिनवचनो सामळवानी इच्छा दयावाथी तुबुदि मन्त्रीए चार प्रकारलो धर्म जिनकथित कहो, तेम महामतो—अणुवतो पण जणाब्या । जितशत्रु राजाए जिनधर्म प्रत्ये अद्वा प्राप्त थवाथी मन्त्री पासे पाच अणुवतो अने वार प्रकारलो श्रावकधर्म स्वीकार्यो ।

एक समये पंथारेला स्थिवर मुनि महात्मा पासे धर्म श्रवण करी सुबुदि मन्त्रीने संयम म्रहण करवानी इच्छा थह, अने ते हफीकत राजाने जणावी । वन्नेए सांये दीक्षा लेवानु नक्की करीनि ते पछी ते राजाए राज्यसुखो वार वर्ष सुधी मोगवीने अदीनकुमारने राज्याभिषेक करी मोटा महोसंवृत्क राजोए मन्त्री साथे संयमने म्रहण कहुँ यावत आगीकार अग भण्या—षण वर्षे संयम पाळी एक मासनी सलेखना करी वन्नेए सिद्धपद प्राप्त कहुँ, अर्थात्—मोहे गया ।

उपसंहारे—मिथ्यात्वथी मोहत मनवाला पाणीनी असक अने गुण रहित एवाओ पण उचेम गुरुदेमहाराजना प्रसादथी—  
संसारी दुर्घावाटी आ खेलना पाणीनी जेम गुणवानो थाय छे ।

इति द्वादशा-उदकाध्ययन सारांशः

—>—

द्वितीय-  
विभागे-  
श्रीदद्दुरा-  
ष्ट्य०

सारांशः ।

### १३—श्रीदद्दुर—अद्यथन सारांशः ।

पूर्णे कहेला अध्ययनमां—संसर्गविशेषयी पुणो उत्कर्ष थाय छे ते कक्षु. आ तेरमा अध्ययनमां संसर्गविशेषया अभावथी छता

गुणोंमुँ बोंचु थाँ जणावे हे.

हे जन्मदू ! ते काल अने समये राजमही नगरीमा गुणशैलैचेत्यविषे प्रमु महावीर समवसर्या हता, त्यारे सौर्यमिकलय नामना देवलोक विषे दद्दुरावंतसक नामना विभानमो शुधमी नामना विषे दद्दुर नामना सिंहासनपर दद्दुर नामनो देव हतो. ते सौर्यम-देवती जेम लीला करतो होतो ( अन्न वर्णिन सायपसेणीयमां जोंचु ), तेने विषुल एवा अवधिज्ञानबडे प्रमुने जोह समवसरणमां आवी सूर्यमदेवती जेम नाथ्यविषि देखाउडीने ते देव चाल्यो गयो. आ समये गौतमस्वामिष वंदन—नमस्कार करी प्रमुने पूछ्यु के-हे प्रमु ! जा नोटी क्रीद्विवाळा दद्दुर देवनी विकुवेली दिव्यसमृद्धि क्यां गह ! अने क्यां समाइ गह ! प्रमुए श्री गौतमस्वामिना प्रश्नना उजरमा जणाव्यु के-हे गौतम ! ते दिव्य समृद्धि तेना शरीरमां गह अने तेना शरीरमां समाणी, ते शिखरना आकारवाळ्या धरना दृष्टांतथी जाण्डु. पुन. गौतमस्वामिष प्रमुने पूछ्यु के-हे प्रमु ! दद्दुर नामना ते देवे आवी देवकळ्डि शी रीते प्राप्त करी अर्थात् इयाथी मली :

दद्दुरदेवना पूर्वभवतुं करेलुं वर्णनं.  
हे गौतम ! आ जंत्रद्वृष्टि नामना द्वीप विषे मरतकेप्रमां राजगृहीनगारी विषे नंद नामनो मणिआर श्रेष्ठी वसतो हतो. ते काल अने ते समये हे गौतम ! हुं समवसर्यो हतो, ते अवसरे श्रेणिक राजा वागेरे ज्ञो पर्णदामां देशना अवण करवा आव्या. आ वाव नेदमणिकारे सांभळी जने तेन पण देशना अवण करी सायकृत्वसहित जिनघर्मनो स्वीकार कर्यो. हमे बीजे विहार करी गया पट्ठी

नवाही-

५० ५०

भीड्याता-

पर्मकथाः

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

सायुज्या नहीं देखवायी सेवा रहित अने शिखामणना आयवे तथा अवण इच्छानी अभाव थाँ सम्बन्धमागर्थी सप्तसवा लायो अने  
गिर्यामार्गमां वधवा लायो. एक वसत उनाळामां अडुसता पचवक्षवाण करी पौपथशालामां रखो हो, त्यां तस अने मूलथी परमब  
पायो छतो चिन्तवन करवा लायो के ते शेठीआजोने पन्थ के डेझोए कृष्ण-वाचडी-पुक्खरणी अने गलावो-सरोवरो कराव्या छे,  
अने तेमां लोको स्तान करे छे, पाणी पीए छे, हुं पण श्रेणीकमहाराजानी पासे जह अमयकुमारती रजा लह पुक्खरणी करावी  
फलव्याण कहं, सचारामां पौपथ पारी मोडुं मेटणुं लह श्रेणिक राजा पासे गयो अने भेटणुं करिने पुक्खरणी कराववावी आजा भागी.  
श्रेणिक महाराजाए तेने आजा आपी एटले तेणे पोक्खरणी योग्य जगा जोइने ते खोदावी, ( चारे खूणा सरखवावाळी विशाळ  
चापडीने पुक्खरणी कहे छे ) ते पुक्खरणी शुद्ध मिट्टजल अने कंपल्डोथी शोभवा लागी. ते चापडीनी चारे दिलामां बनखंड कर्ण, तेमां  
( १ ) पर्वदिशाना बनखंडमां एक मोटी चित्रसमा करावी, अने लोकने बेसवा योग्य तेमां आसनो कराव्या. ( २ ) वक्षिणदिशाना  
वनखंडमां अनेक थांभलाथी शोभती महानशशाला-रसोडा सहितनी दानशाला करावी, ते दानशालाने अनेक शोभित  
आतिथियो बगोरे सेवे छे. अर्थात् त्यां आहारथी उचि मेळ्वे छे. ( ३ ) पश्चिमदिशाना बनखंडमां अनेक स्तम्भोथी शोभित  
तेमिन्ज्ञयशाला-मोडुं वैधोंतुं औपधालय-अथर्व दवावानुं करान्युं, तेमां घणा वैयोनो दरदीओ लाभ ले छे. ( ४ ) उत्तरदिशाना  
बनखण्डमां-अलंकारसमा-हजामो विगोरेती जोगवाई करावी छे, तेमां श्वसादि दूर करवा विगोरेतो लाम लोको ले छे; अर्थात्  
राजगृहीनी जनता अने परदेशनी जनता तेतो उपभोग करी आनन्द माने छे, अने नंदमणीआरानां वस्ताण करे छे; नंदमणीआर  
पोतानां वस्ताण सांभली पोतागा आ कायने पुण्यकार्य मानवानो संतोष ले छे.

द्वितीय-  
विभागे  
श्रीदर्दुगा-  
इयन-  
सारांशः ।

एक समय ते नंदमणीयाशेषिने शरीरमां सोड रोगो एक सामय प्रगट थया, अनेक दचाओ करावी धणा उपयो कराव्या, पण एके रोगां शमन थयु नहि; अने आर्तीद्रव्यान वश थयो यको नंदा पोक्खरणी पर मुर्छा करतो मरीने तेज चावडीमां देडकिना पेट देडकापणे उत्पन्न थयो. जन्म पास्या पछी यावत् मोटो थयो, ते पोक्खरणीनां अने नंदमणीयानां वस्त्राण तां आवेला जलार्थीबो करे छें, ते सांभली उदाहोह करतां ते देडकाने जातिस्मरणज्ञान प्राप्त थयु आशी पोतानो पूर्वभव याद् आव्यो, अने पोतानु जेत घर्मां पालुं, तेम संसर्गना अभावावी मिथ्यात्वीबोना परिणामो थवा, तेम ते पापयुक परिणामयी देडका तरीके जन्मावुं, विचारी धणो पश्चाताप कर्यो, अने पूर्वे स्त्रीकारेलां पांच अणुनतो अने सात द्विलक्षणतो स्त्रीकारी अभिमाह कर्यो के, ज्यांसुची जीवुं त्यांसुची छड्हना पचास्वाणमां रहेहुं अने पारणे फासु जल पीतुं, अने मनुप्योए उत्तरेला भेलवडे आजीविका निमाववी, आ रीते (देडकना भवमां) जीवन चलाववा लायो.

ते काळ अने ते समये हे गौतम ! हुं राजगृही नगरीना गुणदैलचैत्य विये समोसयो, पर्षदा थई. आ बार्तालाप ते बाचडी पर वेठेला लोको अन्योअन्य करवा लाया. आ बार्तालापने ते देडकाए सांभव्यो, आथी अहि आववा ते बाचडीयी बहार निकली उतावलो उतावलो आवी राखो हतो; तेवामा श्रेणिक राजा चतुरंगी सेना सहित म्हारी पासे आवतो हतो, तेमां तेमना घोडाना पा नीचे ते आवी गयो, आथी निर्बल बनेलो ते देडको एक वाजु लसी जई कायाने वोसरावी, आराघना करतो शुम ध्याने काळ कारी सौधमी नामना देवलोकविये दद्दुर नामना विमानमां दद्दुर नामनो देव थयो. देव थयेला तेने अवधिशानयी उपयोग भुक्ति अहिं आपी कफ्दि विकुर्वी हरती, तांथी ते च्यवीने महाविदेह केव्रां मोक्षने पामदो.

उपसंहार—नंदमणियारनी लेस संपूर्ण गुणवालो पण आसा उचम गुरु नहाराजना संसर्गीयी रहित शाय तो प्राये गुणी

हानि पाने छे माटे उचम गुलना संसर्गमां सर्वंदा रहेहुं.

इति १३—श्रीदुर्दुर—अध्ययनस्य सारांशः समाप्तः ॥

—कृ—

### १४—श्रीतेतलिपुत्र—अध्ययन—सारांशः ।

तेरमा अध्ययनमां सामग्रीना अगावे छता गुणोनी हानि जणावी, आ चौदमा अध्ययनमां तथा प्रकारनी सारी सामग्रीनो योग यो गुणोनी वृद्धि थाय छे ते जणावदो.

हे जावू । ते काल अने ते समये तेयलिपुर नामनुं नगर हहुं, ल्यां प्रमद नामनुं उद्धान हहुं, ल्यां कनकरथ नामनो राजा राज्य करतो हहो, तेने पचावती नामनी राणी हाती अने तेतलिपुत्र नामनो प्रधान हहो; अने ल्यां मूषिकादारक नामनो सोनी हहो. ते सोनीनि भद्रा नामनी ल्यी हाती अने पोहिला नामनी पुत्री हाती. एक समये तेतलिपुत्र आमात्य केटलाक परिवार साथे फरवा निकाळ्यो हहो, तेने एक मकानमां सोनाना दडाए रसती पोहिलाने जोई, तेना उपर आसकि थई. आयी ल्याने आवी तपास करी तो ते महेल जेहुं मकान सोनीनुं हहुं, अने ते वालिका सोनीनी छे तेम जाणुं. अमासे वोताना विशाहु माणसो द्वारा अपिकादारक सोनीने कहाल्युं के तारी पुत्री पोहिला साथे आमाल्यने परणवा इच्छा छे. आवनार माणसोने सोनीए कहुं के मारी पुत्रीने तेजो वरे गे तमारो उपकार मानीश. एम कही तेओनो सत्कार कयें; घणी घामधूमपूर्वक तेतलिपुत्र आमाल्य ते पोहिला साथे परण्यो, अने तेनी

द्वितीय-  
विमागे-  
श्रीतेवलि-

सारांशः ।

साथे आनन्दपूर्वक दिवसो गमना करे छे।

१० शु  
भीषणा-  
चर्मकथाः

॥ ८ ॥

कन्तकरणः राजा राज्यपर—राष्ट्रपर—मंडारपर अने। अन्तेपुरी। उपर खुब, आसकिचाक्षो थयो; तेथी जे कोई, पोताने ल्यां पुत्रादि, थाय छे तेना कोइनी हाथनी आंगढीओ, तो कोइनो अंगठो, तो कोइनी पगनो। अंगठो, तो कोइनुं नाक, गो कोइना कान; एमा अंगोपांग छेदविः छे, अनेक्षरायः अंग बाला—सोडबाला करी। दे छे; एटले-राज्यः मोगववा, माटे अयोध्य करी दे छे, 'तेनी पञ्चावती' राणी। एक वस्त्रत प्रवान् तेतलिने वोलान्वो अने राज्यने! योग्य एक पुत्र, रहे- माटे तमे, आ वस्त्रे, गुस रासी उठेचानुं कबुल करो तो आ वस्त्रे जे गुस। जन्मे रे तमने गुस रीते, आपी दउ, प्रधाने। आ वात कबुल करी। समय, प्राप्त थये छ्हे पञ्चावती राणी। पुत्रालनो। जन्म आप्यो, पुत्रना जन्मतानी। साथे। तेतलिपुत्र आमाल्यने गुस; रीते, वोलावी अर्पण, कर्यो। दैवयोगे ते समये आमाल्यपली पोहिलाने मरेली पुत्री जन्मी ते पुत्री राणी ते गुस रीते अर्पण करी, राजाए मरेली पुत्रीनी मरणक्रिया तमाम करावी, पोहिलाए ते वालक्ने मोटो कर्यो अने कुडिभिजनो समस्त कलकछ्वज नामः पाडयुः।

पोहिलानी दीशा —

केटलोक समय गया एकी पोहिला तेतलिपुत्र आमाल्यने अनिष्ट थई, आथी उद्वेग पामेली पोहिला धणा एवा श्रमण—माहण—गिषुकोने दान आपती—अपावती जीवन निमावी रही छे। एक समये, धणा परिवार साथे मुख्य, सुखता नामनी साढ्ही ते नगरमां आपी छे, तेमांथी वे, साढ्हीओ तेतलिपुत्र प्रधानना महेले निषा—गोचरी अर्थे प्रधारतां पोहिलाए उमा थइ सम्मान कर्यु, अने आषाधादि वहोरावी कहेवा लागी के दै पूर्य साढ्ही महाराज ।। हे पहेलो प्रधानने। इष्ट। हाती, हमणां अनिष्ट थइ छुं, तो तमो चूर्ण—॥ ८ ॥

मन्त्र-तन्त्र-वशीकरण वगोरेमाथी। कंडक आपो, जेयी हुं तेमने इट थर्कं। आना जवाहमां साढ़ीलीए, जणाहुं के हमे! ब्रह्मारिणीओ छीए! हमोने आवी वातो श्रवण करवी पण कल्पती नथी, जाम कही! जिनधर्म तेने, जणान्यो-उपदेश्यो, पोहिलोने जिनधर्मप्रत्ये अदा थह अने तेमनी पासेथी पञ्चाण्यकतो आदि गृहस्थष्मं स्त्रीकार्यां यावत् ते श्रविका थइ.

एक वरहत मध्यरात्रिए, पोहिलोने संयम लेयाना परिणाम थया, आथी पोहाना पति तेतलिपुत्रने, पोहाना संयमनो भाव कहो, तेतलिपुत्र प्रथने तुं देवलोकमां जा, त्यारे ल्हारे मने प्रतिवेष करवो, आवी कवृलात तुं आये तो हुं तने रजा आसुं, पोहिलाए, आना जवाहमां स्वपतिनी आ मांगणीनो स्त्रीकार कर्या, तेतलिपुत्र प्रधानोः आडम्बरपूर्वकः, सुवता, साढ़ीजी पासे, दीक्षा अपावी, सुवता पासे पोहिला अगीआर अंग अणी, पणा वर्ध संयम पाळी, महीनाहुं अनशन करी; आलोचन प्रतिक्रमण करी, समाधिपूर्वक, आराधना करी अने काळ करी देवलोकमां देवी थइ.

कनकदण्डनो राज्याभिषेक अने तेतलिप्रधानने प्रतिवेष—

कनकदण्ड राजा नरण पाम्या त्यारे तेझीनी मरणकिया कर्या पछी अन्योअन्य लिचारवा लाया के अंगोए, करी हीण राजाना पुणो छे माटे राज्यसिंहासन पर कोने वेसाड्डो! छेवटे तेतलिपुत्र मन्त्रिने पुछ्युं ल्यारे मन्त्रीए पदमावती राणीना एक कनकदण्डवज नामना युगं पोते गुसरतिए केवी रीते मोटो कर्यो विगोरेहुं आमुल वर्णन कर्युं, अने सर्व रीते योग्य एवा ते कनकदण्डकुमारनो राज्याभिषेक संपैए मली कर्यो, पदमावती माताए पुत्रने तेतलिपुत्र मन्त्रीना उपकारो जणावी सर्वे, मलामणो करी, कनकदण्डजराजा तेतलिमन्त्रीनुं सर्व रीते विशेषे करी सन्मान करे छे.

द्वितीय-  
विमागे

श्री-

पोहिलादेवी तेतलिने चारंवार ऐनथमनी बोध करे छे, पस्तु तेतलिन प्रतिबोध थतो नथी, आधी देवीने विचार थयो के ज्यांसुधी

उपतिनो आदर छे ल्यांसुधी चारंवार मारो फराहो प्रतिबोध फलीभूत थतो नथी, माटे अनादर प्राप्त थाय तेम करं तेवो विचार करी

अनादर उत्सव कर्यो।

त्यासाद् तेतलिमन्त्री ज्यां राजसमानो गयो त्यां तो राजाए ते महामन्त्री तेतलिने बोइने पोते पराक्रमुत कर्यु, अने मैन रही

मन्त्रीनो अनादर फर्यो। आधी तेतलिषुन महामन्त्रीने विचार थयो के अप्रीतिवाळो आ राजा मने मारी नंखावशे माटे चाल्या जबुं

शेय हे, आम घरी मन्त्री पोडा उपर वेसी घर तरफ चाल्यो। मार्गमां आवता शेठीआ वगेरे उभा थइने जे मान आपां

जोइए ते आपता नथी, तेम हाथ पण जोडवा नथी, घरे पण वाहपर्दाना माणसो पण आदर आपता नथी; तेम नोकर-चाकरो

अनादर करे छे। पिता—माता वगेरे पण आदर कर्ता नथी। आ प्रकारना असख अनादरथी आपथात करवा माटे मुखमां तालपुट-

विप नाल्युं पण ते परिणम्युं नहि, तलवारथी पोतानी खांधे वा कर्यो तो तलवार ज बुढ़ी थह गइ, गले फांसो खाल्यो तो

दोरांडु—रसी ज बृदी गइ। आम मरवा माटे घणा उपायो कर्या पण तेना मर्वे उपायो निफल गया त्यारे जिनथर्म प्रसेये अद्वा

लाववा लायो। पोहिलादेवी तेतलिषुन महामन्त्रीने जिनथर्म प्रसेये द्वितीया आपी हवथाने चाली गइ।

तेतलिषुने शुम अध्यवसाययी जातिस्तरणज्ञान उत्पत्त थायुं, आधी पोताना पूर्वम्बो जोया तेमां जोयुं के हुं महाबिदेहसेत्रमां पोक्खला-

करीविजयविषे गुंहरीगिणी राजथानीमां महापद्म नामनो राजा हतो। त्यां स्थविरमुनिओ पासेथी धर्म अवण करी दीक्षा में लीधी हती।

बोदपूर्वी थयो हठो, घणा वर्षो संयम पाली मासनी संलेखनपूर्वक काल करी महाशुक्र नामना देवकोक्मा देव थयो हठो। त्यांथी

नामाः-  
३० ३०  
भीजाता-  
चर्मिक्षपादः

०९॥

द्वितीय-  
विमागे

श्री-

पोहिलादेवी तेतलिने चारंवार ऐनथमनी बोध करे छे, पस्तु तेतलिन प्रतिबोध थतो नथी, आधी देवीने विचार करी

उपतिनो आदर छे ल्यांसुधी चारंवार मारो फराहो प्रतिबोध फलीभूत थतो नथी, माटे अनादर प्राप्त थाय तेम करं तेवो विचार करी

अनादर उत्सव कर्यो।

त्यासाद् तेतलिमन्त्री ज्यां राजसमानो गयो त्यां तो राजाए ते महामन्त्री तेतलिने बोइने पोते पराक्रमुत कर्यु, अने मैन रही

मन्त्रीनो अनादर फर्यो। आधी तेतलिषुन महामन्त्रीने विचार थयो के अप्रीतिवाळो आ राजा मने मारी नंखावशे माटे चाल्या जबुं

शेय हे, आम घरी मन्त्री पोडा उपर वेसी घर तरफ चाल्यो। मार्गमां आवता शेठीआ वगेरे उभा थइने जे मान आपां

जोइए ते आपता नथी, तेम हाथ पण जोडवा नथी, घरे पण वाहपर्दाना माणसो पण आदर आपता नथी; तेम नोकर-चाकरो

अनादर करे छे। पिता—माता वगेरे पण आदर कर्ता नथी। आ प्रकारना असख अनादरथी आपथात करवा माटे मुखमां तालपुट-

विप नाल्युं पण ते परिणम्युं नहि, तलवारथी पोतानी खांधे वा कर्यो तो तलवार ज बुढ़ी थह गइ, गले फांसो खाल्यो तो

दोरांडु—रसी ज बृदी गइ। आम मरवा माटे घणा उपायो कर्या पण तेना मर्वे उपायो निफल गया त्यारे जिनथर्म प्रसेये अद्वा

लाववा लायो। पोहिलादेवी तेतलिषुन महामन्त्रीने जिनथर्म प्रसेये द्वितीया आपी हवथाने चाली गइ।

तेतलिषुने शुम अध्यवसाययी जातिस्तरणज्ञान उत्पत्त थायुं, आधी पोताना पूर्वम्बो जोया तेमां जोयुं के हुं महाबिदेहसेत्रमां पोक्खला-

करीविजयविषे गुंहरीगिणी राजथानीमां महापद्म नामनो राजा हतो। त्यां स्थविरमुनिओ पासेथी धर्म अवण करी दीक्षा में लीधी हती।

बोदपूर्वी थयो हठो, घणा वर्षो संयम पाली मासनी संलेखनपूर्वक काल करी महाशुक्र नामना देवकोक्मा देव थयो हठो। त्यांथी

॥ ९ ॥

च्यवाने हुं आ तेतलि प्रधानने द्यां पुत्रणे जन्म्ये छुं. अपूर्वै वैगायथी स्त्रयमेव पश्चमहावतो उचरी संयमभृण कर्युं यावत् पूर्वे अस्यास करेला चौदे धूरोंतुं जात पण स्वाभाविक ज यसुं शुभ परिणामनी वघती घाराए केवलज्ञान पान्या. लाकाशमां देवदुन्दिपिओ वागचा लागी पंच वर्णना पुण्येनी शृष्टि थह, कनकध्वज राजा आ श्रवण करी ल्यां आळ्यो अने तेमनो उपदेश श्रवण करी श्रावक यथो तेम पांच अणुवतो, सात शिक्षावतोने महण कर्या. तेतलिपुत्र केवलिपणामां घणा वर्ष केवलिपणामां घणी यावत् भोदे सिधाळ्या. उपनय—उयांसुधी जीवो अति दुःखने के मानअंशने पास करता नथी त्यांसुधी तेतलिपुत्रनी जेम प्राये भावयी घर्मिहण करता नथी.

इति चतुर्दशा-अध्ययन-सारांशः समाप्तः ॥

॥ १५—श्रीनन्दीफल—अध्ययनसारांशः ॥

चौदमा अध्ययनमां अपमानथी विषयोनो त्याग प्रतिपादन कर्यो, आ पंदरमा अध्ययनमां जिवेश्वर प्रभुना उपदेशाथी विषयोनो त्याग प्रतिपादन करारो, एटले सर्वज्ञकथित उपदेश प्रमाणे वर्चे तो अर्थनी प्राप्ति थाय अने न वर्चे तो अनर्थनी प्राप्ति थाय तो अन फहेवारो. हे जम्बू ! ते काल अने ते समये चंपा नामनी नगरी हुती, त्यां पूर्णमदयक्षनुं चैत्य छे. अन जितशत्रू नामनो राजा छे, अने धगाल्य धन नामनो सार्थकाह हतो. चंपानगरीनी पूर्वोचरादिशामां घणे दूर अहिड्जा नामनी नगरी हती, त्यां कनककेतु नामनो

द्वितीय-  
विभागे  
श्रीनन्दी-  
फल०

सारांशः ।

रावा राज्य करतो हठो.

नामांगी-

२० ३०  
भीमागा-  
र्हर्षपात्रै

एक समये पानसार्थचाहने करी आणो वरोरे । लहु अहिउजा नगरीए जवाना भाव थवाथी गाडां विरोरे तैयार करावी । पडहो यगदाळ्यो के लेने वे सहाय जोरदो ते हुं आपीश । आवा प्रकारना साद पडावाथी शुभ मुहूर्ते धणा वेपारीओ, गृहस्थो, चरक गिरे निझुको भाज्या तेऊने लहने मुखे समाधे घनसार्थचाह जहु रखा छे. बांगदेशगा लेहे. आवतां एक, मोहुं चन, आब्युं : पटले-पानसार्थचाहे वे श्रणवार साद पडावाया द्वाराए चेतवणी आपी के आ लंगलमां धणा एवा नंदीनामना वृक्षो छे. ते वृक्षोनां मूल-लाल-पत्र-मुम-फल कोहु लायो नही, तेम तेनी छायासां पण कोहु वैल्यो नही, जे कोहु तेनां मूलीयां विरोरे लाये आगर तेनी छायासां वेसरो लेने आरम्भा ठीक लागरो पण अफाले ते मृत्युने पामदो ॥ ॥ माटे नन्दीषुक्ष सिवायना वृक्षो सेवयशो अने नन्दीषुक्ष सिवायना फलो नायो तेनो यांथो नयी, डाम जणाल्या छतां जेओए घनसार्थचाहना आ वचनो उपर विश्वास न राख्यो अने उलटा वर्त्या ते मुखी थ्या, तेवी रीते अफाले ठीकरन गुणाव्यां अने जे घनसार्थचाहना आ वचनो उपर विश्वास घरावी तेमना वचन प्रमाणे वर्त्या ते मुखी थ्या, तेवी रीते ने सागु थायवा साढ्यी जिनेष्वरे निषेध करेला होवा छतां पांच प्रकार विषयोमां तहीन रहे छे ते. आ भवां दुःखी, थाय छे. अने यसयहने पात्र यहु अनेक भवोमां रसडे छे. तेम जे साषु अथवा साढ्यी जिनेष्वरे निषेध करेला, छे तेम जाणी, पांच प्रकारना विषयोनि लाग करे छे ते आ भवां मुखी थाय छे अने यशकीतिने पामी शीघ्र मोक्षने साधे छे.

जे कोहु वच्या तेने घनसार्थचाह लहने अहिउजा नगरीए गयो, अने कनककेतुराजने भेट्युं करी तेनी रजा पामी करीआणा वरोरे वेचो, लेया योग धीकी वस्त्रो लेहु, पाठा चप्पनगरीए आब्या अने मुखी, थ्या. एक समये स्थवीर महात्माओं आमन थ्युं ॥ २० ॥

तेमनी पासे धर्मेन् श्रवण करी धनसार्थवाहे पोताना पुने कारगर सौभी संयम प्रहण कर्तुं, आगीआर अंग भण्या, याच्छ्र घणा वर्षो  
संयम पाढ़ी, महीनाना उपवास करी, सलेखना करी देवलोकमां देव थया. त्यांथी च्यवी महाविदेहसेवमां, गोक्षने पामरो.

इति १५-श्रीनन्दीफलअध्ययनसारांशः ॥

—→कृ—

॥ १६-श्रीअपरकंका-अध्ययन सारांशः ॥

पर्वना अध्ययनमां विषयेते विषे आसक्ति राखे छे तेने थता अनर्थं जणाल्या, आ सोलगा अध्ययनमां विषयेनी जे इच्छा  
राखे छे तेने पण अनर्थंनी प्राप्ति शाय छे ते हक्कीकित कहे छें:

हे जम्बु ! ते काले ते समये चंपानामनी नगरी हडी तेना ईशान भागमां सुमुमिभाग नामदुं उघान हहुं, ते नगरीमां चारे वेदोने  
जाणनार धनाळ्ब-सोम, सोमदण अने सोममृति नामना त्रण ब्राह्मणो हता तेमने अगुक्मे नागाश्री,-मृतश्री अने यक्षश्री नामे भार्याओ  
हडी, एक समय त्रणे ते ब्राह्मण भाइओ मेणा मळ्की विचारवा लाग्या के आपणे घणा धनवाळा छीए, सात पेढी सुधी चाले वेट्लुं धन  
छे तो आपणे त्रणे वाराफरती एक घेर सुन्दर-स्वादिष्ट भोजन करीए ते ठीक छे, आ प्रमाणे विचार करी अन्योअन्य  
मोजन तैयार करावी वाराफरती भोजन कर्ता रखा छे, कोइ एक दिवसे नागाश्री ब्राह्मणनि वेर, मोजन, करवानो वारोः आन्मो लारे  
तेणीए पणुं पूर्वं स्वादिष्ट भोजन तैयार कर्तुं, तेमां तुम्बडीनुं शाक तेल आदि घणा द्रव्योथी ते तैयार कर्तुं, अने शाकानुं एक विन्दु  
चासी जोयुं तो ते लारुं, कहडुं, लाचा माटे अयोग्य, अने विषवाढुं लाग्युं साथी ते नागाश्री पोताने धिकारी पश्चाताप करवा लागी, मारी

द्वितीय-  
विमार्गे  
श्रीअपर-  
कंका०

सारांशः ।

नवाही-  
१० श्रीगुराता-  
षमिकायाः  
आ वात मारी देराणीओ जो जाणदो तो मारी निन्दा करदो माटे ते न जाणे तेम ते शाकने संताडी दउं एम विचारी ते शाकने संताडी दह नवुं मधुरतुङ्बडाउं स्वादिष्ट शाक तेणीए तैयार कर्दुं ज्यारे ते ब्रणे ब्राह्मणो आब्या ल्यारे तेमने स्वादिष्ट शाक विगेरेभी भोजन कराल्युं तेको ज्याण भोजन करी मुखशुद्धि करी पोताना कामे लाग्या, त्यारचाद त्रणे ब्राह्मणीओए पण स्वादिष्ट शाक सहित भोजन कर्दुं अने पोताना स्थाने गह.

नागथ्रीए बहोरावेलुं कडया-तुम्बडाउं शाक,

ते समये घर्मधोप नामना स्थ्यविरमुनि पणा परिवारयुक्त विहार कर्ता चम्पानगरीना सुमिभाग नामना उथानमां पथार्या छे, तेमने बंदन करवा माटे घण लोको आब्या अने पर्दा थइ. स्थ्यविरमुनि घर्म कहो ते श्वेण करी सर्वे गया. ते चार पछी घर्मधोपस्थ्यविरगा शिष्य तेजोलेश्यानी लियवाळा घर्मरुचि नामना अनगारमुनि भास मासनो तप करनारा हता ते श्रीगोत्तमस्वामिनी माफक पञ्चपडिलेहण करी घर्मधोपस्थ्यविरती आज्ञा लह भिक्षा भाटे चम्पानगरीमाँ फरता फरता उयां नागश्री ब्राह्मणीं घर हहुं ल्यां प्रवेश्या, ते नागश्री ब्राह्मणीए विषवाला कडवा तुम्बडाउं जे शाक गुस राखेलुं ते वयुए खुव हर्षपूर्वक साधुना पात्रां नाल्ही दीर्घुं. घर्मरुचि अनगार पण पोताना पुरतो आहार यह गयो जाणी त्यांथी नीकली गुरुमहाराज फासे पाला गया अने इयावही प्रतिकमी गुरुमहाराजे गोचरी बतावी. गुरुमहाराजे गन्धी शंकित थ्या छता ते शाकना एक विन्दुने चाली जोयुं, तो ते शाक विषवालुं जाणी घर्मरुचि अनगारने कहेवा लाग्या के-हे महानुभाव । आ शाक हुं जो बापरीश तो अकाले मृत्यु पामीश, माटे शुद्ध भुग्मि विष पठवी थो ! अने चीजो आहार लावी आहार करो ।

॥ ११ ॥

॥ ११ ॥

धर्मलुचि अनगारि करोडुं अनश्वन.

गुह-आजाथी शुद्ध मूर्मिनी तपास करी परठवता, एक विन्दु यूमिपर नाखतां तेनी गन्धथी हजारो कीडीओ भेगी थइ, तेमांथी जे कीडीए तेनी आहार कयों ते तुरतज शुद्ध यामी. आयी धर्मलुचि अनगारने अद्यवसाय थयो के-आ विन्दु नाखतां हजारो कीडीओ मरणने पामी छे, जो आ वऱ्युये शाक पठवीश तो घणा जीयोको नाश थयो, अने तेनो वय करनारो हुं थइश. माटे आ सर्वे जाहारने हुं खाइ जर्ड ते कस्त्याणकरी छे, एवो निश्चय करी सुंहपरितुं पहिलेहण करी, आखा शरीरनुं प्रमार्जन करी वीलां सर्व प्रवेशे तेनी जेम मुखां आहारनो प्रवेश कराव्यो अर्थात् उदरमां नाखी दीयुं. एक अन्तमुहूर्तमां आखा शरीरमां विष व्यापी गयुं अने असद्य वेदना थइ, आयी शुद्ध नजदीक छे एम घारी पांत्रां एक जगोए स्थापन करी, शुद्ध शूमिनुं पहिलेहण करी, दम्भनो संथारो करी, पूर्वसन्तुल मुख गारी, पल्यंक आसने बेसी, वे हाथ जोडी, अंजलि जोडी,-अरिहंत, सिद्धने नमस्कार करी-गुलेने नमस्कार करी कीरीथी कोरिमंतेतुं पचक्खाण उच्चरी देहेन वोसराव्यो अने समाधिपूर्वक काळथमि पाया.

नागाश्रीनो येयेलो तिरस्कार—

धर्मयोपस्थिति धर्मलुचि अनगारने परठवा गये घणो टाइम थयो छे तेम जाणी साधुयोने चारे दिशाए तपास करवा मोक्ष्या, ते साधु भगवत्तो तपास करतां स्थंडिलमूर्मिविष तेमने काळधर्म पामेला जोड आ अकार्य थयुं छे, तेम करी धर्मलुचि अनगारना काळधर्मनो काउस्सग कयों. अने तेमना पांत्रां आदि लेइ गुरुमहाराज पासे जह, इरियावही प्रतिक्रमण करी धर्मलुचि अनगारना काळधर्म पाम्याना समाचार जणाव्या.

द्वितीय-  
विभागे-

श्रीअपर-

कंका०

धर्मरूचि-

हुचारस्।

१० न शास्त्रीः प्रमथोपस्थविरे पूर्वमां-( चौदपूर्वमांगा कोइ पूर्वमां ) उपयोग मेली सायु-साध्वीओने बोलावीने कहुं के-है आयो । मारो दिव्य धर्मरूचि नामनो सायु-स्वमावथी भद्रक, यावत् विनीत हतो तेम निरंतर मासक्षण तप करतो हतो, ते नागश्री ब्राह्मणी वेर पारण भाटे बहोरा गयो हतो, नागश्रीब्राह्मणीए तेना पात्रमां कठडवीतुम्बडीनुं सर्व शाक नांख्युं ॥ ११ ॥

धर्मरूचि अणगार पूरतो आहार आवी गयो तेम करी अन आव्यो यावत् घणा वर्षो सायुपण्य पाळी आलोचना प्रतिक्रमण करी समापिपूर्वक फाळ करी तेजीश सागरोपमनी स्थितिवाला सर्वार्थसिद्ध नामगा विमानमां उत्कृष्टस्थितिए देवपणे उत्पन्न थयो छे त्यांथी त्यवीने गदाविदेहक्षेत्रमां उत्पन्न थह मोहे जरो. हे आयो । नागश्री ब्राह्मणी विकार छे, ते निर्भागी पुण्यहीन यावत् लीबोडीना जेवी कठडी छे, फारण के तेणीए धर्मरूचि अणगारने मासक्षणना पारणे कडवा तुम्बडानुं शाक वहोरावी जीवित, रहित कर्यो ॥

ते वार पछी सायु-साध्वीओए नागश्रीब्राह्मणीनुं आ पापकर्म लोकोने कहुं, आ सांभाळी लोको नागश्रीने विकारवा लाया, लोको पासेथी ते ग्रणे ब्राह्मण भाइओ सांभाळीने घेर आवी नागश्रीने कहेवा लाग्या, हे नागश्री ! मरणनी प्रार्थना करनारी ! दुष्ट अने अशुभ लक्षणवाडी ! हीन कृष्ण चौदसो जन्मेली ते मासक्षण करता सायुने आवी रीते मरण पमाड्या ॥ आम अनेक प्रकारे वचनथी अने चपेटा, आदिथी ताडन करी-तिरस्कार करी घरमांथी काढी मृकी, काढी मेलायेली चंपनगरीमां घेर घेर भटकती लोकोए वरना आंगणे, मुकेल वर्तीने लाती, अने अनेक रीते लोकोना तिरस्कारने पामती, भटकती एवी तेणीने-नागश्रीने सोल रोग उत्पन्न थया. मोबोम्बद अनेक अमण्ड दुःखोने गोगवती नागश्री.

ते सोल रोगोना एकी साये दुःखो भोगवती आर्द-रोद्र घ्यान घरती मरण पामिने छट्ठी नारकीमा चाचीसागरोपमनी उत्कृष्ट ॥ १२ ॥

स्थितिए नारकीणे उत्पल यह, त्यांथी नीकलीने मत्स्यपो उत्पल यहि. त्यां शरुवाटे वध पामेली सातमी नारकीं उत्पल यह, त्यांथी  
 नीकलीने पाछी मत्स्यपो उत्पल थर्दे फरीथी पण त्यां तेवा दुःखो भोगवी छही नारकीं उत्पल यह. एम गोशाळानी लेम बारंचार  
 सारे नारकमां नारकीं दुःखो भोगवी पक्षी; पृथ्वीकाय आदि एकोन्दियना भवमां उत्पल यह यावत् धाण दुःखो भोगब्बां.  
**नागश्रीनो सुकुमालिका तरीके यथेन जन्म.**  
 त्यांथी उद्धरनि ते नागश्री जग्यूद्दीपना भरतक्षेत्रमां चम्पानामनी नगरिमां सागरदर्च नामना सार्थवाहनी भद्रा नामनी भायनी  
 कुषिविष्णु पुत्रीपो उत्पल यह अने तेंगुं सुकुमालिका एर्वुं नाम पाड्युं. पांच घावमाताओभी लालनपालन कराती ते यावत्  
 यीवन अवस्थाने पामेली एक समये पोताना गहेलनी आगाई विषे सुवर्णना दडांने रमी रही हही, ते समये तेज चम्पानामरीनो  
 धनाल्य-जिनदरच नामनो सार्थवाह केटलाक भित्रो सह सागरदरच सार्थवाहना भर नजदीक यह जतो हहो तेने ते रुप लावण्यमरी  
 सुकुमालिकाने दासीयोभी परिवरेली जोइ, तेंगुं रुप-लावण्य-यौवन जोइ आश्वर्य पामेल जिनदरच सार्थवाहे कौडुम्बिक पुलपोने  
 घोलाई पूर्खुं के-आ कोनी पुक्की छे? अने तेंगुं नाम शुं छे? कौडुम्बिक पुलपोए जवावमां जणाव्यु के-आ सागरदरच  
 सार्थवाहनी सुकुमालिका नामनी कन्न्या छे. कौडुम्बिक पुलपो पासेथी आ प्रमाणे अवण करी, पोताने घेर जह, स्लान करी,  
 गित्र जातिज्ञो सहित सागरदरच सार्थवाहने घेर गयो. जिनदरच सार्थवाहने पोताने घेर आवता जोइ सागरदरच सार्थवाहे आसनथी  
 उठी जिनदरच सार्थवाहे बेसाढ्या अने आववानुं प्रयोजन पूछ्यु. जिनदरच सार्थवाहे जणाव्यु के-तमारी सुकुमालिका पुत्रीने मारा  
 सागरदरच नामना पुत्री भायपणे मागणी कर्नु. सागरदरच सार्थवाह कहेवा लाग्या के-आ मारी सुकुमालिका पुत्री झारे एकज

द्वितीय-  
विमाने  
श्रीअपरकं०

पुत्री छे तेम मने बहु बहाली छे. हु' रेनो अधगमर वियोग इच्छुतो नथी माटे जो तमारे पुत्र सागर भ्वारा घरजगाइ तरीके रहे तो हुं ग्वारी पुक्की रेने आपुं. जिनदण सार्थकाह देर गया अते पोताना सागर पुक्कें हकीकत जणावी, ते हकीकत श्रवण करी ' सागर ' गौन रहो. आथी जिनदण सार्थकाह तेनी संमति जाणी, अर्थात् कवुलात करे छे तेम निर्णय कर्यै. युम उहर्त आब्यु त्यारे स्वादिष्ट गोजन रेयर करावी जाहिजनोने आदि करावीने आसुपणादिथी चाणगारी विचिकार्मा वेसाढी सर्वज्ञतिजनोसह आडम्परपूर्वक सागरदण सार्थकाहने त्यां गया. सागरदण सार्थकाह तेजोनुं यथायोग्य सन्मान कर्यै, सुकुमालिकाने परणतां ( हस्तमेलापना समये ) सुकुमालिकाना हस्तनो घर्षणी तल्लवारनी जेम अने धगाघगता अग्निना स्पर्शनी जेम सागर अनुमध्या लाग्यो. सागर इच्छाविना परवशपणे आ स्पर्शने अनुभवतो मुहर्तिमात्र वेसी रह्यो. सागरदण सार्थकाह सागरपुत्रना मातापिता विगरेने जमाडी बजादिथी मफि—सन्मान कर्या. सागरपुत्र सुकुमालिकानी साथे शयनगृहे आब्यो. सुकुमालिकाना अस्तन्त कष्टपूर्वक अग्निनी माफक घर्षणी अनुभवतो पराधीनपणे उहर्त मात्र यथे सुकुमालिका निद्राधीन थह त्यारे पोतानी जुदी शय्यामां उह गयो. सुकुमालिका पोताना पतिने वीजी शय्यामां सुतेला बोइ रागाथी त्यां जह सुती. ते समये पण पूर्वनी जेम सागर कष्ट सहन करवा लाग्यो, त्यां पण सुकुमालिका निद्राधीन थये छते कसाइखानामांथी जेम नाशी छूट्यो न होय तेम नाशी छूट्यो अने पोताना वेर आवतो रह्यो.

सुकुमालिका जाप्या पछी पोताना पतिने न जोरां सर्वक तपास करी तो द्वार छुल्छुं औह पोताना पतिने चाल्या गया तेम जाणी विचारवा लागी. तेयामां तेनी माताए पुत्री तथा जमाइ माटे मुल चोवा पाणी लहेन दासीने मोकली. दासीए विचारमम अमेली ॥ १३ ॥

सुकुमालिकोन नौद शु थु छे तेम पृष्ठुं, सुकुमालिकाएँ यथास्थित जे बन्दुं ते कम्बुं रासीए जई तमाम हक्कीकत सागरदरच सार्थवाहने कही। आ धयण करी कोपायमान थयेला सागरदरच सार्थवाह जिनदरच सार्थवाहने थेर गया अने जिनदरच सार्थवाहने उपको—उपलभ्यम अनेकरसिते आय्यो, जिनदरयसार्थवाहे—स्वपुत्र सागरते कम्बु के आ हैं सोहु कम्बु छे, तु लया जा। सगरपुत्रे जणाल्यु के-पिताची, परवत उपरथी पढु। शाड परथी पडु। मरुदेयमा चाल्यो जउ। पाणीमा प्रवेश करु। विष मक्षण करु। गङ्गे फासो न्वाड। गुदपृष्ठमा प्रवेशु। दीक्षा लउ। चाल्यो जउ। परन्तु सागरदरचने थेर नहि जबु। आ वयु भीतना आतरे रहेल सागरदरच सार्थवाह श्रगण करी लज्जा पामेला पोताना इयने चाल्या गया अने पुत्रिने बोलाची आशासन आप्युं ओते कम्बु के—जेने तु इट—याचव्-मनने गमरी थइय तेने आपीय।

ते वार पछी एक समये सागरदरच सार्थवाह अगाशीमा चेसी राजमार्गमा जुवे छे तो एक भीखारी साधेला ककडावाङ्ग वस्त पहेरेलो, हायमा सरावदु अने हाथमा पाणी माटे पडो राखेलो तेम हजारे मालीओथी विटायेलो जोयो, सागरदरच सार्थवाह कोटुन्यक पुर्यने बोलाची भलामण करी के—आ भीखारीने लोकभी लोभाची थेर लइ जइ, स्वादिद मोजन कराची, भीशाना साधनो दूर कराची, वाल—बलकारथी विमृपित करी मारी पासे लावो। कोटुन्यक पुलो तेना भीखारी वेपने ज्या दूर करवा लाय्या त्यारे ते भीखारी राडो पाड्या लाय्यो अने रहना लाय्यो, सागरदरच सार्थवाहनी सुन्ननाथी तेना भीखारी वेप आदिने विषास उत्पन्न थाय देवी रीते तेनी पासे स्थापन कराच्यो अने हजारगत कराच्यो अने हजारगत कराच्यो आदि तेलो वडे ते भीखारीने मालीचा कराची, स्तान कराची, वस्त—आगृण पहेराची ते कोटुन्यक पुलो सागरदरच सार्थवाह पासे लइ गया, सागरदरच सार्थवाह ते भीखारीने पोतानी बुकुमालिका

द्वितीय-  
विभागे  
श्रीउपरकं०

सुकुमा-  
लिकानी  
दीक्षा ।

॥ १४ ॥

नवाही-  
भीड़ता-  
सर्वकपार्ज  
३० इ०  
पुनिने भार्या तरीके अर्पण करी, भीखारीनी स्थिति पण सागरनी माफक थर्तो रे पण पोताना भीखाना साधनो लहेने सागरनी माफक नारी हूँद्यो।

आ सर्व हकीकत उयरे सागरदच सार्थवाहे जाणी त्यारे सुकुमालिकाने प्रेमसह कहेवा लाग्या के-तुं पूर्वभवमां आचेरेला पापकर्मना कलने अनुभवे छे, तुं आर्चयन कर्या विना हवे हे पुरी ! तुं मारा रसोहा विंगे विशुल पतुं अर्चन-पात लादिम-स्वादिम हंगेशो तेयर थाय छे तेने "पोहिलानी" जेम श्रमण-साधु वर्गेरेने आपती छती रहे. सुकुमालिका पण ते प्रमाणे दान आदि करे छे. सुकुमालिकाए लीधेली दीक्षा।

ते काले ते समये बहुशुल गोपालिका नामनी आर्या घणी आर्याओ सह समवसरी, तेमांथी वे आर्याओ भिक्षार्थे आ सुकुमालिकाने ल्यां आर्ची. ते साढ़बीजोने आहार विगेरे वहोराबी, सुकुमालिका कहेवा लागी के-हे आर्याओ ! हुं सागरने अनिष्ट छुं रेम तेना मनने गमती नथी वर्गेरे जे बीना बनेली ते कहीने कथन करवा लागी के-तमो घणा जानवान छो, यावद मन्त्र-सन्त्र वर्गेरेना आम्नायने पामेलां छो तेथी तमे मने एवो उपाय दद्याखो के जेथी हुं सागरने इट थांड.

वेळे आर्याओए कर्मणे विष्पक-वन्य विगेरे समजावी तेम तेन घर्म-साधु घर्म जणावी तेवे श्राविका वनावी यावद सुकुमालिकाए गोपालिका आर्या पासे दीक्षा श्रहण करी. सुकुमालिका आर्या थद. ईर्यासमिति पाठती यावद ब्रह्मचर्य धारण करती घणा छह-अहम विगेरे तपस्या आचरती यक्षी विचरणा लागी. एक समय ते सुकुमालिका आर्यप-गोपालिका आर्यनि चंदना नमस्कार करी चंपा नगरीनी बहार सुमृग्नमाग नामना उधाननी नजदीक छड्हनी तपस्या वडे सर्वनी सन्मुख आतापना लेती रहेवा माटे आज्ञा भागी.

गुहश्रावने करेलो मंग, याचद करें नियाणुं।

मुकुमालिका आर्यए मागेल आज्ञाना जवाबमां गोपालिका आर्यए जणाळुं के-हे आया॒ ! आपणे साध्वीओ निर्मय छीए,  
ईयस्मितवाङ्गी छीए याचत् गुप्त ब्रह्मचारिणी छीए तेथी आपणे गामनी बहार याचत् सक्षिवेसनी बहार निरंतर छड कादि तप करी  
आतापणा लेतो रहेवाठुं कल्पतुं नयी, परन्तु चाड के वंडी सहित उपश्रय विषे रही चखबडे काया ढांकी साध्वीलोना परिवार साये रहनी  
पृथ्वी पर पाणा सम तलिया राखीने आतापणा लेकी करवे छे. गोपालिका आर्या( गुरुणी )नी आ चात पर शदा-हृषि-विशास नही॒  
करती मुकुमालिका आर्या गुरुणीना ना कहेवा छांतो सुमनिकाग उद्यानथी योडा दूर छड आदि तपस्या करती आतापणा लेवा लागी॒  
ते चंपानगरीमां राजाथी छूट अपायेली एक ललिता नामनी टोक्की रहे छे ते माता-पिता-स्वजन विनोरे कोइनी ओपेशा राखती॒  
नयी, आविनयी अने उद्दत एवी ए टोक्की वेश्याने त्यां पडी रहे छे.

ते टोक्कीमांथी पांच गठीआओ देवदणा नामनी रूपवात् वेश्यानी साये एक समये आ उद्याननी शोभा अनुग्रहता आद्या अने ते॒  
देवदणा वेश्याने एके खोळामां चेसाडी, वीजो तेणीना मस्तक पर पुण्यनो गुणट रचे छे, चौथो तेणीना॒  
पणने अलताथी रंगे छे अने पांचमो पुल्य तेणीने चामर वीळवा लाग्यो याचत् तेको मनुष्य सम्बन्धी भोगविलास भोगवधा लाग्या. देव-  
वधाना आ विलासो-पौदालिकुसुलो जोइ मुकुमालिका आर्यानुं चिच चलायमान याणुं अने देवदणा वेश्याना पूर्वपुण्योने अनुग्रहेदवा लागी॒  
जो आ मारा तप-नियम-ब्रह्मचर्यानुं कंइ पण फलविशेष होय तो आगामी भवे हुं आवा काममोगते भोगवती याचत् विचर्हं । आम करी॒  
नियाणुं करी आतापणानी गुणिथी पाली फरी, ते चार पछी ते मुकुमालिका आर्या शरीरगुक्षा ( शरीरनी शोभा करवी तेने शरीरवकुशा

द्वितीय- विमाने  
कहे हें ) यह चारवार हाय-पा-मस्तक-मुख-स्तनांतर-काल-युस्तनागते बोवा लागी, तेम उभा रहेवाना स्थानने-सुवाना स्थानने-

स्वाध्यायना स्थानने-वेसवाना स्थानने प्रथम जलवहे छाँटवा लागी, आर्थि गोपलिका आर्योए आ साढ़ीओते कल्पतुं नथी वगेर  
मस्तजान्तुं पण तेणीए गुरुना ठपकानो आदर कर्यो नहीं, आयी बीजी साढ़ीओए पण मुकुमालिकानो अनादर करवा मांड्यो तेम तेनो  
परमाव करवा लागी, आर्थि मुकुमालिकाने एघो विचार आब्यो के-हुं घेर हती, संसारां हती ल्यारे स्वतन्त्र हती, हुं दीक्षा लेहे  
परवहु यह, आ साढ़ीओ पहेलां मारो आदर करती, हवे ते आदर करती नथी माटे आवतीकाले हुं एकली जुदा उपाश्रये जहेने रहुं  
वजे दिवसे ते जुदा उपाश्रये जहेने रहेवा लागी अने स्वच्छंद मतिवाळी पासत्यविद्वारी-कुशीलविहारी आदि यहेने घणा वर्ग संयम  
पाढ़ी पंदर दिवसनी सलेखना करी, पोताना दोषेने आलोच्या नहि, तेम पश्चातापलम प्रतिक्रमण कर्या विना काल करी ईशान  
देवलोकमां गणिकाणे ( अपरिगृहितदेवीणे ) देवी थईं।

दौपरी तरीकं थयेल जन्म—  
तव पल्योपमनुं ईशान देवलोकनुं आयुध्य पूर्ण करी मुकुमालिका च्यवीने पंचालदेश विषे कांपील्यपुत्रना नगरमां दुपद राजानी  
चुलणी राणीनी कुक्षीविषे पुकीपणे जन्मी अने तेनुं दोपदी पहुं नाम पाड़युं, दोपदी वालिका पांच धावमाताओथी लालनपालन कराती  
शुदिने पामी, याचत् युवानी आवस्थाने पामी, ते वार पछी दोपदीने अन्तःपुरनी राणीओए स्थान करावी, विभूषित करीने दुपदराजाना  
पादने बन्दन करवा मोकली, दोपदी पण एगा हुपदराजानी पासे जह तेमने फो लागी, दुपद दपतिए पोताना लोकामां वेसाडी,  
दोपदीना-रूप-लावपपयी आख्य पासेला दुपदराजाए दोपदीने कांय-हे पुरी ! हुं पोते कोह राजा के युवराजने परणावुं तो ऊं मुखी

अथवा उत्तरी शाय तेथी मने जीवनपर्यंत हृदयमां बलतरा शाय माटे है पुरी ! आजथी मांडीने हुं द्वारो स्वयंवर संकुं छुं तुं तारी  
जाते कोइ राजा के युवराजने वरीश ते द्वारो भर्ती थरो ! एम कही आख्यासन आपी विदाय करी.

### स्वयंवरमां आवचा माटे द्वोरुं प्रयाण.

ते वार पछी हृपदराजाए दूतने बोलावी कहुं के-है देवानुप्रिय ! द्वारका नगरि विषे कृष्ण वासुदेव, समुद्रविजय विगेरे दस  
दसारो, बलदेव विगेरे पांच महान् वीरो, उमसेन वगेरे सोऽह द्वजार राजाओ, प्रधुमन विगेरे साडाक्रण क्रोह कुमारो, सांव विगेरे  
साठ द्वजार उद्धुत अने बलवान कुमारो, वीरसेन विगेरे एकवीश हजार वीरपुलो, महासेन आदि छपन हजार बलवानवर्ण, तेमने  
तथा बीजा धणा राजा, ईश्वर, तलवर, मांडविक, कोटुंचिक, इम्य, श्रेष्ठी, सेनापति अने सार्थवाह आदिने वे हाय जोडी दश नसो  
मेगा करी मस्तक विषे फेरवी अंजली करी जय विजय शब्दोर्थी वायावी आ प्रमाणे कथन करजे ! हे देवानुप्रियो ! कांशील्यपुर  
तपरमां हृपदराजानी चुलणी राणीथी उतपल थयेली, घृष्णुमनकुमारनी बहेन दोपदी नामनी राजकन्यानो स्वयंवर थवानो छे तो आप  
जल्दी त्यां पधारो ! राजानी आ आशा दूत अंगीकार करी पोताने चेर गयो, घेर जहने पोताना कोटुंचिक पुरुषोने बोलावी चार घंटा  
बांधेला घोडावाळ्या रथने तैयार करी लाववा जयानुं. कोटुंचिकपुलोए लावेला रथ पर वेसी आयुधो अने शखोवाळा धणा पुरुषो  
सहित ते दूत पंचाल देशनो सीमाडो उलंघन करी सौराष्ट्र देश विषे द्वारका नगरीनी बहार कृष्णमहाराजा—वासुदेवनी बहारनी सभामां  
जह उतारो करी पगो चालतो कृष्णवासुदेवनी पासे गयो, अने कृष्णवासुदेव विगेरेते मस्तके अंजलि जोडी स्वयंवर सम्बन्धि सर्व वृतान्त  
कही सबैने पशाचानी विनंति करी. आ अवण करी हर्षित ययेला कृष्णमहाराजे तेँ सन्मान कर्युं यावप तेने विदाय कर्यो. कृष्ण-

द्वितीय-  
विमागे-  
श्रीअपरकं०

॥ १६ ॥

चाउदेवे, समुद्रविजय विनोरे राजाओ महासेन विनोरे तेम वीजाओनी साथे हस्तीरल उपर वेसी कांपिल्यपुर नगर तरफ प्रयाण कर्यु-  
हुपदराजाए—चीजा दूतने हस्तिनापुर नगरे युधिष्ठिर आदि पांच पुत्रो सहित पांडुराजानी, दुर्योधन आदि सो माहोनी, गांगो-  
पिदुर-द्रेषण-जयदथ—शकुनी-कर्णी अने अश्वयामानी पासे विनंति करवा मोकल्यो, चीजा दूतने—चम्पानगरी विषे अंगराज कृष्णनी,  
सेहमराजानी अने नंदराजानी पासे विनंति करवा मोकल्यो, चोथा दूतने शुक्किमती नगरी विषे दमधोपता पुत्र, पांचसो भाइओथी परि-  
वरेला शिशुपाल राजानी पासे विनंति करवा मोकल्यो, पांचमा दूतने—हस्तिश्चर्षीण नगर विषे दमदंतराजानी पासे विनंति करवा मोकल्यो.

छाडा दूतने गयुरा नगरी विषे धर नामगा राजा पासे विनंति करवा मोकल्यो, सातमा दूतने राजगृहनगर विषे जरासंघना पुत्र  
सहदेवराजानी पासे विनंति करवा मोकल्यो, आठमा दूतने कौहिन्यनगर विषे भीमकल्या करवा मोकल्यो, दशमा दूतने वाकिनीं गाम—आकर  
नवमा दूतने विषाटनगर विषे सो माहोसहित कीचकराजानी पासे विनंति करवा मोकल्यो, अनेक दूतोए दुपदराजानी  
अने नगर आदिमां विनंति करवा मोकल्यो, अने सर्वेने स्वयंवरमां पश्चारवानी विनंति करवा कर्णु, दरेक दूतोए तेवार पक्षी  
आ आजा स्वीकारी, दरेक दूतो दुपदराजानी आज्ञा प्रमाणे गया अने तेजोए ते प्रमाणे दरेक स्थाने विनंति करी, तेवार पक्षी  
हजारो राजाओ कांपिल्यपुर आववा लान्या।  
द्रौपदीनो स्वयंवर मंडप—

दुपदराजाए कौटुम्बिक पुलयोने बौलाई आज्ञा करी के—तमे गंगानदीनी समीपमां एक सेंकडो थांभला अने पुत्रकीओयी थोभतो  
स्वयंवर मंडप बनावो अने वासुदेव विनोरे हजारो राजाओ माटे आवासो तैयार करो ! कोडुम्बिकपुरुषोए दुपदराजानी आज्ञा भगाणे

मर्वे तैयार कर्युं देश देशथी आवेला अनेक सुभटो सह वासुदेव विग्रेरे राजाओं योग्य सम्मान करी तेमने उतरवा आवासो अप्यां।  
 पोत-पोताना आवासोमां प्रवेशोला कृष्णचासुदेव आदि राजाओ विग्रेरे आसन पर वेठेला अने शयन पर सुतेला सुता सुता गंधों पासे  
 गायनो गवडावता तेम नदो पासे नाटको करावता आनंदपूर्वक राखा छे। अने हुपदव्युतिए कौदुम्बिक पुल्यो मारफते मोकलावेल-  
 अशन-पान-खादिम-स्वादिम तथा चार प्रकारती-सुरा आदिनो तेम पुण्यो, वज्ञो, गन्ध-माला-अलंकारोनो मोगदटो करे छे।  
 ते वारपछी हुपदराजाए कौदुम्बिकपुल्यो मारफते कांपील्यपुरनगरमां द्वैपदीनो आवतीकाले प्रातःकाले स्वयंवर छे तो सर्वे पशाराखो  
 अने सहुए पोलाना नामयी अंकित आसन विषे पशारी-द्वैपदीनी आववानी राह जोशो। तेवी उद्घोषणा करावी। अने कौदुम्बिक-  
 पुल्योने वोलवी-स्वयंवरमंडपमां पाणीनां छांटणां छंटान्यां, संमार्जित करावी लीपावी सुगान्धी द्रव्योथी सुगंधित करावी,  
 पांचवणेनो पुण्यो-कालागरु, शेषकुंदुक अने तुरळक विग्रेरे घृणोथी मध्यमधायमान स्वयंवर मंडप बनाव्या अने मांचाओ वंधान्या।  
 स्वयंवरमंडपमां वासुदेव वरेरे आवी देशताना नामथी औपदीनी राह जोका लाय्या, अने हुपद-  
 राजाए पण त्यां आवी सर्वेने जय-विजयथी वधाव्या।

शेषु राजकन्या द्वैपदी स्नान करी गृहदेवतानु पूजन करी मसीतिलकादि कौतुको अने दुवादि मंगलकार्यो करी मांगलिक वस्तो  
 पहेरी घरदेरासर विषे जह जिनपूजा करी, दब्याभावस्तवने स्तवी ममन्ते वंदना-नमस्कार कंर्या पछी अन्तःपुरमां आवी। त्यां अंतेपुरीए  
 मेगा मली द्वैपदीने मर्वे अलंकारोथी विमृष्पित करी पागां नूपर पहेराव्यां। द्वैपदी दासीओथी परिवरी ज्यां वहारनी समा हती त्यां आवी  
 अने चार पंटायाला अश्वथी जोडेला रथ विषे घाँटीमाता अने लेखिका दासी सह वेठी। आ समये थृष्णुम् नामना तेना बडीलचन्धुए।

द्वितीय-  
विमाने  
श्रीअपरकं०

पांडवो  
साथे  
लग्नादि  
किया ।

तें सारथीपुण् कर्तुं कांपील्यपुनरनगरती मच्ये थइने रथमां बेठेली द्वौपदी स्वयंवरमण्डपनी बहरै रथ उभो राखी नीचे उतरीने पोताने यालपणाथी रमाडनार धावमाता तथा लेसिका-( लखनारी ) दासी साथे स्वयंवरमण्डप विषे प्रवेश कर्यों प्रवेश करतानी साथे वे हाथ जोडी, बासुदेव विगेरे हजारो राजाओने नमस्कार कर्या, त्यारबाब घाटला-मल्हिका-चंपक विगेरे पंचवर्णोना पुण्योथी शोभतो पुण्य-माहानो सुगन्धीदार दहो द्वौपदीए प्रहण कर्यों।

पांडवो साथे लग्न.

॥ १७ ॥ ते चार पड़ी-कीडा करावनारी शावभाताए डावा हाथमां दर्पण राख्युं, अने ते दर्पण विषे प्रतिविष्व पडता अनुकमे दश दसारे बिनोरे राजाओने जमणा हाथे द्वौपदीने देखाडती ते ते राजाओना मात-पिता-वंश-सत्त्व-सामर्थ्य-गोत्र-विक्रम-कान्ति-कीर्ति-शान-रूप-यौवन-गुण-लावण्य-कुरु अने शियल विगेरेणुं वर्णन घावमाता करती ते श्रवण करती द्वौपदी हजारो राजाओने पूर्वे कोरला नियाणना प्रवामे ओकंकाती उयां पांच पांडवो छे त्यां आवीने पांचे पांडवोने द्वौपदीए पुण्यनी\* माला-वरमाळाकबडे चोतरफारी बीटी दीया अने द्वौपदी बोली, “ आ पांच पांडवो में वर्या ! ”

त्यारबाब वासुदेव विगेरे हजारो राजाओ भोल्या, अहो ! द्वौपदी राजयकन्या सारं वरी एम कही स्वयंवर गण्डपनी यद्यानीकड़ी पोतपोताना आचासो विषे आल्या अने शृष्टुग्नकुमारे पांचपांडवो तथा द्वौपदीने पाटला उपर बेसाडाबी, कांगोपील्यपुर नगर मच्ये स्वमुक्तनां पृष्ठपुग्नकुमार लह गया, ते चार पठी द्वौपदराजाए पांचपांडवो तथा द्वौपदीने पाटला उपर बेसाडाबी, चोताना कठउओनहे मञ्जन काराबी, अग्नि होमनी किया करावराकी, याकर त्रोपक्षीनो पांच पांडवो साथे इस्तमेलाप ( लग्नकिया ) करावयो,

तुपर राजाएः कन्यादत्तनां आठ कोटि हिरण्य, पृथुं धन, सोंतुं, तेम वासीओ विनोरे आधुं अने वासुदेव कोरे राजाओंतुं सम्भव करी  
 विश्राप कर्या॒ रायापक्षी पांडुराजाएः वासुदेव विनोरे हजारो राजाओने वे दाय गोढी आए सबै नाया पर उपकार करी आ लानकदेवमन  
 उपर हस्तिनायुर नगरे जहरी पशारबो !। तेमी विनति करी. आयी मर्वे राजाओ जवा वैयार थया. ते वार पछी पांडुराजाएः कोडुनिचक  
 पुछोने इस्तिनायुरे सात मञ्जनाना पांग महेठो वैयार करापका मोकल्या, तेयोऽप्य यद यद जल्दी धन्वि महेठो तेयार कर्या॒ रायाचाद  
 पांडुराजाः, पांच पाण्डो अने द्वीपदी देवी सहित अष्ट-हायी विनोरे सेन्य सहित त्यायी नी छाडी इस्तिनायुर नगरे आन्या अने पांडुराजाएः  
 आना पृथा वासुदेव विनोरे हजारो राजाओ नाटे कोडुनिचकुलो पाढे आगासो तेयार करावी, आरना एगा वासुदेव विनोरे  
 इगाहे एगाशेतुं भग्नान—युधिष्ठीर करी यथायोग्य तेकने आगासो आया, अने तेओने योग्य एगा आदारो—यामी विनोरे कोडुनिचक-  
 कुलो गाये मोकल्या. पांडुराजाएः पाचपांडो अने दोरदी देवीने वाजोड उर वैसाडी कलगोपाडे ल्लात कराफी ल्लात सम्बन्धी मंगल-  
 किया छाडी ल्लात पर पापोड राजाओंतुं योग्य सम्भान करी रिशय कर्या॒ ते वार पठी पांचो द्वीपदी देवीनी याये अन्तःपुरना  
 परिवार विनित एक एक द्विमना चारा ब्रगाणे योग भोगवता विनवा लाया.  
 नारर मुनितुं आगमन-आपाङ्कता ग्रनि गमन.

एक लागो लांर लाऊडो-कोडीदी—अने द्वीपदी पांडुराजा परिवार सद् अन्तःपुरना पांडुराजा निशमन विणे देता  
 दता, ते लागो देवा रामा॒ अति अदक-विनीत लागना पन इदय विष महिन, एक व्रशचर्येत धारण करनाने लह मध्यस्थित्याने पामेता,  
 देवगार आदिलोने द्वाला लागे तेग, ल्लागार-असंद-उग्रल वृष्णे पहेला, वशस्तेते फाँतुं मुगचर्य धारण करेल, लायमां दंड

द्वितीय-  
विभागे-  
शीघ्रता-  
समर्पकयोहुं  
अन्तःपुरान् ॥

नवाही-  
इ० श०  
भीजाता-  
समर्पकयोहुं  
अन्तःपुरान् ॥

अने कमण्डल रखेला, जटारुपी मुकुटवडे शोभता, रुद्राक्षनी माङ्गलुपी आभरणी धारण करेला, मुंज जातिना धासनो कंदोरो पहेरेला, हाथगां कच्छपी नामनी वीणाने धारण करेला, संगीतना वेमी, आकाशगमन करवानी शकि होवायी टूटी विषे बाह्य अमण करनारा, अने आवरणी, अवतरणी, उत्पत्तनी, छेणी, संकामणी, अभियोगिनी, प्रज्ञिति, गमनी अने स्तंभिती आवी घणी विद्यावरनी ॥१८॥ नारदनुं आगमन निषुण होवायी नेमनी कीर्ति प्रसिद्ध हती, वलदेव, वासुदेव, तथा मधुमन आदि कुमारोने प्रिय, कलह, युद्ध अने धण लोकोने कोलाहल थाय ते प्रिय छे जेने एवा, मांडन बोलवानी इच्छावाला, युद्धो जोवामां रसिक, वीजाओने कलह-करावी असमाधि करावा आवा अनेकमध्यकारना युणवाला नारदनामना मुनि प्रणाल्याने फरता फरता हस्तिनापुरमां आवी अत्यंतवेगायी पंडुराजाना महेलामां उत्तर्या, पंडुराजा-पांच पांडवो कुन्तादेवी सह आसनधी उमा यथा, अने नारदक्रहिपिनी सन्मुख सात आठ पगला गया, तेम कंदना-नमस्कार करी महापुरुषने योग्य आसनबडे आमन्त्रिया, नारदक्रहिपिनी सूर्यिविषे परणीनां छांटणां छांटी, दर्मने ते पर पाथरी तेना विषे आसन कर्यु, अने नारदबी ते आसनपर बेठा. वेसीने पंडुराजाने तेमना तथा अन्तःपुराना कुशल समाचार पुछ्या, पंडुराजा विग्रे ए तेमनो आदर सक्कार कर्यो।

पिन्नु-असंयत, अविरति, पापकर्मनां पचक्खाण नहि करेला, समकित नहीं पामेला एवा नारदने जाणी द्वौपदीदेवीए नारदजीने बन्दना-नमस्कार-आदर के सक्तकार न कर्या, सन्मुख उमी पण यह नहीं, आधी नारद मनमां विचारवा लाग्या के अहो आ द्वौपदी योहाना लपवडे अने पांच पाण्डवो रुपी पतिवडे अभिमानी येयेली होवायी मारो आदर करती नपी, याक्षर सेवा करती नपी, माटे ऐं कंहक अश्रिय कहने आंखुं चिन्तकी, जवा माटे पंडुराजानी रजनी रजा लह, आकाशमार्गे गमन करता लक्षणसमुद्रमध्ये थई पूर्व

सन्मुख जातं धातरीशुण्डनी पूर्विदिशामां आवेला दक्षिणार्थं भरतदेवतिम् उपरकं का राजधानी विषे सातसो राणीओ छे जेने एवा पञ्चनाम नामना राजना महेलमा उत्तर्या, आई पाण्डुराजानी लैम तेमनो आदर-सत्कार पञ्चनाम राजाए क्यों, अने पोतानी अन्तः-पुरीना रूपयाँ आश्चर्यं पामेला पञ्चनाम राजाए पूल्युं के-आप घणी अन्तःपुरीमाँ जाव छो तो मारा करतो अचिन्त रूपवाङ्मी अन्तेपुरी कोह ठेकागे तमे बोइ छे ! नारदजी कंदिक हस्ता कहेवा लाया के द्वौपदीना एक पाना अंगुठाना रूपना सो मा माने पण तारी अन्तःपुरीनी छीयो नयी. तुं तो कुवाना देडका जेवो हुं ॥ आ प्रमाणे नारदजी कहीने रजा लहाने चारस्या गया.

### दोपदीनुं अपहरण—

द्वौपदी पर आसक्त थेला पञ्चनाभराजाए अहुमनो तप करी आराधी पूर्वसंगतिक नामता देवने बोलाव्यो, अने कहुं के-हे देवागुपिय । तमे द्रौपदिने गने लावी आपो । एम हुं इच्छुं हुं. पूर्वसंगतिकदेवे पञ्चनाभराजाने जणाव्युं के-एवं थयुं नयी, थयुं नयी तेम थो नयी के-“द्वौपदी देवी पांच पाण्डवोने मूर्खीने बीजा कोह साये कामझोग मोगवती छती विचरे ॥” छतां तारं पिय करवा माटे द्रौपदिने जहरी अही लावुं हुं एम यही हस्तिगाहुरे जह ज्यां युधिष्ठिर राजा द्वौपदीदेवीनी साये महेलमी आगाधी खिरे सुना हवा, त्यां गयो अने द्रौपदीने अवस्थापिनी निदा आपी हरण करी पञ्चनाभराजाना अशोकवनपिये इथापी, अवस्थापिनी निदा सुडरी, पञ्चनाम-राजाने सुवर आपी, पञ्चनाभराजाने कहुं के-हद्ये आ दृक्किळतमां तने जे मुरकेली थाय तेमां हुं मदद करीय नहि ! एम कही पोताना स्थाने देव चालयो गयो.

योडीगार पटी जाप्रत थयेली थोपदीदेवी पोताने अन्यस्थाने जोई विचारवा लागी के-कोइ देव-दानव यायत् गंधर्व कोइ

द्वितीय-  
विमाणे  
श्रीअपरकं ७  
द्वैपदीतुं  
अपहरण ।

॥ १९ ॥

अन्य राजनी अशोकचाटिका विष सहरीने मने लाल्यो छे. आम विचार करवामां ज्यां गरकान थह त्यां तो अलंकारोर्यी विस्मित  
थयेओ कने पोताना अनःपुरायी परिवरेलो पचानामराजा आल्यो अने द्वौपदीने कहेगा लायो के-तुं चिन्ता न कर । मै तारुं अपहरण  
करान्तुं छे । तुं मारी साथे मोग मोगव । द्वौपदी देवीए तेना जवाखमां जगाव्युं के-हे देवानुप्रिय । जंबुदीपना भारतक्षेत्र विषे मारा  
पतिना आता कृण वासुदेव छे, ते जो छ मास उधीर्ना झारी व्युरि नहीं आवे लो हुं तमे कहेशो तेवी आजामां हुं रहीय-वर्तीय ।  
द्वौपदीनी आ यात अंगीकार करी पचानामराजाए कन्याओना अन्तःपुरामां दोपदीने राखी. कन्याओना अन्तःपुरामां रहेली  
द्वौपदीदेवी निरंतर छहुनो तप करे छे, अने पारणे आंविल करती तपकर्मवडे आसाने भासती थकी रही छे.

द्वौपदीनी शोधमां पाँडवाहि—

या तरफ अंतर्मुहूर्ते पछी जागेला युद्धिष्ठिरे पोतानी पासे द्वौपदी न जोवायी शश्यामांयी उभा थह चोतरफ शोधखोळ करी परन्तु  
द्वौपदीनी माहिति न मळवायी पांडुराजा हता त्यां आल्या अने द्वौपदीदेवीने कोइ देव आदि हरी गयो छे माटि तेनी गवेषणा करवाने  
दच्छुं तेम कह्यु. पांडुराजाए पण कोटुम्बिक पुरुषोने कह्ही आयोषणा करावी मोहुं इनाम जाहेर कर्यु छहां कंह पचो न मळ्यो, त्यारे  
पांडुराजाए कुंतीदेवीने द्वारकानगरीमां कृष्णवासुदेव पासे तपास करायवा भोकली. कुंतीदेवी हस्ति पर वेसी द्वारकानगरीना उधानमां आवी,  
हस्ति परथी उतरी कोटुम्बिकपुरुषो मारफते कृष्णवासुदेवने खबर आपी के तमारा फोइ कुंतीदेवी उधानमां आव्यां छे, तेलो तमारा  
दर्दिननी इच्छा गर्वे छे. कृष्णवासुदेव आ समाचार श्रवण करी हस्ति उपर वेसी तुरत कुंतीफोइनी पासे गया अने कुंतीफोइने पगे  
आगी दायी पर वेसाई, बन्ते (कुंती अने कृष्ण) कृष्णवासुदेवना महेल आल्या; महेल विषे आवी भोजन आदि कर्या पछी कृष्णवासुदेवे

नवाही-  
१०५०  
श्रीकृष्ण-

॥ १९ ॥

कुंतीकोहने अर आगमननु प्रयोजन पूछ्युं, कुंतीर दोपदीना अपहरणार्थी यावत् शोर करतां नहीं प्राप्त थवानी हकीकत कही बने  
 शोधी आपवा जणन्युं. कुण्णवासुदेवे फहने जणाव्युं के हुं जो कोइ स्थाने तेनो परो पामुं तो परो मवतां अथवा अर्धमरतमांयी  
 छ्वाग हाये शोधी लावीश. आम कही कुंतीकहनुं सत्कार-सन्मान कहुं, अने जवा माटे रजा आपी, कुंती पण हस्तिनापुर नारे  
 पाठां आरी गया, हृष्णवासुदेवे पोताना मणसो पासे चपास करावना मांडी, एवामां एक वस्तव नारद त्यां आव्या. तेमनो यथायोग्य  
 सलकार कर्यो अने उपरे नारदजीए कुशवल्ला पूठी त्यारे द्वैपदीना हरणारी वात कहीते पूछ्युं के समे घणा स्थाने करो छो तो  
 तमे कंद मन्नर-परो जाणो छो ! नारदजीए कहुं के-घातकीश्वण्डना दक्षिणार्द्धं भरतक्षेत्र विषे अपरकंक्षा नामनी राजधानी विषे पद्मनाम  
 नामना राजना महेलमां पूर्वे मे जोगेली एवी द्रोपदीर्खी हही. कुण्णवासुदेवे नारदजीने कथुं के-आ कर्य तमारुन जणाय छे.  
 नारदजी तो आ श्रवण करतांज त्यांयी आकशमार्गे चाल्या गया।

तेवर पछी कुण्णवासुदेवे हस्तिनापुरनारे पोतानो दूत मोकली द्रोपदीनी माहिती जणावी अने चबुरंग सेना सह धोंच पांडवोए  
 पूर्व दिलाना समुद्रो कठि आपी हारी राह जोता रहेहुं तेवी खवर आपी. पांडवो पूर्वे समुद्रता काठि चबुरंग सेन्य सहित जहने  
 छ्वागसुदेवनी राह जोग राग्या।

कुण्णवासुदेव पण पोतानी चबुरंगसेना सहित पूर्वसमुद्रता किनारे आज्या अने पांचपाँडवोते मङ्ग्या; ते पछी गोपयशालानो  
 परेली अडगानो तप करी उद्दिष्टदेवनी आराधना करी प्रत्यक्ष कर्यो अने द्रोपदीनी मददे जवा पांच पांडवो सह अने लवणसमुद्रमां  
 मार्ग आपे तेहुं जणाव्युं, सुहितारेवे जणाव्युं के-जैसे रिते पद्माभराजाए पूर्वसंगतिक देवमारफते द्वौपदितुं अपहरण कहुं छे तेही

द्वितीय- विमाने  
विमाने- श्रीअपरकं० सुस्थित-  
श्रीअपरकं० देवनु- कथन ।

रीते हुं दोपदीने उपाड़ी हस्तिनापुर विषे मुकुं : के ते पद्मनाभराजने तेना नगर, सैन्य अने बाहन सह लवणसमुद्रमां नाहुं ? आम ज्यारे सुस्थितदेवे पृथ्वी लयरे कृष्णवासुदेवे जणाव्यु, हे देवानुप्रिय ! हुं तेम न कहू, पण अमने छने रथ सह जवा भाटे भारी आप ! हुं पोतेज दोपदीदेवीनी मददे जहश. आम कहेवारी उसुधितदेवे समुद्रमां जवातो भारी आप्यो. कृष्णवासुदेवे तथा पांच पांडवोए सेन्यने पांच मोकल्हुं. अने छण रथमां वेसी लवणसमुद्रमां यह अपरकंका राजधानीना उद्यानमां आवी, रथने स्थापन कर्या, अने दारक नामना पोताना सारथिने दूतपणे, पद्मनाभराजा पासे मोकल्ह्ये.

पद्मनाभसाथे युद, अनं विजयादि—  
५ २० ॥

दारकसारणि, दृत थहने अपरकंका राजधानीमां प्रवेश करी पद्मनाभ राजा पासे गयो अने वे हाथ जोड़ी जय शब्दयी वघावी बोल्यो के-हे राजन् ! आ मारी पोताना विनयनी किया छे, हवे आ भारा स्वामिना पोताना मुखयी कहेली तमने आज्ञा छे ! एम कही जल्दी नेत्र लाल करीने कोथ करीने पोताना ढावापगे तेना पादपीठने बघावी भालाना अग्रभागवडे लेल आप्यो अने कृष्णवासुदेवे दोपदीनी मददे आव्यानी हकीकत जणावी. दोपदीने आपो !! अथवा युद्ध माटे तेयार थाव !!! तेम जणाव्यु. दारक सारथिना आ कथनयी नेत्र लाल थयेला छे जेना, अने कपाळमां झुक्किट जण वक्कियावाली पडी छे जेने एवा पञ्चनामराजाप, कर्णु केहुं दोपदीने पाली नहीं आयुं ! जा युद्ध करवा तेयार थहने नीकहुं छुं, हे दृत ! फक्क राजनीतिमां दृत अवध्य छे तेथी तेने मारतो नथी एम कही मालछालाद्वाराची काढी मुख्यो, दृते जहने सर्व वीना कृष्णवासुदेवने काढी, युद्धने भाटे आवाता पद्मनाभने जोह कृष्णवासुदेवे पांच पांडवोने कर्णु के-हे चालको ! तमे पक्षनामी साथे युद्ध करयो ! के हुं युद्ध कहुं अने तमे जोयो ! आना जवाबमां पांच

पांडवों कर्यु है ल्लामि ! असे युद्ध करायुं, तमे दूर रहीने जुओ.

तेवापछी पांचे पांडवो शब्दोंकी सब्ब यह रथमां देसी पद्मनाभराजानी समीपे आवी युद्ध करवा लाग्या पद्मनाभराजाए पांचे पांडवोंने शब्दोंकी सब्ब यह रथमां देसी पद्मनाभराजानी तोड़ी नाल्हो. छजा-पत्रकाओंने तोड़ी नाल्ही नशाही मूक्या, कृष्णवासुदेव आ तोइने शब्दोंप्रहारो कर्या अने तेमना अहंकारने तोड़ी नाल्हो. छजा-पत्रकाओंने तोड़ी नाल्ही नशाही मूक्या, कृष्णवासुदेव आ तोइने तेमने मळ्या अने पूछायुं के तमे शुं वोलीने युद्ध करवा लाग्या हता ! पांडवोए जणाव्युं के हने जणाव्युं के “ आने अथवा पद्मनाभ राजा ” एम कही युद्ध करतां आम वन्युं छे. कृष्णमहाराजे कर्युं के तमारे “ असे राजा पद्मनाभ राजा नहीं ” फही तमे युद्ध कर्युं होत तो आम थात नहीं. एम कही कृष्णवासुदेव पोते युद्ध करवा सज्ज यह “ हुंज राजा !!! पद्मनाभ राजा नहीं ” एम प्रतिशा करी रथ पर आखूद यहेने ज्यां पद्मनाभराजा हतो त्यां आव्या. आवीने पांचजन्यशंखने पोताना मुम्बना वाष्पुयी वगाल्यो, ते गंधना अवाजधी पद्मनाभराजावुं श्रीजा मागनुं सेन्य हणायुं याचते नाशी गंयुं.

तेगापछी कृष्णवासुदेवे सारंगनामनुं पोतानुं धनुष हाथमां लेह तेनो टंकारव कर्यो, टंकारवने श्रवण यतां पद्मनाभराजानो सैन्यनो बीजो-श्रीजो गाग हणायो अने नाशी गयो. ला लोह पद्मनाभराजा पराकमरहित थयो यक्षो अपरकंका राजधानीमां पैकी गयो अने दरवाजा वना करी दीया. आयी कृष्णवासुदेव अपरकंका राजधानीए आव्या अने दरवाजा वन्य जोह रथमांथी तीचे उतरी वैकिय-समुद्रयात करी नरसिंहरूप विठुर्णी मोटा शब्द रो करता जोसपूर्वक परानुं आक्षफलन करवा लाग्याधी अपरकंका राजधानीना किल्हा-दरवाजा-शल्या-शल्या-तोएणो मोटा मोटा महेल जमीनदोहस्त थया. पद्मनाभराजा आ सिथिति जोह मयभीत चनेलो दौपदीदेवीना शरणे गयो. दौपदीदेवीप्रको आपी जणाव्युं के-हे देवानुप्रिय ! तमे स्नान करी एक पहेलें अने बीजुं ओढेलें एम वे वस्त्रो जलन्दे नीरतता

द्वितीय- विग्रहे श्रीअपरकं० द्वौपदीने अरणे ॥ २१ ॥

राती पहरेला बखथी नीचे मुल राखी अन्तःपुरनी राणीओ, प्रथान सहित ऐष रत्नं नेट्युं लेह गरि आगल करी कृष्णवासुदेव पासे जाओ, उभयपुलो प्रणाम करनारा पुलो पर प्रसल थनारा होय छे. द्वौपदीदेवीना कद्या प्रमाणे सर्वे करीने कृष्णवासुदेव पासे शरणे गयो, पगो पडी पोतानी मूलनी क्षमा याची द्वौपदीदेवीने पाढी सोषी. द्वौपदीदेवीने रथमां वैसाडी उयां पांडवो हता त्यां आवी कृष्ण-वासुदेवे पाच पांडवोने पोताने हाये सोषी. ल्यारपछी पांच पांडवो सहित कृष्णवासुदेव रथमां वेसी लवणसमुदमध्ये यह जन्मदीपना भरतसेत्रे जवा माटे चाल्या.

प्रथानामराजाने देशनिकालनी यायेली धिक्षा—

ते काळे ते समये पातकीखण्डना पूर्वदिक्षाना अर्धमागविषे भरतसेत्रेमेविषे चंपा नगरी छे, त्यां पूर्णभद्र नामनुं चैत्य हहुं. त्यां मुनिचुक्रतनामना तीर्थकरनी पर्यादामा कपिल नामना वासुदेव घर्म श्रवण करता हता, ते समये शंखनो शब्द रांभली अध्यवसाय ययो के-गुं आ भरतसेत्रमां चीजो कोइ वासुदेव उत्पन्न ययो छे के-जे मारासमान शंखने वगाडे छे : ते समये मुनिचुक्रत तीर्थकरे कपिल वासुदेवने कधु के तमने शंखनो शब्द श्रवण करी एवो विचार आव्यो के शुं आ केक्रमां चीजो वासुदेव उत्पन्न ययो छे : ते सत्य प्रमुना पक्षनो उत्तर हा प्रमु ते सत्य छे. मुनिचुक्रत तीर्थकरे जणाङ्नुं के-है कपिल ! वासुदेव ! आ थयुं नथी, थाय नहीं अने थनो पण नहि, के एक युगमां अथवा एक समयमां वे तीर्थकर, वे चक्रवर्ती, वे वलदेव अथवा वे वासुदेव उत्पन्न थाय, परन्तु है कपिल ! वासुदेव ! जन्मदीपना मरतमांयी हस्तिनापुर नगरथी पञ्चलामराजा ए पूर्वसंगतिकदेवद्वारा द्वौपदीदेवीनुं हरण कराङ्नुं छे, तेथी द्वौपदीनी मददे पांच पांडवो सहित कृष्णवासुदेव छाहा रथमां वेसीने आव्या छे, तेओ कृष्णवासुदेव पञ्चलामराजानी साथे युद्ध करे छे, तेमां थतो

आ शंखनो शब्द तारा अवणमाँ आयो हे. आ श्रवण करी श्रीकृष्णसुवतमसुने वंदना—नमस्कार कर्या अने कहुं के—है प्रभु ! हुं जहने पुरुषोमां उचम पवा कृष्णवासुदेवतां दर्शन कर्न, प्रभुए कहुं के—है कपिलवासुदेव ! आदुं थयुं नथी, याय नहीं अने यशो पण नहीं. के एक अरिहंत वीजा अरिहंतने, एक चक्रवर्ती वीजा वलदेवते अने एक वासुदेव वीजा वासुदेवते के एक तो पण है कपिल ! वासुदेव ! लक्षणसमुदना मध्यभागे यहने जता पवा ते कृष्णवासुदेवती शेत अने पीली एवी छवजाना जुए, तो पण है कपिल !

ते वार पछी कपिलवासुदेव प्रभुने वन्दना—नमस्कार करी हस्ति पर बेसी समुद्रकाठि गयो अने लक्षणसमुद्र मध्ये यह जता पवा कृष्णवासुदेवती छवजाना अम्रमागने जोयो अने शंख वगडयो. कृष्णवासुदेवते ते श्रवण करी पोताना पञ्चजन्य शंखने वगडयो एस करी शंखना अवाजो द्वाराए मेलाप कर्यो.

ते वार पछी कपिलवासुदेव अपरकंका नगरीए गया अने परो विग्रेर पही गयेला जोया, पञ्चगाम राजा तेमनी पासे आळ्यो अने कृष्णवासुदेवता आगमनती वीजा आमूलयी जणावी, तमने पण ए कृष्णो न गणकार्या ! कपिलवासुदेवे पञ्चनाभ राजाने हदपारनी विक्षा करमावी अने तेना स्थाने पञ्चनाभ राजाना पुत्रो अभिषेक करावी राज्यगादीए वेसाळ्यो.

पांच पांडवोने देशनिकाल.

आ वाजु कृष्णवासुदेवे लक्षणसमुदना मध्यभागे यह गंगातदीनी पासे आळ्या ल्यारे पांच पांडवोने कहुं के—तमे गंगानदी उतरो !, हुं लक्षणसमुदना अधिष्ठिति उस्तितदेवते मळी आदुं हुं. कृष्णमहाराजानी आज्ञा पामेला पांचे पांडवो गंगानदी हस्ती ल्यां आळ्या अने

द्वितीय-  
विमांगे  
श्रीअपरकं०

॥ २२ ॥

एक नानी होड़ी शोधी काढ़ी तेमा बैसी, नदी उतरी सामे कठिं गया. अने कृष्णचासुदेव पेताना मुजाचलभी गंगा महानदी उतरवा समर्थ छे के नहीं ते जोवा माटे पेली नावडी संताडी दीधी. कृष्णचासुदेव सुस्थितदेवने मळी गंगा महानदीए आब्या अने चोतरफ नावडीनी तपास करवा लाग्या परन्तु नावडी मळी नहि. आथी एक हाथे सारथि घोडा सह रथने ग्रहण कर्यो अने खीजा हाथयी साडी वासठ योजन विस्तारचाळी गंगा महानदी उतरवा लाग्या. उपमांगे आवतां परसेवो थयो अने थाकी गया. आथी विचार आब्या के-अहो पांच पांडवो महाबलवान छे, आवडी मोटी नदी उतरी गया. कोइ पण कारणे पद्मनाभराजने तेओए हण्यो नहीं अने नसाडी मध्यो पण नहीं, आ वसते गंगादेवीए कृष्णचासुदेवना परिणाम जाणी ते जायाए कृष्णमूर्मि करी तेना पर कृष्णचासुदेव योडीवार थाफ उतरी आगल नदी उतरी यावत् पांच पांडवोने मळया अने तेमना वलना बखाण कर्या त्यारे पोते जणाण्यु के—अमे होडीथी उतर्या हता परन्तु यह जोवा नावडीने छुपावी तमारी राह जोता अहीं रणा छीए। आ श्रवण करी कोष पामी कपालमां भृकुटी करी कृष्णचासुदेव कहेवा लाग्या के—अहो। ज्यारे भैं वे लास योजनना विस्तारचाळा लवणसमुद्रने उतरी पद्मनाभने हण्यो याचत् नसाडी मुख्यो अने अपरकंका भांगी दोपदीने हाय करी त्यारे तमे ग्वां माहात्म्य जाण्यु नहीं, हवे तमे जापशो। आम बोली लोहदंडथी पांचे पांडवोना रथने चूरी नाल्यो अने देशनिकालनी आज्ञा करी, जे स्थाने आ आज्ञा फरलावी ते स्थाने रथमर्दन नामतुं तीर्थ यांउ. कृष्णचासुदेव पेताना स्कंधाचारने मळया अने ते स्कंधाचार सहित द्वारकानगरीए आब्या.

पांडवोए पांडुमधुरा नामनी नवी बसावेली नगरी.

नवाही-  
३० ३०  
श्रीज्ञाता-  
षार्पकथाहि

॥ २३ ॥

पांडुराजाए ठपको आप्यो अने कुंतीदेवीने आ हकीकत जणावीने द्वारका भगरीए कृष्णवासुदेव पासे भोकली। कृष्णवासुदेव पासे जवा कुंतीदेवी द्वायी पर चेसी गर्या। पांडुराजायी आज्ञा पामेली कुंतीदेवी द्वारकानगरीना उथानमां आवी, अने कौटुम्बिक पुल्योबडे पोताना आगमननी स्वर कृष्णवासुदेवने आपी। कृष्णवासुदेव पूर्वीनी जेम सन्तुल जह महेले कुंतीफोइने लान्या अने आगमननुं कारण पूछ्युं। कुंतीफोइए आगमननुं कारण जणावर्ता जणावर्तु के हे पुत्र ! तमे यांच पांडवोने देशनिकाळली आज्ञा करी छे। तमे तो समस्य दक्षिणार्ध मरतना स्वामि छो तेथी तेथो क्यां जहने रहे ? कृष्णवासुदेवे कुंतीफोइने जवाव आपतां जणावर्तु के-हे फोइ ! बाहुदेव, बलदेव अने चक्रवर्ती बगोरे उरम पुल्योनुं वचन मिथ्या शाय नही तेथी दक्षिण दिशाना समुद्रकाठे जाय अने पांडुमधुरा नामनी नवी नगरी वसायी रहे, तेम न्हारी दृष्टिमा न आवे तेम रहे, आम करी कुंतीदेवीनो सत्कार करी विदाय कर्या। हस्तिनापुर नारे कुंतीदेवीए आवी पांडुराजाने सर्व हकीकत जणावी अने पांडुराजाए पांचे पांडवाने कृष्णवासुदेवीनी आज्ञा जणावी, पांचे पांडवो ए वात कवुल करी समुद्रकाठे आवी पांडुमधुरा नामनी नगरी वसावी तेमां रहेवा लाग्या।

पांच पांडवोए द्वैपर्वीदेवी माये लीघेली ग्रवज्ज्या।

द्वैपर्वीदेवीने एक पुन जन्म्यो तेनु नाम पांडुसेन पाड्युं। एकसमये घर्मधोय नामना स्थविर पांडुमधुरामां पथार्या। तेमने वांदवा गाटे पर्या नीरुली तेमा पांच पांडवो गया अने घर्मधवण करी घर्मधोपस्थविरने विनंति करी के-अने द्वैपर्वीदेवीने पूछीए, तथा युपराज पांडुसेन कुमारने राज्य पर स्थापन करीए, त्यारपछी आपनी पासे दीक्षा लाइए, आ सांभळी गुरु वोल्या के हे देवातुप्रियो ! यथामुराम पिलंग करायो नही ! पांचे पांडवोए महेले जह द्वैपर्वीदेवीने पूछ्युं लारे द्वैपर्वीदेवीए हुं पण तमारी साथे दीक्षा लाइश तेम

द्वितीय-  
विषाणु-  
श्रीआपकं०

पांडवों  
साथे  
द्वौपदीनी  
दीशा ।

जणाव्युं, ल्यापली पांडुसेनने राज्याभिषेक करी राज्यगादीए इथापन कर्या । पांडुसेन राजाए जल्दी दीक्षाभिषेकनी तैयारी करावी । एक हजार युत्तरोथी उपाडाय तेवी शिविका करावी याकृत् शिविकामां वेसाडी धामधृसपूर्वक श्रीघर्भिरुपथाविर पासे लान्या अने पांचे पांडवों दीक्षा लह श्रमण यद्या । श्रमण थहने चौदपूर्वनो आम्यास कर्यो । यणा वर्षो सुधी छट्ठ-अद्गम-दशम-अर्धमसक्षमण-माससक्षमणनी तपस्याओ करी आत्माने भावता यका विचरे छे, ल्यापली ते इथविर भागवत एकसमय पांडुमयुरा नगरिना सहस्राम्रवनउद्यानयी बहार नीककी विचरना लाया, ते समये श्रीतेमिनाथप्रभु विचरता विचरता सौराष्ट्रदेशमां विचरे छे तेवुं पांडुमयुतिओए श्रवण करी श्रीतेमिनाथप्रभुने बांदवा माटे पोताना गुह धर्मयोप इथविरनी जाशा नागी । पांचे पांडवों केवलज्ञान पामी मोहे सीधाव्या ।

गुरुहाराजनी आज्ञा पामी युष्मिष्टि आदि पांचे पांडुमयुतिविरोए विहार कर्यो । अने गामतुद्याम विचरता हस्तिकल्प नामना नाराना सहस्राम्रवन नामना उद्यानविषे आव्या । युष्मिष्टिरुनि सिवायना चारे उनिवरोए भाससमणना पाणने दिवसे पहेली पोरसीए सहज्यायणन कर्तुं अने चीजीं पोरसीए ध्यान कर्तुं ते पछी युष्मिष्टिरुनिवरनी काज्ञा पामी भिषा माटे फरवा लाया त्यां तेओए श्रवण कर्तुं के श्रीतेमिनाथप्रभु उज्ज्यंतरितिना( रैवताचलगिरिता ) शिखर विषे जलरहित एकमासना अनशनबदे पांचसो ने छन्नीस सायुजो सहित मोहे पथायाँ । का श्रवण करी गोचरी फरता पाला करी उष्मिष्टिरुनिनी समीपां जावी लोबेला आहारपणी आलोची इर्यावटीय प्रतिकमी गोचरी युष्मिष्टिरुनिने देवाढी कर्तुं के-गोचरी अमे श्रीतेमिनाथप्रभुना मोहे सिपाळ्याना समाचार सांभळता पहेला कहोरेली छे, ते आपणे हवे परठवी वह श्रीगंगुंजयपर्वत पर धीमे धीमे बढी मरणनी अपेक्षा रास्या विना अनशन करवुं भेयक्षकर छे ॥ २३ ॥

आ प्रमाणे अन्योअन्य नकी करी विविष्टक गोचरी पठवी श्रीशत्रुंजये आव्या भने श्रीशत्रुंजये चल्या, श्रीशत्रुंजय पर चढ़ीने वे मासांतु अनदान करी केवलज्ञान-केवलदर्शन ग्राह करी सिद्धिपदने पाया.

द्रौपदीसाइडी कोळ करी पांचमा देवलोकमा उत्पन्न यह.

द्रौपदीदेवीए दुखताकार्यानी पासे दीक्षा-प्रव्रज्या लह अगिआर अंगनो अस्यास कर्ये अनेए एक मासांतु अनशन स्त्रीकारी कालयमि पामी पांचमा देवलोकमां-ब्रह्मलोकमां दश सागरोपमगा उठ्हेट आयुष्यवाला देवपणे उत्पत्त थह. श्रीजन्म-आराधनापूर्वक कालयमि पामी पांचमा देवलोकमां दश सागरोपमगा उठ्हेट आयुष्यवाला देवपणे उत्पत्त थह. श्रीजन्म-स्त्रामिए-श्रीकुष्मांस्त्रामिगवन्तने पृथग्यु के हे.मसु ! ते दुपददेव त्यांयी च्यवीने कर्यां जरो : मागवाने कर्यु के-हे जम्बू.। ते दुपद-देव त्यांयी च्यवी महाविदेहक्षेत्रमां उत्पन्न थह सर्वकर्मनो अंत करी मोही जरो.

उत्पन्न—उपनो क्षेत्र घणो कर्यो होय तो पण नियाणना दोपर्यी जो तेने दूपित करणामां आवे तो ते तप मोक्षने माटे यतो नकी. तेम माकिरहितपणे कडवा तुमडांत खराव दान पानेविषे आप्यु तेथी नागश्रीने घणा भव मटकांतु पड्यु. आयो नियाणा विनानो तप करणो तेम सुपाशदानमां भक्ति सहित दान देवुं ते श्रेयस्कर छे.

इति श्रीज्ञातास्त्रुत्वना सोऽमा अध्ययनन्नो स्तरांचा समाप्तः ॥

द्वितीय-  
विभागे  
श्रीअशृङ्गा०  
पूर्वीपर-  
संबन्धादि।

॥ २४ ॥

॥ १७—श्रीअशृङ्गात—अध्ययन सारांशः ॥

पूर्वीपर-संबन्धादि.

नवाही-  
भीष्माता-  
धर्मकथाइँ

सोलमा अध्ययनमां नियाणुं करवायी तेम निदनीयदान करवायी जनर्थी प्राप्ति शाय हे ते क्युं. आ सचरमा अध्ययनमां इन्द्रियोने कावूमां न राखनारेने अनर्थ प्राप्त शाय हे ते जणावे हे—

॥ २४ ॥

श्रीमुष्मास्तिवामि गणधरभगवान् कहे उे के-हे जम्बू ! ते काढे ओते हे समये दृस्तिशिर्ष नामे नार हर्तु. लां कासककेतु नामनो राजा राज्य करतो हतो, तेम ते नगरमां घणा-घणा देशांतर जह वेपार करनारा अने वहाणना साधनथी धंधो करनारा धनाळ्व वेपारीओ हता. एक वस्तर नावचणिकोए मेगा मली विचार करी व्यापर माटे वहाणो लइने लक्षणसमुद्र विवे चाहया. केटलाक गाउ गया त्या हो घणा उत्पातो यवा लाग्या, प्रतिकूल वायुवडे नाचो आमतेम ढोलवा लागी, मुख्य खलासी आवा सफट समयमां मुंझायो अने पोतानुं समुद्र सम्बन्धिनुं ज्ञान पण तेने विस्तरण थर्तु. आ समये पणा ( पावडी चलावनारा ) -हलेसां मारनारा-कूवाना रक्षक, सहना रक्षक रुया सांयात्रिकी मुख्य खलासी पाले आव्या, अने विचारमान येला मुख्य खलासी-निर्यामकने पूछ्या लाग्या के-तमे थुं विचार करो छो : आ प्रश्नना जवायमां निर्यामके जणान्यु के-हे भाग्यशाकीओ । मारी मति खरेतर नाश पामी छे. आ अवण करी सर्वे भयभीत येला इन्द्र-स्कंधविवेरे देवोनी मानवा करवा लाग्या. एक भुहर्ते पछी निर्यामकनी बुद्धि चाली अने समुद्र-शाङ्कना शानने पान्यो अने क्युं के—आपणे कालिकद्विषपनी समीपमां आळ्या छीए तेम सामे देखातो कालिकद्वीप छे. ।

कालिकद्वीपे आगमन।

आ श्रवण करी सर्वे हर्षित ययेला अनुकूल चायुवडे कालिकद्वीप आब्या अने बहाणने लंगारी नानी होडीओवडे कालिक-  
द्वीपमां उत्तर्या, ते कालिकद्वीपमां घणी पवी रुपानी खाणो, सोनानी खाणो, रत्नानी खाणो जोह तेम  
उचम लक्षणवाचा उदा उदा रंगवाचा घणा पुणा पुवा घोडाओ पण जोया। बहाणमांसी उतरेला वेपारीओ विगरेने जोह तेम तेमनी  
गंगधी मय पामता अशी तो त्यांथी नाशी घणा योजन दूर गया, आयी नाववणिको परस्पर आ प्रमाणे वोल्या के आ अखोवडे  
आपणने फांड प्रयोजन नाथी। अहि घणी पवी रुपा विगरेनी खाणो छे तेनाथी आपणां बहाणो मरी लेवा ते कल्याणकारी हे तेम  
खन्यो अन्य नाही करी बहाणो भरीने दक्षिण तरफका अनुकूल चायुवडे गंभीरपोतवहनपटन हवं त्यां आब्या अने गाडाओमां रुपा

आदिते मरीने गाडाओवडे हस्तिशीर्षनगरना उधानमां आवी गाडां छोड्यां।  
किसति मेटणु लेद्यने कनककेतु राजा पासे गया, अने राजने मेटणु कर्यु कनककेतु राजाए तेलोने पूछ्यु के-तमे लवणसमुदगां  
यारेवर प्रयेश करो छो, तो तमे तेमां कोह आश्र्यं जोयु होय तो कहो ! नाववणिकोए कालिकद्वीपमां आश्र्यमृत जोयेला अश्वोत्तु  
घणन कर्यु, तेलोए करेल अर्थना घणनने थवण करी कनककेतु राजाए तेलोने कर्यु के-तमे मारा कौडुम्बिक पुल्यो साये ल्यां जाओ  
अने त्यांथी घोडा लावो। नाववणिकोए कौडुम्बिक पुल्यो साये जवा कवुल कर्यु, पटले कनककेतु राजाए कौडुम्बिक पुल्योने आ  
घोडा पकडवानी तमाम सामग्रीपूर्वक नाववणिको सह कालिकद्वीपे जह घोडा लेह आववा जणाव्यु।

कौडुम्बिक पुल्यो गाडी गाडी तैयार करने तेमां श्रोत्रद्विद्यने प्रिय लागे तेवां घणां एवां वाजिन्नो वीणाओ-वलळकीजो-आमरीओ-

द्वितीय-  
विमागे

सप्त-  
दशाद्य०  
इन्द्रिया-  
धीनाशो ।

॥ २५ ॥

करुणीयों अने मंभा विगेरे, तथा पणा एवा काढ़ना पाटीया बिंगे चित्रेला चित्रो, गुंथेली माळ्हाओ आवी चीजी घणी, एवी  
चकुने बहाली लागे तेवी वस्तुओ, घणी एवी कोछपुट विगेरे ग्राण इन्द्रियने पिय लागे तेवी वस्तुओ, घणी एवी लांड-साकर-  
गोङ्ग विगेरे जिब्दा इन्द्रियने प्रिय लागे तेवी वस्तुओ अने घणा एवा रुधी भेरेलां वलो, रस्लक्ष्मलो, औढवानां वलो, मसरुनी  
गादीओ गादलों बगेरे स्पर्शेन्द्रियने अनुकूल वस्तुओनां गाडां भयां, भेरेलां गाडांने लेइने पोतपट्टण आव्या अने वहाणो तेयर करी  
घणी वस्तुओ वहाणोमां भरीने वहाणो मारफते अनुकूल वायुवडे कालिकद्वीप आव्या, द्वीपना किनारा नजीक वहाणो नांगरी होडीओ  
मारफते यपी वस्तुओ किनारे लाल्या, अने घोडालोना वेस्सवाना-स्थानोए योग्य रीते वस्तुओ स्थापन करी, वाजिन्नो घणाडवा  
हात्या, केटलाक अश्यो आ वस्तुओ विषे मुळां रहित यह भय पासता ते स्थानेथी नाशी गया, अने केटलाक अश्यो आ वस्तुओ  
विष मूळा पाया तेमने कोडुम्बिक पुऱ्योए कपटथी, गळासां-पासामा पायवडे चांच्या अर्थात् पकडीने यांधी लीपा. पकडी लीपेला  
घोडालोने वहाणमा चढावी वहाण मारफते गंभीरपोतपट्ण बन्दरे आवी होडीओ मारफते घोडाओ अने वस्तुओ किनारे उतारी ते  
घोडालोने, वस्तुओने लेइने हस्तशिर्षनगरमां कनककेतु राजा पसे आव्या अने घोडाओ अर्पण कर्या. खुश थवेला, कनककेतु राजा  
सर्वेनु समान करी-सक्कार करी दाण माफ करी जवानी यावत् रजा आपी.

कसायेठा घोडालोने पडेला दुःखो

कनककेतु राजा ए ते घोडालोने शिक्षा आपवा सार अश्वपाले ते घोडाओ अश्वशालमां लेइ जाह  
मुखंपनवडे, कानवंपनवडे, पुळहाना वाळ बांधवावडे, लारीओ वाघवावडे चांच्या, अने खसी कर्या, चोकठा

नवाई-

३० ष०

भीषणा-  
चर्मकथाहे

॥ २५ ॥

चढावी, नेतरनी सोटीवह अते चावकवड मार मारी तेमने विनीत कर्य, अने करककेतु राजनि अर्पण कर्या. आवी रीते ते समये

ते अशो पणा दुःखी थया यावत् आखुं जीवन बंधन पास्या.

कथा—उपनयः—आसकि नहीं पासी नाशी दूटेला योडाको मार साचावाळा न थया यावत् बंधन पास्या विना यथेछल मुख  
मोगचावाचाढा थया, तेवी रीते जे साधु अथवा साढ़ी—शब्द—रस—रूप—गंध—संसार—जीवन अनन्त मुखो भोगवे हे. तेवी रीते आसकि पासकाशी फसाह गयेला  
पण पूजवा योग्य थाय हे अने संसारसमुद्रने तरी जह मोक्षनां अनन्त अश्वो थया तेवी रीते जे साधु अथवा साढ़ी दीक्षा लीपा पछी शब्द—  
अने तेवी दुःखनी परंपराने पासी यावत् जीवन बंधन पागेला अश्वो थया तेवी रीते जे अनन्त संसारमां अभ्यन करी दुःखोने पासे हे.  
रूप—रस—गंध—संसार—जीवन विषयोमी आसक थाय हे ते आ लोकमां निदर्शनीय थाय हे अने अनन्त संसारमां अभ्यन करी दुःखोने पासे हे.

॥ इति श्री सत्तरमा श्रीजाताठ्यपननो सारांशः समाप्तः ॥

॥ अद्वारमा श्री सुंससाज्ञात—अद्ययननो सारांशः ॥

चिलातिने काढी मूर्खयो.

पूर्वा १७ मा अध्ययनना सारांश विने इन्द्रियवशवर्ति थतो अनर्थ अने जितेन्द्रियने थतो लाभ कह्यो आ अद्वारमा अध्ययनमां  
लोमने वश नहीं थानाने थतो लाभ कहे हे.  
ते काले ते समये ( भद्राचीर मसु ज्यारे आ हकीकत जणावी रुचा हे ते समये ) राजघटी नगरी विने धन्य नामनो सार्थिवाह

द्वितीय-  
विभागे  
आटा-  
दशाम्ब०  
चिलाति ने

॥ २६ ॥

उे तेन मद्रावती नामनी भार्या छे अने घन, घनपाल, घनदेव, घनगोप अने घनरक्षित नामे पांच पुँजो अने दुंसमा नामनी उत्री हती,  
तेम चिलात नामनो दासपुत्र हतो. आ चिलात बाल्कोने रमाडतो तेम बीजां घणां  
छोकरा-छोकरीओने, कुमार-कुमारिकोने रमाडतो हतो. केटलाक समय पछी ते चेलात दासपुत्र छोकरा बिगोरेनी कोडीओ लाखना  
गोला, मोय, दडा, टीपालाटीगालीओ, घण्ठो, आमरणो, अंकंकर हरी लेतो अने तेमना उपर आकोश करतो, तेमनी  
मरकरीओ करतो, आथी ते छोकराओ बिगोरे रडवा लाया आथी तेमना नोकर-चिलातना आसनी  
हफीकत कही. घन्यरेठे चेलातने ठपको आपता छां चेलात छोकरा बिगोरे नहीं आथी घन्यरेठे चेलातने  
काढी मुझो.

विजयचोरनुं मृत्युं

घन्यरेठने लांधी काढी मुकायेल चिलात राजगृहीना नाना मोदा बजारो बिषे अने देवकुलो, डायराओ, परबो, उगारखाना  
स्थानो तेमज दाल( मदिरा )ना स्थानो बिषे रखडतो-स्वच्छंदी-अंकुशविनानो थयेलो मदिरापान-चोरी अने मांस लावामां आसक  
ययो याचप. उगार-वेद्या-परखीमां लंपट ययो अर्याच. साति व्यसनवाळो थयो.  
आ समये राजगृही नगरीथी थोडे दूर अग्निवृणामां लिहयुका नामनी चोरपङ्की छे. ते चोरपङ्कीमां पांचसो चोरोनो नायक विजय  
नामे सेनापति हतो, ते अति पापित हतो. चोरी करवामां बहादुर होचाथी तेने लोको शहरीर-हठप्रहार करनार साहसिक अने  
शब्दवेधी कहेवा हता. आ विजयचोर, जारपुऱ्यो, गठीयाओ, विकासपातीओ, उगारीओ, अपतो अर्थात्

नवाही-  
३० दृ०  
भीष्माता-  
र्पमकथामि  
॥ २६ ॥

तेआने शरणभूत थडो, का विजयचोर गामो बिनोरेमां घाड पड़ो, गायो चोरहो अने लोकोने केद करतो. आम अनेक प्रकारे प्रजाजनोने कनडो हठो. चिलात लोकोथी परामव पामवाथी विजयचोरेने शरणे आब्यो अने रखो तेम विजयचोरनी साथे रही घाडो बिसेरे पड़वा लायो. चेलातनी हौंशियारी जोइ विजयचोरे चेलातने थणी चोरविद्याओ, चोरमन्नो, चोरनी मायाओ अने चोरना छळफटोमां पारंगत कयो. एक समये विजयचोर काळधर्म पान्यो. अर्थात् नरण पान्यो. तेनी पांचसो चोरोए मढी बहोक्की रिद्धिपूर्वक दमशान यात्रा काढी अने तेनु शुद्धकार्य कर्तु.

### सुममानु अपहरणादि.

घणी एवी विद्याओ अने वीरता चिलात पासे जोइ चोरोए मेणा थह विजयचोरे स्थाने चिलातने ल्हायो. आर्थी चिलात पांचसो चोरोनो अधिष्ठित थयो. अधिष्ठित बेला चिलाते पांचसो चोरोरुं सन्मान—सल्कार करी कबुं के—राजगृही नगरमां धन्य नामे सार्थकाह छे ते घणो घनवान छे. धन्यसार्थवाहने पांच पुत्री अने रुपवान चुंसुमा नामनी पुत्री छे. आपणे राजगृही नगरीमां जह धन्य सार्थवाहने पर हुंटीए अने हुंटमां.—जे घन, सोरुं, वस्त्र आवे ते तमारे वधांये लेलुं अने मारे चुंसुमापुत्री अद्दण करवी. वधाय चोरोए आ बात कबुल करी.

चोर सेनापति चिलात पांचसो चोरो सह मंगलनिमिते भीजायेला चर्म पर बेठो अने दिवसना छेला पहोरे बख्तरो बांधी छालीए दालो पहेडी, म्यानोमाथी तलवारो काढी, पर घनुपो विषे पणचो चढवी बाणोने मृकवा माटे मायामांथी बाणो काढ्या, बरछी—माला उछालवा लाया, तेम जंधाए उपरीओ लटकावी, शीघ्रपणे वाजिन्नो वगाडवा लाया अने सिहनाद करता सिहशुकामांथी नीकक्की

नवाही-

३० इ०  
मीड़ाता-  
सर्वकथाहे

राजगृही नारीशी थोड़े दूरना जंगलमां सेताया. मध्यरात्रिना समये ज्यारे लोको निदमां हता त्यारे पूर्वदिशाना दरबावे आव्या जो चेलात सेनापतिए जरुनी मस्तकमारी थोड़े पाणी लह आचमन करी तल्ला उथाडबानी विघातु स्मरण कर्यु, अने दरबाजाना कागाड उपरा मन्त्रेहुं पाणी छांटयु पूले दरबाजाना कमाडो उघडी गया, खुला थयेला दरबाजाथी सर्वेऽनारीमां प्रवेश कर्यो अने बोलबा लाग्या,—पांचसो चोरो सह चेलात सेनापती घन्यसार्थकाहने त्यां घाड पाडबा जाय छे, जेने नवी मारातुं हुए फीतुं होय ते वहार नीक्को ॥१॥ एम बोलता बोलता घन्यसार्थकाहना पोरे आव्या अने घर उथाडी लुंटबा लाया. आ जोइ घन्यसार्थबाह पांच पुरो सह एक बाजु सेताह गया; चेलाते सुंसमातुं हरण कर्यु, अने पांचसो चोरे घन विगोरेती लुंट करी, राजगृहगरीथी नीक्की गया. घनसार्थबाहे आ जोइ नगररक्षकोनी पासे जह कर्यु के-उसे मने सहाय करो, घन तमाह अने लोकरी मारी, चालो! लदकरसहित घन्यसार्थबाह पांच पुओयुक घाडपाडुओनी पाछलक पख्या अने युद्धमा हारी गयेला चोरो घन विगोरे लोही नाशी गया. घन लदकरना माणसो तो चाली गया, अने चिलात सुंसमाने उथाडी वच्चे गाम न आवे तेवा मार्गो भागतो जोइ घन्यसार्थबाह पांच पुओयुक तेनी पाछलक पछ्लो. थाकी गयेला जिलाते पाछल आवता घन्यसार्थबाह आदिते जोइ सुंसमावाळातुं फोरानी तलबारथी मस्तक फाँपी नाल्यु अने ते मस्तक लहने. जंगलमां चेलात नाशी गयो, जेने निर्जन अटवीमां तुषाथी परामव पामेलो दिशा भारी महेलो मरी गयो.

द्वितीय-  
विभागी  
अद्या-  
दशाध्य  
सुंसमावातुं  
अपहरण ।

॥ २७ ॥

<sup>१</sup> श्री आद्यमक्षमप्रमां तेने 'मार्गमा साझु मङ्ग्या रेमता उत्तरी उपग्राम-संधर-विवेक आ पदोने पामाने साधुना ठेकाने कायोस्तस्मां रही ज्ञापने मार्गतो छोडीबोयी आज्ञा फरीरे जालनी समान थरेलो शुभेध्यानयो फाल करी देवलोह्यो गयो तेम जणाक्षु ऐ

उपनय—

जे साथु सच्ची प्रज्ञा लेहने—वमनते शरनारा, अने नाश पामकाना इष्यमावशाला, शरीरनी शोभालय माटे आहार करे छे, अर्थात् राधालोद्भवता अते विषयना गिराहु थाय छे ते साथु साढ्यी विलात दास्तपुन दुःखी थयो तेम दुःखी थाय छे यावत् आवक—आविका-

ओने हीलना करवा लायक थह दीर्घिकाळ संसारमां भटके छे.

धन्यसार्थिवाह पांचे पुत्रो सह विलातनी पाठल दोडतां थाकी गया, आयी पकडवा असमर्थ थयेला पाढा फरतां उंबुझापुक्कीतुं पढ होह कुहाडायी कारेला चंपकना शुक्कनी जेम खूमि पर पडव्या, अने ज्यारे सावधान थया ल्यारे धणा समय लुची विलाप करवा लाया. थाकनी साये दुषा लागावाई चारे दिशाए जलनी तपास करी पण जलनी प्राप्ति न थह. धन्यसार्थिवाहे पुत्रोने काळुं के—हे पुत्रो ! पाणी विना नारीमां जवा अशुक्क थयेला आपणे छए अहि स्वतुं पामीतुं माटे हे पुत्रो ! तमे एम करो ! मने जीवितरहित गागी थजो !

जेछपुत्र—हे पिताजी ! तमे अमारा पिता छो, गुरु छो, देवलाप छो, काएरी रक्षण करगारा छो तो हे तारु ! असे तमने केम जीवितयी दूर करीए ! तथा तमारा मांस-नप्तिनो आहार केम करीए ! तेयी हे पिता ! तमे मारा जीवितने दूर करो ! तथा मारा मांस-रुपितरनो आहार करी अटधी पार-पासो ! त्यारे बीजा, ब्रीजा, चोया अने पांज्रमा पुश्ते धन्यसार्थिवाहे काळुं पण वधाय पुत्रोए जेषुकनी जेम जवान थाय्यो.

द्वितीय-  
विभागे-  
अष्टा-  
दशाख्यः  
सारांखि  
कथानो  
परमार्थः।

नवाही-  
१० शु०  
भीजाता-  
कर्मिकथाहैं  
पांचे भाइओए आ वार अंगीकार करी। अरणिना काढ्यी अनिन उपल करी मांस पक्की लाशुं अने रुधिरी स्वस्य यया छता अटवी उङ्घी राजगृहनगरे आवी पोताना पेर आव्या। अने सुंसुमा पुत्रीनुं लौकिक कार्य कर्तुं यावप् अनुकमे शोक रहित थया।

ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीर प्रभु राजगृहनगरनी बहार गुणशीलचैत्यविषे समवसर्या हता तेमनी पासेथी घर्म श्रवण करी धन्यसार्थवाहे प्रवउया लीधी अने अगियार अंगना जाणकार थया तेम पक मासनी संलेखना ( अनशन ) करी सौधर्म देवलोकमां उपल थया, त्यांस्थी च्यवी महापिदेहदेशनमां जन्म पानी सेयम लह सिद्धिदने पामरो।

कथानो परमार्थः—

॥ २८ ॥

धन्यसार्थवाहे वर्ण-रूप-बल के विषयोने माटे सुंसुमापुत्रीना मांस-रुधिरो आहार कर्यो न होतो, किन्तु राजगृह नगरने पासवा माटे आहार कर्यो इतो। तेम जे सांतु अथवा सांख्यी-वमन-पितृ-शुक अने रुधिरी शरता यावत् अवश्य लयाग करवा लायक आ औदारिक शरीरना वर्ण-रूप-बल के विषय माटे आहार करता नयी पंचु एक तिद्विगति पासवामां सहायमूल थवा माटे आहार करो छे, ते आ भवमां सांतु-सांख्यी आवक अने आविकाओयी पूजनीय थय छे, यावत् मोक्ष पाने छे।

॥ इति अष्टादशाध्यपनस्य सारांशः समाप्तः ॥

## ॥ ओगणीसमा श्रीपुण्डरीक—अहयचननो सारांश ॥

पूर्वना अध्ययन विषे संवर न करनारने अनर्थ, अने संवर करनारने लाभ दर्शाव्यो, आ अध्ययन विषे विरकाळ संवर कर्या छर्ता तेनो मंग करे तो पण अनर्थ थाय छे, अने अल्पकाळ पण संवर करे गो तेने लाम थाय छे ते कहे छे।

पूर्व मध्यविद्वेष्ट विषे सीता नामनी महानदीना उचर कांठे सीताकुल नामना बनखडनी पञ्चिमे एक रोलक नामना बखारा पर्वतनी पूर्व दिशाए पुकलावती नामना विजयमां पुण्डरीकिणी नामनी नारीमां महापञ्च नामनी पद्मावती तेमने पद्मावती नामना स्थविर पासे अने पुण्डरीक-कंडरीक नामना पुत्रो हता तेमां पुण्डरीक युवराज हतो, पांचसो मुनि साथे परिवरेला धर्मियोष नामना स्थविर पासे पर्वतनी पूर्व दिशाए पुण्डरीक युवराज तेमां पुण्डरीक युवराज हतो, यह घणा काल संयम पाढ्ठी मोक्षदुखने पाम्या। ते वार पट्ठी पुण्डरीकिणी सजघानी वहर तलिनीबन नामना उद्धान विषे स्थविर बुनि पथाया तेमने वंदन करवा पुण्डरीक राजा पुण्डरीक युवराजने गादी पर चेसाई महापञ्चराजाए दीक्षा लीधी। महापञ्च अनगार चौदपूर्वी यह घणा काल संयम पाढ्ठी मोक्षदुखने पाम्या। ते वार पट्ठी पुण्डरीकिणी राजघानी वहर तलिनीबन नामना उद्धान विषे स्थविर बुनि पथाया अने पोताना घेर गया। गया, कंडरीक पण लोकोना शब्दो श्रवण करी स्थविर पासे गया। पुण्डरीक राजा ग्रतिवोच पामी आवक थया अने पोताना घेर गया। त्यारपछी कंडरीक युवराज उमा थइ यावत् आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो के-हे प्रमु। हुं पुण्डरीकराजानी राजा लेइ यावत् दीक्षा ग्रहण करीय। आ सांमची स्थविरमुनिए पुण्डरीकने कहुं के-तने जेम सुख उपजे तेम कर, कंडरीक स्थविरमुनिते वंदन नमस्कार करी ज्यां पुण्डरीक राजा हता लां गयो।

कंडरीक पुण्डरीकराजाने विनंति करे छे, अने कंडरीक दीक्षा ले छे। फंडरीक पुण्डरीकराजाने वे दाय जोडी कहेवा लाग्या के-हे राजन्। मैं स्थविर साधु पासे घर्म अवण कर्यो छे, ते घर्म रुच्यो

द्वितीय-  
विभागे-  
आषा-  
द्याम्ब०

॥ २८ ॥

पन्नसार्थकहे विचार करी पुत्रोंने कहुं के-आ पुत्री सुमुमा जीवरहेत थयेली हे तेवें मांस आदिनो आहार करी स्वस्य थइए,  
पांचे भाइजोए आ वात झोगिकार करी. अरणिला काढियी अलि उत्पत्त करी मांस पक्की सांधु अने रुधिरी स्वस्य थया छता अटवी  
उंहंपी राजगृहनगरे आवी पोताना घेर आन्या. अने सुमुमा पुत्रीनु लौकिक कार्य कर्हु यावत् अनुकमे शोक रहित थया.  
ते काळे ते समदे अमण भगवान्त महानीर पनु राजगृहनगरनी यद्यार गुणशीलचैत्यविषे समवसर्था हता तेमनी पासेथी धर्म  
श्रवण करी धन्यसार्थवाहे प्रवज्या लीफी अने अगियार चंगना जाणकार थया तेम एक मासनी सलेखना ( अनशन ) करी सौधर्म.  
देवलोकां उत्पत्त थया, तांथी च्यवी महाविदेहदेशमां जन्म पाभी संयम लह लिदिपदने पामर्हो.

कथानो परमार्थः—

धन्यसार्थवाहे वर्ण-रूप-बल के विषयेने फाटे सुमुमापुत्रीना मांस-रुधिरनो आहार कर्यो न होतो, किन्तु राजगृह नगरने  
पामवा माटे आहार कर्यो हतो. तेम जे सांधु अयवा सांधी-वर्मन-पिच-शुक अने रुधिरी झारता यावत् अवश्य ल्याग करवा लायक  
आ औदरिक शरीरला वर्ण-रूप-बल के विषय माटे आहार करता नयी परंतु एक तिद्विगति पामवां सहायमृत थवा माटे  
आहार करे हे, ते आ मवां सांधु-सांधी आवक अने आविकाकोयी पूजनीय थाय छे, यावत् मोक्ष पामे हे.

॥ इति अष्टादशाध्ययनस्य सारांशः समाप्तः ॥

## ॥ ओगणीसमा श्रीपुण्डरीक-अद्ययननो सारांश ॥

पूर्वना अध्ययन विषे संवर न करनारने अर्थ, अने संवर करनारने लाभ दर्शाव्यो, जा अध्ययन विषे चिरकाळ संवर कर्या छतां तेनो मंग करे तो पण अर्थ थाय छे, अने अलफाळ पण संवर करे तो तेने लाम थाय छे ते कहे छे.

पूर्व महाविदेहकृत विषे सीता नामनी महादीना उचर काटि सीजुल नामना बनखंडनी पञ्चिसे एक रोलक नामना बखारा पर्वतनी पूर्व दिशाए पुकलाकृती नामना विजयमां पुण्डरीकिणी नामनी कारीमां महापञ्च नामे राजा हटो तेमने पचावती नामे राणी अने पुण्डरीक-कंडरीक नामना पुत्रो हता तेमां पुण्डरीक युवराज हटो, पांचसो मुनि साये परिवरेला धर्मधोष नामना स्थविर पासे पुण्डरीक युवराजने गादी पर बेसाई महापञ्चराजाए दीक्षा लीची. महापञ्च काकागार चौदपूर्वी यह पणा काल संयम पाढी मोक्षदुखने पान्था. ते वार पछी पुण्डरीकिणी राजधानी वहार नलिनीचन नामना उचान विषे स्थविर मुनि पश्यार्थी तेमने बंदग करवा पुण्डरीक राजा गया, कंडरीक पण लोकेना शब्दो श्रवण करी स्थविर पासे गया. पुण्डरीक राजा प्रतिबोध पामी श्रावक थया अने पोताना घेर गया. ल्यापछी कंडरीक युवराज उमा यह यावत् आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो के-हे प्रमु ! हुं पुण्डरीकराजानी रजा लेइ यावत् दीक्षा ग्रहण करीश ! आ सांभंडी स्थविरमुनिए पुण्डरीकने काण्ठु के-तने जेम सुख उपजे तेम कर, कंडरीक स्थविरमुनिने बंदन नमस्कार करी ज्यां पुण्डरीक राजा हता ल्यां गयो.

कंडरीक पुण्डरीकराजाने विनंति करे छे, अने कंडरीक दीक्षा ले छे. कंडरीक पुण्डरीकराजाने वे हाथ जोडी कहेवा लाया के-हे सजन् । मैं स्थविर साधु पासे घर्म श्रवण कर्या छे, ते घर्म रुच्यो

दितीष-  
विपाले  
१०३०  
मीडाता-  
चर्पक्षणे  
२९॥

कंडीरी-  
कुबुला-  
जनी ।

१०-  
अध्ययन-  
सारांशे  
कंडीरी-  
कुबुला-  
जनी ।

॥ २९॥

छे तेथी चमारी आज्ञा पाण्यो छत्रो प्रवर्ज्या लेवा इच्छुङ्कुङ्कुङ्कुङ्कुङ्कुङ् ।, पुंडरीकराजा कंडीरीकुबुलाजनी आ वात श्रवण करी कंडीरीकुबुलाजनी काण्ह के-हे याह । हुं अबुना दीक्षा न लहर, हुं तने मोटा-मोदा राण्यामिषेकवडे आभिषेक करवानो छुं. ते सांभर्डीनि कंडीरीके पुंडरीकरी आ वातनो ज्ञावर न कर्मो कोने मौन रखो. पुंडरीकराजाए वे शणवार कणुं किन्तु कुंडरीक मौन ज रखो. त्यारे पुंडरीकराजाए वीजी घणी रीते समजाळ्यो छत्रां उपरे कंडीरीक न समज्यो ल्यारे.इच्छा विगा दीक्षानी संमति आपी. उधानमां जह स्थविरमुनिने पुंडरीकराजाए कंडीरीकरी शिष्यलः शिक्षा आपी, कंडीरीक प्रवर्ज्या लह अनगार सथा यावद् आयार छंगना अम्बासी यणा, अने स्थविरमुनिनी साथे गातानुगाम विचरवा लाग्या.

रोगारी रघासु येवला-कंडीरीकमुनिनि.

ते वार पछी कंडीरीक अनगारने लुका-लुका आहोरे करीने शेळकमुनिनी जेम दाहडवर उत्पन्न यायो, यावत् व्याचियी व्याप्त थेला गातानुगाम विचरता स्थविरमुनि साथे पायार्या. पुंडरीकराजा वांदवा माटे आळ्या तेमने गुरुमहाराजाए घर्म अवण कराळ्यो. पुंडरीकराजा घर्म श्रवण करी, वंदना—नमस्कार करवा गया. वंदना नमस्कार करी कंडीरीकमुनिनु शरीर जोतां रोगमस्त लाया. आपी लांगी उठी पुंडरीकराजा ल्थविरमुनिवर यासे जहने कंडीरीकमुनिनी चिकित्सा कराववा माटे यातगालासां पषारता विनंति करी, पुंडरीकराजनानी विनंति स्वीकारी स्थविरमुनि सह शाशुको साथे यानदाळाए पघार्या. आहि पुंडरीकराजाए शेळकमुनिनी भंडुकराजाए जेम चिकित्सा करावी हत्ती तेम कंडीरीकमुनिनी चिकित्सा करावी तेथी रोगरहित यथा यावद् शरीर नव्याका-थया..स्थविरमगावत राज्याते पूठेने 'विहार-फरी गया, किन्तु राज्यना आहार विव-

लुभ श्येला कंडरीकामुनिएः विहार न कर्योः अने कमेः कमे॒ वसु॑ शिथिलाचारवाला थह गया।

आसक्तिना प्रवापे॑ कंडरीकामुनितुं श्येलुं परन्, मुंडरीकराजाएः ग्रहण करेलुं संयमः।

पुंडरीकराजा प्रवापे॑ कंडरीकामुनितो शिथिलाचार जाणी अन्तेषुरी सह कंडरीक मुनि पासे आब्या अने वंदना—नमस्कार करी कहुं। केमके राज्य अने अन्तःपुर हुं पुंडरीकराजा—कंडरीकमुनितो शिथिलाचार जाणी अन्तेषुरी सह कंडरीक मुनि प्राप्त कहुं। केमके राज्य अने अन्तःपुर हुं पुंडरीकराजा ! कुतां छो ! कुतां छो ! पुण्यवन्त छो ! तसे मनुष्यजन्म—जीवन्तुं फल सारं प्राप्त कहुं। यावत् हे॒ मुनिवर ! तसे॒ बन्ध्य छो ! कुतां छो ! पुण्यवन्त छो ! तसे॒ अंतःपुर विषे आसक श्येलो—मृच्छित श्येलो छुं ! यावत् त्याग करी संयम ग्रहण कहुं छे, हुं अधन्य छुं ! पुण्यहीन छुं ! राज्य अने अंतःपुर कंडरीकमुनि राजानी आ वातनो आदर करता संयम ग्रहण करवाने अशक थयो छु, तसे मायशाली छो ! आम कहा ! छतों कंडरीकमुनि राजानी रजा लेइ स्थविरमुनिनी नभी पण मौन रहे छे। आर्थी वे श्रणवार मुंडरीकराजाए कहुं त्यारे लज्जाशी मोटा भाद्या गोरवने लेइ राजानी रजा लेइ स्थविरमथी रहित थयेला पासे विहार करी गया, अने उम विहार करता स्थविरमुनिनी साथे विचरवा लाया। ल्यार पछी चारिक्रिता परिणामथी रहित थयेला कंडरीक अनगत स्थविरमुनिनी अशोकवन्मां आवी अशोकवन्मां नीचे पूर्वीना शिलातळ विषे देखा अने आर्थियनः करवा लाया, तेजनी आ स्थिति अशोकवन्मां आवेली धावमाताए जोहने सर्व शुचात मुंडरीकराजने जणाव्यो। मुंडरीकराजा तुरत अन्तःपुरसहित ल्यां आब्यो अने वंदना नमस्कार करी पूर्वी जेम तेना वस्त्राण कर्या पण कंडरीके तेनो आदर न कर्यो, त्यारे मुंडरीकराजाए पूलहुं के हे मांवंत ! तमारे भोगवडे अर्थ हे ? कंडरीके जणाव्यु के कर्या पण कंडरीके तेनो आदर न कर्यो, त्यारे मुंडरीकराजाए कौडुम्बिषेक कराव्यो अने राज्यगादी विषे हा ! मारे भोग भोगवडे वोलावी कंडरीकनो राज्यमिषेक कराव्यो अने राज्यगादी विषे स्थापन कर्या, अनो स्वयं पोते—मुंडरीकराजाए कंडरीकनो साथुवेष पदेयो अने स्वयं लोच करी गुरुमहाराज पासे ज्यां सुधी ब्रत

१० श्रीकाशा-  
चर्चकथाः  
१० ३० ॥

( संयमप्रतिज्ञाओ ) न ग्रहण करु लांसुधी मारे आहार न करवो तेवी प्रतिशा करी विहार करी गया.  
कंडरीकनी ययेली दुर्गति—  
राजा ययेला कंडरीकने रसवाळा पान भोजन करवायी तथा अति जागरण अने अति मोजन करवायी आहार पनी याक्यो  
नाही. आधी मध्यरात्रिना समये तेना शरीरमां असळ्या गाढ देदनाको उत्पल थऱ यावत् दाहजवर उत्पल थयो, आ समये ठेनी सारवार  
कोइह न करवायी तेमनी उपर खुव दुर्घान चितवतो तेम राज्य-देश अन्तःपुर विषे तन्मय थयो छत्रो काळ करिने सातमी  
नारकीमां उल्काइस्थितिए नारकपणे उत्पल थयो.

उपनय—

जे साहु अथवा साध्यी दीक्षा ग्रहण करिने फरीथी मनुष्य संवन्धी कामभोगानी इच्छा करे छे ते कंडरीक गजानी लेम  
संसारमां रखावे छे.

पुंडरीक अनगारनी ययेली सद्गति.

पुंडरीक अनगार स्थविर युनि पासे विचरता आल्या अने संयम प्रतिज्ञाओ अहण करी, छडुना उपवासना पारणे प्रथम  
पोरिसीए स्वाध्याय करी यावत् भिक्षा भाट फरतो ठंडुं-छर्टुं भोजन ब्होरी लावी गुले बतावीने तेमनी आज्ञा पामी लोळपता विना  
आहार कर्यो छे, ते वार पछी रसराहित स्वरावरसवाळा ठंडा अने लळा पानमोजननो आहार करवायी, मध्यरात्रिए पर्मजागरिका  
जागतो आहार पाचन थयो नही. आधी असळ्या शरीर विषे वेदना उत्पल थाई अने शरीरमां दाहजवर उत्पल थयो. वक्त राहित येवेळा

तुंडीक्षमजाते भागरलं शशिकार करी, आयोजना-प्रतिक्रिया फाल समये फाल वामी राष्ट्रप्रस्तावि देवपणे उपल  
वया, इयकी व्यक्ति मद्भविद देवगेव विष गिदपरने पापरो, याकृत रांड दुःखनो भीत करो.

उपनय—  
जे सानु अथगा साधी क्षमाया प्रहण करनि मनुष्य साक्षरी कामगोपमां आमाल न याय, यायत् तेमां रागचाला न थाय ते,  
पण एगा सानु-साच्छीओयी तथा धारक-धाविकाओयी आलोकमां पूजनीय याय छे, परलोकमां-सप्तारनो अन्त करी पुंडरीक अग-

गाली नेम अनन्तरुपते पामे छे.  
इति औगणीसमा श्रीपुंडरीक अध्ययननो सारांशा समाप्तः

॥ श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गे प्रथम श्रुतस्कन्धस्य सारांशः समाप्तः ॥  
॥ पूर्वं श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गे प्रथम श्रुतस्कन्धस्य सारांशः ॥

॥ श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गना द्वितीय श्रुतस्कन्धस्य सारांशः ॥  
पथम श्रुतस्कन्धमां आपुलपता हितशिक्षाना विषे धर्मकथाओयी धर्मनां  
चरियेन्द्र कथन करो छे.  
ते काळे ते समये राजगृहामानु नार हँड, अने तेनी बहार ईशानखूपे गुणशैलक नामनु वैत्य हँड त्यां उत्तम जाति अने उत्तम

द्वितीय-  
विभागे द्वितीय  
श्रीमहावीर-  
धर्मकथाम् श्रू० दय-  
वार्गोतुं वर्णन ।

नवाह्नी-  
कुलवाल्यं-चौदपूर्वीं तथा चार ज्ञानवाला एवा श्री सुंधर्मस्थानि गणधर भगवान्तं पांचसो मुनिवरो सह आमानुग्राम विचरता पथार्थं  
मेणी यथेली पर्पदाने तेओए घर्म अवण कराव्यो अने घर्म अवण करी पर्पदा गइ.  
३० श्रीमहावीर-  
धर्मकथाम् ते चार पछी तेमना शिष्य आर्यजन्मृद्धस्थानि नामना अनगरे तेमने प्रश्न कर्यो के-हे भगवान् ! सिद्धिगति पामेला श्रीमहावीर-  
स्थानिए छात्रा अंगना पहेला श्रुतकंपयना द्रष्टान्तो आणे कहा ते प्रमाणे कहा ते हे भगवान् । वीजाश्रुतरकंपयमां तेओए धर्मकथा-  
योनो कर्यो अर्थ कर्यो छे !

३१ ॥ दे जम्बू ! जातिसम्पन्न एवा महावीरप्रमुख आ या यीजा श्रुतस्कन्धविषये दशवर्गों( विभागो ) नीचे प्रमाणे प्रलङ्घ्या छे. १ चमर-  
न्दनी अग्रमहिपीओ, २ वेरोचनहन्द( बलीन्द )नी अग्रमहिपीओ ३ अबुरेद सिवाय दक्षिण दिशाना भवनपतिना जे नव इन्द्रो चे  
तेमनी अग्रमहिपीओ, ४ अबुरेन्द विना उचरदिशाना नव इन्दोनी अग्रमहिपीओ, ५ दक्षिणदिशाना वानमंतर इन्दोनी अग्रमहिपीओ,  
६ उचरदिशाना वानमंतर इन्दोनी अग्रमहिपीओ, ७ चन्दनी अग्रमहिपीओ, ८ सुर्यनी अग्रमहिपीओ, ९ शकेन्दनी अग्रमहिपीओ अने  
१० ईशानेन्द्रनी अग्रमहिपीओ आम दश वर्गो प्रलङ्घ्या छे ( अन्त अग्रमहिपीओ पटले मुख्य देवीओ जाणकी ).  
प्रथमरागं—प्रथमरागां १ फाली, २ राजी, ३ रजनी ४ विघुत अने ५ मेवा एम पांच देवीओना पांच अद्ययनो छे. ते हवे  
अनुकमे कहे छे ( आ पांचे चमरेन्दनी अग्रमहिपीओ—मुख्य देवीओ छे. )

कालीदेवी—१

ते काले ते समये राजगृहनगरीनी बहार गुणकील चैत्यर्मां श्री महावीरस्थानि समवसर्या, श्रिंकमहाराजा भक्तु पासे आवी

प्रथमे चंदना नमस्कार करी देशना श्रमण करती हुती।  
ते समये चमरचंचा राजधानी विषे कालावर्तसक नामना मरमां काल नामना सिंहासन पर काली नामनी देवी बेठी हती, ते चरा  
हजार सामनिकदेवीओ, चार महपरिकाकादेवीओना परिचार सह त्रण पर्षदाओ ( समाओ ), सात पक्षारना लक्षणा अधिष्ठिओ,

सोल हजार आस्त्रशक्तदेवी तथा यीजा ते मवनमा रहेला धणा अमुरदेवो अने देवीओयी परिवरेली हती।  
ते कालीदेवीए श्री महापीरस्तामि गगावनें राजगृह नगर गुणशील चैत्यमा समवसरेला अवधिज्ञानथी जोया, अने प्रमुदरितभी  
हपित घयेली ते कालीदेवी सिंहासनथी उभी थई पादपीठथी उतरी मोजडीओ काढीने प्रमुसन्मुख सात-आठ डगलां चाली, डावा  
ठड्हचणने उंचो अने जमणा ढीचणने चूगि पर स्थापी, त्रण वार मस्तक कुटीतलेने अडकाडी कंदक मस्तक नमावे छे। तेम कढां  
को याजुन्मय निगेर अलंकारोयी अलंकृत मुजाओचाढी, वे हाय जोडी 'नमस्कार करी पूर्वसन्मुख

सिंहासन पर बेठी।  
कालीदेवीउं प्रमु पासे आगमन।  
ते वार पली ते कालीदेवीते प्रमुमहावीरस्तामिने चंदना नमस्कार करी सेवानो लाभ लेचा विचार थयो, अद्यवसाय थयो, आयी  
सूर्यांगदेवनी तेम आग्नियोगिक देवो पासे तेणीए दिव्यविमान तेयार कराव्युँ। एक हजार योजनना विस्तारवाला ते विमानमां वेसी  
प्रमु पासे आयी पोतानी नगर गोद कहेवापूर्वक नाळ्यविष्य देसाईते गइ अर्थात् नाटक करीने तेवी रीते आवी हती तेवी रीते पाढी गइ।  
कालीदेवी-संघनिष थी गौतमस्तामिनी पूच्छा।

नवाही-  
बु० बु०  
भीकाता-  
र्वमिकथाहे

तेनी आवी मनोहर कळदि क्यां गइ ?  
तेनी आवी भी गौतमसंवामिए

ते वार पछी श्री महावीर प्रमुने बंदना-नमस्कार करी पूछुं के-हे भगवन् ! आ कालीदेवी क्यां गइ ? अने

श्री महावीर प्रमुण उच्चरां कृटाकारशालानु दृष्टान्त पूर्वे कहेला प्रमाणे क्षणुं.

ते वार पछी श्री गौतमसंवामिए श्री महावीर भगवानने पूछुं के-हे भगवान् ! कळदिवाकी कालीदेवीने ते दिव्यकळदि चुं करवाथी  
मली ! देवमवरां ते कळदि श्री रीति पाठ यह ! तेना उपमोगमां ते कळदि श्री रीति तेनी पासे आकी !  
कालीदेवीनो पूर्वप्रव.

प्रमु महावीरसंवामिए उच्चरां जणानुं के-हे गौतम ! ते काळे ते समये जंदूदीपना भरतदेवेने विषे आमलकलपा नामनी नगरी  
हरी, ते नगरीनी वहार ईशान खणे आम्रशाळ बन हहुं, अने ते नगरीमां जिवशतु नामनो राजा हडो. तथा ते नगरी विषे काळ-

नामनो गायापति हडो तेने कालश्री नामनी मार्या हरी. ते कालश्रीने काली नामनी पुत्री हरी. ते काली वयबडे मोटी होवा छतां  
कुमारी हरी, तेना स्तन निंतन सुधी लटकता होवाथी पति यवाने योग्य युलो तेने जोहने वैराग्य यामता अर्थात् तेने इच्छता नहीं  
होवाथी ते पति वगरनी रहेली हरी.

ते काळे ते समये पुलयदानीय श्रीपार्वताथ अरिहंत सोल हजार साधुओ अने आहवीय हजार साध्वीओयी परिवरेला आमल-  
कलपा नगरीना ईशानखूनां आवेला आम्रशाल बन नामना उद्यान विषे समवसर्या, ते कालीए प्रमु पघार्यातुं थवण करी मातापितानी  
आज्ञा पासी प्रमुनी देशना अवण करी आंदोंद पासीने प्रमुने बंदना-नमस्कार करी काण्डु के हे पमो ! हुं मारा पिलानी रजा लेहो

द्वितीय-  
विभागे

द्वितीय श्रु०  
कालीदेवी  
सम्बन्ध-

पूछुआ।

॥ ३२ ॥

एषी हु आपनी पासे प्रदत्तया महण कर्ह, त्यारे श्रीपार्थनाथ प्रभुए कर्हु के-हे देवानुषिया । तने मुख उपजे तेम कर, ते चार पठी ते कालीकुमारिका हृं पामी प्रभुने चंदना-नमस्कार करी आमलकल्पा नगरी विष ज्यां पोताना मातापिता हता त्यां आवी।

काली रुक्मारिका-मातापिताने दिनंति करवा लागी के-हे मातापिता ! हुं पार्थनाथ अरिहंतनी पासे घर्म सांभटी सासारना मयथी

उद्देग पामी हुं, तेम जन्म, जरा अने गणधी भय पामी हुं तेथी तमारी अनुजा पामीने हुं पार्थनाथ प्रभु पासे प्रवत्तना लेवा इच्छु हुं. ते मांगागी मातापिता प कर्हु-हे देवानुषिया । तेम तमे मुख उपजे तेम कर, धर्मकार्यां विलंग न कर.

त्यारपछी काळ गाथापतिष्ठ पितुल अश्वग, वान, खादिम अने त्यादिम मोजन त्रैयार कराव्या अने-मित्र-ज्ञाति-स्वजन-सैयन्धी अने परिजने आगङ्गा, आमन्त्रेय, महेमाननो भूतकार कठी, सम्बन्धी अने परिजननी पासे कालीदारिकोने कलशोवडे ल्लाज कराव्यु तेम सर्वे आगङ्गादिभी प्रनंहन करी, पक हजार पुलोधी वहन करवा योग्य शिविका विषे कालीपुत्रीने चेसाडी सर्वे परिचार साये सर्वे नारादिर्दृक वानिनोना नारोगाहित काळनि आगङ्गालाने विषे श्री पार्थनाथप्रभु समीपे लाल्या।

काळ गाथापति विगोरेष श्री पार्थनाथप्रभुने विनंति करी के-हे प्रभो ! आ अमारी कालीपुत्री अमने वहाली ऐ, ते संसारना गणधी उद्देग पामेली ऐ, आपी आपनी पासे दीक्षा प्रदण करवा इच्छे ऐ. तेथी अमे आपने आ अमारी कालीपुत्रीने शिव्यारूप निशा गरी हे आपीष श्रीष ते आप प्रदण करो ! भगवाने कर्हु के-हे देवानुषियो ! जेम तमने मुख उपजे तेम करो,

संगरपछी कालीकुमारी प्रभुने चंदना-नमस्कार कर्नने ईशानदिदामां जहाने पोतानी मेढे ज आगङ्ग आदि उत्तरी लोच कर्य,

द्वितीय-  
विमाने  
द्वितीय श्रु-  
कालीनी  
दीशादि

॥ ३३ ॥

जोने प्रमु पासे आयी बिनंति करी के-हे चिमो ! मने दीशा आपो एम हुं इच्छुं हुं !

३० ४०  
सीधावा-  
अर्थकपाहे

तेवरपछी प्रभुए पोतेज कालीसाइनि दीशा आपी अने पुण्यचूला आयनि शिष्या तरीके सुपरत करी. पुण्यचूला आयाए तेणनि शिष्या करी, काली आया पुण्यचूला आयनी साथे विचरती अगीआर औंग भणी, छह-अडुम आदि तपस्या करती यावत् इर्यासमितिवाढी ग्रह ब्रह्मचारिणी यह.

३३ ॥

काली आयनी जीवनचयनी.

एकदा काली आयी शरीरवकुसिका-एट्ले स्तनादिकवडे शरीरीनी गुश्शा करवायी ते शब्दलचारित्री यह, तेथी ते वारंवार हाथ-पा-मस्तक-मुख-स्तनना आंतरा-कालना आंतरा अने गुदास्थानना आंतरा धोवा लागी. तेम ज्यां ज्यां ते कायोसर्न-शश्या अने स्वाध्याय करती त्यां त्यां पथम जठनां ठांटनां नास्ती पढी वेसती, सृती अने स्वाध्याय विगेरे करती हती. गुरुणी पुण्यचूला आयाए कर्णु-“ हे देवानुप्रिय ! साढ्वीओने शरीरताकुशिका थर्वुं कलपतुं नथी, तुं जे वारंवार हाथ-पग विगेरे थोवी ले, पणी छांटिने वेसवा विगेरे करे ले तेनी हुं आलोचना कर ! यावत् प्रायश्चित्र अंगीकार कर ! ” आम हितशिक्षा आपी पण काली साढ्वीए तेनो आदर न कयो. आयी वारंवार आ पापथी रोकवा टकोर करी, साढ्वीओए पण तेवे हेळना करी वारंवार निवारवा लागी. त्यारे काली साढ्वीए उदा उपश्रेष्ठे रहेचानो विचार कयो अने जइने उदा उपश्रेष्ठे रही. हवे अहि पणीने कोइ टकोर करनार न होवाथी वारंवार हाय, पण आदि धोवा विगेरे करवा लागी यावत् पासत्था-पासत्थविहारी-शुद्ध कियामां आळसु-विहार करवामां आळसु-कुरीला-कुरीलविहारी अने इच्छा प्रमणे वर्तन करनारी इत्यादि दोपोने अतुसरनारी यह. आवी रीते यणा वर्षो सुधी संयग पाळीने अर्थांसना

अनशनबदे शरीरे क्षीण कर्तुं, आलोचना प्रतिक्रमण कर्या विना काळधर्म पामी चमरचंचाराजथानी विषे काली नामनी देवीपणे  
उत्सव थइ. हमणा उत्सव थयेली कालावतसक भवतमा रहेनारा असुरकुमार देव-देवीओंतु अधिष्ठिपण्य पामी छे ते कालीदेवीहुं  
आयुष अठीपल्योपम छे, ते त्याथी च्यविने महाविदेहक्षेत्रमा उत्पन्न थइ सिद्धिपदने पामरो.

॥ इति प्रथमचर्गता प्रथम अध्ययनननो सारांशः ॥

—५६—

प्रथमचर्गता द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ अनेपंचमा अध्ययननो सारांशः

राजी-२

हे जम्हु । हे काले अने समये राजगृह नामनुं नगर हटुं ते नगरनी बहार गुणशील नामना चैत्यविषे श्री महावीरस्वामि समवसर्या,  
ते समये पूर्वना अध्ययनमा कही गया तेम चमरचवाथी राजी नामनी देवी आवी. अने कालीनी माफक नाटक देखाडीने गाइ. त्यार  
वाद श्री गोत्रमस्वामिए ते राजीदेवीनी पूर्वमवनी पूर्वमवनी करी. प्रमुख कहु के-हे गौतम । ते काले ते समये आमलकपणा नगरी  
हटी, त्या अम्बशालकन हटु, जितशत्रुराजा हटो, राजी नामनो गाथापति हटो, तेने राजश्री नाजनी भार्या अने राजी नामनी पुकी  
हटी. अन पार्वनाथप्रभुं समवसरण, राजीनी दीक्षा, यावत् कालीनी जेम काल करी  
ते देवगतिमा उत्सव थइ छे, त्याथी च्यविदेहक्षेत्रमा उत्पन्न थइ सिद्धिपदे जरो. त्रीजा अध्ययन विषे-आमलकहपा नगरी,

द्वितीय-  
विभागे  
द्वितीय शुङ्ग  
राजी

नवाही-  
पूजनी गाथापति, रजनश्ची भार्या अने रजनी पुत्री यावत् राजीनी जेम बधो सम्बन्ध आहि कहेवो. चोथा अध्ययन विषे  
पूजनी, विषुव गाथापति, विषुव नगरी, अधिकार राजीनी लेम कहेवो. पांचमा अध्ययन विषे  
पूजनी, मेघनामनो गाथापति, मेघशी नामनी भार्या, मेघा नामनी पुत्री शेप अधिकार तेज प्रमाणे जाणवो.

इति वीजा, त्रीजा, चोथा, पांचमा अध्ययननो प्रथमचर्गनो मारांशा समाप्तः ।

बीजो चर्ग—हे जम्बू । त्रीजा वर्गां पांच अध्ययनो कहां ले. ते जा प्रमाणे—१ शुंगा, २ निशुंगा, ३ रंगा, ४ निरंगा अने  
५ मदना आ प्रमाणे पाच अध्ययनो कहां ले. यलिंचंचा नामनी राजधानी विषे शुंभावतंसक नामना भवनमां शुंभ नामना सिहासन  
विषे वेठेली शुंभा नामनी देवी हत्ती इत्यादि, कालीनी जेम नाळ्यविषि विगेरे देखाडीने गड, आहि प्रमुख श्रीगौतमस्त्वामिना प्रश्नोचर  
पूर्वीनी जेम समजवा. आवस्तिनगरी, कोटक चैत्य, जितशत्रुराजा, शुंभनामे गाथापति, शुंभशी भार्या अने शुंभा नामनी पुत्री हत्ती,  
शेप अधिकार कालीदेवीनी जेवो जाणवो. विशेष शुंभादेवीनी स्थिति साडा त्रण पल्योपमनी जाणवी, वाकीना चार अध्ययन विषे  
शावस्त्रि नगरीना जाणवा विशेष एके-पुत्रीनां नाम सरत्वां मातापितानां नाम जाणवां.  
त्रीजो चर्ग—हे जम्बू । त्रीजा वर्गां चोपन अध्ययनो कहां ले, ते काले ते समये महावीरप्रभु राजगृह नगरी बहार गुणशील  
चैत्य हांत त्यां समवसर्या. ते सपये इला नामनी देवी घरणी नामनी राजधानीमां इलावतंसक नामना भवनविषे इला नामना सिहासन  
विषे वेठेली हत्ती विगेरे हकीकत कालीदेवी समान यावत् नाळ्यविषि देखाडीने पाळी गड. गौतमस्त्वामिना पूछावायी तेनो पूर्वभव  
यी महावीरप्रभु एकयो के-हे गौतम ! वाणारस्तीनगरी बहार काम नामनु भावन हांत इल नामनो गाथापति, इलशी नामनी तेने

मार्या अने हला नामनी पुकी हरती, शेष हफ़ीकत काली समान जाणवी, विशेष घणेन्द्रनी अग्रमहिपणे उत्तम थह छे. तेसी स्थिति  
 अर्धपल्योपमयी कंहक अधिक छे, वाकीनी हकीकत कालीदेवी प्रमाणे जाणवी. एज प्रमाणे अनुकमे २, सतोरा ३, सौदामिनी  
 ४ इन्द्रा, ५ धना अने ६ विद्युता आ पांच देवीओनां पांच अध्ययन जाणवां. आ सर्वे भरणेन्द्रनी अग्रमहिपीओ छे. ए प्रमाणे छ  
 अध्ययनो वेणुदेवनी छ अग्रदेवीओनां, यावत् घोणेन्द्रनी अग्रदेवीओनां छ अध्ययनो कंह पण फेरफार चिना कहेवां, आ प्रमाणे  
 दक्षिण दिशाना नव इन्द्रोनां चोपन अध्ययनो थाय छे. आ सर्वे अधिकार पण वाणारसी नगरीना काम महावनना चैत्य विषे जाणवां.  
 चोथो वर्ग—हे जम्हू ! चोया वर्गां चोपन अध्ययनो कहां छे. ते काले ते समये मंहावीरस्वामी प्रमु राजगृह नगरीनी वहार  
 गुणशील चैत्य विषे समवसर्या हता, ते काले ते समये १ रुचा नामनी देवी रुचानामनी राजधानी विषे रुचक नामना सिंहासन पर  
 वेठी हरती. विगेरे सर्वे कालीदेवीनी जेम जाणवुं, विशेष ए के-पूर्वभवयां चंपानामनी नगरी, पूर्णभद्र नामे चैत्य, रुचक नामनो  
 गाथायति हतो तेने रुचकशी नामनी भार्या अने रुचा नामनी पुत्री हती. शेष अधिकार पूर्वी जेम जाणवो. विशेष ए के-भूतानन्द  
 नामना इन्द्रनी अग्रमहिपणे उत्तम थह छे, स्थिति एक पल्योपमनी छे. आ प्रमाणे चोथा वर्गनो-पहेला अध्ययननो निषेप कषो,  
 ए ज प्रमाणे अनुकमे २ सुरुचा, ३ रुचांशा, ४ रुचकावती, ५ रुचकांता अने ६ रुचप्रभा आ नामनी पांच देवीओनां पांच अध्ययन  
 कहेवां, एज प्रमाणे कुल छ छ देवीओ यावत् नवगा महाधोष सुधी उचरदिशाना इन्द्रोनी कहेतो चोपन अध्ययनो थाय छे.  
 पांचमो वर्ग—हे जम्हू ! पांचमा वर्गनां बत्रीस अध्ययनो जणाव्यां छे, ते आ प्रमाणे-१ कमलादेवी-२ कमलप्रगा-३ उत्पला-  
 ४ उदर्शना-५ लपवती-६ बहुरूपा-७ सुरुपा-८ सुमगा-९ पूर्णा-१० बहुपुत्रिका-११ उसगा-१२ भारिका-१३ पक्षा-१४

द्वितीय-  
विमाने-  
सरस्वती। आ यक्षीस देवीओं बनीश अध्ययन जाणवा।

पांचमा वर्ग विषे प्रथम अध्ययन-याचत् बन्नीश अध्ययन—

॥ ३५ ॥

ते काले ते समये राजगृह नगरी विषे महावीरस्वामि समवसर्या त्यारे कमला नामनी देवी कमला नामनी राजधानीमाँ कमला—  
गर्वसक नामना भवन विषे कमल नामना सिंहासन पर बेठी हती। वेप अधिकार कालीदेवीनी समान कहेहो। विशेष ए के-पूर्वभवने  
विषे नागपुर नामनुं नगर हटुं तेनी बहार सहस्राब्दन नामनुं उद्यान हटुं अने कमल नामनो गाथापति हतो तेने कमलश्री नामनी  
मार्या अने कमला नामनी पुत्री हती। तेणे पश्चनाथ प्रसु पासे दीक्षा लीधी विग्रेर सर्वे पूर्वनी जेम जाणबुं। एज प्रमाणे चांकीना  
एकक्रीस अध्ययनो दक्षिण दिशाना वानरंतरना आठ हन्दोनां कहेहों, कमलप्रभा विग्रेर ३१ कन्याओं नागपुरमां सहस्राब्दनना  
उद्यानमां दीक्षा लीधी, मातापितानां नाम पुत्री सरस्वा जाणवा अने अर्थपर्वयोपमनी स्थिति जाणवी।

छठो चर्ग—छठो चर्ग पांचमा वर्ग समान छे। विशेषता ए छे के-ते सर्वे कन्याओ महाकालेन्द्र विग्रेर उत्तरदिशाना आठ  
हन्दोनी ३२ अप्रमहिणी थह, पूर्वगवमां साकेन नगर विषे उत्पन्न थह हती, उत्तरकुरु उद्यान विषे तेणीओए दीक्षा ग्रहण करेली,  
तेमनी मातापितानां नाम तेमना समान जाणवा, शेष हकीकत पूर्ववत् जाणवी।

नवाही-

३० च०

मीक्षण-

चांककपाहे

वसुमती—१५ कनकका—१६ कनकप्रभा—१७ अवतंसा—१८ केतुमती—१९ चञ्जसेना—२० रत्निमा—२१ रोहिणी—२२ नवमिका—२३  
दी—२४ युष्मवती—२५ उजगा—२६ सुजगवली—२७ महाकच्छा—२८ अपराजिता—२९ सुधोपा—३० विमला—३१ सुस्वरा अने ३२

॥ ३५ ॥

सातमो वर्ण—हे जन्मू ! श्री महावीरस्त्वामिए सातमा वर्णना १ सूरपमा—२ आतपा—३ आचेमाली अने ४ प्रमंकरा एम चार अध्ययनो कर्या हे. तेमाँ प्रथम अद्ययनमां सूरपमा नामनी देवी सूरनामना विमान विषे सूरपम नामना सिंहासन विषे बेठी हती विग्रे. याकी सर्व वृत्तान्त कालीदेवी देवो जाणवो. विशेष ५ छे के—पूर्वभवमां अरक्षुरी नगरीमां सूरपमा नामनी पुरी हती ते सर्व नामना इन्द्रनी अग्रमहिमी थइ, तेनी अर्थ पल्लोपम उपर पांचसो वर्ष अधिक स्थिति कहेली हे, याकी सर्व अधिकार कालीदेवी समान जाणवो. एज प्रमाणे सर्व इन्द्रनी ३ देवीओतो अधिकार जाणवो त्रणे देवीओ अखुपुरो नगरीमां पूर्वभवमां उत्पत्त थयेलो.

आठमो वर्ण—हे जन्मू ! आठमा वर्णना चार अध्ययनो कहाँ हे. ते आ प्रमाणे—१ चन्द्रपमा—२ दोपीनामा—३ अर्चिमाली अने ४ प्रमंकरा. प्रथम अद्ययनमां चन्द्रपमादेवी चन्द्रप्रभनामना विमानमां चंद्रपम नामना सिंहासन उपर बेठी हती शोप अधिकार कालीदेवी समान जाणवो. विशेष ५ के—पूर्वभवमां मथुरानामनी नगरी हती तेनी व्याहर चन्द्रावत्सक उत्थान हटुं ते नगरीमां चन्द्रपम नामे गाथापति हतो तेने चन्द्रशी भार्या हती अने चन्द्रपमा नामनी पुरी हती ते यावत् चन्द्रदेवेन्द्रनी अग्रमहिमी थइ तेनी स्थिति अर्थपल्लोपम उपर पचास हजार वर्षनी कही हे, शोप अधिकार कालीदेवीनी सरखो जाणवो.

एवी रिते याकीनी व्रण देवीओ पण पूर्वभवमां मथुरा नगरी विषे उत्पत्त थयेली माता विताओनां नाम पण पुरीओते अगुसरतो जाणना अने वर्तमानभवमां चन्द्रनी अग्रमहिमीओ जाणवी, शोप कालीदेवी समान जाणुं. नामो वर्ण—हे जन्मू ! नवमा वर्णना आठ अध्ययनो श्री महावीरस्त्वामिए काखां छे ते आ प्रमाणे—१ पमा २ विचा ३ सर्वी

द्वितीय-  
विमागे

द्वितीय शुँ  
नवमा  
वर्गं  
वर्णन।

४ अंद्रू ५ रोहिणी ६ नवमिका ७ अक्षला अने ८ अपसरा, नवमावर्गना प्रथम अङ्गयनन्ती याचत् अठमा अङ्गयनन्ती सारांश—

१० ष० ते काले ते समये हे जम्बू । पद्मादेवी—सौधर्मकल्प नामना प्रथम देवलोकमां पद्मावतंसक नामना विमानमां सुधर्मा नामनी समा भीष्माता-  
सर्पकथाहे विषे पद्मगमना सिद्धासन पर बेठी हर्ती, शोप अधिकार कालीदेवी सरखां जाणवो. एकी रीते आठे अङ्गयनन्ती कालीदेवी सरखां जाणवो.  
विशेष ए के-पूर्ववन विषे वे श्रावित्तिनगरी विषे, वे हस्तिनगरी विषे, वे कांपिलव्युर विषे अने वे साकेतनगर विषे उत्पन्न थयेली,  
आ वधीयेती माताओं नाम विजया अने पिताओं नाम पच्छ हहुं, सर्वेऽ श्री पार्वतीयमधुनी पासे दीक्षा लीधी हर्ती. याचत्  
शक्तिनी व्यग्रमहिषीओ थहुं, तेमनी स्थिति नव पल्ल्योपमनी कहेली छे ते सर्वे च्यवीने भग्नाविदेहस्त्रमां उत्पन्न थहुं खोक्हे जाशे.

दशमो वर्ग—हे जम्बू! दशमा वर्गना जाठ अङ्गयनन्ती श्रीमहावीरस्त्वामिए कहां छे, ते आ प्रमाणे—१ कुण्डा २ कुण्डराजी ३ रामा  
४ रामरक्षिता ५ वसु ६ वसुगुणा ७ वसुमित्रा अने ८ वसुंघरा. दशमावर्गना प्रथम अङ्गयनन्ती याचत् अष्टम अङ्गयनन्ती सारांश—

ते काले ते समये हे जम्बू । राजगृहनगरमां श्रीमहावीरस्त्वामि समवत्सर्या त्यारे कुण्डा नामनी देवी ईशानकल्प नामना बीजा देव-  
लोकमां कुण्डावतंसकगमना विमानमां सुधर्मनामनी समा विषे कुण्डा नामना सिंहासन उपर बेठी हर्ती, शोप अधिकार कालीदेवी सरखो  
फहेवो, ए ज प्रमाणे आठे अङ्गयनन्ती जाणवा. विशेष ए के—पूर्वभवमां वे वाणारसी नगरी विषे, वे राजगृहनगरी विषे, अने वे कौशंबी-  
नगरी विषे उत्पन्न थहुं, माताओं नाम राम हहुं, ते सर्वदा पिताओं नाम धर्मा हहुं, ते आठेऽ पार्वतीयमधुनी पासे प्रबन्धया  
लीधी हर्ती अने प्रमुए पुण्यचूला आयनि शिष्या तरीके अर्पण करेली तेमनी स्थिति नव पल्ल्योपमनी कही छे, तेजो त्यांथी च्यवी

महाविद्वद्देशमां उत्तम थह दीक्षा छह सिद्धिगतिने पामरे,  
आ प्रमाणे निष्ठे हे जम्बू ! अमण मगवानमहावीरस्वामि के जे धर्मनी आदि करनारा याचवृ सिद्धिपदने पामेला  
छे तेमणे कहेलुँ छे.

इति श्री द्वितीय श्रुतसंक्षय सारांश समाप्तः ।

एवं श्री सौराष्ट्रदेशो कुंडलानगरे प० ५० आचार्यदेव श्रीमचन्द्रसागरद्वारीश्वरजीनी पवित्र निश्राप विकाम संवत्सर २००८ वर्षे  
चातुर्मासस्थितः मुनिश्रीचन्द्रसागरे वि. सं. २००८ वर्षे आपाडकृष्णब्राह्मणासोमवासरे श्री शताधीर्णकथाङ्गना प्रथम श्रुतसंक्षयना  
आठमा अल्ययनयी याचवृ द्वितीय श्रुतसंक्षयसमाप्ति पर्यन्तनो सारांश तारीने लख्यो. शुभं भवतु ।

श्रीज्ञाताधर्मकथाहै द्वितीयविभागस्य अनुक्रमणिका—

—४६—

अध्ययनानि

अ०	१०	श्री माफन्दीदारकाल्यम्
"	१०	श्री चन्द्राल्यम्
"	११	श्री द्रावद्वाल्यम्
"	१२	श्री उद्दकाल्यम्
"	१३	श्री दंडुराल्यम्
"	१४	श्री तेतलिपुत्रशताष्ययनम्

अध्ययनानि

पृष्ठांकः	पृष्ठांकः	अध्ययनानि
१६३	१०	१५ श्री नन्दीफलास्यम्
१७७	"	१६ श्री अपरकङ्काल्यम्
१७८	"	१७ श्री अश्वाल्यम्
१८०	"	१८ श्री सुंगुमाल्यम्
१८१	"	१९ श्री पुण्डरीकाल्यम्
१९१	"	२० श्री द्वितीयशुत्रस्फन्धम्

# शुद्धिपत्रकम्

२५८०

पुष्टो पंकि

१७०—१६

१८०—२७

१७४—८

१७४—१०

१७४—१६

१७४—२४

१७४—२७

१७४—१०

१८०—१०

१८१—४

शुद्धम्

पणियमंड

करेह

विलव०

स्वरूपे

लृपक०

लृपकार्थ

मंदाचाया

‘दिवाह’

‘वैदीहि

अगण०

शुद्धम्

‘पक

वैदुति

इत्यर्थः

मुयति,

जाते,

ततेण से तेतलि.

सुकंसि तण्डुलंसि आ-

पिकायं पकिलंबन्ति ३,

अप्याणं मुयति, तत्यवि

धण्णो

शुद्धम्

वैदुति

इत्यर्थः

मुयति,

जाते,

ततेण से तेतलि.

सुकंसि तण्डुलंसि आ-

पिकायं पकिलंबन्ति ३,

अप्याणं मुयति, तत्यवि

धण्णो

कंदियं

शुद्धम्

‘पक

वैदुति

इत्यर्थः

मुयति,

जाते,

ततेण से तेतलि.

सुकंसि तण्डुलंसि आ-

पिकायं पकिलंबन्ति ३,

अप्याणं मुयति, तत्यवि

धण्णो

शुद्धम्

वैदुति

इत्यर्थः

मुयति,

जाते,

ततेण से तेतलि.

सुकंसि तण्डुलंसि आ-

पिकायं पकिलंबन्ति ३,

अप्याणं मुयति, तत्यवि

धण्णो

शुद्धम्

वैदुति

इत्यर्थः

मुयति,

जाते,

ततेण से तेतलि.

सुकंसि तण्डुलंसि आ-

पिकायं पकिलंबन्ति ३,

अप्याणं मुयति, तत्यवि

धण्णो

शुद्धम्

वैदुति

इत्यर्थः

मुयति,

जाते,

ततेण से तेतलि.

सुकंसि तण्डुलंसि आ-

पिकायं पकिलंबन्ति ३,

अप्याणं मुयति, तत्यवि

धण्णो

शुद्धम्

वैदुति

इत्यर्थः

मुयति,

जाते,

ततेण से तेतलि.

सुकंसि तण्डुलंसि आ-

पिकायं पकिलंबन्ति ३,

अप्याणं मुयति, तत्यवि

धण्णो

शुद्धम्

वैदुति

इत्यर्थः

मुयति,

जाते,

ततेण से तेतलि.

सुकंसि तण्डुलंसि आ-

पिकायं पकिलंबन्ति ३,

अप्याणं मुयति, तत्यवि

धण्णो

शुद्धम्

वैदुति

इत्यर्थः

मुयति,

जाते,

ततेण से तेतलि.

सुकंसि तण्डुलंसि आ-

पिकायं पकिलंबन्ति ३,

अप्याणं मुयति, तत्यवि

धण्णो

नवाहारी-	पुष्ट० पंकिं	अशुद्धम्	शुद्धम्	पुष्ट० पंकिं	अशुद्धम्
शृ० श०	२०५-१३	तय० फल०	तय० पच० फल०	२१७-१७	पमाणं
श्रीज्ञाता-	२०४-२८	एं ते	एंति	२२२-१०	हन्मा०
धर्मसंक्षयात्	२०५-२५	चेवे	चेव	२२७-८	छुला०
	२०७-१५	गोल	गोलं	२२८-१६	कर्म०
	२०९-१६	निसामति	निसामेति	२२८-२७	‘कहु’
	२१२-१०	‘पुरा पोराणण’मित्यत्र याचत्		२३३-७	‘जाण०
॥ ३८ ॥	२११-१६	करणादेवं दष्टलं ‘दुक्षिणणं	XXXXXX	२३५-५	महं
	२१२-१०	दुपरकंताणं कठाणं पाचाणं	XXXXXX	२३७-११	से तेसि
		कम्माणं परचाणं फलविति	XXXXXX	२३७-२८	सालीबता
		विसेसाति अयमर्थः पुरा-	XXXXXX	पुरा-	

## ॥ ९-श्रीमाकन्दीदारकारथं ज्ञाताद्ययनम् ॥

अथ नवमं वित्रियते, अस्य च पूर्णं सहायमभिसम्भवः; पूर्वतः मायावतोऽनर्थं उक्तः; इह तु मोगेष्वविश्विमतोनथो विश्विमतश्चाथौऽभिधीयते इत्येवं ममचद्—

जह एं भंते ।, समणोणं जाव संपत्तेण अट्ठमस्स आयमठ्ठ पण्णते; नवमस्स एं भंते ।, नायउद्यायणस्स समणोणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णते ।, एवं खलु जंदू ।, तेण कालेण॑२, चंपा नामं नयरी, पुण्णभद्व, तत्थ एं माकंदी नामं सत्थवाहे परिवसति, अहै०; तस्स एं भद्वा नामं भारिया, तीसे एं भद्वा॒ अतया दुवे, सत्थवाहदारया होतथा; तं०-जिणपालिए य, जिणरकिलए य; तते एं तेसि मांगंदियदारगाणं, अणया कयाह॒ एणयओ इमेयाख्वे मिहो कहासमुछावे समुप्पज्जितथा—एवं खलु अम्हे लवणसमुदं पोयवहणोणं एकारस वारा ओगाहा, सठवत्थविय एं लद्डा, कयकज्जा अणहसमग्गा पुण- रवि नियघं वहवमागया; तं सेयं खलु अम्हे देवाणुपिया ।, दुवालसमंपि लवणसमुदं पोतवहणोणं ओगाहित्तए तिकहू अणमणससेतमठ्ठ पडिछु पैंति॒ चा, जेणेव अम्मापियरो, तेणेव उवा०; एवं वदासी— एव खलु अम्हे अम्याओ !, एकारस वारा तं चेव जाव निययं यरं हववमागया, तं इच्छामो एं अम्मयाओ !, दुम्हेहि अड्भुणणाया समाणा दुवालसमं लवणसमुदं पोयवहणोणं ओगाहित्तए, तते एं ते मांगंदियदारए अम्मापियरो एवं वदासी—इमे ते जाया ।, अज्जग जाव परिभाएत्तए एं अणुहोह ताव

९-श्री-  
माकन्दी॥  
ज्ञाताच्यद-  
पुणेण सह  
वारीलाप  
चर्णन-  
द्वयम् ।

जाया ! विउले माणसस इहीसकारससुदद, कि भै सपच्चवाएण लबणसमुदोत्तरैण ?  
एवं ललु पुता !, दुबालसमी जन्ता सोचसगा यावि भवति, तं मा णं तुव्ये दुवे पुता !, दुबालसमंपि  
लबण ० जाय ओगाहेह, मा हु तुन्मं सरीरसस वावत्ती भविसति; तते णं मांगदियदारगा अम्मापियरो  
दोचंपि तचंपि एवं बदासी-एवं ललु अम्हे अम्मयाओ !, एकारस वारा लबण ओगाहित्तए, तते णं ते  
मांगदीदारए अम्मापियरो जाहे नो संचायंति चहहिं आघवणाहि, पणणचणाहि य, आघवित्तए चा,  
एव्ववित्तए चा, ताहे अकामा चेव एयमहं अणुजाणित्या; तते णं ते मांगदियदारगा अम्मापित्तहिं अन्मणु-  
ण्णाया समाणा गणिमं च, घरिमं च, मेज्जं च, परिच्छेज्जं च, जहा अरहणगसस जाव लबणसमुदं वहहइं  
जोअणसयाहं ओगाढा ॥ सुन्नम्-८५ ॥ तते णं तेसि मांगदियदारगाणं अणोगाहं जोगणसयाहं, ओगाढाणं  
समाणाणं अणोगाहं उपपाहयसंथाति याउडभूयाति; तंजहा-अकाले गज्जियं जाव थणियसहे कालियवाते  
तत्थ समुहिए, तते णं सा णाचा तेण कालियवातेण आहुणिज्जमाणी२, संचालिज्जमाणी२, संब्रोध्जमाणी१  
२, सलिलतिकवेवेगोहिं आयहिज्जमाणी२, कोहिमंसि करतलाहते चिव तेहुसए तत्थेव२; ओवयमाणी य,  
उपपयमाणी य; उपपमाणीविव घरणीयलाओ, सिद्धविज्ञाहरकरगा ओवयमाणीविव गगणतलाओ,  
भम्हविज्ञा विज्ञाहरकनगाविव, पलायमाणीविव महागरुलवेगवित्तासिया, सुयगवरकदगा धावमाणी-

नवाणी-  
३० श्री-  
भीजारा-  
वर्षकयाङ्गे  
॥ १६३ ॥

\*एन्द्रनंतर पाठ. अ अती नालि ।

विच, महाजणरसियनहवित्तथा, ठाणभट्टा आसकिसोरी पिंगुंजमाणीविच, गुरुजणदिढावराहा सुयण-  
कुलकत्तगा बुममाणीविच, वीचीपहारसततालिया गलियलंबणाविच, गणणतलाओ, रोयमाणीविच#  
सलिलांगडिविषपइरमाणओरसुचाएहि णवचहू, उचरतभन्तुया विलयमाणीविच, परचकरायानिरोहिया  
परममहभयाभिहुया बहापुरवरी शायमाणीविच, क्वचिंठणोमपओगञ्जुता जोगपरिच्छाइया, णिसाल्म-  
माणीविच, महाकंतारविणिगयपरिसंता परिणयवया अमया सोयमाणीविच; तवचरणखीणपरि भोगा  
चयणकाले देववरवह संचुणिणयकड़क्वरा, भग्नमेहिमोडियसहसमाला, स्तलाइयचंकपरिमासा, फलहं-  
तरतडतडेतफुंदतसंधिविलंतलोहकीलिया, सबचंगवियंभिया, परिसडियरज्जुचिसरंतसव्यगता, आमग-  
मल्लगभुया अक्षयपुणजणमणोरहोविच; चितिजमाणगुरुह हाहाकयकणधारणावियवाणियगजणकम-  
गारविलविया णाणाविहरयणपणियसंपुणा वहहि उरिससएहि रोयमाणेहि, कंद०, सोय०, तिप्प०,  
विलवमाणेहि; एगं महं अंतो जलतायं गिरिसिहरमासायहता, संभगकवतोरणा, मोडियक्षयदंडा, वलय-  
सयलंडिया, करकरस्स तथेव चिद्वं उचगया; तते णं तीए णावाए चिंज्जमाणीए वहवे पुरिसा विपुलप-  
डियं भंडमायाए अंतो जलमि णिमज्जावि यावि होत्था ॥ स्त्रैश्चमै८६ ॥ तते णं ते मांगदियदारगा छेया,  
दक्खवा, पत्तहा, कुसला, मेहावी, पिउणसिपोकगया, वहुसु पोतचहणसंपराएसु कयकरणलद्विजया,

नवाक्षी-  
३० इ०  
भीक्षाता-  
शर्मकथाहे

॥ १६४ ॥

अमूढा, अमूढहत्या, एगं महं कलगचंड आसादेति; जैसिं च एं पदेसंसि से पोयबहुणे विवेत्रे, तंसि च एं पदेसंसि एगे महं रयणहीवि फामं दीवे होत्या, अणेगाहं जोऽज्ञातिं आयामविक्षेण्मेणो, अणेगाहं जो-अणाहं परिक्षेवेणं शणाङ्गाङ्गमसंडम्भिलेसे सरिसरीए पासातीए ४, तस्स एं बहुमञ्जसेसभाए, तत्थ एं महं पेगे पासायवडेसए होत्या, अबमुग्गयमृसियए जाव सरिसरीभृपरूपे पासातीए ५, तत्थ एं पासायवडेसए रयणहीवदेवया नामं देवया परिवसति, पावा चंडा कहा साहसिया; तस्स एं पासायवडिस-यस्स चउदिसि चतारि वणांसंडा किण्हा किण्हो भासा; तते एं ते मांगांदियदारगा तेणं कलयवंडेणं उवु-ज्ञमाणार, रयणदीर्घेणं संयुदा यावि होत्या, तते एं ते मांगांदियदारगा याहं लभंति२ उहुततरं आस-संति२, कलगचंड विसङ्गेति२, रयणदीर्घेणं संयुदा यावि होत्या, तते एं ते मांगाणगवेसणं करेति२, कलाते गिण्हंति२, आहोरेति२, पालिएराणं मग्गणगवेसणं करेति२, नालिएरतेहुणं अणणमणसस गत्ताहं अबमंगेति२, पोक्खरणीतो ओगाहिंति२, जलमज्जां करेति२, जाव पच्छुतरंति२, पुहविमिलापदयंसि निसीयंति२ः आसत्या, वीसत्या, उहासणवरगया चंपानयरि अम्मापिउआगुच्छुणं च लवणसमुषोतारं च कालियचायसमुत्थाणं च पोतवहणविवर्त्त्वा फलयवंडरस आसायणं च रयणहीवुतारं च अणुच्छितमाणा २, ओहतमणसंकर्पा जाव द्वियायेन्ति; तते एं सा रयणहीवदेवया ते मांगांदियदारा ओहिणा आओएति,

असिफलगचन्नगहत्था सदहृतलपमाणं उहुं वेहासं उपयति ३, तते उकिटाए जावे देवगर्हए  
 धीइवयमाणी २, जेणेव मांगदियदारए तेणेव आगच्छति ३, आसुरुत्ता मांगदियदारए खरफकसनिहृवय-  
 णेहि एवं बदासी-हं भो मांगदियदारया ।, अपत्थियपत्थिया जति णं तुब्मे मए सर्दि विउलाति  
 ओगभोगाहं शुंजमाणा विहरह, तो मे अथिय जीविअं, अहणं तुब्मे मए सर्दि विउलाति नो विहरह,  
 तो भे इमेणं नीलृपलगचलगुलिय जाव खुरधरिणं असिणा रत्तांडमंसुयाहं माउयाहि उवसोहियाहं  
 कालफलाणीव सीसाहं एगंते एडेमि; तते णं ते मांगदियदारगा रयणदीवदेवयाए अंतिए सो० भीया,  
 करयल० एवं जणणं देवाणुपिया । चतिस्ससि, तस्स आणाउववायवयणनिहेसे चिट्ठिसामो, तते णं सा  
 रयणदीवदेवया ते मांगदियदारए गेणहति ३, जेणेव पासायवर्द्धिसए तेणेव उवागच्छहृ, असुभपोगलाव-  
 हारं करेति २, चुभपोगलपक्खेवं करेति २ ता, पच्छा तेहि सर्दि विउलाति भोगभोगाहं सुंजमाणी  
 विहरति, कलाकल्हि न अमयफलाति उवणेति ॥ सुद्धम्-८७ ॥

मवं सुगमं, नवं-‘निरालंघणेण’-निरालंघणेण प्रत्यपायसमवे वा शाणायाऽलम्बनीयवस्तुवार्जितेन, ‘कालियावाए  
 तत्थ’-ति-कालिकावातः-प्रतिकृलवायुः, ‘आहुणिक्षमाणी’त्यादि, आधुयमाना कम्पमाना विद्रवमुपगतेति समन्वयः,  
 सञ्चालयमाना-स्थानात् स्थानान्तरनयनेन सहोद्रयमाना-अधो निमज्जनतः तदुगतलोकक्षोमोत्पादादा सलिलातीशणवेग-  
 तिवर्त्यमाना-आकम्यमाणा कुहिमे करतलेनाहतो यः स तथा स इव, ‘तदुसए’-ति-कन्दुकः, त्रैव प्रदेशोऽधः पतन्ती

नवाही-

२०३०  
भीड़ाता-  
चर्षक्यार्हे-

॥१६५॥

वा—अथो गच्छुन्ती उत्पत्तन्ती वा—ऊद्भव्यं यान्ती तथोच्चपत्तन्तीव भरणीतलाहे, मि दिविद्या विद्याप्राकन्त्यका तथाऽयः पत्तन्तीव, गगनउलाहे अटविद्या विद्याप्राकन्त्यका, तथा—विपलायप्रानेव—मयाद्वावन्तीव महागरुद्वेगविद्वासिता युजगकन्त्यका चाव-  
न्तीव, महाजनस्य रसितशब्ददेन वित्तस्ता स्थानप्राप्ताऽश्वकिशोरी, तथा—विगुड्जन्तीव—अव्यक्तशब्दं कुर्वन्तीन अवनमन्तीव वा,  
गुहजनहस्तपराघा—पित्राद्युपलङ्घयलीका सुजनकुलकन्त्यका कुलीनेति भावः, तथा—धूर्णन्तीव—वेदनया थरथरायमाणेव  
कीचित्प्रादायवत्ताडिता हि स्मी वेदनया धूर्णन्तीति वेदनयेव यूर्णन्तीतेवमुपमानं दृष्टयं, गलितलम्बनेव—आलम्बनाइ अणेव  
गगनउलाहे—आकाशाहे पतितेवि गमयते, यथा क्षीणवन्धनं फलायाकाशाहे, पतिति एवं माइपीति, कृचित्तु—गलितलम्बना.  
इत्येवनदेव दशयते, तत्र लम्बन्ते इति लम्बनाः—नह्यरास्ते गलिता यस्यां मा तथा, तथा लद्दन्तीव, कैः केत्याह—सलिलमिक्ता  
ये ग्रन्थयस्ते सलिलयन्त्ययः ते च ते, ‘चिप्पहरमाण’ति—विप्रकिरन्तश्च मलिलं शुरन्त इति यमासः त एव स्थूरा अशुपाता-  
स्तोर्नवपूरतमर्तुका, तथा विलपन्तीव, कीदृशी केत्याह—परचक्ररजेन—अपरस्तन्यनुपतिनाऽधिरोहिता—सर्वतः कृतनिरोधा  
या मा तथा, परममहामयाभिदुगा महापुरवरी, तथा क्षणिकस्थिरत्वमासम्यति द्यायन्तीव कीदृशी केत्याह—कपटेन—वेषा-  
यन्यथालेन यच्छुभ तेन प्रयोगः—परप्रतारणवयापारः तेन युक्ता या मा, तथा, योगपरिवाजिका—ममाधिप्रधानवित्तिनी-  
विशेषः, तथा निःश्वन्तीव अथोगमनसाधम्यति तद्दगतजननिःश्वाससाधम्यदा निःश्वसन्तीव कीदृशी केत्याह—महाका-  
न्त्वारविनिर्गता परिश्रान्त्वा च या सा तथा परिणतवया—विगतपौचना, ‘अस्मय’ति—अस्मा वृत्तजन्मवती, एवंभूता हि सी  
अप्रकृत्या मवति, तत्रश्वात्यर्थं निःश्वसितीतेवं सा विशेषितेवि, तथा तद्दगतजनविषादयोगात् योचन्तीव, कीदृशी केवत्याह—  
॥ १६५ ॥

१—श्री-  
माकन्दी०  
ज्ञाताच्य०  
सम्भूदेत्पा-  
तवर्णनम्।

तपश्चरणं-ब्रह्मचर्यादि । उत्कलमपि उपचारात् तपश्चरणं-स्वर्णसम्भवमोगजाते । तस्य क्षीणः परिभीगो यस्याः सा तथा,  
 निधयचनकाले देववरवधूः, अथवा-' उत्पयमाणीविवे' त्यादाविवशब्दस्यान्यत्र योगादुपतन्ती नौः, केव १-सिद्धिविद्या-  
 विद्याघरकन्यकेवेत्यादि । व्याख्यायेयमिति, तथा मञ्जुर्णितानि काष्ठानि कृष्णं च-तुण्डं यस्याः सा तथा, तथा भया भेदी-  
 सकलफलकाशारभूतकापुरुषा यस्याः सा तथा, भोटिगो-मग्नः सहस्र-अक्षात् सहस्रसहृदयजनाश्रयभूतो वा मालो-  
 मालकः उपरितुभागो जनाधारो यस्याः सा तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, तथा शूलाचितेन-शूलाप्रोतेव गिरिशूङ्गा-  
 गोहपेन निगलमध्यनां गतत्वाच्छूलाचिता वक्षो-वक्तः परिमित्यो-जलधिजलस्पर्शो-यस्याः सा तथा, ततः कर्मधारयः;  
 अथवा-शूलायितः-आचारितशूलरूपः इकट्ठितपरिकरत्वात् ; ' शूलाइत्ति-पाठे तु शूलायमानो वक्षश्च-वक्तः ' परिमासो '  
 ति-नौगतकापुर्विक्षेपो नाविकप्रसिद्धो यस्यां सा तथा, फलकान्तरेरेपु-महैतिर-फलकविचरेपु तटतटायमानाः-तथाविष्वचन्ति  
 विद्यधानाः स्फुटन्तो-विषटमानाः सन्ध्यो-मीलनतानि यस्यां सा तथा, विगलन्त्यो लोहकीलिका यस्यां सा तथा, ततः  
 कर्मधारयः, तथा सचाहैः-सर्वाच्चयवैर्विजृमता-विवृतता गता या सा तथा, परिशुटिवा रज्जवः-कृलकसङ्घातनदवरिका  
 यस्याः सा तथा, अत एव 'विसरंत'ति-विशीर्यमाणानि सचार्णिणि गात्राणि यस्याः सा तथा, ततः कर्मधारयः;  
 आमकम्लुकभूता-अपक्वनशुरावकल्पा, जलसम्पूर्णक्षणेन विलयनात्, तथा अकृतपुण्यजनमनोरथ इव चिन्त्यमाना--कृथमि-  
 समेवामापदं निस्तरिष्यतीत्येवं विकलप्यमाना! गुर्वी-गुरुका, आपदः मकाशात् दुःमुद्रणीयत्वात्, निष्पुणजनेनापि

१—श्री-  
माकन्दी०  
झावाच्य०  
समुदो-  
तपातादि-  
वर्णनम् ।

स्वो मनोरथः कृयमयं पुराणिष्यत इत्येवं चिन्तयमानो दुर्निर्बहव्याद् गुरुरेव भवन्तीति तेनोपमेति, तथा हांहाकुते न-  
हाहाकारेण कर्णधाराणो-नियोमकाणो नाविकानां-कैवल्यानां वाणिजकज्ञानां कर्मकरणां च प्रतीतानां विलिपिं-विलिपे-  
यसयो मा तथा, नानाविधे रत्ने: पण्येश-माण्डे: समृद्धो या सा तथा, 'रोयमाणेहि' ति सशब्दमशूणि विमुच्यत्सु,  
'कंदमाणेहि' ति-शोकात् भावाच्चनि व्युच्यत्सु, 'सोयमाणेहि'-शोचत्सु भन्तया लिद्यमानेत्सु, 'तिरप्यमाणेहि' ति-मयाव्-  
प्रस्वेदलालादि तर्पत्सु, 'विलपत्सु'-आत्म जलपत्सु एकं महात्, 'अंतो जलगामं' ति-जलान्तरं गिरिगिरिखरमासाध-  
ममप्पः कृपकः-कृपकस्तम्भो प्रथ यत्र मित्रपटो निवाच्यते तोरणानि च यस्यां मा तथा, 'तथा मोटिता छजडण्डा यस्यां  
मा तथा, वलकानो-दीर्घदारहस्याणां श्रुतानि खण्डानि यस्यां सा तथा, अथवा वलयश्चतः-वलयश्चतः-  
या मा तथा, 'करकर 'ति-करकरेतिशब्दं विद्यवाना तत्रैव जलशो विलवं-विलयसुपतेति, 'पोपवहणसंपराएसुं' ति-  
सम्पापः-ममामः वद्यानि भीषणानि पोतवहनकार्याणि गानि तथोऽन्यन्ते तेषु, देवताविशेषणानि विजयचौरविशेषणवद्-  
गमनीयानि; 'असिखेडगवगवहत्थ' ति-खड्गफलकारयो वग्नयो हस्तो यस्याः सा तथा, 'रत्नगडमसुयाहं' ति-  
रक्तो-शशितो गण्डो येस्तानि रक्तगण्डानि गानि इमशूणि-कर्विकेशाः योस्ते रक्तगण्डमशूके, 'माउयाहि उचसोहि-  
याहं' ति-इद माउयाउ उचरोग्रोमाणि सम्भान्यन्ते, अथवा-'माउया'-सम्भयो मातरो वा ताम्भः उपशोभिते-समारचित-  
केशत्वादिना जनितश्चोमे उपशोभिते चा-निर्मलीकृते शिरसी-मस्तके छिन्नेति वाक्यशेषः, 'जणणं देवाणुष्टिप्य' त्यादि, ये

इति, 'अमयफलाइं'ति-अमुतोपमफलानि ।  
 तते नं मा रथणादीवदेवया, सक्कवयणसंदेसेण सुट्टिएण लवणाहिवहणा। लवणाससुहे लिपत्तचतुर्थो अणुपरियटियन्वेति, जे किंचि तत्थ तनं वा, पर्तं वा, कठं वा, कपयवरं वा, असुहं पृतियं दुर्भिगंघमचोकखेति तं सन्वं आहुणियः, विसत्तचतुर्थो प्रगते एडेपवं तिकटु पिणित्ता; तते नं सा रथणहीवदेवया, ते मांग-दिग्यदारए; एवं चदासी-एवं खलु आहं देवाणुपिया !, सक्क० सुट्टिय० तं चेव जाव पिणित्ता; तं जाव अहं देवा० !, लवणाससुहे जाव एडेमि ताव तुव्वमे इहेव पासायवदिस्सए उहंसुहेण अभिरममाणा चिड्ह, जति नं तुव्वमे एयंसि अंतरंसि उल्लिखणा वा, उरकुया वा, उपकुया वा, भवेज्जाह; तो नं तुव्वमे पुरच्छमिळं वणसंडं शच्छेज्जाह, तत्थ नं दो लक्ठ सप्ता साहीणा तं०-पाउसे य वासारत्ते य,-“ तत्थ उकंदलसिल्धंदंतो पिणितरचरणकरो । कुडयज्जुणणीवचुरभिदाणो पाउसउक्कायवरो साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य-सुरनोवयणिविचितो दहुरकुल्लरसियउल्लरबो । वरहिणाविदपरिणद्विसिहरो वासारत्तो उकंप-नवतो साहीणो ॥ २ ॥ ” तत्थ नं तुव्वमे देवाणुपिया !, बहुसु वावीसु य, जाव सरसरपंतियासु बहुसु

कञ्जन प्रेष्याणामपि ग्रेहं देवानुप्रिया चदित्यति-उपदेश्यति यदुतायमाराध्यः; ‘तस्स’चि-रुस्यापि आस्तर्णं मवत्या: आज्ञा अनश्च विधेयतया आदेशः उपारातः-सेवावचनं-अतियमपूर्वक आदेश एव निर्देशः-कार्याणि प्रति प्रस्ते छते यज्ञियतार्थ-सुत्तरमेतेषां समादारद्धन्दः तत्र, अथवा-यदेवानां प्रिया चदित्यति, ‘तस्स’चि-तत्र आज्ञादिरूपे स्थास्यामः-चातित्याम इति, ‘अमर्यफलाद्यं’ति-अस्तोपमफलानि ।

१-श्री-  
माकन्दी-  
ज्ञाताभ्य०  
रत्नदीप-  
देवतादि-  
वण्णन-  
सत्रम् ।

आलीघरएसु य, मालीघरएसु य, जाव कुसुमथरएसु य, सुहंसुहेणं अभिरममणा विहरेज्बाह; जति णं  
तुङ्मे पत्थयित उन्निवाचा वा, उरसुया वा, भवेज्बाह; तो णं तुङ्मे उचरिल्लं वणसंडं गच्छेज्बाह,  
तत्थ णं दो ऊक सया साहीणा तं०--सरदो य हेमंतो य,--“तथ उ सणसत्वणकउओ नीछुपलपउम-  
नलिणसिगो । सारसचक्खापरवितयोसो सरयज्जगोवती साहीणो ॥ १ ॥ तथ य सियकुंदधवलजोपहो  
कुसुमितलोद्वणसंडमंडलतलो । उसारदग्यारपीचरकरो हेमंतऊकससी सया साहीणो ॥ २ ॥” तथ  
गं तुङ्मे देवाणुपिया ।, वाचीसु य जाव विहरेज्बाह, जति णं तुङ्मे तथयित उन्निवाचा वा जाव उरसुया  
वा भवेज्बाह, तो णं तुङ्मे अचरिल्लं वणसंडं गच्छेज्बाह; तथ णं दो ऊक साहीणा, तं०--“वसंते य गिम्हे  
य, तथ उ सहफारचारहारो किसुयकपिणयारासोगमउडो । कसिततिलग्यउलायवतो वसंतउऊणरवती  
साहीणो ॥ ३ ॥ तथ य पाडलसिरीससलिलो मलियाचासंतियधवलबेलो । सीयलसुरभिअनिलमगर-  
चरिओ गिम्हकउकसागरो साहीणो ॥ ४ ॥” तथ णं बहुसु जाव विहरेज्बाह, जति णं तुङ्मे देवा० ।  
तत्थयित उन्निवाचा उरसुया भवेज्बाह, तओ तुङ्मे जेषेव पासायवडिसए तेणेव उवागच्छेज्बाह, मर्म पडि-  
वालेमणा २ चिट्ठेज्बाह, मा णं तुङ्मे दक्षियणिल्लं वणसंडं गच्छेज्बाह, तथ णं महं एगे, उगविसे, चंड-  
विसे, घोरविसे, महाविसे, अहकापमहाकाए, जहा तेयनिसग्नो, मसिमहिसामूसाकालए, नयणविसरो-  
सपुणो, अंजणपुंजनियरपगासे, रत्नांच्छे, जमलजुपलचंचलचलंतजीहे घरणियलबेणियमूए, उकडफुडकुडि-  
॥ २६७ ॥

लजडिलकर्तव्यडिपडाडोबकरणाद्वच्छें, लोगाहारधरमसमाणधमधमेंतघोसे, अणागलियचंडनिबरोसे, समुहिं तुरियं, चवलं घमधमंतदिटीविसे सप्ये य परिवसति; मा णं तुहं सरीरगस्स वावत्ती भविससइ; ते मागांदियदारए दोचंपि तचंपि एवं वदति॒, वेउदिवयसमुन्घाएणं समोहणति॒, ताए उफिढाए लवणस-  
मुहं तिसत्ताखुत्तो अणुपरियेहेउं पयत्ता यावि होत्था ॥ लुत्रम्-८८ ॥

‘सकवयणसंदेसेण’ति-शकवचनं चासौ सन्देशश-मापकान्तरेष देवान्तरस्थय भणनं शकवचनमन्देशः तेन, अशु-  
चिं-अपविं, समुदस्यागुदिमात्रकारं पत्रादीति प्रक्रमः पृतिं-जीर्णतया कृथितप्रायं, दुरभिगन्ध-दुष्टगन्धं किमुकं भवति ?  
अचोंधं अशुद्दः ‘तिसत्तखुत्तो’ति-विभिर्णिताः सप्त विमस विसम वारा: विसमकृत्वः, एकविशतिवारानित्यर्थः; ‘एयसि  
अंतरंसि’ति-एतत्समवसरे निरहं वा, ‘उठिचरण’ति-उद्दिशी उद्देशवन्ती, ‘उदिपच्छड़’ति-मीतो, पाठान्तरेण—उत्पल्लुती—  
भीतवेव; ‘उसचुय’ति उत्सुको अस्मद्वसमागमनं ग्रहि, ‘तत्थ णं दो उद्दृइत्यादि, तत्र-पौरस्तयं चनवुण्डे द्वी क्रत्-  
कालविशेषो सदा स्वाधीनो—शस्तिवेन स्वायत्तो, तजान्यनां वनसपतिविशेषपुण्यादीनां मङ्गाचात्, तद्यथा-प्रायुद्द-वर्षाक्रश,  
आपाहश्रावणो भाद्रपदाभ्युजो चेत्यर्थः, अनयोरेव रूपकालकृरेण वर्णनाय गीतिकादयम्, ‘तत्थ उ’इत्यादि,  
तत्रेव पूर्वयनवण्डे नान्यत्रो दीच्ये पश्येषे चेत्यर्थः, कन्दलानि च-प्रत्यग्नलताः सिलिन्ध्राश-भूमिस्फोटाः, अन्ये  
तचाहुः—कन्दलप्रथानाः मिलिन्ध्रा-वृक्षविशेषा ये प्रायुपि पूर्वन्ति, सितकुमुमाश भगन्ति त एव कुमुमिताः सन्तो  
दन्त्वा यस्य धवलत्वसाध्यत्वति सः कन्दलसिलीन्धन्तः, इह च मिलिन्ध्राणां कुमुमितत्वविशेषणं सामर्थ्यादृ व्याख्याते,

१-श्री-  
माकन्दी-  
ड्वाराद्य०  
वनस्पदा-  
दिवर्णन-  
सम् ।

कुमुमाभावे तेषां प्राणुषेऽन्यत्रापि कालान्तरे समस्यादिति, तथा ‘निउरो’चि-इक्षविशेषः; तस्य यानि वरयुध्याणि तान्येव  
पीवरः-स्थूरः करो यस्य स तथा, कुटजार्जुनतीपा-इक्षविशेषास्तत् युध्याणि कुटजार्जुनतीपानि तान्येव सुरमिदानं-  
सुगन्धिमद्वलं यस्य स तथा, श्रावृद्ध ऋद्वेर गणवरः प्राहुद्वर्तुगजयः स्वाधीनः, इह सिलिन्धादिवनस्पतीनां  
कालान्तराकुठकुमुमानां सदाकुमुमितानां मावादात्मवशोऽस्तीति भावः ॥ १ ॥ तथा तत्रैव वनस्पदे सुरगोप-इन्द्रगोप-  
कामिधाना रक्तवर्णः कीटास्त एव मणयः पश्चारागादयः तैर्विचित्रः-कर्तुर्यो यः स तथा, तथा दर्दुरकुलरसितं-मण्डूकसमूहराटिंते  
तदेव उज्ज्वरचो-निर्झर्यवदो यत्र स तथा, बहिणवृन्देन-शिखण्डिसमूहेन परिणद्वानि परिगतानि शिखराणि क्रतुपये  
वृद्यसम्बन्धीनि पर्वतपहु कुटानि यत्र स तथा वर्णाश्रावकत्वेर पर्वत इति विष्रहः, स्वाधीनः-स्वायचस्तद्वर्णाणि सर्वदा तत्र  
मावादिति ॥ २ ॥ ‘वाकीमु’इत्यादि प्रथमाइयनवत्, ‘सरओ हेमंतो य’ति-कार्त्तिकमार्गशीर्षो योवमाची  
चेत्यर्थः इहापि गीतिकाद्यं-‘तत्थ उ’इत्यादि, तत्रैव सनो-चलकप्रधानो चनस्पतिविशेषः सप्तपर्णः-सप्तच्छदस्तयोः पुष्पाणि  
सप्तसप्तपर्णनि तान्येव ककुंदं-स्कन्धदेशविशेषो यस्य स तथा, नीलोत्पलप्रधानलिनानि-जलजकुमुमविशेषास्तान्येव श्रुते  
यस्य स तथा, सारसाशक्वाकाश-पश्चिमिशेषास्तेषां ‘रवियं’ति-रुदं तदेव योगे-नदिं यस्य स तथा श्रावहतुरेव गोपति:-  
गोवेन्द्रःशरद्वर्तुगोपति: स्वाधीनः ॥ २ ॥ तत्येव तत्र वनस्पदे सिगानि यानि कुन्दानि-कुन्दामिधानवनस्पतिकुमुमानि तान्येव  
बद्वला उयोत्त्वा-चन्द्रिका यस्य स तथा, पाठान्तरेण-सितकुंदविमलजोपहोचि सप्तं, कुमुमितो यो लोभवनस्पदः  
स एव मण्डलतलं-चिम्बं यस्य स तथा, हुणं-हिमं वृत्प्रथानाः या उदकसारा-उदकविन्दुप्रवाहासता एव यीवराः:-

३४८  
स्थूलः कराः-किरणा'यस्य स तथा, हेमन्तक्रतुरेव शशी-चन्द्र इति विग्रहः स्वाधीनः ॥ २ ॥ तथैव 'वसंते गिर्हे  
य'ति- फलगुनचैत्रौ वैशाखज्येष्ठौ चैत्र्यर्थः; 'तत्थ उ' इत्यादि, गीतिकाद्वयं, तत्र च सहकाराणि-चूरपृष्ठाणि तान्येव  
चाहद्विरो यस्य स तथा, किञ्चुकानि-पलाशस्य कुमुमानि कर्णिकाराणि-कर्णिकारस्य अशोकानि चाशोकस्य तान्येव मुकुटं-  
किरीटं यस्य स तथा,-उच्चिद्रुतं-उक्तं तिलकचकुलकुमुमानि तान्येवातपत्रं-छत्रं यस्य स तथा, वसन्त-  
क्रतुर्नरपतिः स्वाधीनः प्रतीरम् ॥ २ ॥ तत्र च पाटलागिरीपक्षुमानि तान्येव सलिलं यत्र स तथा मलिका-  
विचकिलो वामनिका-लताविशेषः रत्कुमुमानि मलिकावासनिकानि तान्येव घबला-सिरा वेला-जलद्विद्यर्थ्य स तथा,  
शीरलः सुरभिष्ठ योडनिलो-वायुः स एव मकरचरितं यत्र स तथा, इह चानिलशुब्दस्य अकारलोपः प्राकृतवत्त्वात् 'अरणं  
रणं अलायं लाउय' मित्यादिवत्, श्रीप्रकृतुसागरः स्वाधीन इति । 'उत्तराविसे' इत्यादि उत्रं दुर्जरत्यादिपं यस्य स  
उग्रविष्प, एवं सर्वत्र, नवरं चण्डं शागिति व्यापकत्वात्, पाठान्तरे तु-'मोगविसे' इति तत्र मोगः शरोरं स एव विष्यं  
यस्येति, धोरं पंखपरया पुरुषसदस्यापि वातकस्त्वात्, महर्त् जग्मुद्दीपत्रमाणशरीरस्यापि विषवयाऽमवनात्, कायान्-  
शरीराणि शोपाहीनामितिकान्तोऽतिकायः; अत एव महाकायः, जहा तेयनिस्त्वं 'त्ति-शेपविशेषणानि यथा गोशालक-  
चरिते तथेहाद्येत्वयानीत्यर्थः; तानि चैतानि 'मस्तिमहिसमूसाकालग्ने' मपी च महिषश्च मूषा च-स्वप्नादितापन-  
माजनविशेष इति द्रन्दः एवा इत्र कालको यः स तथा, 'नयणाविसरोसपुणो' नयनविषेण-द्विष्विषेण रोपेण च पूर्ण-  
इत्यर्थः, 'अंजणपुंजनिगरपगासे' कजळपुक्कानां निकर इव प्रकाशते यः स तथा, 'रत्तच्छेज जमलजुपलच्छलच्छलच्छलः'

॥ २६९ ॥

१.—श्री-  
माकन्दी-  
ब्राह्मण ०  
माकन्दी-  
पुत्र  
परस्पर-  
विचार-  
णादि-  
छब्दम् ।

तजीहे' यमलं—सहवर्ति शुगलं—द्रयं चञ्चलं च यथा भवत्येवं चलन्तयोः—अतिचपलयोजिह्वोर्यस्य स तथा, 'धरणितत्त्वं वेणि भूए' घरणीतलस्य वेणीभूतो—वनिताशिरमः केशवः पवित्रेष्य इव यः कृष्णत्वदीर्घत्वशुलङ्गत्वपथ्याद्यमागत्वादिसाधन्यात् स तथा, 'उकड़फुड़कुड़िलजड़कक्षवड्चिगड़फड़ालोवकरणदक्छे' उत्कटो वलवताऽन्येनाळांसतीयत्वात् स्फुटो—च्यक्तः प्रयत्नविहितत्वात् कुटिलः—तत्स्वरूपत्वात् जटिलः—स्फन्थदेशो केरारिणामिवाहीनों केरारिणाद्वावात् कर्कियो—निन्दुरो वलवत्वात् विकट्य-विस्तीर्णो यः एकटारोपः—कृष्णासंसरमः तत्करणे दद्वो यः स तथा, 'लोहागरघम्ममाणाधमधम्मत्योस्ते' ।—लोहाकरे दमायमानं—अग्निना ताप्यमानं लोहमिति गम्यते, तस्येव यद्गमधमायमानो—यमव्यमेतिवर्णन्यकिमिवोत्पादयन् वोपः—गृहदो यस्य स तथा, 'अणागलियचंडतिन्वरोसे'—अनर्गलितः—अनिवारितोऽनाकालितो या—अप्रमेयश्चण्डतीवः—अत्यर्थविक्रो रोपो यस्य स तथेति, 'समुद्दीह तुरियं चवलं घमंतं' ति शुनो मुखं श्वशुखं तस्येवाचरणं श्वप्तिः—कौलेयकस्येव मपणां त्वारितचपलं—अतिचडलत्वा धमन्—गृहदं कुर्वन्नित्यर्थः ।

तए णं ते मांगदियदारया तओ मुहुर्त्ततरस्स पासायचडिसए सदं चा, राति चा, धिति चा, अलम् माणा अणमण्णं एवं बदासी—एवं बलु देवाऽ ।, रयणदीचदेवया अम्हे एवं बदासी—एवं बलु अहं सक्त वयणसंदेसेणं चुडिएणं लघणाहिव्यहा जाव चावत्ती भविस्सह, तं सेयं बलु अम्हं देवाणुपिया ।, गुरुचित्तमिले वणसंड गमित्तए, अणमणस्स एयमहं पडिच्छुणेन्ति २, जेणेव पुरचित्तमिले, वणसंडे, तेणेव उचागच्छुति २, तत्प णं वाषीमु य जाव अभिममणा आलीचरपुषु य जाव विहरति; तते णं ते मांग-

दिग्दारया तत्थवि सदं वा जाव अलभमाणा, जेणेव उचरिल्ले वणसंडे, तेणेव उच्या०२, तत्थ णं वाकीसु  
य जाव जालीयरएसु य विहरन्ति; तते णं ते भागंदियदारया तत्थवि मार्ति वा जाव अलभ० जेणेव  
पचतिथमिल्ले वणसंडे, तेणेव विहरति; तते णं ते भागंदिय० तत्थवि सर्ति वा जाव अलभ०  
अणमणां, एवं वदासी-एवं खलु देवा० !, अम्हे रयणदीवदेवया एवं वयासी-एवं खलु अहं देवाणु-  
दिष्या !, सक्रस्व वयणसंदेसेण सुटिपण लवणाहिवहणा जाव मा णं तुऽमं सरीरगस्त वाचत्ती भवि-  
स्तति, तं भवियन्वं एथ कारणेण, तं सेयं खलु अम्हं दविखणिल्ले वणसंडे गमित्तए त्तिकडु अणम-  
णस्स एतम्हं पडिसुष्णेति३, जेणेव दविखणिल्ले वणसंडे, तेणेव पहारेत्य गमणाए; तते णं गंधे निद्राति  
से जहा नामए अहिमडेति वा जाव अणिङ्गतराए चेव, तते णं ते मागंदियदारया तेणं आचुमेणं गंधेण  
अभिभूया समाणा सएहि२ उचरिज्जेहि आसार्ति पिहेति२, जेणेव दविखणिल्ले वणसंडे तेणेव उचागया,  
तत्थ णं महं एगं आघातणं पासंति२; अद्वियरासिसतसंकुलं, भीमदरिसपिंजं, एगं च तत्थ तुलाहतयं,  
पुरिसं, कलुणाति विस्मराति॒ कुङ्वमाणं पासंति; भीता जाव संजातभया जेणेव से तुलाति॒  
वा, इहं हञ्चमागए केण वा इमेयाखबं आवर्ति पाविए ?; तते णं से तुलातियए पुरिसे मागंदियदारए

१-भी-  
माकन्दी-  
आवाद्य०  
शुला-  
रोपित-  
कथनादि-  
यज्ञम् ।

एवं वदासी-एस एं देवाणु० ! रणदीवदेवयाए आचयणं अहणं देवाणुरिपया ! जंयुधीवाओ दीवाऊओ,  
मारहाओ वासाओ, कांगदीए आसवाणियए, विषुलं पणियमंडमायाए पोतवहेणों लवणसमुंद्रं ओयाए,  
तते एं अहं पोयवहणविवत्तीए निन्दुभंडसारे एं फलगांबंड आसाएमि; तते एं अहं उतुज्जमाणो॒;  
रणदीवेणों संतुङ्दे, तते एं सा रणदीवदेवया ममं ओहिणा पासह॒, ममं गेणह॒ २, माए सर्दि विषु-  
लात्ति भोगभोगात्ति सुंजमाणी विहरति; तते एं सा रणदीवदेवया ! अणदा कयाइ अहालहुसगंगिसि  
अवराहंसि परिकुविया समाणी ममं पतार्हवं आवत्ति पावेह, तं ए पावत्ति एवाह० !, तुम्हंपि इमेदिसि  
सरीरणाणं का मणे आवत्ति भविस्तुह॑ ?, तते एं ते मांदियदारया तस्स सुलाइयगस्स अंतिः पायमत्यं  
सोचा, णिसम्म, बलियतरं भीया जाव संजायभया सुलाइत्यं युरिसं एवं च०-कहेणा देवाणु० !, अमरे-  
रतणदीवदेवयाए हत्याओ साहंत्य णिथरिजामो ?, तते एं से सुलाइया ! युरिमे ते मार्गांदिय० एवं  
वदासी-एस एं देवाणु० !, पुरित्तिमिह॑ वणसंडे सेलगस्स जकवस्स जकवायपणे सेलए ! नामं आसर्व-  
धारी जकवे परिवस्ति, तए एं से सेलए जकवे चोहमडमुटिडपुण्णमासिणीमु ! आगपसमाए पत्तसमये  
महया ? सहेणं एवं वदति-कं तारयामि ?, कं पालयामि ?, तं गच्छह, एं तुहमे देवाह० !, पुरित्तिमिह॑  
वणसंडे सेलगस्स जकवस्स जकवायपणे कोरेह॒, जण्णुपायवडिया पंजलितडा विणएहं पञ्जुबा-  
समाणा चिट्ठह, जाहि एं से सेलए जकवे आगतसमाए पत्तसमये एवं वदेज्जा-कं तारयामि ?, कं पाल-

यामि ॥ ताहे तुन्मे बदह-अम्हे तारयाहि, अम्हे पालयाहि; सेलए भे जकखे परं रथणादीवदेवया ए  
हृत्थाओ साहिंथ गित्थारेज्ञा, अणणहा भे न याणामि इमेसि सरीरणां का मणो आवहै भविस्तसह ॥  
॥ सुन्नम् ८९ ॥ तते णं ते मांगांदिय० तस्स सूलाहयस्स अंतिए एयमठं सौज्ञा, निसम्म; सिंगं, चंडं,  
चबलं, तुरियं, चेहयं जेणेव पुरचिक्षिल्ले वणसंडे, जेणेव पोकखरिणी, तेणेव उवाह०, पोकखरिण गाहंति२,  
जलमज्जणं करेन्ति२, जाहं तत्थ उपलाह० जाव गेणहंति२, जेणेव सेलगरस्स जकखाययो,  
जेणेव उ०२, आलोए पणामं करेन्ति२, महरिहै पुण्कचणियं करेन्ति२, जणणुपायवडिया, सुस्तुसमाणा, णमं-  
समाणा पञ्जुखासंति; तते णं से सेलए जकखे आगतसमए पत्तसमए एवं बदासी-कं तारयामि ॥,  
कं पालयामि ॥; तते णं ते मांगांदियदारया उद्धाए उट्टेति, करयल० एवं व०-अम्हे तारयाहि, अम्हे पाल-  
याहि; तए णं से सेलए जकखे ते मांगांदिय०, एवं वया०-एवं खालु देवाणुषिया ॥, तुवं मए साँदिं लच-  
णसमुद्देणं मज्जङ२, घीइचयमाणेणं सा रथणादीवदेवया पावा, चंडा, रुदा, साहस्रिया बहै हृत्थाहि  
य, मठणहि य, अणुलोमेहि य, पडिलोमेहि य, सिंगारेहि य, कलुणोहि य, उवसगं  
करेहिति; तं जति णं तुवं मे देवा० ! रथणादीवदेवया० एतमठं आढाहै वा, परियाणहै वा, परियाणहै, णो  
तो भे अहं पिट्ठातो वियुणामि, अह णं तुवं मे रथणादीवदेवया० एतमठं णो आढाहै, णो परियाणहै, णो  
अवेकखह, तो भे रथणादीवदेवया० हृत्थातो साहहिंथ पित्थारेमि; तए णं ते मांगांदियदारया सेलगं जाकखं,

१-श्री-  
माकान्दी-  
ज्ञाताथ्य०  
शोलकयक्ष-  
समवन्वा-  
दिवर्णन-  
सूक्ष्म०

नगद्वी-  
१० शी-  
भीजाता-  
शर्मस्थापाहे

॥ १७१ ॥

पां पदासी-जपां देवाणु० । बहसंस्ति तस्य पां उयवायवयणिहे से चिट्ठिस्सामो, तते पां से सेला०  
जारने उत्तरुरचिह्नं दिसीभां अयकमति२, वेउचियपसमुच्याणं समोहणति२, संबोद्धाति२, ते मांदियदारा० पां  
संट निसरड, दोंचंपि तंयंपि वेउचियपसमु० ३, पां महं आसलवं चिउचवहृ० ३, ते मांदियदारा० पां  
चदासी-हं ओ मांदिया०, आकहं पां देवाणुदिया०, चम पिंडिसि, तते पां ते मांदिय०, हठ०, सेल-  
गरम जरारस्स पणामं करेति२, सेलगरस्स पिंडि उरुडा०; तते पां से सेलए ते मांदिय०, उरुडे जाणिचा०,  
सत्ताहृतालयमाणमेताति२ उरु० वेलासं उपयति, उपइत्ता० य ताए० उकिडाए०, तुरियाए०, देवयाए०, लवण-  
नमुर० मउसंमज्जेण, जेणेव जंयुहीवे दीवे०, जेणेव भारहे०, जेणेव नंपा नयरी०, तेणेव पहोरेत्थ गमणा०  
॥ १७२ ॥ तते पां सा रयणदीवदेवया० लवणसमु० तिसत्तरुतो० अणुपरियहति, जं तत्थ तणं वा  
जाय फूडेति, जेणेव पासायवडेसा० तेणेव उयागच्छति२, ते मांदिया० पासायवडेसा० अपासमाणी  
जेणेय पुरुचित्तिल्लेवणसंठे जाप समंता० मरगणगवेसणं करेति२, तेस्ति॒ मांदियदारगाणं कच्छह०  
सुस्ति॒ या॒ ३, अलामाणी॒ जेणेव उत्तरिल्ले॒ पां चेव पचत्थियमिल्लेवि॒ जाव अपासमाणी॒ ओहि॒ पउंजंति॒; ते  
मांदियदारा० मेलाणं॒ मार्दि॒ लयणसमु० मज्जंमज्जेणं॒ चीहवयमाणे॒, पासति॒, आसुररा॒ असिन्वेडग-  
गेणहति॒, मराह॒ जाव उपयति॒, ताए॒ उपिडाए॒ जेणेव मांदिय० तेणेव उचा०३, पां च०-हं भो मां-

दिय० अपत्तिधर्यपतिथया किणां तुऽमे जाणह ममं विप्रजहाय सेलएणं जकलेणं सद्ग्दि लवणसमुदं मउङ्गं  
मउङ्गेणं, वीतीवयमाणा १; तं पवमवि गए जह ण तुऽमे ममं अवयवत्वह तो भे अथि जीवियं, अहणं  
पावयस्तवह तो भे इमेणं नीलृपलगवल जाव पडेमि, तते णं ते मागंदियदारया रयणदीवदेवयाए अंतिः  
पृष्ठमधुँ सो०, णिस०; अभीया, अतथ्या, अणुविगा, अकरुभिया, असंभता, रयणदीवदेवयाए पृष्ठमधुँ  
नो आंदन्ति, तो परि०, णो अवयववंति; अणाहायमाणा अपरि०, अणवयवत्वमाणा सेलएण जकलेण  
सद्ग्दि लवणसमुदं मउङ्गेणं भीतिवर्यंति; तते णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिया जाहे नो संचापति,  
यहाँ पडिलोमेहि य, उवसगेहि य, कालिचए वा, लोभिचए वा, विपरिणामिचए वा, हं भो मागं-  
ताहे महुरेहि हिंगारेहि य, कल्लोहि य, उवसगेहि य, उवसगेउं पयत्ता यावि होत्था; हं भो मागं-  
दियदारगा ।, जति णं तुऽमे हं देवाणुपिया !, मए सद्ग्दि हसियाणि य, रमियाणि य, ललियाणि य,  
कीलियाणि य, हिंडियाणि य, मोहियाणि य; ताहे णं तुऽमे सब्बार्ति अगणेमाणा ममं विप्रजहाय  
सेलएणं सद्ग्दि लवणसमुदं मउङ्गेणं वीहवयह; तते णं सा रयणदीवदेवया जिणरकिखयसस मणं  
ओहिणा आभाएति आभोएत्ता एवं वदासी-पिंचंडपिय णं अहं जिणपालियसस अणिटा ५ निचं नम  
जिणपालिए अणिटे ६ निचंपिय णं अहं जिणरकिखयसस इडा ५ निचंपिय णं ममं जिणरकिखए इटे ५,  
जति णं ममं जिणपालिए रोयमाणी, कंदमाणी, सोयमाणी, तिपमाणी, विलवमाणी, लावयववति

॥ १७२ ॥

६-श्री-  
माकन्दी-  
ज्ञातार्थ-  
रत्नदीप-  
देवता-  
विलापादि-  
वर्णन-  
ब्रह्म ।

किणं तुमं जिणरविषया । ममं रोयमाणि जाव णावियकवस्तु  
देवया ओहिणा उ जिणरविषयस्तु मणं । नाळण वधनिमित्तं उचरि मांदियदारगाणं दोऽहंपि ॥ १ ॥  
दोसकलिया सललियं णाणाविहुणवासमीसं (सियं) दिवं । वाणमणनिव्विहुकरं सटवोउयसुरभिकुसु-  
मयुद्दि पमुंचमाणी ॥ २ ॥ णाणमणिकणरयणयंटियर्विषयोकरमेहलमृत्सणरवेण । दिसाओ विदि-  
साओ पूर्वपती वयणमिणं वेति सा सकलुसा ॥ ३ ॥ होल चमुल गोल णाह दहत पिय रमण कंत सामिय  
णिविण णिल्यक । छिण णिकिन अकर्यलय मिहिलभाव निल्लज्ज लुकख अकलुण जिणरविषय मज्जं  
हियपरव्वगा ॥ ४ ॥ णहु छुबसि एकियं अणाह अयथवं तुज्ज चलणओवायकरियं उजिक्कुन महणां ।  
गुणसंकर ! अहं तुमे विहुणा ण सम्भव्यावि जीवितं याणपि ॥ ५ ॥ इमस्तु उ अणेग्गासमगरविषयसा-  
क्यसपातलयरस्तु । रयणगरस्तु भज्जो अप्पाणं वहेमि तुज्ज तुरओ एहि पियताहि जहसि कुविओ  
खगाहि एकाविराहं मे ॥ ६ ॥ तुज्ज य विगययणविषयसिमडलगरसासिसरीयं सारयनवकमलकुमुद-  
कुवलयविमलदलनिकरसरिसनिभं । नयणं वयणं पियासागयाए सद्वा मे पेचिक्कुन जे अवलोपुहि ता  
इओ ममं णाह जा ते पेच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥ एवं सप्पणयसरलमहुराति पुणो २ कलुणाहं चय-  
णाति जंपमाणी सा पावा मग्गओ समणोह पावहियया ॥ ८ ॥” तते णं से जिणरविषय चलमणे  
तेणेव मृत्सणरवेण कणचुहमणोहरेण तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिष्टुहि संजायविषयराए रयणदी-  
किणं तुमं जिणरविषया ।, ममं रोयमाणि जाव णावियकवस्तु  
देवया ओहिणा उ जिणरविषयस्तु मणं । नाळण वधनिमित्तं उचरि मांदियदारगाणं दोऽहंपि ॥ १ ॥  
दोसकलिया सललियं णाणाविहुणवासमीसं (सियं) दिवं । वाणमणनिव्विहुकरं सटवोउयसुरभिकुसु-  
मयुद्दि पमुंचमाणी ॥ २ ॥ णाणमणिकणरयणयंटियर्विषयोकरमेहलमृत्सणरवेण । दिसाओ विदि-  
साओ पूर्वपती वयणमिणं वेति सा सकलुसा ॥ ३ ॥ होल चमुल गोल णाह दहत पिय रमण कंत सामिय  
णिविण णिल्यक । छिण णिकिन अकर्यलय मिहिलभाव निल्लज्ज लुकख अकलुण जिणरविषय मज्जं  
हियपरव्वगा ॥ ४ ॥ णहु छुबसि एकियं अणाह अयथवं तुज्ज चलणओवायकरियं उजिक्कुन महणां ।  
गुणसंकर ! अहं तुमे विहुणा ण सम्भव्यावि जीवितं याणपि ॥ ५ ॥ इमस्तु उ अणेग्गासमगरविषयसा-  
क्यसपातलयरस्तु । रयणगरस्तु भज्जो अप्पाणं वहेमि तुज्ज तुरओ एहि पियताहि जहसि कुविओ  
खगाहि एकाविराहं मे ॥ ६ ॥ तुज्ज य विगययणविषयसिमडलगरसासिसरीयं सारयनवकमलकुमुद-  
कुवलयविमलदलनिकरसरिसनिभं । नयणं वयणं पियासागयाए सद्वा मे पेचिक्कुन जे अवलोपुहि ता  
इओ ममं णाह जा ते पेच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥ एवं सप्पणयसरलमहुराति पुणो २ कलुणाहं चय-  
णाति जंपमाणी सा पावा मग्गओ समणोह पावहियया ॥ ८ ॥” तते णं से जिणरविषय चलमणे  
तेणेव मृत्सणरवेण कणचुहमणोहरेण तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिष्टुहि संजायविषयराए रयणदी-

नवाही-  
६० य०  
श्रीज्ञाता-  
वर्मकथाहे  
॥ १७२ ॥

वस्स देवयाए तीसे सुंदरथणजहणावयणकरचरणनयणलावद्वरुवजोव्वचणसिरि॑ च दिव्वं॒ सरभसउवग्-  
हियाहं॒ जाति॒ विभ्योविलसियाणि॒ च विहसियसकडक्खवदिडिनिससियमलियउवलियठियगमणपण-  
यसिविक्षिप्यपासादियाणि॒ य सरभाणे॒ रागमोहियमहं॒ अवसे॒ कम्मवसगए॒ अवयक्खति॒ मरगतो॒ सविलियं॒  
तते॒ णं॒ जिणरकिखयं॒ समुपक्कलुणभावं॒ मच्चुगलत्थलुणोहियमहं॒ अवयक्खते॒ तहेव॒ जक्खे॒ य सेलए॒  
जाणिङ्कण॒ सणियं॒ उनिवहति॒ नियगपिड्हाहि॒ विगयसत्थं॒ तते॒ णं॒ सा॒ रयणदीवदेवया॒ निसंसा॒ कलुण॒  
जिणरकिखयं॒ सक्कलुसा॒ सेलगपिड्हाहि॒ उवयंतं॒ दास !॒ मओसिति॒ जंपमाणी॒ अटपत्तं॒ सागरसलिलं॒ गोणिहय-  
याहाहं॒ आरसंतं॒ उहु॒ उनिवहति॒, अंवरतले॒ ओवयमाणं॒ च मंडलगगेण॒ पडिनिछत्ता॒ नीलपलगबलअय-  
सिप्पगासेण॒ असिवरेण॒ खंडाखंडि॒ करेति॒ २ तथ॒ विलवमाणं॒ तस्स य सरसवहियसस॒ घेतुण॒ अंगमंगति॒  
सरहिराहं॒ उकिखत्तयलि॒ बउद्दिसि॒ करेति॒ सा॒ पंजली॒ पहिडा॒ ॥॒ सूत्रम्॒ ९१ ॥॒ एवामेव॒ समणाउसो॑ ।॒ जो॑  
अफहं॒ निरगंधाणा॑ वा॑ ३, अंति॑ पवतिए॑ समाणे॑ पुणरवि॑ माणुससए॑ कामभोगे॑ आसायति॑, पवययति॑,  
पीहेति॑, अभिलसति॑; से॑ णं॒ हहं॒ भवे॒ चेव॒ चहुणं॒ समणाणं॒ ४, जाव॒ संसारं॒ अणुपरियदिससति॑; जहा॒ वा॑  
से॑ जिणरकिखण—॑ “छलओ॑ अवयक्खतो॑ निरावयक्खो॑ गओ॑ अविषेण॑ ।॒ तम्हा॑ पवयणसारे॑ निरावय-  
क्खणेण॑ भवियवं॒ ॥२ ॥॑ भोगेहं॒ निरवयक्खा॑ तरंति॑ संसा-॑  
रकंतारं॒ ॥२ ॥॑ ( सूत्रम्॒ ९२ )॒ तते॒ णं॒ सा॒ रयणदीवदेवया॒ जेणेव॒ जिणपालिए॑ तेषेव॒ उवा॑ बहृहं॒ अणुलो॑

१-भी-

माकन्दी-

ज्ञाता च्य०

जिनपालि-

तस्य

स्वस्थान-

गमनादि-

सुभ्रम् ।

मेहि य, पठिलोमेहि य, नरमहुरस्तिगारेर्हि कलुणेहि य, उवसउगेहि य, जाहे नो संचाएह, चालित्तए चा,  
 लोभि०, चिष्प०, ताहे संता, तंता, परितंता, निविणा, समाणा जामेव दिसि पाड० तामेव दिसं पडि-  
 गाया, तोते नो मे सेला जकले जिणपालिए नांदि लवणसमुदं मज्जेण बीतीवयति॒, जेणेव चंपा-  
 नगरी, तेणेव उवागच्छति॒ २, चंपा नयरी॑ अगुवाणंसि जिणपालियं पढातो ओयारेति॒, एवं च०-एस  
 न देया० १, चंपानयरी दीसति तिकटु जिणपालियं आकुच्छति॒ ३, जामेव दिसि पाउङ्ग्य॒, तामेव दिसि॒  
 पठिगए॒ ॥ सूत्रम् ९३ ॥ तते नं जिलपालिए चंपे अणुपविसति॒ ३, जेणेव सए गिहे, जेणेव अमापियरो॒  
 तेणेव उवागच्छति॒ २, अमापिक्क॒ रोयमाणे जाव खिलवमाणे जिणरकिवयचावर्त्ति निवेदेति, तते नं  
 जिणपालिए॒ अमापियरो॒ नित्तणाति जाव रोयमाणाति॒ वहूङ्गं लोहयाहं॒ मयकिच्छाहं॒  
 करेति॒ ३, कालेंगं विगतसोया जाया; तते नं जिणपालियं अन्नया कयाहं॒ चुहासणवरगतं अमापियरो॒  
 न चदासी-कलणं पुता ! जिणरकिवलए कालगए॒ १, तते नं से जिणपालिए॒ अमापिक्क॒ लवणसमुदो॒  
 चारं च कालियचारसमुदयणं पोतवहणविचर्ति च फलहवंडआसातणं च रयणादीवुत्तारं च रयणादीवदेव-  
 यागिहं च भोगविनृहं च रयणदीवदेवया अग्राहणं च सूलाइपुरिसदरिसणं च सेलगजवावआरुहणं च  
 रयणदीवदेवयगाउवसगं च जिणरकिवयविचर्ति च लवणसमुदउत्तरणं च चंपागमणं च सेलगजवावआ-  
 रुहणं च जरा भृयमवित्तहमसंदिन्दं परिकहेति, तते नं जिणपालिए॒ जाव अपसोगे जाव विपुलाति॒

नचाहो-

१०५०

भीषणा-

पर्वत्याहे

॥ १७३ ॥

॥ १७३ ॥

१४॥ तेणं कालेण ३, समणे०, समोसठे, धर्मं सोचा, पवच-  
भोगभोगाहं चुजमाणे विहरति ॥ सूत्रम् १४ ॥ तेणं कालेण ३, समणे०, समोसठे, धर्मं सोचा, पवच-  
तिए, पक्षारसंगवी, मासिएणं, सोहरमे कप्पे, दो सागरो-वर्मे; महाविदेहे सिद्धिक्षाहिति । एवामेव समणा-  
उसो !, जाव माणुससए कामभोए नो पुणरविआसाति, से ऊं जाव बीतिवतिसति, जाहा वा से जिण-  
पालिए । एवं खलु जंकृ !, समणों भगवया नवमस्स नायज्ञयणस्स अयमटे पणते तियेमि ॥ सूत्रम्  
॥ १५ ॥ नवमं अनुशयणं समतं ॥ 'सहं व 'ति-सुखलक्षणकलयदुलतं स्मृति ना स्मरणं अतिव्याकुलचित्तया न  
लमते रम, रति-चित्तरमणं, 'धिहं व 'ति-धृति चित्तस्यास्त्रयमिति, 'आसयाहं'ति-आसने-मुखे, 'पिहिंति'ति-पिघन्तः-  
स्थगयन्तः, 'आयषणं'ति-वस्थानं, 'सूलाइयगं'ति-शूलिकाभिनं, 'कलुणाहं'ति-करुणाजनकत्वात्, 'कठाहं'ति-  
कठां-दुर्लं तत्त्रमवत्वात्, 'विस्तराहं'ति-विलपशब्दस्वरूपत्वात् वचनानीति गमयते, 'कृजन्तं'-अवयकं शब्दायमानं,  
'काकंदीए'ति-काकलीनगरी तद्वनः, 'ओयाए'ति-उपागतः, 'अहालहुस्सगंसि'ति-यथाप्रकारे लघु-  
स्वरूपे 'उदिहं'ति-अन्मागास्या, 'आगयससमए'ति आमनीभूतोडसपरी-यस्य स इत्यर्थः; प्राप्तस्तु साक्षादेव, 'हृत्याओ'ति-  
हस्तराहं ग्रहणप्रयुचात्, 'साहतिंथुति-स्पहस्तेन, 'सिंगारेहं'ति-युक्ताररसोपेतः कामोत्कोचकैः करुणस्त्रेय, उपमर्गोः-  
उपद्रवैचनवेदाविवेषपूर्वे, 'अवयकवहं'-अपेक्षद्य, 'मए सद्दिं हसियाणि', इह कग्रतयो भावे तस्य  
चोपायिमेदन भेदस्य निरक्षणाह वहुनचनं, अन्यथा यद्युनाम्या मया सादु हमितं चेत्यादि वाच्यं स्यात्, तथा रत्नानि च  
गक्षादिभिः ललितानि च ईप्सितानि लीला वा, 'कीलियाणि य'ति-जलात्मोलनरुकीडादिभिः हिण्डगानि च वनादिपु

१-श्री-  
माकान्दी-  
ज्ञाताय०  
वाय० वाय०  
रत्नदीप-  
देवतादि-  
निरूपणम् ॥

गिहवानि मोहितानि च-निषुभनानि, एतच वायं काकाऽध्येयं, तत् 'उपालम्पः प्रतीयते; 'तए णं सा रथणदीवे'त्यादि  
स्यां वाचनान्तरे-रूपकविशेषद्वयामान्त्रित करोति, तथाहि-‘सा पवररथणदीवस्स देवया ओहिणा उ जिणरकिवअस्स  
नारुण वहनिमित्तं उचरि माइदिदारगाणा दोणहंपि’ हत्येकं, ‘दोसकलिया सलीलयं नाणाविहचुणणवास-  
मीसियं दिव्वं घाणमणनिवुहकं सब्बोउयसुरहिकुसुभुडिकरं पमुंचमाणी’ इति द्वितीयं; एवमन्यान्यपि  
परिभावनीयानि पद्यानि, पद्यवन्यं हि विना तुकारादिनिपातानां गादपूरणाथीनां निहेंको न घटते, अपरिमितानि च छन्दः-  
शास्त्राणीति, अर्थस्वेवम्-सा देवता जिनरक्षितस्य ज्ञात्वा भावमिति येषो वघनिमित्तं तस्यैव, वचनमिदं ब्रवीति स्मेति  
सम्बन्धः; ‘दोसकलियैति-द्वेष्युक्ता ‘सलीलयं’ति-सलीलं यथा भवतीत्यर्थः,  
चासाः तैर्मिश्रा या सा तथा तो दिव्या ग्राणमनोनिवृत्तिकरीं सर्वतुकानां सुरभीणां च कुमुमानां या वृष्टिः सा तथा तां प्रमु-  
खन्ती । तथा नानामणिकनकालानां सम्बन्धीनि यणिकाश किङ्कण्यश-क्षुद्रघणिका उपरो च प्रतीतो मेखला च-ससना  
दिग्गो निर्दिश्य पूरणन्ती वचनमिदं वक्ष्यमाणं ब्रवीति सा देवता, ‘सकलुस्त’ति-सह कलुषेण पोपेन वत्तेते या सा तथेति  
दृतीयं । हे हो (हा)ल हे बसुल हे गोल एवता च पदानि नानादेशपेश्या पुरुषाद्यामच्छणवचनानि गौरवकृतसादिगम्भीणि  
वर्चन्ते, हो (हा)ल इति दशावैकालिके होल इति हस्यते, तथा नाय ।—योगशुमकरित् !, दयित !—वक्षुम !, रक्षित ! इति  
वा; प्रिय !-प्रेमकर्त्तः !, रमण-मर्त्तः !, कान्त !-कमनीय ! स्वामिक !-अधिष्ठेते !, निर्झुण !-निर्देष !, सखेहाया वियोग-  
॥ १७४ ॥

दःस्याया मम परित्यगात्, ‘नित्यक’ति-अनप्रसरद अनुरक्ताया ममकाण्डे एव त्यागादित्यदं, ‘त्रिणा’ति-स्तयान !,  
 कठिन मदीपालन-ताङ्गुलचरितादवीकृतहृष्ट्यत्वात् निष्कृप !, मम दुःखिताया अप्रतीकारात्, अकृतवृ !, मदीयोपकारस्या-  
 नपेष्ठणात् शिथिलमाद !, अकृस्माद् मम मोचनात् निलिज्ज !, प्रतिपञ्चत्यगात् ; रुक्ष !, लेहकार्याकरणात् ; अकरण !, हे-  
 जिनरायित मम हृष्ट्यरक्षक !-विषयोगदुःखेन शतधारस्फुटतो हृष्ट्य त्रायक पुनर्मम स्त्रीकरणत इत्यर्थः इति चतुर्थं, ‘नहु’-नैव  
 युज्यसे-अर्हसि एककामनायामवान्वया तत्त्वं चलनेऽपातकारिका-पादसेयानिवायिनीमुज्जिखतुमध्यन्यामिति, इह च समानाथनिं-  
 कश्यदोपादानंजपि न बुनहक्कदोपः सम्भ्रमस्मिहित्वात्, यदाह-“ वर्का हर्षभयादिभिराक्षिसमनाः स्तुवंस्तथा निन्दन् । यत्पद-  
 मपाठेद् वृथात् तत्पुनरुक्त न दोषाय ॥ २ ॥ ” इति अर्धे, हे गुणसंकर !-गुणसमुदायरूप !, हं इति अकारलोपदशनादद्विभिति  
 दद्रय तत्त्वाया विहीना न समर्थी निर्विटुं लक्षणमपीति पञ्चमं । तथा ‘इमस्स उ’ति-अस्य एन्नः अनेके ये शपा-मत्स्या, मकरा-  
 प्राहा॒, विविश्यापदाश्च-जलचरस्तुदसचरूपास्तेषां यानि शुतानि तेषामाकुलगृह आकीर्णगेह शपादीनां वा सदा-नित्यं कुल-  
 शुद्धियं कुलगृह यः स तथा तस्येत्यदं, रत्नाकरस्य-समुद्रस्य मध्ये आत्मानं, ‘ब्रह्मि’ति-हनिम तत्व-सवतुः पुरवतः-अप्रतः  
 तथा एहि निष्ठेस्व, ‘जड़सि’ति-यदि भवसि कृपितः शुमस्वैकापरार्थं तत्वं मे इति पां । ‘तुज्ज्ञ य’ति-तत्त्व च विगतव्यन-  
 विमल च यच्छुद्धिमण्डलं तस्येवाकारो यस्य श्रिया च मह यद्वत्ते तत्प्रथा, पाठान्परेण-विगतसनविमलग्राह्यमण्डलेतोपमा  
 यस्य सथीकं च यत्तस्था; ग्रादं-शरत्कालसम्भवं यत्रव-प्रत्यग्रं कमलं च-सूर्योदयं कुमुदं च-चन्द्रवोदयं कुवलयं च-  
 नीलोत्पन्नं तेषां यो दलनिकरः-दलवृन्दं तस्मदेये निरग्रा मात्र इति-निमे॑ च तनयने यत्र तत्तथा, पाठान्परेण-शारदनव-

१-श्री-  
माकन्दी-  
ज्ञाताथ०  
सप्त-  
यादि-  
पदार्थ-  
वर्णितम्।

कमलङ्घुरं च ते विमुकुले च ते चिकिसिते शेषं रथेष, चदनं-मुखं प्रतीति वाक्यशेषः; पिपासागतायाः:-मुखदर्शनबलपानेचतुष्या  
आयातायाः तां वा गतायाः-प्रातायाः कस्याः? मे-मम अद्वा-अभिलापः किं कर्तुः? -प्रेषितुं-अपलोकयितुं जे इति पादपूरणे  
निपातः, अपलोकय ता इति-उत्स्वावदिति वा इति-येन याचादिति वा ते-तुव प्रेष्ये चदनकमल-  
भिति रुपं ॥ ७ ॥ एवं सप्तप्रणयानि-सुखेहानीव सरलानि-सुखायगमयाभियेषानि मधुराणि च-मापया कोमलानि यानि  
गतानि उपाः तथा करणानि-करणोत्पादकत्वात् चचनानि जवयन्ती सा गापा क्रियया मार्गतः:-पृष्ठतः, समन्वेति-समन्व-  
गच्छति पापहरदेयेति ॥ ८ ॥ उतोऽस्मी विनरक्षितश्वलभन्नाः-आम्बुपामाच्चलितचेताः ‘अवयकवह’ चि-सम्बन्धः, किभूतः? -  
मञ्चारुदिगुणरागः पूर्वकालापेषुया, कस्याः? -रत्नदीपदेवतायाः, केन केषेत्याह-तेन च-पूर्वोक्तेन भूषणस्वेण कर्णसुखो  
मनोहरश्च यदेन तेव पूर्ववर्णितैः सप्तप्रणयसरलमधुरमणितैः, तथा रस्या देवतायाः सुन्दरं यत्स्वनजघनपदनकरचरणनय-  
नानां लागण्पं-स्पृहणीयत्वं तथा रुपं च-शुद्धीरसुन्दरत्वं च गौकर्णं च-तारुण्यं तेषां या श्रीः:-सम्पत् सा तथा तां च दिव्यां-  
देवमध्यविघ्नानी स्मरक्षिति सम्बन्धः, तथा सरमसानि-सहपर्णिणि यान्मुग्नहितानि-आलिङ्कृतानि गतानि तथा ‘चिठ्ठोयका?’  
श्वीनेष्यादिशेषाः, निलसितानि च-नेत्रविकारलक्षणानि च-तानि तथा, विहसितानि च-अर्द्धहसितादीनि, सकटाक्षाः:-साप-  
इदर्शनाः, एष्यो-विलोकितानि निःश्वितानि च-कामकीडायाः सुखमध्यानि मलिगति च-पूरुषामिलपर्णीययोषिदरुम-  
दनानि च पाठान्तरेण-भणितानि च-रुक्षजितानि उपलिगति च-कीडितविशेषरूपाणि, पाठान्तरेण-ललितानि-ईसि-  
तानि कीडितानि च सितानि च-स्वस्थामनादित्यु वा अवस्थानानानि गमनानि च-हंसगत्या चहमणानि प्रण-

यत्तेदितानि च-प्रणयरोपणानि प्रसादितानि च-कोपप्रसादनानीति दृढदस्तगतिं च स्मरन्-चिन्तयत् शागमोहितमहितिः अवश्य आत्मन इति गम्भयते, कर्मचारं-कर्मणः पाठान्तरे-कर्मचाराव् वेगेन मोहस्य नाडितो-विडित्वा यः स कर्मभवश्चेवनविडितः, 'अवहकबहृ'ति-अवेशुते-निरीशुते सम मार्गतः:-शुपुरोऽचलोकयति तामागच्छुतीमित्यर्थः; 'चविलियं'ति-सुक्रीडं, सलजापित्यर्थः । 'मच्चुगलथलफलोल्लियमइं'ति-सुत्युना-यमराक्षसेन 'गलतयुग्मा' हस्तेन गल-ग्रहणहया उपा नोदित्वा-स्वदेशगमनवैमुख्येन यमपुरीगमनाभिमुखीकृता मतिर्यस्य स तथा, तं अवेक्खभाणं तर्थेन यद्यस्तु शैलको शृत्वा श्रृनेः? 'उदितवहृ'ति-उदितवहाति-ऊरुङ् ख्यपति, 'तहेव सणियं'-इत्येवत् पदद्रयं चाचनान्तरे-नोपलभयते निजकृष्टप्राप्त श्रीराघवविशेषात्, विग्रहस्तस्त्वयं पाठान्तरे-विग्रहश्चद्यं यशः शैलक इति, 'ओवयंतं'ति-अवपत्तं, 'सरसयहियस्त'ति-सरसं-अभिमानसोमेत्वं वधितो-हतो यः स तथा तस्य, अंगमंगादं'ति-श्रीराघवय-वान्, 'उपिक्षत्यलिं'ति-उत्तियुक्तः:-ऊरुङ् आकाशे खिसो न भूमिपद्मादिषु निवेशितो यो बलिः;-देववानामुपहारः स तथा तं चतुर्दिनं करोति, सा देवता 'पंजलिं'ति-प्रकृतगाङ्गालिः प्रकृतेपन्नती, 'पवस्त्रैत्यादि, निगमनं; 'आसाय'ति-प्राप्तानाथपति भजते-अप्राप्तान् प्रार्थयते, कष्ठिमन्तं याचते, स्फृहयति-अप्रार्थित एव यथां श्रीमान् मोगान् मे ददाति तदा साधु भयति इत्येवंरूपां सृष्टाः करोति, अभिलयति-दृष्टादृष्टेषु शब्दादिषु मोगेच्छां करोतीत्यर्थः, अन्नार्थं-'छलिउं' गाहा-छलितो-व्यंसितोऽनन्यं प्राप्तः 'अन्नकात्तद्'-पश्चाद्वागमवलोकयत् जिनराशित इति प्रस्तुतमेव 'निरवयकावो'-निनिवकाहः: पश्चाद्वागमनवैक्षमाणस्तर्गति स्वपूर्व इत्यर्थो गतः:-स्वस्थानं ग्रासोऽचिन्तनं-अन्तरायामावेन जिनपालित इति वहस्यमाणं एष ददान्ता-

१-श्री-  
माकन्दी०  
ज्ञाता अ०  
उपनयादि०  
वर्णनम् ।

उवादो, दार्ढनिकस्त्वेवं-यस्मादेवं उसांत् 'प्रचचनसारे'-चारित्रे लब्धे सर्तीति गम्यते, 'निरचकाहृण'-परित्यक्तभोगान् प्रति निरपेषेण-अनमिलापता भवितव्यमिति, 'भोग' गाहा चारित्रं प्रतिपद्यापि भोगानवकाइक्षन्तः पतन्ति संसारसागरे घोरे जिनरश्वितवत्, इतरे तु तरन्ति जिनपालितवत् समुद्रमिति ॥ २ ॥ शेषं ब्रह्मसिद्धं ॥ हह निशेषोपनयमेवं वर्णयन्ति व्याख्याताः-“जेह रथणदीवदेवी तह एवं अविरहै महापावा । जह लाहत्थी वर्णिया तह उहकाया इहं जीवा ॥ १ ॥ जह तेहि भीषहिं दिहो आधायमंडले पुरिसो । संसारदुक्खवभीया पासंति तहेव घममकहं ॥ २ ॥ जह तेण तेसि कहिया देवी दुक्खवाण कारणं घोरं । तत्तो चिय नित्यारो सेलगजक्षवाओ नक्षत्रो ॥ ३ ॥ तह धमकही भवगाण साहए दिदुअविरहसहावो । सयलदुहेउभूयो विमया विरयति जीवाणं ॥ ४ ॥ सचाणं दुहताणं सरणं चरणं लिणिदपत्रतं । आणंदरुचनिवाणसाहणं तहय देसेह ॥ ५ ॥ जह तेसि तरियन्वो नहसुहो तहेव संसारे । जह तेसि सगिहगमणं निवाणगमो तहा एत्थं ॥ ६ ॥ जह सेलगपिङ्गाओ भट्ठो देवीह मोहियमहैओ । सावयसहसपउरमि सायरे पाविओ निहण ॥ ७ ॥ तह अविरहै नडिओ

सां० १ यथा रत्नदीपदेवी तथा प्राविरतिमहापापा । यथा लाभार्थिनी वर्णिजौ तथा सुखकामा इह जीवा ॥ १ ॥ यथा ताम्या भीताम्यो दह आपातमण्टले पुराप । चसारु खमीता पश्यन्ति तयेव धर्मक्षयके ॥ २ ॥ यथा तेन ताम्यां कथिता दुखानी घोर कारण देवी । तत एव शैलक्षण्यात् नित्यारो नान्यसात् ॥ ३ ॥ तथा धर्मक्षयको भव्येभ्य कर्मयेव दहेतुभूत विषयन्ति जीवान् ॥ ४ ॥ सत्त्वानी दृपासनी शरण चरण जिनेन्द्रप्रश्नत । भान्तदत्पनिवाणसाधनं तयेव दर्शयति ॥ ५ ॥ यथा ताम्या तरणीयो यह समुद्रस्तयेव चसार । यथा तयो लग्नहमन निवाणगमन तथाऽन ॥ ६ ॥ यथा शैलक्षण्यात् भ्रष्टे देवीमोहितमतिक । यापदचहप्रत्रुते सागरे प्रासो निधनम् ॥ ७ ॥ ॥ १७६ ॥

चरणकुओ दुखसावयाइणे । निवडह अपारसमारसायरे दाहणसहवै ॥ ८ ॥ जह देवीए अकब्बाहो पचो सहुण लीविय-  
सुहाइ । तह चरणहिओ साहु अकब्बोहो जाह निभाणे ॥ ९ ॥ समाप्तिं नक्षमज्ञाता ध्ययनविचरणम् ॥

## ॥ १०—श्रीचन्द्राख्यं ज्ञाताध्ययनम् ॥

अथ दशमं विवियते, अस्य चायं पूर्वण सह समन्धः—अनन्तराध्ययनेऽविरतिशवचर्यवशवत्तिनोरनथेत्राहुक्तौ, इह हु-  
गुणहानिद्विलक्षणावनयीयां प्रमाद्यप्रमादिनोरभिधीयेते इत्येवं सम्बद्धिमद्भु—  
जति पा भते !, समणेणं ० णावमसस पायज्ञहयणस्स अयम्हुं पणाते, दसमस्स के अट्ट० ?; एवं खलु  
जंचु !, तेण कालेण ३, रायगिहे नगरे सामी समोस्डे, गोयमसामी एवं बदासी-कहणं भेते !, जीवा बहुति  
वा हायन्ति वा ?, गो० !, से जहा नामए बहुलपक्वस्स पाडिवयाच्चेद पणिहाय हीणो; चणेण  
हीणे, सोम्याए हीणे, निदयाए हीणे, कंतीए; एवं दितीए, जुतीए, ओयाए, पभाए, लेससाए,  
मंडलेण; तयाणंतर च चं यीयाच्चेद पाडिवयं चंदं पणिहाय हीणतराए चणेणं जाय मंडलेण, तयाणंतरं च

सा० १ तथाऽविरत्या नटितश्वरणच्छुतो दुर्लभापदाकाणे । निपत्त्यपरस्सारसागरे दारणस्वल्लो ॥ १ ॥ यथा देव्याऽक्षोम प्रस खस्थान  
जोर्वितमुदानि च । तथा चणेस्ति साधुरघोमो याति निर्बाणम् ॥ १ ॥

१०—श्री-  
चन्द्राहय-  
ज्ञाताहय०  
चन्द्रवर्णन-  
स्वरम् ।

गान्धी— यं ततिआचंदे वितियाचंदं पणिहाय हीणतराए बणेणं जावः मंडलेणं, एवं खलु एणं कमेणं परिहायमाणे २, जाव अमावस्याचंदे चाउहतिचंदं पणिहाय नट्टे बणेणं जाव नट्टे मंडलेणं; एवामेव समणाउसो ! जो अर्हं निर्गायो वा, निर्गायी वा जाव पञ्चइप् समाणे हीणे खंतीए, एवं मुत्तीए, गुत्तीए, अज्जेवेणं, मधेणं, लाघेणं, सद्वेणं, तवेणं, चियाए, अकिञ्चणयाए, वंभचेरवासेणं, तयाणंतरं च एं हीणे हीणतराए, नंतीए ! जाव हीणतराए वंभचेरवासेणं; एवं खलु एणं कमेणं परिहायमाणे २, णट्टे खंतीए जाव णट्टे यंभचेरवासेणं, से जहा वा सुकपक्षस्स पाडिवयाचंदे अमावास्याए चंदं पणिहाय अहिएः वणेणं जाव अहिएः मंडलेणं, तयाणंतरं च एं विहयाचंदे पडिवयाचंदं पणिहाय अहिययराए बणेणं जाव अहियतराए मंडलेणं; एवं खलु एणं कमेणं परिहुत्तेमाचंदे चाउहस्सि चंदं पणिहाय पडियुणं वणेणं जाव पाडियुणे मंडलेणं; एवामेव समणाउसो !, जाव पञ्चवतिए समाणे अहिए, खंतीए, जाव वंभचेरवासेणं, तयाणंतरं च एं अहिययराए खंतीए जाव वंभचेरवासेणं एवं खलु एणं कमेणं परिहुत्तेमाणे २, जाव पडियुत्ते यंभचेरवासेणं; एवं खलु जीवा वहुति वा, हायंति वा एवं खलु जंबू !, समेणं भगवता महावीरेणं दसमस्स णायज्ञक्षयणस्स अपमटे पणार्ते लियेमि ॥ सुत्रम्-९६ ॥ दसमं पायज्ञक्षयणं समतं ॥ १० ॥ मर्तु सुगस्म्, नवरं जीवानां द्रव्यतोऽनन्तवेन प्रदेशतत्र प्रत्येकमसङ्गयातप्रदेशतविराणत्वात् वर्दन्ते गुणः हीयन्ते च लुरेच । अनन्तरनिर्देशवेन हानिमेव गावदाह-‘से जहे’त्यादि; ‘पणिहाए’चि-प्रणिहायपेश्य, ‘वर्णन-’

शुकुतालस्पेन, ‘सौरम्यतया’-सुखदर्शनीयतया, ‘दीरपा’-दीपनेन,  
 वस्त्रप्रकाशनेतत्यर्थः; ‘जुत्तीय’ति-युक्त्या आकाशसंयोगेन, खण्डेन हि मण्डलेनवपतरमाकाशं युडपते न पुनर्यचित्स-  
 त्वपूर्णेन, ‘छायपा’-जलादी प्रतिचिम्बलशुणया शोभया चा, ‘प्रभया’-उद्गमनसमेषे यद् युतिस्फुरणं तया, ‘ओयपा’-चि-  
 ओजसा दाहापनयनादिस्वकार्यकरणशर्तया, ‘लेद्यया’-किरणहपतया, ‘मण्डलेन’-इतरतया; शान्त्यादिगुणहानिय कुशील-  
 संसर्गादि, सद्गुरुणामपर्युपासनात्, प्रतिदिनं ग्रामादपदासेवनात्, तथाचित्यचारित्रावरणकंमोदयाच्च मवतीति; गुणवृद्धिस्वेतदिदि-  
 पर्यादिति, एवं च हीयमानानां जीवानां न चालितुतस्य निवरणसुखस्याचासिस्तियनर्थः; आह च-‘चंद्रोहै कालपक्वते  
 परिहाइ पए पए पमायपरो । तह उग्ररचित्यरनिरंगणोवि न य इच्छियं लहाइ ॥ २ ॥ ”न्ति गुणवृद्धमानानां हु चालित्तरा-  
 याचासेर्य इति, विद्येपयोजना पुनरेवपूर्व-“ जह चंदो तह साह राहुवरोहो जहा तह पमाओ । वणाहै गुणगणो जह तहा  
 खमाहै समणयमो ॥ २ ॥ गुणोवि पद्धिदिं जह हायंतो सबहा ससी नसे । तह पुण्णचरित्तोऽविहू कुसीलसंसनिगमार्हाहि  
 ॥ ३ ॥ दैणियपमाओ साह हायंतो पद्धिदिं खमाहैहि । जायहै नहुचरित्तो तचो दुक्खाहै पावेह ॥ ४ ॥ तथा-‘हीणगुणो-

त्वर्थः अ । सा० १ चन्द्र इव कृष्णपक्षे परिहोयते पदे पदे प्रमादपरः । तथा उद्यमहविश्वहनिरजनोऽपि दत्यतो नेपियतं लमते ॥ १ ॥ यथा चन्द्रस्तथा  
 चापुः राहुपरोयो यथा तथा प्रमादः । वणादिर्दुष्टणो यथा तथा दूषमादः ॥ २ ॥ पूर्णोऽपि प्रतिदिनं यथा हीयमानः सर्वया नदयति यसी ।  
 तथा पूर्णचारित्रोऽपि कुशीलवृत्तगणादिभिः ॥ ३ ॥ जातप्रमादः सापुः प्रतिदिनं हीयमानः दूषमादः ॥ ४ ॥ जायते नाट्याचारित्रः ततो दुःखानि प्राप्नोति ॥ ४ ॥

१७८ ॥

नवाही-  
१० शुभ  
मीजाता-  
ष्मिकथाहे

पिंड होउं सुहगुहजोगाइजणितंचेगो । गुणसहवो जाय इ विचहुमाणो ससहरोव ॥ ५ ॥ समाप्तिं दशमश्रीचन्द्राख्यज्ञाता-

४० लयंतं विवरणम् ॥ ६ ॥

## ॥ ११-श्रीदावद्रवारुद्यं ज्ञाताद्ययनम् ॥

१७८ ॥

अश्वकादशमं विविष्टे-अस्य पूर्वेण सहायं समवन्यः—पूर्वत्र च ग्रसाद्यप्रमादिनोर्जणहनिद्विलक्षणावनथाथ्यत्तिकौ, इह

तु मार्गोराघननिराघनायां तातुन्येते इतिसम्बद्धमिदप्य—

जन्मति नां भंते !, दसमसस नायज्ञशणस्स अयमद्दृ एकारसमस्स के अट्ठ० १, एवं स्वलु जंचू ।, तेण  
कालेण ३, रायगिहे गोप्यमे एवं बदासी-कह नां भंते !, जीवा आराहगा वा भवंति ?;  
गो० !, से जहा णामए एगांसि समुद्दक्षलस्ति दावहवा नामं रुक्खा पणता, किएहा जाव निउरुव्यभूया  
पतिया, पुफिया, कलिया, हरियगोरेरिजमाणा सिरीए अतीव उवसोभेमाणा २, चिंडति; जया णं दीवि-  
चगा ईस्ति गुरुवाया, पक्छावाया, महावाया, मंदावाया वायंति, तदा णं वहवे दावहवा रुक्खा पतिया

सा० १ हीनगुणोऽपि भूत्या श्रुत्युर्योगादिजनितसवेग । पूर्णस्वरूपो जायते विवरणम्. शशधर इत ॥ ५ ॥

जाव चिंडति, अपेगतिया दावहवा रुक्खवा जुदा शोडा परिसङ्घियंडपत्तपुल्कफला सुकरुक्खदओ विव  
मिलायमाणा ३, चिंडति; एवामेव समणाउसो !, जे अम्हं निर्गंधो वा, निर्गंधी वा जाव पठवतिते  
समाणे वहूं समणाणं ४, समं सहति जाव अहियासेति; वहूं अणउत्थियाणं, वहूं गिहत्थयाणं तो  
समं सहति, जाव नो आहियासेति एस णं मए पुरिसे देसविराहए पणाते समणाउसो !। जया णं  
समं सहति, तदा णं वहवे दावहवा रुक्खवा जुणा  
सामुहगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया, मंदावाया महावाता वार्यंति, तदा णं वहवे दावहवा पुरिसे  
शोडा जाव मिलायमाणा २, चिंडति, अपेगहया दावहवा रुक्खवा पाच्चिया पुरिसे जाव उवसोभेमाणा ३,  
चिंडति; एवामेव समणाउसो !, जो अम्हं निर्गंधो वा, निर्गंधी वा पठवतिए समाणे वहूं अणउत्थि-  
याणं वहूं गिहत्थयाणं समं सहति, वहूं समणाणं ४, तो समं सहति; एस णं मए पुरिसे देसाराहए  
पक्ते समणाउसो !। जया णं नो दीविचगा णो सामुहगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया जाव महावाया तते  
णं सूवे दावहवा रुक्खवा जुणा शोडा० एवामेव समणाउसो ! जाव पठवतिए समाणे वहूं समणाणं २  
वहूं अक्रउत्थियगिहत्थयाणं तो समं सहति, एस णं मए पुरिसे सठविविराहए पणाते समणाउसो !,  
जया णं दीविचगावि सामुहगावि ईसि पुरेवाया पच्छावाया जाव चार्यंति तदा णं सब्बे दावहवा रुक्खवा  
पाच्चिया जाव चिंडति; एवामेव समणाउसो !, जे अम्हं पठवतिए समाणे वहूं समणाणं वहूं अक्रउत्थि-  
यगिहत्थयाणं समं सहति, एस णं मए पुरिसे सठवाराहए प० !, एवं खलु गो० !, जीवा आराहणा ।

२२-श्री-  
दावद०  
ब्राताह्य०  
सुत्रस्थित-  
पदार्थ-  
वर्णनम् ।

वा विराहगा वा भवंति; पंच खलु जंतु !, समोणं भगवया एकारसमरस अयमटे पणणते चिवेमि

॥ सूत्रम्-१७ ॥ एकारसमं नायज्ञस्याणं समर्तं ॥

नवाही-

२० ३० श्रीब्राता-  
पदार्थकाहै  
दीपसम्पवा इपत् पुरोचाताः—मनाक्—सलेहवाता इत्यर्थः, पूर्वदिक्सम्बन्धिनो या, पक्ष्या वाता—वनस्पतीनां सामान्येन हिता  
यायवः पश्चाद्वाता वा मन्दाः—शृणेतः सञ्चारिणः महावाता:-उद्देहवाता वान्ति, तदा ‘अपेगड्डय’नि—अप्येके केचनापि  
सतोका इत्यर्थः, ‘जुणा’ति—जीणि हव जीणीः, शोडः—पत्रादिशाटानं, तद्योगतिःपि शोडाः, अत एव परिशाटितानि कानि-  
निच्च पाण्डुनि पक्षाणि पृष्ठफलानि च येषां ते तथा शुक्रवृष्टक इव म्लायन्तस्तिष्ठन्ति इत्येप वषान्तो, योजना त्वस्येव  
‘एवामेवे’त्यादि, ‘अणाउतिथ्याणं’ति—अन्ययूधिकानां—तीर्थान्तरीयाणां, कापिलादीनामित्यर्थः; दुर्वचनादीत्यसगान्  
तो सम्यक् सहते इति, ‘एस पं’ति—य एवंभूतः एष पुरुषो देशविराघको ज्ञानादिमोक्षमार्गस्य, इयमत्र विकल्पचतुष्टयेऽपि  
मावता—यथा दान्त्रद्वयवृशसमृहः स्वभावतो द्वीपनायुग्मिः बहुतरदेशैः स्वसम्पदः समुद्दिमतुमवति देशेन चासमुद्दिदि १,  
समुद्रवायुमिश्च देशैरसमुद्दिदि देशेन च समुद्दिम् २, उभयसङ्क्रावे च सर्वतः समुद्दिम्  
३; एवं क्रमेण सायुः कुर्वीर्थिक्युहस्थानां दुर्वचनादीन्यसहमानः क्षान्तिप्रथनस्य झानादिमोक्षमार्गस्य देशतो विराघनां  
करोति, श्रमणादीनां चहुमानविषयाणां दुर्वचनादिक्षमणेन बहुतरदेशानामाराघनात् ४, श्रमणादिदुर्वचनानां त्वसहने कुर्ति-

१२-थी-  
उद्कारण-  
ज्ञाता इय०

८० श०  
श्रीज्ञाता-  
समर्पयात्

॥ १८० ॥

पूर्णपरा-  
इयन-  
मनव-  
चण्ड ।

## ॥ १२-श्रीउदकारणं ज्ञाताइयनम् ॥

अथुना द्वादशं विवियते, अस्य चैरं सम्बन्धः—अनन्तरज्ञाते चारित्रधर्मस्य विशायकृतमाराघकर्त्तं चोकासेह तु चारित्राग्रहकर्त्तं प्रकृतिमलीमसनामापि मन्यानां सद्गुरुपरिकर्मणागे भवतीत्युदकोद्दरणेनाभिष्ठीयते, इत्येवं सम्बन्दमिदम्—  
ज्ञाति णं भंते !, समणेण जाव संपत्तेण एकारसमस्स नायज्ञायणस्स, अयम् ॥ यारसमस्स णं नायज्ञायणस्स के अटे पं० ?; एवं खलु जंतू !, तेण कालेण० २, चंपा नाम नयरी, युणा भेदे, जितसन्त् राया, धारिणी देवी, अदीणसन्त् नामं कुमारे जुवराया यावि होत्था, सुहुद्धी अमचे जाव रज्युराच्चतए समणो-  
वासण; तीसे णं चंपा ए णयरीए, वहिया उत्तरपुरचित्तमेणं एगे परिहोदए यावि होत्था, मेयवसामंसकलिहि-  
रुपूपडलपोचडे, मयगकलेवरसंछणो, अमणुणो वणणेण जाव फासेण; से जहा नामए आहिमडेति 'वा,  
गोमडेति वा जाव मयकुहियविणटकिमिणवावण्णदुरभिंगये किमिजालाउले संसरते असुहविगययीभत्य-  
दरिसणिज्जे, 'भवेयारुबै सित्या ? , यो इण्डे समडे, एतो अणिडुतराए चेव जाव गंधेण पणाते ॥ सुत्रम्-१८॥  
तते णं से जितसन्त् राया, अणदा! कदाइ पहाए कपयलिकम्मे जाव अप्यमहग्या भरणालंकियसरीरे बहुहि-  
राईसर जाव सत्थवाहपरिमितिहि सद्दिं भोयणवेलाए सुहासणवरणए विषुलं असणं ४ जाव विहरति,

जिमितकुन्तचरायए जाव सुहभूते तंसि चिपुलंसि असण ४, जाव जायचिमहए, ते थहवे ईसर जाव परिभ्रतीए एवं वयासी-अहो ण देवा० ।, हमे मणुणो असण ४, वणोणं उवेए जाव फासेणं उवेवेते अस्तायणिज्ञे, चिस्तायणिज्ञे, पीणणिज्ञे, दीवणिज्ञे, दपणिज्ञे, मयणिज्ञे, विहणिज्ञे, सान्वदियगाय पलहायणिज्ञे; तते णं ते थहवे ईसर जाव परिभ्रयओ जितसन्तु एवं २०-तहेव णं सामी ।, जणणं तुन्मे वदह ! अहो णं हमे मणुणो असण ४, वणोणं उवेए जाव पलहायणिज्ञे; तते णं जितसन्तु सुहुद्धि अनंच एवं २०-अहो णं सुहुद्धि ।, हमे मणुणो असण ४, जाव पलहायणिज्ञे; तए णं सुहुद्धि जितसन्तु नो आदाइ जाव तुसिणीए संचिडति, तते णं जितसन्तुणा सुहुद्धि दोचंपि एवं तुर्ते समाणे जितसन्तु रायं एवं वदासी-नो खलु सामी ।, अहं एयंसि मणुणांसि असण ४ केह विमहए, एवं खलु सामी ।, सुहिभ्रसदावि गुणला दुविभ्रसदाए परिणांसति, दुविभ्रसदावि पोरगला सुविभ्रसदाए परिणांसति; सुरसावि पोरगला दुविभ्रसदाए परिणांसति, दुविभ्रसदावि पोरगला सुविभ्रसदाए परिणांसति; सुरसावि पोरगला दुविभ्रसदाए परिणांसति; सुहफासताए परिणांसति; सुहफासताए परिणांसति; पओगवीस्तापरिणावि य णं सामी ।, पोरगला पणताए परिणांसति, दुहफासताए परिणांसति; पओगवीस्तापरिणावि य णं सामी ।, पोरगला पणताए परिणांसति, दुहफासताए परिणांसति; पओगवीस्तापरिणावि य णं सामी ।, पोरगला पणताए परिणांसति, तते णं से जितसन्तु सुहुद्धिरस अमचस्तु पृच्छाणाशस ४, एयमहं नो आदाति, नो

१२-भी-  
 नवाही-  
 उद्काश्य-  
 ब्राह्मणा-  
 तस्स फरिहोदगस्स असुमेण समाणे सप्तं अवकमति-  
 ते वहवे ईसर जाव पभितिओ एवं वदासी-अहो ण देवाणुषिपया इमे फरिहोदए ! अमणुणो वणेण ४,  
 से जहा नामए अहिमडेति वा जाव अमणामतराए चेव; तए ण ते वहवे राहसरपिभेह जाव एवं व०-  
 तेव तं सामी !, जं ण तुमे एवं वयह, अहो ण इमे फरिहोदए अमणुणो वणेण ४, से जहा नामए  
 अहिमडे इ वा जाव अमणामतराए चेव, तए ण सुवुद्दी !  
 इमे फरिहोदए अमणुणो वणेण, से जहा नामए अहिमडेह वा जाव अमणामतराए चेव, तए ण सुवुद्दी  
 अमेवे जाव तुसिणीए, संचिड्ह; तए ण से जियसन् राया सुवुद्दी अमेवे तोचंपि तचंपि एवं व०-अहो ण  
 तं चेव, तए ण से सुवुद्दी अमेवे जियसन्तुणा रक्षा दोचंपि तचंपि एवं तुते समाणे एवं व०-नो खलु  
 सामी !, अम्ह एयंसि फरिहोदगंसि केह विम्हए, एवं खलु सामी ! सुउभसदावि पोनगला दुनिभसह-  
 त्ताए परिणमंति, तं चेव जाव पओगचीससापरिणयावि य ण सामी !, पोनगला पण्णत्ता, तते ण जित-  
 सन् सुवुद्दी एवं चेव, मा ण तुमं देवाणु० !, अप्पाणं च परं च तदुभयं चा यहहि य असहभावणार्ह  
 ॥ १८१ ॥

मिळता भिन्नेभिन्न य कुराहोमाणे युपाएमाणे विहाराहि, तते ण सुबुद्धिस्स इमेयाहूवे अभिथए<sup>६</sup>,  
 समुपजित्या-अहो ण जितसचू संते तचे तहिए अवितहे सब्मेत जिणपणते भावे पो उचलभति,  
 तं सेय चलु मम जितसनुस्स रणो संताणं तचाणं तहियाणं अवितहाणं सब्मुताणं जिणपणताणं  
 याचाणं अभिगमणङ्घयाए एयमडं उचाइणवेतए, एयं संपेहेति ३, पचतिष्ठि सद्दि अंतरा-  
 वणाओ नवए यडयपडए पगेणहति ३, संझाकालसमयंसि पविरलमणुसंसंसि जेणेव  
 करिहोदए तेणव उचागए २, तं करिहोदगं गेणहावेति २, नवएसु यडएसु गालावेति ३, नवएसु यडएसु  
 पविलवावेति ३, लंछियमुहिते करावेति ३, सत्तरतं परिवसावेति ३, दोचंवि नवएसु यडएसु गालावेति,  
 नवएसु यडएसु पविलवावेति ३, सज्जवकवारं पविलवावेई<sup>x</sup> लंछियमुहिते करावेति ३, सत्तरतं परिवसा-  
 वेति ३, तचंपि नवएसु यडएसु जाव संवसावेति, एवं खलुं पाणं उचाणं अंतरा गलावेमाणं अंतरा-  
 पविलवावेमाणं अंतराय विपरिवसावेमाणे ३, सत ३, रातिदिया विपरिवसावेति; तते ण से करिहोदए  
 सत्तमसत्तयंसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाए यावि होत्या, अच्छे, पत्थे, जचे, तणए फलिह-  
 वणामे वणेण उवेते ४, आसायणिज्वे जाव सद्बिदियायपलहायणिज्वे; तते ण सुबुद्धी अमचे  
 जेणेव से उदगरयणे तेणव उचाऽ २, करयलंसिः आसावेति ३, तं उदगरयणं वणेण उवेय ४, आसा-

१२-श्री-  
उदकाल्य-  
आताह्य०  
जितसतुर्स्स रणो पाणियथरियं सदावेति ३; एवं व०-हमं उदगरयणं गेणहावि०  
जितसतुर्स्स रणो भोयणवेलाए उवणेज्ञासि॒; तते णं से पाणियथरिए॒ सुवुद्धियस्स पृतमट्टं पडिच्छैन्ति॒ ३  
जितसतुर्स्स रणो भोयणवेलाए॒ उवहुवेति॒; तते णं से जितसत्तु॒ राया तं चिपुलं  
तं उदगरयणं निणहाति॒ ३, जितसतुर्स्स रणो भोयणवेलाए॒ उवहुवेति॒; तते णं चिपुलं  
दिक्षणन-  
सुत्रम् ।

गणिक्षे जाव सांन्विदियायपलहायणिइज्जं॑ जाणिचा, हठहुइ॑ यहावि॑ उदगसं॑भारणिज्जेहि॑ संभारेति॒ २,  
जितसतुर्स्स रणो पाणियथरियं सदावेति॒ ३; एवं व०-हमं उदगरयणं गेणहावि॒ ०  
भीष्मावा-  
पर्मकथाहे॑  
अस्तण ४, आसाएमाणो जाव विहाइ॒; जिमियमुत्तुतरायणावि॑ य णं जाव परमसुहभूए॒ तंसि॒ उदगरयणे  
जायविमहा॒, ते यहवे॒ राईसर जाव एवं व०-अच्छे॒ जाव एवं चेव  
गायपलहायणिक्षे॒, तते णं यहवे॒ राईसर जाव एवं व०-तहेव णं सामी॑, जणणं तुव्वभे॒ चदह॒ जाव एवं चेव  
पलहायणिक्षे॒, तते णं जितसत्तु॒ राया पाणियथरियं सदावेति॒ ३, एवं व०-एस णं तुव्वभे॒ देवा० ! उदगरयणे  
कओ॒ आसादिते॒ ३, तते णं से पाणियथरिए॒ जितसत्तु॒ एवं चदासी॑-एस णं सामी॑ ! मए॑ उदगरयणे चुबुद्धिसत  
अंतियाओ॒ आसादिते॒, तते णं जितसत्तु॒ सुवुद्धि॒ अमचं॒ सहावेति॒ ३, एवं व०-अहो॒ णं चुबुद्धी॒ केणं कारणों  
अहं॒ तव अणिठे॒ ५, जेणं तुमं॒ मम कल्लाकल्लि॒ भोयणवेलाए॒ इमं॒ उदगरयणं न उवहुवेति॒ ? , तते॒  
देवा० ! उदगरयणे कओ॒ उवलदेदे॒ ? , तते॒ णं सुबुद्धी॒ जितसत्तु॒ एवं व०-एस णं सामी॑ , से॒ फरिहोदए॒, तते॒  
णं से॒ जितसत्तु॒ सुबुद्धी॒ ! , एस से॒ फरिहोदए॒ ? , तते॒ णं सुबुद्धी॒ जितसत्तु॒

नवाहारी-  
५० ५०  
भीष्मावा-  
पर्मकथाहे॑

॥ १८२ ॥

एवं च०-एवं ललु सामी ।, उम्हे तया मम एवमातिकवमाणस्स ४, यतमहं नो सदहह, तते णं मम हमे-  
यारुवे अब्मिथेत १, अहो णं जितसन्, संते जाव भावे नो सदहहति, नो रोपति, तं सें ललु-  
ममं जियमगुस्स रवो संताणं जाव सन्मृताणं जिणपन्नताणं भावाणं अभिगमणहयाए पुतमहं उवाहणा-  
वेत्तण, एवं संपेहेमि २, तं चेव जाव पाणियवरियं सदहवेमि ३, एवं बदामि-तुमं णं देवाणु० ।, उदगरतणं  
जितसन्तुस्स रवो भोयणचेलाए उवणेहि, तं एणां कारणों सामी ।, एस से करिहोदए । तते णं जितसन्,  
राया चुबुद्विस्स अमध्यस्स एवमातिकवमाणस्स ४, यतमहं नो सदहहति ५, असहहमाणो ३, अङ्गभत-  
रड्डणिक्के पुरिसे सदावेति २, एवं बदासी-गच्छह णं तुव्वेदेवाणुरिपया ।, अंतरावणाओ नवघड्डा० पड्डा०-  
य गेणहह जाव उदगसंहारणिक्केहि द०येहि संभारेति २, जितसन्तुस्स उवणेति; तते  
गं जितसन्, राया तं उदगरयणं करयलंसि आसाएति, आसातणिङ्गं जाव सन्मृया भावा कतो  
जाणिच्चा चुबुद्वि अमच्चं मदावेति २, एवं च०-चुबुद्वि ।, एए णं तुमं संता तच्चा जाव सन्मृया भावा  
उवलङ्घा १, तते णं चुबुद्वि जितसन्तुं एवं बदासी-गणु णं सामी । मए संता जाव भावा जिणवयणातो  
उवलङ्घा, तते णं जितसन् चुबुद्वि एवं च०-तं इच्छामि णं देवाणु० ।, तच्च अंतिए जिणवयणं निसामेचाए,  
तते णं चुबुद्वि जितसन्तुस्स विचित्रं केवलिपन्तं चाउज्ज्वामं घम्मं परिकहेह, तमाइकवति जहा जीवा  
वज्ज्वान्ति जाव पंच अणुवयणाति, तते णं जितसन् उबुद्विस्स अंतिए घम्मं सोचा णिसम्म हठ० उबुद्वि

१२-श्री-  
उदकाल्य-  
ज्ञाताह्य०  
वर्मीही-  
कण-  
स्वरूपादि-  
वर्णन-  
सुन् ॥

अमधं एवं च०-सहहामि नं देवाणुपिया !, निगंयं पावयणं ३, जाव से जहेयं तुव्वमे वयह; तं इच्छामि  
नं तव अंतिए पंचाणुव्वहयं सत्तस्तिक्वावहइयं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं देवा० ! मा-  
पडियंयं०, तए नं से जियसत्० सुबुद्दिरस अमच्चरस अंतिए पंचाणुव्वहयं जाव दुवालसविहं सावयधम्मं  
पडिवज्ज्वह, तते नं जितसत्० समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलामेमाणे विहरति । तेण कालेण  
२, थेरागदणं, जियसत्० राया सुबुद्दी य निगच्छलिति; सुबुद्दी घम्मं सोचा जं णवरं जियसत्० आपुच्छामि  
जाव पववयामि, अहासुह देवा० !, तते नं सुबुद्दी जेणेव जितसत्० तेणेव उवा० २ एवं च०-एवं खलु  
सामी !, मए थेराणं अंतिए घम्मे निसन्ते सेऽविय घम्मे हनिच्छयपडिच्छए ३; तए नं अहं सामी !,  
संसारभउलिङ्गो भीए जाव इच्छामि नं तुव्वमेहं अभणुव्वाए स० जाव पववइत्तए, तते नं जितसत्०  
सुबुद्दिएवं च०-अच्छासु ताव देवा० ! कतिवयाति चासाहं उरालाति जाव सुंजमाणा ततो पच्छा  
एग्यओ थेराणं अंतिए मुंडे भविता जाव पववइस्सामो, तते नं सुबुद्दी जितसत्० सुयमहं पडिमुणेति,  
तते नं तस्स जितसत्० सुबुद्दीणा सर्दिं विपुलाहं माणसस दुवालस चासाहं चीतिकं  
ताहं तेण कालेण ३, थेरागम्मणं, तते नं जितसत्० घम्मं सोचा एवं नवरं देवा० !, सुबुद्दि आमंतेमि  
जेट्टुतं रखे उवेमि; तए नं तुव्वमं जाव पववयामि, अहासुहं, तते नं जितसत्० जेणेव सए गिहे तेणव  
उवा० ३, सुबुद्दि सहावेति ३, एवं वयासी-एवं खलु मए थेराणं जाव पववज्जामि, तुमं नं किं करेसि ?  
॥ १८३ ॥

नवाही-  
श्री-  
सर्वकथाहे

२१। अनुवादी ३। १९। अनुवादी ४। २०। अनुवादी

तते णं सुहुद्वी जितसतुं एवं च०—जाव के० अन्ने आहारे वा जाव पठवयामि, तं जति णं देवा० जाव पठवयाह गच्छह णं देवाणु० ! जेझुपुतं च कुङ्डवे ठोवेहि २, सीयं दुर्लहिताणं ममं अंतिए सीया जाव पाउङ्भवेति; तते णं सुहुद्वी० सीया जाव पाउङ्भवह, तते णं जितसतुं कोङ्डवियपुरिसे सदावेति २, एवं च०—गच्छह णं तुङ्मे देवा० !, अदीणसतुरस कुमारस्स रायामिसेयं उवडुवेह जाव अभिसिंचंति जाव पठवतिए । तते णं जितसतुं एकारस अंगाहं अहिज्ञति, बहुणि वासाणि परियाओ मासियाए सिद्धे; तते णं सुहुद्वी एकारस अंगाहं अ० बहुणि वासाणि जाव सिद्धे । एवं खलु जंबू॑, समणेण महावीरेण वारसमस्स अगमेढु पणते निवेभि ॥ सूत्रम्—१९॥ वारसमं नाअलङ्घयणं समर्तं ॥

सर्वं शुगां नवां, ‘फरिहोदए’चि—परिवायाः—खातवलयस्योदकं परियोदकं, चापीति मुच्ये, ततश्चंपादिकोऽथ० भृद् एवं परिवोदकं चाभृदित्येवं, चः समुच्ये इति, ‘मेषे’त्यादि, अत्र मेदःप्रसूतीनां पटलेन—समूहेन, ‘पोच्छाङ्गं’—चिलीनं सूतकानां यथा वा द्विपदादीनां कठेवरैः संछलं यत्तत्या, अद्यादिकडेवरविशेषणायाह—मुतं—जीविष्मुक्तमात्रं सद्यत् कुथितं—इपतदुर्गन्धमित्यर्थः, तथा विनाटं—उच्छृनत्यादिविकारत्; किमिणं ति—कतिपयकुमिवत् व्याप्तं च—यकुन्यादिभृशणाद्वा० भृत्यसतां गतं सधडुरभिगन्धं—तीव्रतदृग्नन्धं तत्त्वाथा, ‘सुठिभ्रस्त्वादि’चि—शुभगङ्गदा अपि, ‘दुष्टिभ्रस्त्वादि’चि—दुष्टशङ्गदत्या, ‘पओगचीससापरिणयं’ति—प्रयोगेण—जीवन्धयापारेण, विश्रस्या च—स्वभावेन परिणताः—अवस्थान्तरमापत्ता ये तेत्या, ‘आसत्वंधयरगण्टुति अश्य एव स्कन्धयः—पुद्गलप्रचयरूपे वरः—प्रघानोऽश्वस्कन्धवरोऽथया स्कन्धप्रदेशप्रत्यासत्तेः पृष्ठमपि

१२—श्री-  
उदकाश्य-  
ज्ञाता द्वयो-  
यद्वोपन-  
यादि-

नगद्वी-  
इक्षुन्थ गृति व्यपदिटमिति, 'अस्तनभायुङ्गभावणाहि' ति—अमरां माचानां—चस्त्रां वस्त्रधम्मणां चा या उद्भावना—उत्थेप-  
लानि तास्त्रया गमिमित्यहवामिनिवेशन च—विषिष्वेनाविष्क्येन च ग्राहयन् व्युत्पादयन्—  
अव्युत्पत्तमति व्युत्पन्नं कुवन् 'संते' इत्यादि, सरो—विष्यमानान्, 'तच्चैति—तन्त्रवानेदप्येसमन्वितमित्यर्थः; अत एव  
गुण्यान्—नत्यान्, एतदेव व्यतिरेकेणोन्यते—अवितथान् न विरथानित्यर्थः, किमुकं भवति ?—सङ्कृतान् सर्वा प्रकारेण  
भूतान्—यागान् मङ्गुतान् एकार्था वैते शब्दाः; 'अभिगमणङ्गयाएः—अवगमलक्षणाय अथावेत्यर्थः,  
(तं)—व्युत्पलानामपरपरपरिणामलक्षणमप्य 'उचाइणावित्तम् 'ति—उपादापितु ग्राहयितुमित्यर्थः; 'अंतरावणाउँ'  
ति—परिलोकमागान्तरालवर्त्तनो हद्वाव् कुम्भकारसमन्वितम् इत्यर्थः, 'सज्जखारं' ति—सद्यो मस्म; 'अच्छेऽत्यादि,  
अच्छु—निर्मलं, पञ्चं—आरोग्यकरं जातं—प्रथानमिति भावः; वरुकं—लघु सुजरमिति हद्यं,  
उदकगमकैः—गालकमुस्तादिमिः संमारयति—संभुरं करोति । इहाव्ययने यद्यपि मुद्रेणोपनयो न दर्शितः तथाऽपेच  
द्रष्टव्यः—"मिन्छुत्तमोहियमणा पावपमत्तावि पाणिणो विषुणा । करिदोदगंव गुणिणो हवंति वरयुक्तप्रसायाओ ॥ ३ ॥" चि-  
गमास्त्रमिदं द्वादशग्रावाद्य यनविवरणम् ॥

६०

१० १०  
चर्मकपाले

॥ १८४ ॥

## ॥ १३-श्री दद्मुराहयं ज्ञाताद्यथनम् ॥

अथ व्रयोदयं न्याल्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायं समवन्यः;—अग्नन्तराहयने संसर्गविशेषाद् गुणोत्कर्त्तुः; इह तु संसर्गविशेषाभावाद् गुणापकर्त्तुःयते, इत्येवं समवद्दिमिदम्—  
जति पां भंते १, समर्णोन् ० यारसमस्स अयम्हु पणाते, तेरसमस्स पां भंते १, नाय० के० अहे पत्रते १;  
एवं खलु जंचु १, तेण कालेण २, रायगिहे, गुणसिलए चेतिए, समोसरणं, परिसा निनगाया; तेण कालेण २,  
सोहम्मे कपे, दद्मुरवडिसए विमाणे, सभाए चुहम्माए, दद्मुरसिलसीहासणंसि, दद्मुर देवे, चउहि सामा-  
णियसाहस्रीहि, चउहि अग्नामहिसीहि सपरिसाहि, एवं जहा सुरियाभो भाव दिव्याति भोगभोगाहि  
कुंजमाणो विहरहि; हमं च पां केवलकर्णं जंचुहीवं २, विपुलेण ओहिणा आभोएमाणे ३, जाव नहविहि  
उचदंसिता पडिगते जहा सुरियामे। भंतेति भगवं गोपमे, समां भगवं महावीरं चंदह, नमंसति २;  
एवं च०—आहो पां भंते १, दद्मुर देवे महिहुए २, दद्मुरस्स सा दिव्या देविहु ३, कहिह  
गया० १; गो० १ सरीरं गया सरीरं आणुपविठा कूडागारदिंठतो, दद्मुरेणं भंते १ देवेण सा दिव्या देविहु ३  
किणा लक्षा जाव अभिसमक्षागया ? एवं खलु गो० १ इहेवं जंचुहीवे २, भारहे चासे, रायगिहे, गुण-

१३-श्री-  
सिलग वेता, सेणिग राया; तत्थ नं रायगिहे पंद णामं मणियारेसड्ही, अहुं दिचे; तेण कालेण २, अहं  
ददु० गोयमा ।, समोसद्हे, परिसा पिराया; सेणिए राया निनगए, तते णं से नेंदे मणियारेसड्ही इमीसि कहाएः  
लद्दहे समाणे पहाएः पायचारेण जाव पड्हुवासति, पंद घस्मं सोचा समणोचासए जाते; तते णं अहं  
रायगिहाओ पटिनिकवन्नो, वहिया जणवयविहारं विहरामि; तते णं से पंदे मणियारेसड्ही अन्नया कदाह-  
असाहुदंसणेण, य, अपज्ञुवासणाए य, अणाणुसासणाए य, असुस्तुसणाए य, सम्मतपञ्चवेहि परिहाय-  
माणेहि २, मिळचत्तपञ्चवेहि परियहुमाणेहि २, मिळचत्तं विष्पडिकेजे जाए याचि होतथा; तते णं नंदे मणि-  
यारेसड्ही अवता गिमहकालसमयंसि जेढामूलंसि मासंसि अहमभातं परिगेणहहिति २, पोसहसालाए जाव  
विहरति; तते णं पंदरस अटमभातंसि परिणममाणंसि तपहाए, छुहाए य अभिभूतस समाणस समेयारुवे  
अबभियते ६-धक्का णं ते जाव इसरपभितओ जेसिं णं रायगिहस वहिया, वहओ वाचीतो, पोकवर-  
णीओ जाव सरसरपतियाओ, जत्थ णं यहुजणो णहाति य, पियति य, पाणियं च संचहति; तं संय खलु  
मामं काळं पाठ० सेणियं आपुचिच्छता, रायगिहस वहिया उत्तरपुरचित्तमे दिसियाए, चेभारपचवपसस अदूर-  
मामंति, चल्युपाडगरोडतंसि भूमि भागंसि जाव पंदं पोकवरणि खणवेत्तए त्तिकहु, एवं संपेहेति २, कलं पा०  
जाव पोसहं पारेति २, एहोते कययलिकमे मित्तणाह जाव संपरियुहे महत्थ जाव पाहुडं रायारिहं गेणहहिति  
२, जेणेव सेणिए राया तेणेव उचाऽ २, जाव पाहुडं उचट्टेवति २, पवं च०-इच्छामि णं सामी ! तुव्येहि अ-

दमणुजाएः समाणे रायगिहस्स वहिया जाव खणावेत्य, अहासुहं देवाणुत्पिया । तते णं णंदे सेणिएणं रत्ना  
अङ्गणुणणांते समाणे हठ० रायगिहं मउञ्चमउञ्चेण निगच्छति २, वत्थुपाहयरोइयंसि भूमिभांत्सि णंदे  
पोक्खरर्णिं खणाविडं पयेत्ते यावि होत्था, तते णं सा णंदा पोक्खरणी अणुपुवेणं खणमाणा ३, पोक्खर-  
णी जाया यावि होत्था; चाउकोणा समतीरा, अणुपुवमुज्जायवधपसीयलजला, संछणणपत्तविसत्तुणाला,  
बहुपलपउमकुमुदनलिणदुभगसोगंधियपुडरीयमहापुडरीयसयपत्तसहस्रपत्तपुडुकेसरोववेया परिहत्थ-  
भमंतमञ्चलघपयअणोगसउणगणनिहुणवियरियसददुलहयमहुरसरनाइया पासाईया ४ । तते णं से णंदे  
मणियारसेही णंदाए पोक्खरणीए चउद्दिसि स चत्तारि वणसंडे रोचावेति । तए णं ते वणसंडा अणुपुवेणं  
सारविक्कमाणा संगोचिक्कमाणा य संचहियमाणा य से वणसंडा जाया किणहा जाव निकुर्खभूया  
पतिया पुक्फया जाव उवसोभमाणा ३, चिंडति । तते णं णंदे पुरचिमिल्ले वणसंडे एंगं महं चित्तसमं  
करावेति, अणेगलंभसयसंनिविडं पा०, तथं णं वहृणि किणहाणि य जाव चुक्किलाणि य, कडुकम्माणिण य,  
गेत्थकम्माणिण चित्त० लिध० गंधिमवेलिमपूरिमसंघातिम० उवंदसिज्जमाणाइ३, चिंडति; तत्थ णं चहृणि  
आसणाणि य, सयणाणि य अत्थयपत्तचत्थुयाइ चिंडति; तत्थ णं वहृवे पाढा य जाय दिव्वभड-  
भत्तवेयणा तालायरकमं करेमाणा विहरंति, रायगिहविणिगओ य जल्थ वहृ जणो तेहु पुव्ववत्तवेत्तु  
आसणसयणेषु संनिसक्को य, संतुपदो य, छुणमाणो य, पेच्छमाणो य, सोहेमाणो य उहंसुहेणं विहरहृ;

१३-श्री-  
ददु०  
वावात्य०

श्रीमहान-  
सादि-  
वर्गिन-  
चुनम् ।

तते णं पांदे दाहिणिल्ले बणसंडे एगं महं महाणससालं करावेति 'अणेगतंभं ० जाव रुचं तत्थ णं वहवे  
पुरिसा दिक्षभइभत्तचेयणा चिपुलं असण ४ उचक्खडेति वहणं समणमाहण अतिहीकिवणयणीमगाणं  
परिभाएमणा ३, विहरंति, तते णं पांदे मणियारसेटी पचाहिथिमिल्ले वणसंडे एगं महं तेगिचित्तयसालं  
करेति, अणेगतंभसय० जाव रुचं, तत्थ णं वहवे चेळ्डा य वेळपुत्ता य जाणुयपुत्ता य कुसला  
य कुसुलपुत्ता य दिक्षभइभत्तचेयणा वहणं वाहियाणं गिलाणण य रोगियाण य दुःखलाण य तेहच्छं  
करेमाणा विहरंति, अणो य एत्थ वहवे पुरिसा दिक्ष तेसि वहणं वाहियाण य रोगि० गिला० दुःखला०  
ओसहभेसज्जभत्तपाणेणं पडियारकमं करेमाणा विहरंति तते णं पांदे उच्चरिल्ले बणसंडे एगं महं अलं-  
कारिस्तमं करेति, अणेगतंभसत० जावपडिल्लवं, तत्थं णं वहवे अलंकारियपुरिसा दिक्षभडभत०  
वहणं समणण य अणाहण य गिलाणण य रोगि० दुःख० अलंकारियकस्तं करेमाणा २, विहरंति ।  
तते णं ती॒॒ पांदा॒॑ पोक्खरणी॒॑ वहवे सणाहा य, अणाहा य, पंथिया य, पहिया य, करोडिया,  
कारिया०, तणहार०, पत० कट्ट०; अपेगतिया एहायंति, अपेगतिया पाणियं पियंति, अपेगतिया  
पाणियं संवहंति, अप्ये० विसज्जितसेय जळमलपरिसमनिदखुटिपवासा उहुसुहेण विहरंति । राय-  
गिहविणिगत्ताओवि जत्थ वहुज्ञो किं ते जलरमणविहमज्जणक्यलिलयाघरयक्कुसुमसल्थरयअगोगा  
सउणगणक्यपरिभतसंकुलेषु सुहुसुहेण अभिरममाणो २ विहरंति । तते णं पांदा॒॑ पोक्खरिणी०

॥ १८६ ॥

यहुजणो पहायमाणो पाणियं च संबहमाणो य अन्नमदं एवं वदासी-धणेण एं देवा० ।, पंदे मणियार-  
सेड्डी कपथये जाव जम्मजीचियफले जस्त नं इमेयारुवा नंदा पोकखरणी चाउकोणा जाव पडिरुवा,  
जस्त नं गुरतिथमिल्ले तं चेव सन्नवं चउसुवि बणसंडेठु जाव रायगिहविणिझाओ जत्थ यहुजणो आसणेसु  
य सयणेसु य सक्रिस्त्रो य संतुयहो य पेच्छुमाणो य सुहंसुहेण विहरति, तं घन्ने कयत्थे  
कयपुने कयाण० लोया ! सुलद्वे माणुस्सए जम्मजीचियफले नंदस्स मणियारस्स, तते एं रायगिहे संचाडग  
जाव यहुजणो अन्नमत्रास्स एवतातिकलवति ४, घन्ने एं देवाणुपिया ।, पंदे मणियार सो चेव गमओ जाव  
सुहंसुहेण विहरति । तते एं से पंदे मणियारे यहुजणस्स अंतिए एतमठं सोचा०, हठ २ धाराहयकलंयांपिच  
समृसियरोमकूवे परं सायासोकवमषुभवमाणे विहरति ॥ सुन्नम्-१०० ॥

सर्वं सुगमं, नवरं ‘एवं सुरियामे’ चित्यथा राजप्रश्नकृते सुरिकाभो देवो वर्णितः; एवं अयमपि वर्णनीयः; कियता वर्ण-  
केनेत्याह—‘जावदिन्याह’ इत्यादि, स चायं वर्णकः—“तिहि परिसाद्दि, स तच्छिं अणिएहि, मत्तहि अणियोहवैहिं” इत्यादि;  
‘इमं च पां केवलकप्पं’ ति इमं च केवलः—परिषूः, स चासौ कलपथ-स्वकायकरणसमर्थ इति केवलकप्प; केवल एव  
या केवलकप्प; तं ‘आभोएमाणे’—इह यावत्करणादिदं दृष्ट्यं,—‘पासइ समर्थं मगवं महानीर्मित्यादि; ‘कूडागारादि-  
ट्टन्ते’ च एवं चासौ से केण्टुणं भंते ! एवं चुच्छइ सरीरं अणुपविद्धा॑ ? गोयमा ! से जहा नामए कूडागारसाला सिया  
दुहओ वहिन्नन्त्रय गुचा लिचा’ सावरणत्वेन गोमयायुपलेनेन च उमयतो गुस्तवमेवाह-गुसा-वहि॒ः प्राकाराहृता गुचुडुः ।

चारा-अन्तर्गुणस्यर्थः; अथवा-गुणा द्वाराणां केषांचित् स्थगितत्वात् केषांचिचास्थगितत्वादिति; ‘निवाया’-  
चायोरप्रवेशात्, ‘निवायंभीरा’-किल महद् गृहं निवाते प्रायो न भवतीत्यत आह-निवातगम्भीरा निवातविशालेत्यर्थः;  
‘तीर्ते न कृडागारसालाए अदरसामेते एत्य एं महं एगे जणसमूहे चिह्नहू, तए ण से जणसमूहे एं महं अनमवदलयं चा,  
चासवदलयं चा, महाचायं वा एजमाणं पासड, पासिचा तं कुडागारसालं अंतो अषुपविसिचाणं चिह्नहू; से तेणदेणं गोयमा !  
एवं युच्छ चरीणं गया सरीणं अषुपविडुनि, ‘असाधुदशनेनात् ति-सापूनामदर्शनेनात् एव, ‘अपयुपासनया’-  
असेवनया, ‘अननुशासनया’-यिक्षाया अमावेन, ‘अशुश्रूपणया’-श्वरेणुच्छाया अमावेन, ‘सम्य-  
कृत्वपरिणमविशेषरेवं, मित्यात्वपर्यवैरपि मित्यात्वं विशेषण प्रतिपक्षो विप्रतिपक्षः, काठकमाणि-दारुमयपुत्रिकादि-  
निमपणाति एं सर्वत्र, नवं; पुस्तं-वस्त्रं, चिंतं लेण्यं च प्रमिदं, यन्यमाति-यानि ब्रह्मणे मालाचत्, वेदिमानि-  
यानि वेष्टनवो निष्पादन्ते, पुण्यमालाम्यूसफूत्, पूरिमाणि-यानि पूरणतो भवन्ति, कनकादिप्रतिमावत्; सहाविमानि-  
सहाविनिष्पादयानि रथादिवत्, उपदर्ढमानानि लोकेन्योऽन्यमित्यर्थः; ‘तालायरकम्मं’ति-प्रेक्षणकर्मविशेषः, ‘तेगि-  
नित्यसालं’-ति-चिकित्साशालं अरोगशाला, वैधा:-भिषणवरा:, आयुर्वेदपाठका:, वैयपुत्रा:-तत्पुत्रा एव; ‘जाणुष’ति-  
शायकः शास्त्रानिष्यायिनोऽपि शास्त्राप्रवृत्तिदर्शनेन रोगस्वरूपतः चिकित्सावेदिनः, कुशला:-स्ववित्तकूचिकित्सादिप्रवीणाः;  
‘चाहियाणं’ति-च्यापितानां विशिष्टचित्तपीडाचरां शोकादिविष्टुवचित्तानामित्यर्थः अथवा-विशिष्टाआविष्टमाद्रसव्याधिः-  
स्त्रियरोगः कुठादिस्तददत्तां ग्रलानां-शीणइष्पणामशक्तानामाशुष्वारितोगाणः

१५४

वा, ‘ओसह’ मिहयादि, औपर्यं-एकनेकद्रव्यरूपं नैपर्यं तु-पर्यं, मर्कं तु-भोजनमार्चं, प्रतिचारकर्म-प्रतिचारकर्त्तव्यं, ‘विसज्जिए’ त्यादि, विसुद्धस्वेद-दबलपरिशमनिद्रासुषिपामाः, तत्र बह्लोऽस्थिरो मालिन्यहेतुर्मलस्तु न एव कठिनीभूत इति, ‘रायगिहे’ त्यादि, राजगृहनिर्गतोऽपि चात्र वहुजनाः, ‘किं ते’ ति-कि तद् यत्करोति ? उच्यते-जलरमणैः;-जलकीडापिः विनिघमजनैः;-वहुप्रकारलाभैः कदलीनां च लतानां च गृहकैः कुमुकस्तरैः अनेकशकुनिगणहत्तैश्च रिभिते:-स्वरयोलगावद्विर्मधुरैरित्यर्थः; कारबलानैः कदलीनां च लतानां च गृहकैः कुमुकस्तरैः अनेकशकुनिगणहत्तैश्च रिभिते:-स्वरयोलगावद्विर्मधुरैरित्यर्थः; सङ्कुलानि यानि तानि तथा तेषु पुष्टकरणीनवण्डलकणेषु पञ्चम-सातवेदानीयोदयात् सौख्यं-सुखं ॥ १०० ॥ नो य'ति प्रतिपादयन्, ‘गमय’ चि पूर्वोक्तः पाठः, ‘सायासोक्तं’ ति सागते-सातवेदानीयोदयात् सौख्यं-सुखं ॥ १०० ॥

तते णं तस्स नंदसस्स मणियारसेद्विस्स अत्रया कयाहि सरीरांसि सोलस रोयायंका पाउऽभूया, तं०-“सासे कासे जरे दाहे, कुचित्तद्वले भगंदरे ६ । अरिसा अजीरए दिडिमुद्दत्तुले अगारए ॥ १ ॥ अचिन्त्य-वेयणा कदवेयणा कंहू दउदरे कोठे ६ ।” तते णं से पांदे मणियारसेही सोलसहि रोयायंकेहि अभिभूते समाणे कोहुवियपुरिसे सदावेति २, एवं च०-गच्छह णं तुम्हे देवा० ।, रायगिहे सिंशाडगा जाव पहेचु महया सहेण उग्धोसेमाणा २, एवं च०-एवं खलू देवाणु० ।, गंदसस मणियारसेद्विस्स सरीरांसि सोलस रोयायंका पाउऽभूता, तं०-‘सासे जाव कोहे’ तं जो णं इच्छति देवाणुषिपया !, वेजो वा, वेजपुतो वा, जाणुओ वा २, कुसलो वा ३, नंदसस मणियारसस तेसि च णं सोलसण्ह रोयायंक एणमवि रोयायंक

१३-श्री-  
दर्दु०  
ब्राह्मण०

॥ १८७ ॥

वारा-अन्तर्गुप्तयर्थः; अथवा-गुसा गुस्तारा द्वाराणां केगांचित् इथगितत्वात् केगांचित् इथगितत्वादिति; ‘निवाया’-  
वायोरप्रवेशात्, ‘निवायांभीरा’-किल महादृ गृहं निवारविशालेत्यर्थः;  
‘तीसे णं कुडागरसालाए अद्वरामते एत्य णं महं एगे जणसमूहे चिह्नह, तए णं से जणसमूहे दग्ं महं अवमनहलयं वा,  
वासवदलयं वा, महावायं वा एजमाणं पासड, पासित्वा तं कुडागरसालं अंतो अणुपविसित्वाणं चिह्नह; से तेणटुणं गोयमा !  
एवं बुच्छ उरीगं गया सरीरं अणुपविहृति, ‘असाधुदर्शनेति-सापूत्नामदयेनेत्वात् एव, ‘अपर्युपर्यवेदः’-समय-  
असेवनया, ‘अनउच्चासनया’-लिक्षाया अमावेन, ‘अगुश्चूपणया’-श्रवणेच्छाया अमावेन, ‘समयकल्पयवेदः’-समय-  
कृतरूपरिणामविशेषेरेवं, मित्यात्वपर्यवेरपि मित्यात्वं पिशेषेण प्रतिपत्नो विश्रितपत्नः, काठकर्मणि-दारुमयपुत्रिकादि-  
निमिषणति एवं गर्वत्र, नवरं; पुस्तं-नस्त्रं, चित्रं लेघं च प्रसिद्धं, ग्रन्थियमानि-यानि ध्येण ग्रन्थयन्ते मालावत्, वेष्टिमानि-  
यानि वेष्टनतो निपायन्ते, पुष्पमालान्युसरुचत्, पूरिमाणि-यानि पूरणतो भवन्ति, कनकादिप्रतिमाचत्; सहारिमानि-  
चित्रयसालं’-ति-चिकित्सायानि लोकेन्योऽन्यमित्यर्थः; ‘तालायरकर्मं’ति-प्रेशणकर्मविशेषः; ‘तेगि-  
ज्ञायकाः यास्त्रान्विषयिनोऽपि यास्त्रान्विषयिनेन रोगस्वरूपरः चिकित्सावेदितः, कुशलाः-स्वावितरुचिकित्सादिप्रवीणाः;  
‘वाहियाणं’ति-इयापितानां विशिष्टचित्तपीडावतो योकादिविद्युतचित्तानामित्यर्थः; अथवा-विशिष्टस्मात् स व्याखिः-  
स्थरोगः कुठादिस्त्रदद्रां ग्लानानां-स्थीणद्वपीणामशुक्रकानामित्यर्थः; रोगितानां-सक्षात्तन्त्ररक्षाविरोगाणां

नवाही-  
४० श्री-  
भीजाता-  
पर्वक्षयादे-

१८७ ॥

या, ‘ओसह’मित्यादि, औपर्यं-एकूदश्यरूपं, भैपजं द्रव्यसंयोगरूपं; अथवा-ओपर्यं-एकानेकद्रव्यरूपं भैपजं तु-पर्यं, मर्मां तु-मोजनमात्रं, प्रतिचारकर्म-प्रतिचारकर्म-‘विसज्जिप’त्यादि, विषुष्टस्वेमर्कं तु- अलंकारियसंहं’ति-नापितरमर्मशाला॒ं, ‘विसज्जिप’त्यादि, राजदज्ञामलपरिशमनिद्रामुहुतिपासा॑॥; तत्र जलोऽस्थिरो मालिन्यहेतुमन्तस्तु म एव कठिनीभूत इति, ‘रायगिहे’त्यादि, राजदृढविनिर्गोपि चात्र पहुजनः, ‘किं ते’ति-किं तद् यत्करोति ?, उच्यते-जलरमणः:-जलकीडाम्बि: विविधमज्जनैः:-गहुप-कारसानैः कदलीनां च लतानां च गुदकैः कुमुमसप्तस्तरैः अनेकशुकुनिणरुतैश्च रिभितैः-स्वरयोलगायद्विमधुरेत्यर्थं;, सङ्कुलानि यानि तानि तथा तेषु पुष्टकरणीनत्वण्डलश्येषु पञ्चमु वस्तुनिति प्रकमः, ‘संतुयदो य’ति-श्रयितः, ‘साहेमाणो य’ति प्रतिपादयन्, ‘गमय’ति दूरोक्तः पाठः, ‘सायासोकर्वं’ति सागात्-साववेदनीयोदयात् सौख्यं-सुरवं !! १०० !! तते णं तस्स नंदस्स मणियारसेष्ठिस्स अवया कयाई सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउन्मूल्या, तं०-“सासे कासे जरे दाहे, कुचिक्षुले भगादरे ५। अरिसा अजीरए दिहिमुद्दसले अगारए ॥५॥ अचिन्त-वेयणा कबवेयणा कंदू दउदरे कोठे १६।” तते णं से पंदे मणियारसेष्ठी सोलसहि रोयायंकेहि अभिभूते समाणे कोहुंचियपुरिसे सदाचेति ३, एवं च०-गच्छह णं तुनमे देवा०।, रायगिहे दिस्त्याडग जाव पहेचु महया सदेणं उरयोसेमाणा ३, एवं च०-एवं चल्ल देवाणु०।, पांदस्स मणियारसेष्ठिस्स सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउन्मूल्या, तं०-‘सासे जाव कोठे’ तं जो णं इच्छति देवाणुपिया !, वेजपुत्रो वा, वेजपुत्रो वा, जाणुओ वा ५, कुसलो वा ३, नंदस्स मणियारस तोस्ति च णं सोलसणं रोयायंकाणं पगमवि रोयायंक

२३-श्री-  
दर्दु० शाला-  
गताद्य० वर्णनम्।

वारा-अन्तर्भुक्तयर्थः; अथवा-गुरा गुरुद्वारा द्वारागां केषांचित् स्थगितत्वात् केषांचित्स्थगितत्वादिति; ‘निवाया’-  
वायोप्रवेशात्, ‘निवायनंभीरा’-किन्त महद एहं निगतं प्रायो न भवतीत्यत आह-निवायनमीरा निवातविश्वालेत्यर्थः;  
‘तीसे यं कूडागारसालाए अदूरसामते पृथ्यं यं महं जणसमूहे चिह्नहौ, तए यं से जणसमूहे दां महं अलमाहलयं वा,  
वासवहलयं वा, महावायं वा एज्जमाणं पासः, पासिचा तं कूडागारसालं अंतो अषुपविसिचाणं चिह्नहौ; से तेणदुणं गोयमा !  
एवं युच्छ सरीरं गया सरीरां अषुपविहूचिति, ‘असाधुदशनेनेति-साधूनामदयेनेनात् एन, ‘अपयुपासनया’-  
असेवनया, ‘अनउक्तशासनया’-शिक्षाया अभावेन, ‘अशुश्रूपणया’-श्रवणेच्छाया सन्तानेन, ‘सम्प-  
कृतरूपपरिणामविशेषेरेच, मिक्यात्वपर्यवैरपि मिथ्यात्वं विशेषेण प्रतिष्ठानं विप्रिविकादि-  
निमिणनि एवं गर्वत्र, नरं; पुस्तं-वस्त्रं, चिं तेष्यं च प्रसिद्धं, यन्त्रियमानि-यानि युद्धेण ग्रहयन्ते मालायत्, वैष्टिमानि-  
यानि वेष्टनतो निष्पादयन्ते, पुण्यमालालम्बूसकृत्, पूरिमाणि-यानि पूरणतो भवन्ति, कनकादिप्रतिमानव्; महात्रिमानि-  
सहातनिष्पादयानि इथादिनव्, उपदर्शमानानि लोकान्योदयमित्यर्थः; ‘तालायर कर्ममंति-मेशणकर्मप्रियेषः;, ‘तेगि-  
चित्तयसालं’-ति-चिकित्सायालं अरोग्यशालं, वैद्याः-भिष्मगरा:, आयुर्वेदपाठकाः, वैद्यपुत्राः-रुत्पुत्रा एव; ‘जाणुप’ति-  
ज्ञायकः; शास्त्रानृत्यायिनोऽपि यात्वायप्रवृच्छिदयेनेत शोगस्यल्पतः चिकित्सावेदिनः, कृशलाः;-स्ववितरकर्त्त्विकित्यादिप्रगीणाः;  
‘वाहियाणं’ति-व्यायितानां विशिष्टविचरणात्मित्यर्थः अथवा-नितिद्वारा आधिष्ठप्यस्माद् स व्याधिः-  
स्थररोगः कुठादिस्तवदतां गलानां-क्षीणहप्तिषामयक्रान्तानामित्यर्थः, रोगिदानां-सकातवउरकुस्तादिरोपाणामायुषावितोगाणां

नवाहाः-  
३० श्र० श्री-  
भीज्ञाता-  
स्वर्णकथाहै-

॥ १८७ ॥

या, 'ओसह' भित्यादि, औपर्यं-एकद्रव्यरूपं, 'मैपञ्च-द्रव्यतंयोगरूपं; अथवा-औपर्यं-एकानेकद्रव्यरूपं मैपञ्चं हु-पर्यं, मकं हु-मोजनमात्रं, प्रतिचारकर्म-प्रतिचारकत्वं, 'अलंकारियसहं' ति-नापितकर्मशालां, 'चिसखिए' त्यादि, विद्युष्टस्वेदजलपरिशमनिद्राद्युतिपासा:, तत्र जछोड़स्थिरो मालिन्देहुर्मलस्तु न एव कठिनीभूत इति, 'रायगिहे' त्यादि, राजदण्डमध्यमलपरिशमनिद्राद्युतिपासा:, किं ते'ति-किं तद् यत्करोति ?, उच्यते-जलरमणः-जलकीडामि: विविधमञ्जते:-वहुप्रगुहविनिर्गोत्रपि चात्र पहुचनः, 'किं ते'ति-किं तद् यत्करोति ?, उच्यते-जलरमणः-जलरमणः रिपिते:-स्वारयोलगावद्विर्मधुरेतियर्थः, कररहान्ते: कदलीनां च लहानां च यृहकैः क्रुमुमस्तरैः अनेकगुहकुनिगणरुद्धैश रिपिते:-स्वारयदो य'ति-शयितः, 'साहेमामङ्गलानि यानि तथा तेषु पुष्करणीवनवण्डलसुणेषु पश्चातु वस्तुविगति प्रकमः, 'संतुष्यदो य'ति-शयितः, 'साहेमामङ्गलानि यानि तथा तेषु पुष्करणीयोदयात् सौरहं-सुरं ॥ १०० ॥ गो य'ति प्रतिपादयन्, 'गमय'ति पूर्णोक्तः पाठः, 'सायासोक्तं' ति सावात्-साववेदनीयोदयात् सौरहं-सुरं ॥ १०० ॥

तते णं तस्स नंदस्स मणियारसेटिस्स अवया कयाई सरीरंगंसि सोलस रोयायंका पाउबन्ध्या, तं०-१०० ॥ अनिष्ट-  
"सासे कासे जरे दाहे, कुनिछुस्तुले भगंदरे ६ । अरिसा अजीरए दिडिषुद्दस्तुले अगारए ॥ १ ॥ अनिष्ट-  
येयणा कद्यवेयणा कंदू दउदरे कोडे १६ ।" तते णं से णंदे मणियारसेटु सोलसहि रोयायंकेहि अभिभृते  
समाणे कोडुयिष्पुरिसे सहायेति ३, एवं च०-गच्छह णं तुन्मे देवा० १, रायगिहे सिचाडग जाव पहेचु  
महया सदेण उरयोसेमाणा २, एवं च०-एवं खलु देवाणु० १, पांदस्स मणियारसेटिस्स सरीरगंसि सोलस  
रोयायंका पाउबन्ध्या, तं०-'सासे जाव कोडे' तं जो णं इच्छति देवाणुविपया १, वेज्जो वा; वेज्जपुत्रो वा,  
जाणुओ वा ३, कुसलो वा ३, नंदस्स मणियारस्स तेसि च णं सोलसहि रोयायंकाणं पणमवि रोयायंक

उचसोमेतए तस्स नं दे० । मणियारे विउलं अत्यसंपदाणं दलपति, चिकडु दोर्चंपि तचंपि घोस्तणं घोस्तह  
 २, पच्चिपणह, तेवि तहेव पच्चिपणंति; तते नं रायगिहे इमेयास्त्वं घोस्तणं सोचा णिस्तम्म बहवे बेज्जा  
 श्रीज्ञागा-  
 र्मीकथाहे  
 ३० वू० य, बेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य, सत्यकोसलत्यगया य, कोसगपायहत्यगया य, सिलियाहत्यगया य,  
 गुलिया० य ओसहमेसज्जहत्यगया य सप्तहि २, गिहेहितो निकत्वमंति २, रायगिहं मज्जंमउसणं जेणेव  
 पंद्रस्स मणियारसेंद्विस्स गिहे तेणेव उवा० ३, पंद्रस्स सरीरं पासंति, तेसि रोयायंकाणं णियाणं युक्तंति,  
 पंद्रस्स मणियारसेंद्विस्स गिहे तेणेव उवा० ३, पंद्रस्स सरीरं पासंति, तेसि रोयायंकाणं णियाणं युक्तंति,  
 पंद्रस्स मणियार० यहाहि य, उच्चलणेहि य, सिणेहपाणेहि य, वर्मणोहि य, विरेघणोहि य,  
 पंद्रस्स मणियार० यहाहि य, उच्चलणेहि य, विरेघणोहि य, निलहेहि य, सिरावेहेहि य,  
 सेयणोहि य, अवदहेहि य, अवणहाणेहि य, अणुचासणेहि य, उहवाएहि य, छल्लीहि य, वल्लीहि य,  
 य, तच्छणाहि य, पच्छणाहि य, सिरावेहेहि य, तच्छणाहि य, पुहवाएहि य, छल्लीहि य, वल्लीहि य, ओस-  
 म्भेहि य, कंदेहि य, पत्तेहि य, पुक्फेहि य, फलेहि य, वीएहि य, सिलियाहि य, शुलियाहि य, ओस-  
 हेहि य, भेसज्जेहि य, इच्छेति तेसि सोलसणं रोयायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं  
 संचाएति उवसामेच्चए, तते नं ते बहवे बेज्जा य ६ जाहे नो संचाएति, तेसि सोलसणं रोगाणं एगमवि  
 रोगा० उव० ताहे संता तंता जाव पहिगया । तते नं नंदे तेहि सोलसेहि रोयायंकेहि अभिभृते समागे  
 पंद्रापोक्खरणी० चुक्किछए ४ तिरिकत्वजोणिएहि तिवद्वात्ते यद्वपएसिए अट्टुहट्टवसट्टे कालमासे कालं  
 किचा नदाए पोक्खरणी० चुक्किछसि दहुरत्ताए उवच्चे । तपु नं नंदे दहुरे गढ़माओ विणिम्मुके

स्त्रमाणे उम्मुक्यालभावे विकायपरिणायमिते जोव्यणागमणुपते नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विह-  
रति, तते णं नंदाए पोक्खरणीए वह जणे एहायमाणो य पियइ य पाणियं च संचहमाणो अब्रमलसस  
एवमातिक्कवति ४ घने णं देवाणुपिष्या ! नंदे मणियारे जसस णं इमेयारुवा पांदा पुक्खरणी चाउकोणा  
जाव पडिरुवा जसस णं पुरतिथिमिल्ले बणासंडे चित्तसभा अगणेवंभ० तहेय चत्तारि सहाओ जाव जम्मजी-  
वियफले, तते णं तसस दहरसस तं अभिक्कवणं २ वहुजणसस अंतिए एयमडं सोचा णिसम्म इमेयारुवे  
अडमहिधा ६-से कहिं मने मण इमेयारुवे सदे णिसंतपुन्वे तिकहु सुभेण परिणामेण जाव जाहसरणे  
ममुणान्ते, पुछयजाति सम्म समानाळङ्गति, तते णं तसस दहरसस इमेयारुवे अहभिथए ५-एवं खलु अहं  
इहेय रायगिहे नगरे नंदे णामं मणियारे अहु ! तेणं कालेण तेणं समणे भगवं म० समोसठे,  
तगु णं समणसस भगवओ० अंतिए पंचाणुव्यवहए सत्तसिक्खावहए जाव पडिवन्ने, तए णं अहं अन्नया  
कथाई असाहुदंसणेण य जाव मिळहतं विष्पदिवन्ने, तए णं अहं अन्नया कथाई गिमहे कालसमयंसि जाव  
उपरंपजिता णं विहरामि, एवं जहेय निता आएुक्तणा नंदापुक्खव० यणसंडा सहाओ तं चेव सन्वं जाव  
नंदाए ५० दहरताए उवयन्ने, तं अहो णं अहं अहो अपुने अक्यपुने निरांगथाओ पावयणाओ नहं भट्टे  
परिन्महें तं सेमं लालु ममं सयमेव पुक्खपडिवदाति पंचाणुव्यवहाति० उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं  
संपेहेति २ पुक्खपडिवदाति पंचाणुव्यवयाई० आरहेति ३ इमेयारुव्यवयाई० अभिगाहं अभिगाहं अभिगिणहति-करपह मे

१३—श्री-  
दर्दुं  
जाताद्य०  
दर्दुरामि-  
लापवर्णन-  
स्वत्रम् ।

जावजीवं छट्टछटेणं अणि० अप्याणं भावेमाणसस विहरित्वा, छट्टस्विय णं पारणगंसि कप्पह मे गंदा ए  
पोक्खरणीए परिपेरते सु फासुएणं पहाणोदएणं उम्महणोलोलियाहि य विच्छिन्त कप्पेमाणसस विहरित्वा,  
इमेयाहवं अभिभग ह अभिगेपहंति, जावजीवा० छट्टछटेणं जाव विहरति; तेणं कालेणं २, अहं गो० १,  
युणसिलए समोसहे, परिसा निगणया॒; तए णं नंदा॒ ए पुक्खवरिणीए बहुजणो पहाय० ३ अन्नमन्न०, जाव  
समणे॒ ३ इहेव गुणसिलए०, तं गच्छामो णं देवाण० समणं भगवं॒ चंदामो जाव पञ्जुचासामो पाणं मे  
इह भवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्वाए भविससह॒, तए णं तसस दहुरसस बहुजणसस अंतिए  
एप्पमहुं सोचा निसम्म० अयस्मेयाहवे अहभतिथए॑ ५ समुप्पज्जितथा-एवं न्वलु समणे॒ तं गच्छामि॒ णं  
चंदामि॒, एवं संपेहेति॑ ३, गंदाओ॒ पुक्खवरणीओ॒ सणियं॑ २, उत्तरह॒; जेणोव रायमग्ने॒ तेषेव उवा० २, ताए  
उक्किछाए॑, दहुरगहुं वीतिवयमाणे॒ जेणोव ममं अंतिए॒ तेषेव पहारेत्य गमणाए॒, इमं च णं सेणिए॒ राया  
भंगसारे॒ एहाए॒ कयकोउय॒। जाव सब्बयालंकारविभृसिए॒, हतिथवंधवरगाए॒, सकोरटमल्लदोमेणा॒, छत्तेण॒,  
सेयवरचामरा॒, हयगयरह॒, महया भड्डचडगर॒, चाउरंगिणीए॒ सेणाए॒ सङ्घि॒ संपरियुहे॒, मम पायवंदते॒  
हन्वमागच्छति॒; तते णं से दहुरे॒ सेणियसस रत्नो॒ परोणं आसकिसोरणं चामपाणं अकंते॒ समणे॒ अंत-  
निगणतिए॒ कते॒ यावि॒ होत्था॒, तते णं से दहुरे॒ अत्थामे॒ अचले॒ अवीरिए॒ अपुरिसकारपरकमे॒ आधारणि॒

नवाङ्गी-  
१०१०  
श्रीझाता-  
चंदेक्षणां॑

॥ १८९ ॥

खमि तिकहु एंतमवकमति० करयलपरिगहिय० नमोङ्यु णं जाव संपत्ताणं, नमोङ्यु णं मम धम्माय-  
 रियस जाव संपाविउकामस्स पुठिवपिय णं मए समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाति०  
 वाए पचकस्वाए जाव थूलए परिगगहे पचकस्वाए, तं हयाणिपि तस्वेव अंतिए सठबं पाणातिवायं पच-  
 कवामि जाव सठबं परि० पच० जावजीवं सठबं असण ४, पच० जावजीवं जंपिय हमं सरीरं इंडं कंतं  
 जाव मा फुंसतु एयंपि णं चरिमेहि ऊसासेहि बोसिरामि तिकहु, तए णं से बद्रुरे कालमासे काळं किचा  
 जाव सोहमे करपे, दहुरवडिसए विमाणे, उववायसभाए, दहुरदेवचाए उववेन्ने; एवं खलु गो० ।,  
 दहुरेण सा दिव्या देविहु लङ्घा ३ । दहुरस्स णं भंते ! देवस्स केवतिकलं ठिई पणाता ?, गो० ।,  
 चचारि पलिओवमाह ठिती १०, से १० दहुरे देवे० महाविदेहे वासे सिद्धिश्चहिति, युजिष० जाव अंतं  
 करेहिह य । एवं खलु समणेण भग० महावीरेण तेरसमस्स नायन्त्रयणस्स अयमठे पणाते तियमि० ॥  
 सूत्रम्-१०१ ॥ तेरसमं णायन्त्रयणं समतं ॥ १३ ॥

‘सासे’ व्यादि शोऽः प्रवीतार्थः, नवं ‘अजीरए’ च-आहारापरिणतिः, ‘दिहुमुद्रस्त्वले’ चि-द्विष्ट्वलं-नेवशूलं,  
 मृद्गुलं-मस्तकशूलं, ‘अकारए’ चि-पक्कद्वेषः, ‘अचिलदेयगो’ त्यादि, शोकातिरिक्तं, ‘कंडु’ चि-  
 दकोदारं-जलोदरभित्यर्थः, ‘सत्थकोसे’ त्यादि, शख्कोशः:-शुरनखरदनादि भाजनं स हसते गतः:-स्थितो येषां ते तथा, एवं  
 सर्वेन, नवं शिलिकाः:-किराततिककादिरुणः प्रतवपाणहृष्णः शश्वतीष्टणीकरणार्थः, तथा गुटिका-द्रव्यसंयोगनि-

१३—श्री-  
दर्दु०  
ज्ञाता व्य०  
रोगादि-  
व्याख्या-  
नम् ।

प्रादितगोलिकः औपचमेगते उद्येष्व ‘उठवलणेही’ र्यादि, उद्देलनानि-देहोपलेपनंविशेषा: यानि देहाद्वस्त्रामशुनेनापतीयमानानि भीगता-  
नानि मलादि रुग्णादायोदूलंतरीति उदर्तेनानि-तान्येव विशेषस्तु लोकहृष्टस्यवस्त्रेय हृति, स्वेहपात्रानि-द्रव्यविशेषपक्षवृत्तादि-  
नानि-स्वेहापत्नयनहेतुद्रव्यमंस्कृतजलेन लानानि अनुवासनाः-चम्पयच्चप्रगोतेणापानेन जठरे तलविशेषप्रयश्चनानि वस्त्रिकर्मानि-चर्मवेष्टनप्रयोगेण शिरःप्रभूतीनां स्वेहपूरणानि गुरुं वा वस्त्रादिविशेषणानि निरुद्धा-अनुवासना एव केवलं द्रव्यकृतो विशेषः प्रिवेशा-नाडीवेषानि रुधिरमोशुणानीत्यर्थः तदणानि-त्वचः क्षुरप्रादिना तनुकरणानि प्रशुणानि-हस्तानि त्वचो विदारणानि विशेषस्त्रयः-ग्रिग्रसि वदस्य चर्मकोशस्य संस्कृतेतलापूरुष्कृष्णाः, प्रागुक्तानि वस्त्रिकर्माणि सामान्यानि अनुवासनानि अथर्वा-पुटपाकाः-स्वेहद्रव्यविशेषेवृद्धणानि, पुटपाकाः-कुषिकानां कणिकावेषितानामग्रिना-पचनानि, अथर्वा-पुटपाकाः-पाकविशेषपतिष्ठना औपचयितेषाः, छल्यो-गुहृचीप्रभृतयः, कन्दादीनि प्रगिदानि एवंतिच्छ्रुत्तिं एकमपि रोगपुष्यमयितुमिति, ‘नियद्राउप्ति-प्रकृतिविश्वत्युभागवन्धापेक्षया, ‘यं घपएसि स्ति’ चित्प्रदेशवन्धापेयेति, ‘अंतनिनवाहाप्ति-निष्पातितान्त्च; ‘सर्वं पाणाइवाप्तं पचकखामि’ इत्यनेन यद्यपि सर्वग्रहणं तथापि तिथां देवगिरिरेष, इहाये गाये-“तिरियणं चारिचं निवारियं अह य तो युणो तेसि । सुच्वहृ चहुयाणंपि हु महव्यया-रोहणं मषप् ॥१॥ न महव्ययस्तमावेषि चरणपरिणाममयो तेसि । न चहुयाणाणंपि जयो केवलसंभूइपरिणामो ॥२॥” इति

पा० १ निष्पाति निष्पाति अव च तदा उन्नतेषो भूयते षड्नामपि महाप्रतापेण उमये ॥ १ ॥ न महाप्रतापावेषि चरणपरिणाम-  
क्षमापत्तेषो । चहुयाणामपि न यतः केवलसंभूइपरिणामः ॥२॥

इह यद्यपि स्वते उपनयो नोक्तः रथाऽप्येवं द्रष्टव्यः—“संपत्तेशुणोति जयो सुमाहुसंस्मिगच्छिओ पार्यं । पावह गुणपरि-  
 णाणी दहुरजीवोव मणियारो ॥ १ ॥” चिति, अथवा—तित्यरवंदणत्यं चलिओ मारेण पावह सगां । जह दहुरदेवेण परं वैमा-  
 णियसुरं ॥ २ ॥” चिति ममासामिदं त्रयोदशज्ञाताराइययनविचरणम् ॥ ३ ॥

## ॥ १४—श्रीतेतलिपुनज्ञाताद्ययनम् ॥

अय चतुर्दशशास्त्रं चिकिष्यते—अस्य चायं एवेण सहायित्रमन्यः—पूर्वस्थित्र सर्वां गुणानां सामर्थ्यमावै हानिरुक्ता, इह हु-  
 तयायिषामग्रीष्मद्भावे गुणसम्पदुपजायते इत्यमिथीपते, इत्येवं सम्बद्धमिदम्—  
 उत्तिं चंते ।, तेरसमस्त नां अयमट्टं पण्ठेते, चोहसमस्त के अट्टे पक्तते ॥; एवं खलु जंचू ॥, तेण  
 कालेण २, तेयलिपुरं नाम नगरं, पमपवणे उज्जाणे, कणगरहे राया, तस्स पां कणगरहस पउमावती-  
 देवी, तरस नां कणगरहस तेयलिपुते पामं अमचे, सामदंड०; तत्थ नां तेयलिपुर कलादे नामं मूसियार-  
 दारण होहथा, अट्टे जाय अपरि भूते, तस्स नां भदा नामं भारिया, तस्स नां कलायस्य मूसियारदारपस्य  
 चलितो भावेन

चा० १ रामपाणुक्तपि यतः तुमायुधभीर्णजितः ग्रायः । श्रावोति गुणपरिहाणि दहुरजीव इव मणिकारः ॥ १ ॥ तोर्यकरवन्दनार्थं चलितो भावेन  
 श्रावोति स्वर्णम् । यथा दहुरदेवेन ग्राते वैमानिकगुरुत्वम् ॥ १ ॥

१४-श्री  
तेरलि०  
ब्रागाध्य०  
तेरलिपुत्र  
समवन्धि-  
वर्णन-  
वृक्षम् ।

यूया भद्राए अतया पोटिला नामं दारिया होतथा, रुचेण जोडवणेण य लावद्रेण उपिक्टार, तते णं पोटिला  
दारिया, अन्नदा कदाह पहाता सब्बालंकरविभूसिया चेडियाचक्कवालसंपरियुडा उट्टिप पासायवरगाया आगा  
सतलंगसि कणगमएणं तिंदूसणं कीलमाणी २ विहरति, इमं च णं तेयलिपते अमचे पहाए आसत्वंयव-  
रगए महया भड्चडगर आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायसस मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेण  
वीतिवयति, तते णं से तेयलिपुते मूसियारदारगनिहस्स अदूरसामंतेण वीतीवयमाणे २, पोटिलं दारियं  
उट्टिप पासायवरगायं आगासतलंगसि कणगतिंदूसणं कीलमाणी पासति ३, पोटिलाए दारियाए रुचे य  
३ जाव अज्ञोचवधेऽ कोडुंवियपुरिसे सदावेति२, पवं च०-एस णं देवा० !, करस दारिया किनामधेज्ञा ?,  
तते णं कोडुंवियपुरिसे तेयलिपुतं पवं वदासी-एस णं सामी !, कलायसस मूसियारदारयस्स धूता, भद्राए  
अतया, पोटिला नामं दारिया रुचेण य जाव सरीरा; तते णं से तेयलिपुते आसवाहणियाओ पटिनि-  
यते समाणे अहिभतरडाणिले पुरिसे सदावेति२, पवं च०-गच्छह णो त्रु०मे देवाणुपिया ! कलायसस  
मूसियार० धूयं भद्राए अतयं पोटिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह, तते णं ते अहभतरडाणिला पुरिसा  
तेतलिणा एवं गुता समाणा हठ० करय० तहति जेणेच कालयसस मूसिसि० मिहे तेणेच उवागाया, तते णं  
से कलाए मूसियारदारते पुरिसे पड्जमाणे पासति२, हड्गुडे आसणाओ अन्नुहुद्देति२, सत्ताडपदाति अणु-  
गच्छति३, आसणेण उवणिमंतेति३, आसत्थे बीसत्थे सुहासणवरगए पवं च०-संदिसंतु णं देवाणु० !,

नवाही-  
३० श०  
श्रीज्ञात-  
र्णवक्ष्यादे-

॥ ३९३ ॥

किमानगमणपओयणं ३; तते णं ते अद्विभागाणि ब्रह्मिणा उरिसा कलायमूर्शिण० पूर्वं च०—अमहे णं देवाण० १,  
 तव धूयं भद्राएः अत्तयं पोटिलं दारियं तेयलिपुतस्स भारियताए वरेमो, तं जति णं जाणसि देवाण० ०  
 जुतं या पत्तं वा सलाहणिक्कं वा सरिसो या संज्ञोगो ता दिक्कउ णं पोहिला दारिया तेयलिपुतस्स,  
 ता भण देवाण० १, किं दलामो उक्कं ? तते णं कलाएः मूर्शियारदारए ते अद्विभतरडाणिक्के पुरिसे एवं  
 चदासी-पस चेव णं दे० १, मम सुरुते जत्वं तेतलिपुते मम दारियानिमित्तेण अगुरगहं करेति, ते ठाणिक्के  
 पुरिसे चिपुलेण असणाई, युक्तवत्थ जाव मळालंकारिणं सकारेह स० २, पडिविसज्जेह; तते णं कलायस्सवि  
 मूर्शिं गिहाओ पडिति० २, जेणेच तेयलिपुते अ० तेणेच एवा०, तेयलिपु० पृथमठं निवेष्यति; तते णं  
 कलाएः मूर्शियदारए अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिनकवचतमुहुतंसि पोटिलं दारियं पहायं सव्यालंकारभू-  
 सियं सीयं दुर्लक्षहरेता चित्तणाहसंपरिवुहे सातो गिहातो पडिनिकवमति० २, सविचट्टीए तेयलीपुं मज्जं-  
 मज्जेण जेणेच तेतलिस्स गिहे तेणेच उचा०, पोटिलं दारियं तेतलिपुतस्स सयमेव भारियताए दलयति;  
 तते णं तेतलिपुते पोटिलं दारियं भारियताए उचणीयं पासति० २, पोहिलाए सद्धि० पहुयं दुलहति० २,  
 सेगामीतपहिं कलसेहि० अप्पाणि० मज्जावेति० २, अरिगाहोमं करेति० २, पोहिलाए  
 भारियाए चित्तणाति जाव परिजणं चिपुलेण असणपाणखातिमसातिमेणं पुण्क जाव पडिविसज्जेति; तते

१४-श्री-  
तेवलि०  
ज्ञावाच्य०  
कनकरथ-  
प्रवृत्ति-  
वर्णन-  
सुन्म् ।

३० ए० नवाही-  
ज्ञावाच्य० नं से तेतलिपुते पोदिलाए आविरसे उरालाहं जाव विहरति ॥ सुन्म-१०२ ॥ तते नं से  
कणगरहे राया रखे य रहे य थले य कोसे य कोसे य वाहो य कोसे य कोसे य अंते उरे य कोसे य अंते उरे य मुचिछते ४, जाते २, पुते  
वियंगेति, अपेगाइयाणं हृत्युगुलियाओ छिदति, एवं पायंगुलियाओ पायं-  
भीक्षात्-  
सर्वक्षण्डे  
गुट्टावि कम्बसक्कुलीणवि नासापुडाहं फालेति, अंगामंगाति वियंगेति; तते नं तीसे पउमावतीए देवीए  
अद्वा पुन्वरताव० अपेयास्त्वे अभ्यतिष्ठए समुद्धपजित्था ४-एवं खलु कणगरहे राया रजे य जाव सुन्म-  
वियंगेति जाव अंगामंगाहं वियंगेति, तं जति अहं दारयं पयायामि सेयं खलु भैमं तं दारगं कणगरहस्स-  
रहस्समं चेव सारक्खमाणीए संगोचेमाणीए विहरित्थए, तिकडु एवं संपेहेति २, तेयलिपुतं अमचं सदा-  
वेति २, एवं च०-एवं खलु देवा० । कणगरहे राया रजे य जाव वियंगेति तं जति नं अहं देवा० ।, दारयं  
पयायामि; तते नं तुमं कणगरहस्स रहस्सित्यं चेव अषुपुद्वेण सारक्खमाणे संगोचेमाणे संवहेहुहि, तते नं  
से दारए उम्मुक्खालभावे जोऽवणगमण्डपते तव य मम य भिक्खाभायणे भविस्सति, तते नं से तेयलिपुते  
पउमावतीए एयमढं पडिलुणेति२ पडिगए, तते नं पउमावतीए देवीए पोदिलाय अमचीए सयमेव गठमं गेणह-  
ति सपमेव परियहति, तते नं सा पउमावती नवणहं मासाणं जाव पियंदस्सणं सुरुद्वं दारगं पयाया, जं रयणि  
न नं पउमावती दारयं पयाया तं रयणि च नं पोदिलावि अमची नवणहं मासाणं विणिहायमावक्ष

॥ ११२ ॥

दारियं पर्याया, तते णं सा पउमावती देवी अम्मधाइं सदावेति २, एवं व०-गच्छह-णं तुमे अम्भो !  
तेयलिगिहे तेयलिपु० रहस्यस्य चेव सदावेह; तते णं सा अम्मधाइं तहसि पडिसुणेति ३, अंतेउरस्स  
अवदारेणं निगच्छति २, जेणेव तेयलिस गिहे जेणेव तेयलिपुते तेणेव उवा० २, करयल जाव एवं  
वदासी-एवं खलु देवा० ।, पउमावती देवी सदावेति; तते णं तेयलिपुते अम्मधातीए अंतिए पयमठ  
सोचा हृ० २, अम्मधातीए सद्दि॒ सातो गिहाओ निगच्छति २, अंतेउरस्स अवदारेणं रहस्यं चेव अणु-  
पविसति २, जेणेव पउमावती तेणेव उवा० ० करयल ० एवं व०-संदि॒ संतु णं देवाणुपिया ! जं मए कायन्वं ?,  
तते णं पउमावती तेयलीपुतं एवं व०-एवं खलु कणगरहे राया जाव वियंगेति अहं च णं देवा० ! दारगं  
पयाया तं तुमं णं देवाणु० ।, तं दारगं गेणहाहि जाव तव मम य भिकखाभायणे भविसस्ति तिकटु तेय-  
लिपुतं दलयति; तते णं तेयलिपुते पउमावतीए हृथ्यातो दारगं गेणहति, उत्तरिज्बेण पिहेति ३, अंतेउरस्स  
रहस्यं अवदारेण निगच्छति २, जेणेव सए गिहे जेणेव पोटिला भारिया तेणेव उवा० ३, पोटिलं एवं  
व०-एवं खलु देवाणु० ।, कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेति अयं च णं दारए कणगरहस्स पुते पउमा-  
व० अतए तेणं तुमं देवा० ।, हमं दारगं कणगरहस्स रहस्यं चेव अणुपुन्वेण सारकखाहि य, संगोवेहि  
य, संवद्देहि य; तते णं एस दारए उम्मुक्खालभावे तव य मम य पउमावतीए य आहारे भविसस्ति  
तिकटु पोटिलाए पासे निगच्छति पोटिलाओ पासाओ तं विषिहायमावतियं दारियं गेणहति ३, उत्तरि-

१४-श्री-  
तेवलि०  
ज्ञाता॒इय०  
पञ्चावती॑-  
क्षर्या॑-  
वर्णन-  
स्वत् ।

ज्ञेणं पिहेति ३, अंते उरस्स अचादारेण अणुपविसति २, जेणेव पउमावती देवी तेणेव उव्या०३, पउमावतीए देवीए पासे ठावेति २, जाव पडिनिगते । तते णं तीसे पउमावतीए अंगपडियारियाओ पउमावहं देविविणिहायमावनियं च दारियं पयायं पासंति २ चा, जेणेव कणगरहे राया तेणेव २ चा करयल०, पवंव०-पवं बल्ल सामी !, पउमावती देवी महिल्यं दारियं पयाया, तते णं कणगरहे राया तीसे महिल्याए दारियाए नीहरणं करेति यहुणि लोहयाइ मयकिक्चाइ० कोलिणं विगयसोए जाते; तते णं से तेतलिलिपुत्ते कल्हे कोइंवियपुरिसे सहावेति २ पवं च०-विवपामेव चारगसो० जाव ठितिपडियं जम्हा णं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउ णं दारए नामेणं कणगरज्जपं जाव भोगसमथे जाते ॥ सुव्यम०-१०३ ॥

नवाही-  
४० श्र०  
भीज्ञाता-  
वर्णक्याहे

॥ १९३ ॥

तेयलिपुत्तस्स एयमद्दं पडिच्छृणेति २, कक्षाकल्लं महाणसंसि विषुलं असण ४, जाव दवावेमाणी विहरति  
 ॥ सूत्रम्-१०४ ॥ तेणं कालेण ३, सुव्वयाओ ईरियासमिताओ जाव गुत्तबं भयारिणीओ बहु-  
 स्तुयाओ घुपरिवाराओ युव्वाण्युन्डिव जेणामेव तेयलिपुरे नयरे तेणेव उवा० ५, अहापडिरुवं उग्गह-  
 उग्गिणहंति २, संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरति; तते णं तासि सुन्वयाणं अज्ञाणं एगे  
 संयाढए पढमाए पोरसीए सज्जायं करेति जाव अडमाणीओ तेतलिस्स गिहं अणुपविहाओ, तते णं सा  
 पोटिला ताओ अज्ञाओ एज्जमाणीओ पासति २ हठ० आसणाओ अन्धुडेति २, चंद्रति नमंसति २, विषुलं  
 असण ४, पडिला भेति २, एवं व०-एवं खलु अहं अज्ञाओ !, तेयलिपुत्तस्स पुर्विव इडा ५, आसी हयाणिं  
 अणिट्ट०५, जाव दंसणं वा परिभोगं वा०; तं तुव्वभे णं अज्ञातो सिचिदध्याओ बहुनायाओ बहुपहियाओ  
 यहणि गामागर जाव आहिडह यहणि राहिसर जाव गिहाहंति अणुपविसह तं अतिथ याहं भे अज्ञाओ !,  
 केह कहेन्नि युव्वजोए वा, मंतजोगे वा, कम्मणजोए वा, हियउडावणे वा, काउडावणे वा,  
 वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइ०, मूले, कंदे, छल्ली, वल्ली, सिलिया वा, गुलिया वा, ओसहे वा,  
 भेसज्जे वा, उवलद्दुव्वे जेणाहं तेयलिपुत्तस्स फुणरवि इडा ५ भवेज्जामि, तते णं ताओ अज्ञाओ पोटि-  
 लाए एवं युत्ताओ समाणीओ दोवि कन्ने ठाहंति २, पोटिलं एवं चदासी-अम्हे णं देचा० ! समणीओ

१४-भी-  
तेरलि०  
ज्ञातव्य०  
पोहिला-  
चर्चा-  
वर्णन-  
सूक्ष्म् ।

निगंयीओ जाव गुत्यंभन्नारिणीओ नो खलु कस्पह अम्ह एयपयारं कदेहिवि णिसामेतए, किमंग  
१०१० उण उवदिसितए वा आपरितए? वा ? , अम्हे णं तव देवा० ! विचित्रं केवलिपन्त्रं धम्मं पाडिकहिज्जामो;  
भीज्जाव-  
पर्महपाणे  
तते णं सा पोहिला ताओ अज्जाओ एवं च०-इच्छामि णं अज्जाओ !, तुम्ह अंतिए केवलिपन्त्रं धम्मं  
निसामित्रए; तते णं ताओ अज्जाओ पोहिलाए विचित्रं धम्मं परिकहेति, तते णं सा पोहिला धम्मं  
सोका निसम्म हठ०, एवं च०-सद्वहामि णं अज्जाओ !, निरांधं पावयणं जाव से जहेयं तुम्हें वयहं  
इच्छामि णं अहं तुम्ह अंतिए पंचाणुबवयाहं जाव धम्मं पाडिवज्जितए, अहाच्छुहं; तए णं सा पोहिला  
तास्मि अज्जाणं अंतिए पंचाणुबवहयं जाव धम्मं पाडिवज्जाह, ताओ अज्जाओ चंदति, नमंसति२, पडिवि-  
सर्वेति; तए णं सा पोहिला समणोवासिया जाया जाव पोहिलामेमाणी विहरह ॥ सूक्ष्म-१०५ ॥

सर्वं गुणं, नवरं ‘कलाए’ति-कलादो नाम्ना मूर्तिकारदारक इति पिरुव्यपदेशोनेति ‘अहिभ्यरठाणिङ्गे’ति-आभ्य-  
न्तरानासानित्ययः, ‘चियंगेइ’ति-व्यङ्ग्यपति विगतकर्णनाशाहस्त्रायद्वान् करोतीत्यर्थः; ‘विहंतेति’ति-विहंतरपति तिन-  
चीत्यर्थः; ‘मंरकवमाणीय’ति-संरक्षन्त्याः आपदः सङ्गोपयन्त्याः प्रच्छादनतः; ‘भिष्मकखाभायणो’ति-भिष्माभाजनसिव  
मिथुमावनं तदसाकं निधोरिन निर्वाहकारणमित्यर्थः, ‘पहमाए पोरुसीए सज्जायं मित्यादौ यावत्करणादिदं द्रष्टव्यं-  
‘दीयाए पोरिसीए साणं क्षियायह, तईयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंमते मुहोपेचियं पडिलेहेह, मायणवत्याणि पडिलेहेह,  
मारणाणि पमज्ज, मायणाणि उगाहेह२, जेपेव सुख्याओ अज्जाओ चंदन्ति, नम-

सन्ति॒र्, परं वयासी इच्छामो ण तुऽमैहि अज्ञानाए तेयलिपुरे नयरे उच्चनीयमदिक्षमादं कुलादं वरसमुख्याणस्स मिक्खाय-  
 रियाए अडिचए, अहासुहं देवाशुपिया ।, मा पदियंध, तए णं ताओ अज्ञायाओ सुव्याहि अज्ञाहि अनभ्युण्णायाओ समा-  
 नीओ सुव्याणं अज्ञाण अंतियाओ पदिस्मयाओ पदिनिक्षवमिति अतुरियमच्चलमसंसंताए गतीए उगंतरपलोयणाए दिट्टीए  
 पुरओ रियं सोहेमाणीओ तेयलिपुरे नयरे उच्चनीयमज्जित्यादं कुलादं वरसमुख्याणस्स मिक्खायरियं अहमाणीउंति॑ गुहेषु  
 समुदानं-मिथ्या गृहमपुदानं तस्मे गृहसमुदानाय मिशाचर्या-मिशानिभिं विचरणं यटन्त्यः-कुर्णिणा॒; ‘अतिथ यादं मैति॑  
 आईति॑-देवाशाणयां मेति॑-मरतीनां, ‘कुण्णजोए’ति॑-द्रव्यचूर्णनां योगः स्तम्भनादिकर्मकारी, ‘कर्मणाजोए’ति॑-कुर्णा॒-  
 दिरोगहेहुः; ‘कर्ममाजोए’ति॑-कामयोगः-कर्मनीयताहेहुः; ‘हियउडुवणे’ति॑-हृदयोहुपानं विचाकर्णहेहुः; ‘काउडु-  
 यणे’ति॑-कामाकर्णहेहुः; ‘आमिओगिए’ति॑-परामिभ्यनहेहुः; ‘वसीकरणे’ति॑-वश्यताहेहुः; ‘कोउयकर्ममे’ति॑-सौमान्य-  
 निमित्तं लपनादि॑; ‘मृहकर्ममे’ति॑ मन्द्याभिसंस्कृत्युतिदानं ॥ १०५ ॥

१४-श्री-  
तेरलि०  
ज्ञागाय०  
पोद्विला-  
दीक्षादि-  
वण्णन-  
ख्यम् ।

एवं युक्ताया पठवहृत्ताए, तते णं तेयलिपुते पोटिलं एवं व०-यत्तु तुमं देवाणुपि॒ष्ट ! मुँडो पठवहृया समाणी कालमासे कालं किञ्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवताए उचवज्जिहिसि, तं जति णं तुमं देवा०, ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म केवलिपक्षते घम्मे योहिहि तोडहं विसज्जेमि, अह णं तुमं ममं ण संबोहेसि तो ते ण विसज्जेमि; तते णं सा पोद्विला तेयलिपुत्तस्स एयमटं पडिसुणेति, तते णं तेयलिपुते विषुलं असण४, उयकवडावेति२, मित्तणातिजावआमंतेह२ जाव सम्माणोह२ पोटिलं पहायं जाव पुरिससहस्रवाहणीय सिअं दुर्लहिता मित्तणाति जाव परिगुडे मञ्चिवड्हि४ जाव रघेणं तेतलीपुत्तस्स मञ्चांमलझेणं जेणेव सुन्नव- याणं उवस्सए तेणेव उवा० सीयाओ पचोकहति२ पोटिलं पुरतो कहु जेणेव सुन्नवया अज्ञा तेणेव उवा- गच्छति२, चंद्रति॒-नमंसति२, एवं व०-प॒यं यत्तु देवा० !, मम पोद्विला भारिया इटा५ एस णं संसार- भउन्निग्ना जाव पठवतित्तए पडिच्छंतु णं देवा० ! स्त्रिस्तपिभिक्षवं दलयामि, अहाच्छुहं मा० प०, तते णं सा पोद्विला सुन्नवयाहि६ अज्ञाद्विं एवं युक्ता समाणा हट० उत्तररुर० सप्तमेव आभरणमल्लालंकारं औसु- यति२ सयमेव पञ्चमुट्ठियं लोयं करोह२, जेणेव सुन्नवयाओ अज्ञाओ तेणेव उवागच्छह२, चंद्रति॒-नमंसति२, एवं व०-आलिते णं भंते१, लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारस अंगाहं यहृणि यासाणि सामवपरि- यां पाउणहृ०, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं खोसेचा साईं भर्त्ताहं अण० आलोइयपडि० समाहिं पता

कालमासे कालं किचा अन्नतरेणु देवलोपेणु देवदत्ताए उचवद्वा ॥ सूत्रम्-१०६ ॥ तते णं से कणगरहे राया-  
अन्नया कयाहि कालधमसुणा संकुते यावि होत्था, तते णं राईसर जाव णीहरणं कर्ति २ अबमनं एव  
व०-एवं खलु देवाणु । कणगरहे राया रञ्जे य जाव पुते वियंगित्था, अम्हे णं देवा० ! रायाहीणा राया-  
हिट्या रायाहीणकज्जा अम्बे कणगरहसस रखो सव्वद्वाणोनु सव्वभूमियानु लाङ्गपचाए  
दिव्वियारे सव्वकज्जवद्वाया॒ यावि होत्था, तं सेयं खलु अम्हं तेतलिपुतं एवं व०-एवं खलु  
अबमवस्तु एयमद्भं पडिलुणेति३, जेणोव तेयलिपुते अम्बे तेणोव उवा०३, तेयलिपुतं एवं व०-एवं खलु  
देवाणु । कणगरहे राया रञ्जे य रठे य जाव वियंगोह, अम्हे य णं देवाणु । रायाहीणा जाव रायाहीणा-  
कज्जा, तुमं न णं देवा० ! कणगरहसस रखो सव्वद्वाणोनु जाव रज्जुराचित्प, तं जह णं देवाणु । अतिथ  
केह कुमारे रायलकवणसंपदे अभिसेयारिह तणं तुमं अम्हं दलाहि, जा णं अम्हं महया॒ रायाभिसे-  
एणं अभिसित्तचामो, तए णं तेतलिपुते तेसि॒ ईसर० एतमट्ठं पडिसुणेति३, कणगरहसस रखो पुते  
सरिसरीयं करोह २ चा, तेसि॒ ईसर जाव उवेणेति३, एवं व०-एस णं देवा० !, कणगरहसस रखो  
पउमावतीए देवीग! अतए कणगरहसय नामं कुमारे अभिसेयारिह रायलकवणसंपदे मए कणगरहसस रखो  
रहसियं संयट्टिए, एयं णं तुव्वेम महया॒ २ रायाभिसेएणं अभिसित्तचह, सव्वं च तेसि॒ उडाणपरियावणियं  
परिकहेह । तते णं ते ईसर० कणगरहसयं कुमारे परिकहेह । तते णं से कणगरहे कुमारे

१४-श्री-  
तेतलि०  
ज्ञाताच्य०  
पोहिल-  
देवसर्व-  
निवारण-

राया जाए महया हिमवंतमलय० बण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरह । तते णं सा पउमावर्ती देवी कणगज्जसं रायं सदावेति २ एवं व०-एस णं युता ! तव० रज्जे जाव अंतेउरे य० तुमं च तेतलिपुत्रसंस पहावेण, तं तुमं णं तेतलिपुत्रं अमचं आढाहि, परिजाणाहि, सकारेहि, सम्माणेहि उडिसंसाहेहि अद्वासणेण उचणिंतेहि भोगं च से अणुवेहुहि, तते णं से कण-ठिंगं पञ्जुवासाहि वचंतं पडिसंसाहेहि अद्वासणेण उचणिंतेहि ॥ सुन्नम्-१०७ ॥

॥ ११६ ॥

नवाही-  
इ० इ०  
भीष्माग-  
वर्षक्यामे-

‘रायाधीणा’इत्यादि, राजाधीना: राझो दृटपि वर्षमाना राजवर्गवर्तीन इत्यर्थः, राजाधीपुत्रास्तेन सन्यमध्यासिता:, राजाधीनानि-राजायत्तानि कार्यणि येणां ते यं राजाधीनकार्याः, ‘सङ्खं च से- तस्य उत्थानं च-उत्थान्ति परियाप्निका च-कालान्तरं यावत् विधतिरित्युथानपरियाप्निकं तत्परिकथयतीति, ‘वयंतं पडिसंसाहेहि’ति विनयप्रस्तावाद् ब्रजनं प्रति संश्लाघय-साधूकं साधिवत्येवं प्रयंसां कुर्वित्यर्थः, भोगं-वर्तनं ॥ १०७ ॥

तते णं से पोहिले देवे तेतलिपुत्रं अभिक्षबाणं॒, केवलिपवत्ते घमसे संबोहेति, नो चेव णं से तेतलि॒ पुत्रे संबुद्धस्ति, तते णं तरस्स पोहिलदेवस्त इमेयाहवे अङ्गतिथेऽ॑, एवं खलु कणगज्जस्य॑ राया तेयलि॑ शुतं आढाति जाव भोगं च संवेहुति, तते णं से तेतली अभिक्षबाण॒, संबोहिलमाणेवि घमसे नो संबु- द्धस्ति, तं सेयं खलु कणगज्जस्यं तेतलिपुत्रातो विष्परिणामेतत्पृति॒ एवं संपेहेति॒ रत्ता, कणगज्जस्यं तेत-

लिपुतातो विष्परिणमेह । तते णं तेतलिपुते कलं पहाते जाव पायनिछते आसबंधवरगए बहूहि पुरिसंहि  
संपरियुहे सातो गिहातो निगच्छति२, जेणेव कणगज्ज्ञए राया तेणेव पहारेतथ गमणाए, तते णं तेतालि-  
पुतं अमचं जे जहा यहवे राईसरतलवर जाव परिमयओ पासंति ते तहेव आढायंति, परिजायंति,  
अन्जलिपरिगहं करेति, इडाहि कंताहि जाव बगृहि आलवेमाणा य, पुरतो य,  
पिट्ठो य, पासतो य, मरगतो य, समणुगच्छति३, तते णं से तेतलिपुते जेणेव कणगज्ज्ञए तेणेव उवा-  
गच्छति३, अंजलिपरिगहं करेति, इडाहि कंताहि जाव बगृहि आलवेमाणा य, संलवेमाणा य, पुरतो य,  
अन्जलिपरिगहं करेति, इडाहि कंताहि जाव बगृहि आलवेमाणा य, संलवेमाणा य, पुरतो य,  
अन्जलिपरिगहं करेति२, नो आढायाति, नो परियाणाति, नो अन्जुहुटेति; अंजलि करेह, तते णं से  
गच्छति३, परम्मुहे संचिडति; तते णं तेतलिपुतं एजमाणं पासति२, नो आढायाति, नो आढायाति,  
अणाढायमणे३, परम्मुहे संचिडति; तते णं तेतलिपुते कणगज्ज्ञयस्स रळो अंजलि करेह, तते णं से  
कणगज्ज्ञए राया अणाढायमाणे, तुसिणीए, परम्मुहे संचिडति; तते णं मम कणगज्ज्ञए राया हीणो णं मम कणगज्ज्ञए राया  
जाणिता भीते जाव संजातभए, एवं व०-ख्वे णं मम केणह कुमारेण मारेहिति तिकडु भीते तत्थे य जाव सणियं  
अवज्ज्ञाए णं कणगज्ज्ञए, तं ण नज्जह णं मम केणह कुमारेण मज्जमज्जेण जेणेव सए गिहे तेणेव पहोरेतथ  
२, पचोसकोति२, तमेव आसबंध दुर्लहेति२, तेतलिपुरं मज्जमज्जेण जेणेव सए गिहे तेणेव पहोरेतथ  
गमणाए; तते णं तेयलिपुतं जे जहा ईसर जाव पासंति ते तहा नो आढायंति, नो परियाणंति, नो  
अन्जुहुटेति, नो अंजलि०, इडाहि जाव णो संलवंति नो पुरओ य, पिठओ य, पासओ य, ( मरगतो य ),  
समणुगच्छति३; तते णं तेतलिपुते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, जावि य से तत्थ बाहिरिया परिसा

१४-श्री-  
तेरलि० ज्ञाताय०  
अपमानित-  
वर्णन-  
सुन् ।

भवोते, त०-दासस्ति वा, पेसेति वा, 'आइल्लृति वा, सावि य णं नो आढाइ ३, जाविय से अहिंभतरिया  
परिसा भवति, तंजहा-पियाइ वा, माताति वा, जाव सुणहति वा, माताति वा, जाव सुणहति वा, माताति ३; तते णं  
से तेतलिपुते जेणेव वासधेर जेणेव सए सयणिङ्गे तेणेव उवागच्छति॒, सयणिङ्गंसि णिसीयति॒, एवं  
व०-एवं खलु अहं सयातो गिहातो निगच्छामि, तं चेव जाव अहिंभतरिया परिसा नो आढाति, नो  
परियाणाति, नो अबुट्टेति, तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियातो चवरोवित्तए तिकहु एवं संपेहेति॒,  
तालउडं विसं आसगंसि पविववति, से य विसे णो उक्कमनि; तते णं से तेतलिपुते नीलुप्पल जाव असि  
रख्ये ओहरति, तत्थवि य से धारा ओपल्ला; तते णं से तेतलिपुते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छति॒,  
पासगं गीवाए बंघति॒, पासं रुक्खे बंघति॒, अप्पाणं सुयति, तत्थवि य से रुज्जू छिका;  
तते णं से तेतलिपुते महतिमहालयं सिलं गीवाए बंघति॒, अतथाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं  
सुपति, तत्थवि य से अगणिकाए विजक्षाए; तते णं से तेतली एवं व०-सद्देयं खलु, भो समणा वर्यंति सद्देयं  
खलु, भो माहणा वर्यंति सद्देयं खलु, भो समणा माहणा वर्यंति; अहं एगो असद्देयं वर्यामि, एवं खलु  
अहं सह गुतोहि अगुते को मेदं सदहिसस्ति॑, सह मितोहि अमितो को मेदं सदहिसस्ति॑, एवं अत्थेण  
दारेण दासेहि परिजणेण, एवं खलु तेपलिपुते णं अ० कणगज्ज्वाणं समाणेण तेयलि-  
सुते तालपुडगे विसे आसांसि पविवस्ते सेविय णो कमति को जेयं सदहिसस्ति॑, तेतलिपुते नीलुप्पल  
॥ १९७ ॥

जाव चंधंसि ओहरिए तत्थविग से धारा औपक्षा को मेंदं सहहिस्ति ?, तेतलिपुत्तत्स पासगं गीचाए बंधेता  
जाव रज्जू छिका को मेंदं सहहिरस्ति ?, तेतलिपुत्ते महासिलयं जाव चंधित्ता अतथाह जाव उदगंसि  
अपा मुके तत्थविय नं थाहे जाए को मेंदं सहहिस्ति ?, तेतलिपुत्ते चुकंसि तणकूडे, अउनी चिज्जाए,  
को मेंदं सहहिस्ति ?, ओहतमणसंकणे जाव क्षियाह। तते नं से पोहिले देवे पोहिलारुं चित्तवत्ति ?,  
तेतलिपुत्तत्स अहरसामंते ठिचा एवं य०-हं भो। तेतलिपुत्ता !, पुरतो पवाए, पिट्ठओ हिथभयं ठुहओ  
अचक्षुकासे मञ्ज्ञे सराणि चरिसयंति, गामे पलितो, रक्ते क्षियाति, रक्ते क्षियाति; आउसो !,  
तेतलिपुत्ता !, कओ चयामो ?; तते नं से तेतलिपुत्ते पोहिलं एवं चयासी-भीयस्स खलु भो !, पवज्जा।  
सरणं, उकंटियस्स संकेसगमणं, छुहियस्स अरं, तिचियस्स पाणं, आउरस्स मेसज्जं माइयस्स रहसंसं,  
अभिजुत्तस्स पचयकरणं, अद्वाणपरिसंतस्स चाहणगमणं, तरित्तकामस्स पवहणं; किंचं परं अभिओजि-  
तेतलिपुत्ता !, तेतलिपुत्ते चाहणगमणं, तेतलिपुत्ते चाहणगमणं, तरित्तकामस्स पवहणं; किंचं परं अभिओजि-  
दिसं पाउङ्ग्वए तामेव दिसि पडिगए ! सत्रम्-१०८ || तते नं तस्स तेयलिपुत्तस्स सुमेणं परिणामेण  
जाइसरणे समुपणे, तते नं तस्स तेयलिपुत्तस्स अयसेयारुवे अवभिथिते ५, समु०-एवं खलु अहं हहेव  
जंतुषीचे२, महाविदेह वासे पोक्खलावतीविजये पोडरीगिणीते रायहाणीए महापउमे नामं राया होतथा;

१४-श्री-  
तेतलि० ब्राह्मण०  
प्रासजाति० स्मरण०  
द्वारा एवं संप्रेरणा देवे; तते णं अहं ताओ देवलोया ओ आउकवएणं इहेव तेयलिपुरे तेय-

लिस्स अमचस्स भद्राए भारियाए दारगचाए पचायाते; तं सेयं खलु मम पुन्वदिद्वाईं महन्वयाईं सयमेव उचसंपज्जित्वाणं चिह्नित्य, एवं संपेहति॒ र सयमेव महन्वयाईं आकहेति॒, जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उचाऽ॒ २, असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापृथंयसि चुहनिसत्त्वस्स अणुचित्माणस्स पुच्याहीयाति॒ सामाइयमातियाईं चोदसपुच्याईं सयमेव अभिसमचागयाईं, तते णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अणगारस्स सुमेणं परिणामिण जाव तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं कम्मरयविकरणकरं अपुन्वकरणं पविठस्स केवलवरणाणदस्से समुपक्षे ॥ सुत्रम्-१०९ ॥ तए णं तेतलिपुरे नगरे आहासत्तिहिएहि॒ चाणमंतरोहि॒ देवेहि॒ देवीहि॒ य देवदुङ्दुभीओ समाहया ओ दसद्वन्ने कुसुमे निवाहि॒, दिव्वे गीयांधवनिनाए॒ कए॒ यावि॒ होत्था, तते णं से कणगज्जाए राया हमीसे कहाए लळडे॒, एवं च०-एवं खलु तेतलि॒ मए॒ अवज्ञाते मुळो॒, भवित्वा पववतिते तं गच्छामि॒ णं तेयलिपुतं अणगारं वंदामि॒-नमस्तामि॒ ३, एयमठं विणएणं मुळो॒, खामेमि॒; एवं संपेहति॒ ३, एहाए चाउरंगिणी॒ सेणाए॒ जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुते अणगारे॒ तेणेव उचागच्छति॒ ३, तेतलिपुतं अणगारं चंदति॒-नमस्तिति॒, पृष्ठमठं च विणएणं शुज्जो॒ खामेह॒ नवासचे॒ जाव पञ्जुवासह॒; तते णं से तेयलिपुते अणगारे॒ कणगाज्जस्यस्स रजो॒ तीसे य महद॒ घङ्मं परिकहेह॒,

तते ण से कणाराजक्षर शाया तेतलिपुत्तरस' केवलिसंस अंतिए धम्मं सोचा पिसम्म पञ्चाणुवबइयं सत्तस्तिकखा  
तते ण तेतलिपुत्तरस' केवलिसंस अंतिए धम्मं सोचा पिसम्म पञ्चाणुवबइयं सत्तस्तिकखा  
जाते जीव अहिगर्यजीवाजीवि । तते ण तेतलिपुत्तरस' केवलिसंस  
चहयं सावगधम्मं पडिबज्जहृ, समर्थनोवासीर्सए । एवं संबलु जंदू । भगवया संमणेणं महावीरेणं  
वहणि वासाणि केवलिपरियांगं पाउणिच्चा जाव चिद्दे । एवं संबलु जंदू । भगवया संमणेणं महावीरेणं  
चउदसमं अंजसयणं समत्ते ॥ १४ ॥

चोहसमरसं नायज्ज्ञयणसं अयमहु पश्चते, त्तिवेमि ॥ सूत्रम्-१५० ॥ चउदसमं अंजसयणं समत्ते ॥ १५ ॥

‘रुद्धे ण’ मिल्यादी, हीनोऽयं मम ग्रीत्येति गमयते, अपव्यातो-दुष्टचिन्तावान् यमेति-ममोपरि कनकद्वजः, पाठान्तरेण  
केतापि कुमारेण-चिह्नपमारणप्रकारेण मारयिष्य  
दुष्यितोऽहं-दुष्टचिन्ताविष्यीकृतोऽह कनकच्छजेन राजा, तत्-तस्माल ज्ञायते केतापि कुमारेण-चिह्नपमारणप्रकारेण मारयिष्य  
तीति ‘चंधंसि उवहरह’ इति-स्कन्दे उपहरति विनाशयतीति, ‘धारा ओपल्ल’ति-अपदीणि कुण्ठीभूतेत्यर्थः; ‘अत्याह’ति-  
असं-निरस्तमविद्यमानमध्यस्तरं प्रतिष्ठानं यस्य तदस्त्राघं स्तायो च-प्रतिष्ठानं तदभावादस्त्राघ, अतार यस्य तरण  
नास्ति पुरुषः परिमाणं यस्य तत्पौलेष्यं तचिषेधादपौलेष्यं ततः पदत्रयस्य कर्मधारयो, मकारौ च प्राकुरत्त्वात्; अतस्तत्र,  
‘सद्देह्य’मित्यादि, अद्देह्यं अमणा वदन्ति आत्मपरलोकपुणपपापादिकमर्थजात, अतीनिद्रियस्यापि तस्य प्रमाणावाधितत्वेन  
श्रद्धानगोचरत्वात्, अहं एनरेकोऽप्रदेह्यं चदामि दुरादिपरिवारयुक्तस्यात्यर्थं राजसम्मतन्त्रे यत्वादिति  
च निपत्तेष्टपाशकजलाप्रिभिरहित्यत्तं चातमनः प्रतिपादयतो मम युक्तिक्वाधितत्वेन जनप्रतीतेरविष्यत्वेनाश्रद्धेयत्वादिति  
प्रस्तुतव्यव्रतमावना, ‘तए ण’मित्यादि, हं मो !, इत्यामन्त्रये, पुरवः-‘अगतः’, प्रापतो-गतीः पुष्टो हस्तिमय, ‘दुह ओ’ति-  
उभयतः अचक्षुःसपर्यः-‘अगतः’, प्रापतो-गतीः पुष्टो हस्तिमय, ‘दुह ओ’ति-

२४-श्री-

तेरलि०

ज्ञागा ध्य०

तेरलि०

युत्स्य

विचारणा

तथा ग्रामः प्रदीपोऽग्निना जगलति, अरण्णं तु धमायतेऽनुपश्चान्तरदाहं हृत्वा यत्कर्त्ता अर्थात् अरण्णं त्रयं वेत्यर्थः; अथवा-अरण्णं प्रदीपं ग्रामो धमायते न विद्ययायति, एवं सर्वस्यापि भयानकत्वात् स्थानान्तरस्य चाभावादाद्यायुत्स्यं स्तेरलिप्तुः । ‘कठ’चि-क वजामः ? भीतर्नन्तरब्यमस्माभिरिवान्येनापि भवतीति प्रश्नः; उचरं च भीतस्य प्रवर्जया शरणं भवतीति ग्राम्यते, यथोत्कर्णितादीनां स्वदेशगमनादीनि, तत्र ‘छुहि॒यस्स’ति-युशुक्षितस्य मायिनो-वंचकस्य रहस्यं-युस्त्वं भवतीति मर्यादा-अभियुक्तस्य-सम्पादितदृष्णस्य प्रत्ययकरणं-दृष्णापोहेन प्रतीत्युपपादनं अद्यानं अरियतो (अच्छ-परिश्रान्तस्य)-ग्रन्तुमशक्तस्य वाहनगमनं-श्रुकटाद्यारोहणं तरीतुकामस्य नयादिकं लक्षनं-तरणं कृत्पं-कार्यं यस्य तत् ऋत्व-परिश्रान्तस्य) ॥ १९९ ॥

॥ १९९ ॥

समाप्तिमिदं चतुर्दशाज्ञाताद्यप्यनविचरणम् ॥ २४ ॥

॥ १९९ ॥

३०—प्रणिनः प्रायेण तावश्च धर्मं एवन्ति भावतः; यावदुल्लं न ग्रासा मानवं च तेरलिप्तुत्वत् ॥ १ ॥

## ॥ १५—श्रीनन्दीफलाहर्यं ज्ञाताठ्ययनम् ॥

अपुगा पञ्चदण्डं नितिषते, अस्य चैवं पूर्णं मह सम्बन्धः—पूर्वस्मिन्दिपत्यागः ग्रातिपादितः, इह तु जिनोपदे-

ज्ञातु, ग्रात च न तत्त्वधर्मास्तिरस्तिरभियन्तरं इत्येवंसम्बन्धमिदम्—

जन्मति णं भंते !, चोहसमस्स नायज्ञयणस्स आयमट्टे पणणते, पक्षरसमस्स के अट्टे पक्षते ?; एवं खलु जंतु !, तेणं कालेणां॒, चंपा नाम नयरी होत्था, पुक्का भद्रे चेहए, जियसहू राया; तत्थ णं चंपा ए नयरीए धणो नामं सत्यवाहे होत्था, अहु जाय अपरिभूय; तीसे णं चंपा ए नयरीए उत्तरपुरान्दित्तमे दिसिभाए अहिंसा रुच्छा नाम नयरी होत्था, रिद्विधमियसमिक्षा चक्कओ; तत्थ णं आहिंच्छत्ताए नयरीए कणगकेतु नामं राया होत्था, महया चक्कओ, तस्स धणणस्स सत्यवाहस्स अक्कदा कदाह पुक्कवरत्तकालस्समयस्स इमे-याहवे अहमिथते चित्तिए पतिषए मणोगणए संकल्पे समुपपजित्था—सेयं खलु मम विषुलं पणियमंडमा-याहवे अहिंच्छत्ताए गमित्तण, एवं संपेहेति॒, गणित्तं च घ चउन्निवहं भंडे गेणहइ॒, सगडी-सागं आहिंच्छत्तं नगरं चाणिज्जाए गमित्तण, एवं संपेहेति॒, गणित्तं च घ चउन्निवहं भंडे देवा० ! सगांड सख्लेइ॒, सगडीसागडं भरेति॒, कोहुविययुरिसे सद्वावेति॒, एवं व०—गच्छह णं तुन्मे देवा० ! चंपा ए नगरीए स्तियाडग जाय पहेउं एवं खलु देवाणु० ! धणणो सत्यवाहे विषुले पणिय० इच्छति, अहिंसा रुच्छां नगरं चाणिज्जाए गमित्तते, त जो णं देवाणु० !, चरए वा चीरिए वा, चक्कमधंडिग वा, भिच्छुडे वा, पंकुरगे वा, गोतमे वा, गोचतीते वा, गिहिधमसाचित्तए वा, अविकृद्विकृद्वुहसावगरचपड-

नवाही-  
१०००  
भीष्मा-  
वर्षकपात्रे

॥ २०० ॥

निरांयप्रभितिपासंडत्ये वा, गिहत्थे वा, तस्स पां धणेण सर्दिं अहिन्छत्तं नगरि गच्छइ; तस्स पां धणेण अच्छत्तगस्स छत्तां इलाह अणुवाहणस्स उवाहणाड दलयहै, अङ्कुडिपस्स कंडियं दलयहै, अपलयय-  
पास पत्तयाणं दलयहै, अपक्लेवगस्स पक्लेवं दलयहै, अंतराऽविय से पडियस्स वा भौगोल्गणस्सा-  
हेजे दलयति, चुंचुहेण य पां अहिन्छत्तं संपावेति तिकडु दोंबंपि योसेहरै, मम पंयमाणतियं  
पचिपणहै; तते पां ते कोंडिवियपुरिसा जाव एवं व०-हेदि सुर्णतु भगवंतो चंपानगरीबंधनवा यहवे  
चरगा य जाव पचिपणंति, तते पां से कोंडिवियवोसणं सुचा चंपाए औयरीए यहवे चरगा य जाव गिहत्था य  
जेणेव धणेण सल्यवाहे तेणव उवागच्छन्ति, तते पां धणेण तेसि चरगा य जाव गिहत्था य अच्छत्तगस्स  
छत्तं दलयहै जाव पत्तयाणं दलाति, गच्छह पां तुन्मे देवाणुपिया ।, चंपाए नयरीए बहिया आपुज्जाणांसि  
ममं पडिचालेमाणा चिढह, तते पां चरगा य ० धणेण सल्यवाहेणं एवं युत्तो समाणा जाव चिढंति, तते पां  
धणेण सल्यवाहे सोहणंसि तिहिकरणनकवत्तंसि विषुलं असां ४ उवक्खडवेहै २ चां, मित्तनाहै आमंतेति २,  
मोपणं भोयावेति २, आपुच्छति २, सगडीसागड जोयावेति २, चंपानगरीओ निरांयकच्छति; णाहविपगिट्टहि  
अद्वाणेहि वसमणे? यहेहि यसहिपायरासेहि अंगं जणवय मञ्चमञ्चेण जेणेव देसरां तेपोव उचाग-  
च्छति २, सगडीसागड भोयावेति २, सत्त्वणिवेसं करेति २, कोंडिवियपुरिसे स शावेति; एवं व-तुन्मे पां देवा०

१५-श्री-  
नन्दी०  
झाताइय०  
सार्थवाह०  
प्रवासादि-  
वणन-  
यत्रम् ।

२०॥५॥ तु उत्तरांशु १०॥८०॥ तु उत्तरांशु १०॥

सम सत्थनिवेसंसि महया॒, सपैनं उच्योसेमाणा॒, पृथं वदहं-पृथं बलू देवाणु० ! इमीसे आगामियाए  
चिक्रावायाए दीहमद्वाए अडवीए वहुमज्जदेसंभाए बहेवे पांदिफलो॑ नामं रुक्खा पवत्ता, किणहा जाव  
पत्तिया, पुण्या, कलिया, हरियेरिज्जमाणा स्त्रीए अईव अतीव उवसोमेमाणा चिडंति, मांणुण्णा बनेण ४  
जाव मणुता फासेण मणुता छायाए, तं जो णं देवाणुपिया ! तेसि नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंद०  
तय० पत० पुण्फ० फल० धीयाणि वा हरियाणि वा जीवियातो ववरोविजिसंसं  
भवति, ततो पञ्चा परिणममाणा॒, अकाले चेव जीवियातो ववरोविजिसं  
नंदिफलाणं मूलाणि वा जावे छायाए वा धीसमउ, मा णं सेफ्वि अकाले चेव जीवियातो ववरोविजिसं  
तुन्मेणं देवाणु० ! अन्नेसि रुक्खाणं मूलाणि य जाव हरियाणि य आहारेण छायासु वीसमहति घोसणं  
घोसेह जाव पचिपर्णांति, तते णं धणो सत्थवाहे सगडीसागडं जोएति॒, जेणेव नंदिफला रुक्खा तेणव  
उवागच्छति॒, तेसि नंदिफलाणं अदूरसामेत सत्थणिवेसं करेति॒, दोचंपि तचंपि कोइुवियपुरिसे सदा॑  
वेति॒, पृथं च०-तुन्मेणं देवाणु० !, मम सत्थनिवेसंसि महता सदेण उरयोसेमाणा॒, पृथं वयह-एए णं  
देवाणु० ! ते पांदिफला किणहा जाव मणुता छायाए तं जो णं देवाणु० ! एएसि पांदिफलाणं करखाणं  
मूलाणि वा कंद० पुण्फ० तय० फल० जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेति, तं मा णं तुन्मेजाव दूरं  
दूरेण परिहरमाणा वीसमह, मा णं अकाले जीवितातो ववरोविसंसंति, अन्नेसि रुक्खाणं मूलाणि य जाव

१५-थी-  
नन्दी०  
ज्ञात्याद्य०  
नन्दीफल-  
वर्णनादि-  
काव०

॥२४॥ अंतर्जलोऽप्युभये ॥२५॥ अंतर्जलोऽप्युभये ॥२६॥ अंतर्जलोऽप्युभये ॥२७॥

बीसमहं तिकट्ट बोसणं पचारिपांति, तथ्यं एं अत्थेगद्या पुरिसा धणणस्स सत्थयवाहस्स एपमद्दं सदहंति  
जाव रोयंति, एयमद्दं सदहमाणा तेसि नंदिफलाणं दूरं हृदेण परिहरमाणा॒, अन्त्रेमि कुक्खाणं मूलाणि य  
जाव चीसमंति, तेसि एं आवाए नो भदह भवति, ततो पञ्चां परिणममाणा॒, सुहरूवताए॑ १ उञ्जो॒,  
परिणमंति; एवामेव समणाउसो ! जो अमहं निजांयो वार जाव पञ्चसु कामगुणेषु नो सज्जेति, नो रखेति;  
से एं इह भवे वेव वहणं समणाणं ४ अचणिङ्गे परलोए नो आगङ्गति जाव चीतीचतिसस्ति; तथ्यं एं जे  
से अपेगतिया पुरिसा धणणस्स एपमद्दं नो सदहंति३, धणणस्स एतमद्दं असदहमाणा॒, जेणेव ते नंदिफला  
तेणेव उचागङ्गति२, तेसि नंदिफलाणं मूलाणि य जाव चीसमंति, तेसि एं आवाए भवति, ततो पञ्चां  
परिणममाणा जाव चवरोर्वेति, एवामेव समणाउसो ! जो अमहं निजांयो वा निजांयी वा पञ्चवित्तै॒ पञ्चसु  
कामगुणेषु सज्जेति३ जाव अणपरियदिस्सति जहा व ते पुरिसा, तते एं से घणो सगडीसागडं जोया-  
वेति२ जेणेव अहिङ्गत्ता नगरी तेणेव उचागङ्गति२, अहिङ्गत्तोए पायरीए यहिया अनगुजाणे सत्थनिवेसं  
करेति२, सगडीसागडं मोयावेइ; तए एं से घणो सत्थवाहे महत्थं३, रायरिहं पाहुडं गेणहइ२, बहुपुरिसेहि०  
सद्दि॒ संपरियुठे अहिङ्गत्तं नपरं मञ्जुसंमञ्जेणं अणुपविसह, जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उचागङ्गति॒,  
करपल जाव बद्धावेइ, तं महत्थं३, पाहुडं-उचणोह; तए एं से कणगकेऊ राया हड्डुहूड० धणणस्स सत्थवा-  
हस्स तं महत्थं३, जाव पढिङ्गत्तहृ॒, धणं सत्थवाहं सकारेह, सममाणेइ२, उरमुक्कं वियरति॑ २, पद्धिविसं॒.

नवाही-  
शू० शू०  
शीकाग-  
वर्मकथाहे  
॥ २०१ ॥

तेणोव उवागच्छति२, मित्-  
द्वेह; भंडविणिमयं करेह२, पडि-भंडं 'गेठहति२, चुहं चुहेण जेणेव' चंपानयरी तेणोव उवागच्छति२, मित्-  
नाति० अभिसमक्रागते विपुलाहं माणुससगाहं जाव विहरति॑; तेणं कालेण २ येरागमणं धणो घरमं  
सोचा, जेढुपुं कुहुवे ठविता पनवहए पकारस सामाइयाति॑ अंगाति॑ वहणि वासाणि जाव मासियाए सं०  
अक्रतेरसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तें, महाविदेहे वासे सिद्धिक्षाहिति॑ जाव अंतं करेति॑ । एवं खलु जंबु॑,  
समणेणं भगवया महावीरेण पकरसस्स नायज्ञयणस्स अयमङ्गे पणण ते त्ति वेमि॑ ॥ सुन्त्रम्-११? ॥

सीरिको-धाटिभिक्षाचर॑; चीरोपकरण  
मने सुगमं नवरं 'चरए वे' त्यादि॑, तत्र चरको-धाटिभिक्षाचर॑; भिक्षामोजी सुगतशासनस्थ इत्यन्ये, पाण्डुरागः-शैव॑;  
इत्यन्ये; चमलणहकः-चर्पपरिधान॑; चमोपकरण इति चान्ये॒; भिक्षापांडो-भिक्षामोजी सुगतशासनस्थ इत्यन्ये, पाण्डुरागः-शैव॑;  
गोतमः-लघुताथमालाचार्चितविचित्रपादपतनादिशिक्षाकलापवहृपभकोपायतः॑; कणभिक्षाग्राही॑ गोवतिकः-गोशयातुकारी॑,  
उक्तं च-''गोवीहि समं निगमपवेसठागामणाह॑ पकरेति॑ मुंजंति॑ । जहा गावी तिरिकववासं विभावेता ॥१॥ गृहिघर्मा॑-गृहस्थ-  
घर्म एव ऐपानित्यभिसन्धाय तद्यथोक्तकारी घर्मचिन्तको॑-घर्मसंहितापरिज्ञानवान् मभासदः अविलुद्दो॑-वैनपिकः॑; उक्तं च-  
''अंगिरुदो निणयकारी दंगाहिणं पराए॑ भरीए॑ । जह वेसियापणमुओ॑ एवं अन्नेवि॑ नायवा ॥ २ ॥

१ ॥

सा० १ गोभि॑ समं प्रवेशकिर्मस्थगामादि॑ प्रकृतीति॑ । भुजन्ति॑ यथा गावस्तिर्यगासं विमावयन्तः ॥ १ ॥

२ ॥

२ अविलुद्दो विनयवारी॑ देवदोता॑ परया॑ भरया॑ । यथा॑ वैरायनमुत एवमःयेऽनि॑ शातङ्ग्यः ॥ २ ॥

१५-अभी-  
नन्दी०  
ब्राह्मणः अन्ये हुद शावक इति व्याचक्षते, स च ब्राह्मण एव, रक्तपटः-परिवाजको निर्देशः-माषु प्रस्तुतिप्रहणात् कापि-  
लादिपरिग्रह इति, ‘पतथयणं’ ति प्रथदं-शुभ्यं ‘एविक्षब्दं’ ति अद्विष्ट्ये त्रुटिरुच्छलस्य यम्बलपूरणं द्रव्यं प्रदेषपकः,

‘पडियस्स’ ति वाहनात् स्थालनादा पतने भैमंसस्य रुग्णस्य च लीर्णतां गतस्येत्यर्थः, ‘हंदि’ ति-आमन्त्रयो, ‘नाहविगिर्देहि अद्वाणेहि’ ति-नातिविग्रहेष्टु-नातिदीर्घज्ञवसु-प्रयाणकमांग्गु चसन् शुमेरउक्खलैः ‘चस्तिप्रतराक्षो!-आवामस्थयनि! प्रातमीजनकालेष्यर्थः; देसर्गं’ ति-देशान्तं। हहोपनयः स्त्रामिहित एव, विशेषतः युनरेव तं प्रतिपादयन्ति-“चंपा इवं मण्यंगती धणो व भयं च जिंगो दण्कारसो। अहित्त्वानयरिमं इह निव्वाणं मुण्यव्वं ॥ १ ॥ वोसण्या हव तिलंकरसं सिवमगदेणमहर्वं। चरंगाहणीव इत्यं सिन्व-सुहकामा जिया बहवे ॥ २ ॥ नंदिफलाह नव इहं सिवप्रहपडिवणगणण विसया उ। तत्प्रमक्षणाओ मराणं जहं तह विमपद्विसंसारो ॥ ३ ॥ तत्वज्ञेण जह इहुपरामो विमयक्षलेण तहा। परमानंदनिर्वणसिवपुरगमणं मुण्यव्वं ॥ ४ ॥ समाप्तमिदं पञ्चदशाज्ञातविवरणम् ॥ १५ ॥

३०२  
नवाही-  
भीज्ञावा-  
धर्मकथादे-  
॥ १ ॥ परलोकानस्युपगमात् मर्यादिरुपो विलङ्घः; एवं शुद्धः-तापम प्रथमपुत्रप्रतिवात् प्रायो शुद्धकाले च दीक्षा प्रतिप त्वेः श्रावको-  
ब्राह्मणः, अन्ये हुद शावक इति व्याचक्षते, स च ब्राह्मण एव, रक्तपटः-परिवाजको निर्देशः-माषु प्रस्तुतिप्रहणात् कापि-  
लादिपरिग्रह इति, ‘पतथयणं’ ति प्रथदं-शुभ्यं ‘एविक्षब्दं’ ति अद्विष्ट्ये त्रुटिरुच्छलस्य यम्बलपूरणं द्रव्यं प्रदेषपकः,  
‘पडियस्स’ ति वाहनात् स्थालनादा पतने भैमंसस्य रुग्णस्य च लीर्णतां गतस्येत्यर्थः, ‘हंदि’ ति-आमन्त्रयो, ‘नाहविगिर्देहि अद्वाणेहि’ ति-नातिविग्रहेष्टु-नातिदीर्घज्ञवसु-प्रयाणकमांग्गु चसन् शुमेरउक्खलैः ‘चस्तिप्रतराक्षो!-आवामस्थयनि! प्रातमीजनकालेष्यर्थः; देसर्गं’ ति-देशान्तं। हहोपनयः स्त्रामिहित एव, विशेषतः युनरेव तं प्रतिपादयन्ति-“चंपा इवं मण्यंगती धणो व भयं च जिंगो दण्कारसो। अहित्त्वानयरिमं इह निव्वाणं मुण्यव्वं ॥ १ ॥ वोसण्या हव तिलंकरसं सिवमगदेणमहर्वं। चरंगाहणीव इत्यं सिन्व-सुहकामा जिया बहवे ॥ २ ॥ नंदिफलाह नव इहं सिवप्रहपडिवणगणण विसया उ। तत्प्रमक्षणाओ मराणं जहं तह विमपद्विसंसारो ॥ ३ ॥ तत्वज्ञेण जह इहुपरामो विमयक्षलेण तहा। परमानंदनिर्वणसिवपुरगमणं मुण्यव्वं ॥ ४ ॥ समाप्तमिदं पञ्चदशाज्ञातविवरणम् ॥ १५ ॥

३०३  
भास्यम् यत्प्रयातिर्थं इव भावन् चितो दैयेकरसः अहित्त्वानपात्रीसमग्रिह निर्वाणं शात्रव्य ॥ १ ॥ धोषामिष लीर्घरस्य धिमाग्नेशन-  
मराणं । चरकादिवद्वप्त शिवमुखामा जीवा बहवः ॥ २ ॥ नन्दीफलानीवेह शिवप्रतिपक्षानां विषयाः । तिर्देशुकार, मराणं यथा तथेद विषयः कंसारः ॥ ३ ॥ तद्वज्ञेनेष्युरामो यथा विषयवर्णेत तथा । परमानन्दनिवन्धनशिवपुराणं शात्रव्य ॥ ४ ॥

॥ १६—श्रीअपरकट्टारहयं ज्ञातोऽथयनेम् ॥

यथ योड्युं न्याहयते, अस्य च पूर्णं सहायमधिकावन्धः—पूर्व विषयाभिव्यक्त्यानर्थकलतो का, इह हु चदिष्य-

निदानस्य गोव्यते इत्येवंसम्बद्धमिदम्—

जति णं भन्ते । स० म० पद्मरसमस्स नायज्ञस्यणरस अयम्हट् ४० सौलसमस्स णं गायज्ञस्यणरस सं  
णं सम० भग० महा० के अट्ठं पणते १, परं खलु जंबू ! तेण कालेण २ चंपा नाम नयरी होत्या, तीसे णं  
चंपा० नयरी यहिया उत्तरपुरन्धिमे दिसि भाए सुभूमि भागे उज्जोणे होत्या, तत्थ णं चंपा० नयरीए तओ  
माहणा भातरो परिवसंति, तंजहा—सोमे, सोमदरो, सोमभूती; अहु जाव रिउंबेद ४ जाव चुपरिनिटिया,  
तेसि णं माहणां तओ भारियातो होत्था, तं०—नागसिरी, भूयसिरी, जकंखसिरी; उकुमाल जाव तेसि णं  
माहणां इडाओ चिपुले माणुरसए जाव चिहरंति । तेण तेसि माहणां अकाया० कयाह॒ एगयओ  
समुखागणां जाव इमेयारहवे भिहो कहासमुल्लोवे समुपज्जित्या, एवं खलु देवाणुषिया ! अम्ह हमे चिपुले  
घणे जाव साचतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमा ओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं ओस्तुं पकामं परिभाए०  
तं सेयं खलु अम्ह देवाणु० अन्नमधरसे गिहेउ कलाकल्लि चिपुलं असणं ४ उचक्कवडावंति  
चिहरिच्चए, अन्नमधरस एपम्हं पडिउणेति, कल्लाकल्लि अन्नमधरस गिहेउ चिपुलं असणं ४ उचक्कवडावंति

१६-श्री-  
अप०  
ज्ञात्य०  
ब्राह्मण-  
मोजनादि-  
वर्णन-  
स्वरूप०

॥ २०३ ।

२ परिसुंजमाणा विहरंति, तते पां तीर्से नागसिरिए माहणीए अनदा भोयणवारए जाते यावि होत्था, तते पां सा नागसिरी विपुलं असां ४, उचक्खडेति २; पां महं सालतियं तिचालाउअं वहुसंभज्जतं नेहाव-गाहं उचक्खडावेति, पां विदुयं करयलंसि आसाएइ तं वारं कदुयं अक्खडं अमोज्जं विसच्छूयं जाणिता-पां व०-धिरथ्य पां मम नागसिरीए अहशाए अहुत्ताए दृभगासत्ताए दृभगासत्ताए दृभगासत्ताए जीए एं माए सालहए वहुसंभारसंभिष्ट नेहावगाहि उचक्खडिए सुयहुद्वयक्खण्ट, नेहक्खपए य काग, तं जति पां समं जाउयाओ जाणिस्तंति, तो पां मम लिसिसंसंति, तं जाव ताव ममं जाउयाओ ए जाणंति ताव मम सेयं पायं सालतियं तिचालाउ वहुसंभारणेहक्यं एंगते गोवेच्चाए, अंसं सालहए महुरालाउयं जाव नेहावगाहं उचक्खडेताए, एवं संपेहेति २ तं सालतियं जाव गोवेह, अंसं सालतियं महुरालाउयं उच-क्खडेह, तेसि माहणाणं पहायाणं जाव सुहामणवरगयाणं तं विपुलं असण ४, परिवेसेति; तते पां ते माहणा जिनितसुकुत्तरागया समाणा आयंता चोक्कवा परमचुहभूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था, तते पां ताओ माहणीओ पहायाओ जाव विभृसियाओ तं विपुलं असण ४, आहारेति २; जेणेव सपाईं २ गेहाई तेणेव उचा० २ सककम्मसंपउत्तातो जापातो सुत्रम्-११२ ॥ तेंकालेण २, घम्मघोसा नाम येरा जाव वहुपरिचारा, जेणेव चंपा नामं नगरी, जेणेव चुरुमि आगे उखागे, तेणेव उचा० २ अहापहिरुवं जाव विहरंति, परिसा निगाया, घम्मो कहिओ, परिसा पद्धिगया; ताए पां

नवाही-

३० ५०  
भीजाता-  
घर्मकथाङ्गे

॥ २०३ ॥

तेस्मि घमयोसाणं वेराणं अंतेचासी घमरहै नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेसे मासं मासेण खम-  
माणे विहरति, तते णं से घमरहै अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सउक्षायं करेह,  
२ बीयाए पोरसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव उरगाहेति ३ तहेव घमयोसं थेरं आपुक्कहै जाव चंपाए  
नयरीए उचनीयमजिक्कमकुलाहै जाव अडमाणे, जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहै तेणेव अणपविडे; तते णं  
सा नागसिरी माहणी घमरहै एज्जमाणं पासति २ ता, तस्स सालइयसस तितकडुयसस यहु० गोहा०  
निसिरणहुयाए हडहुडा उडेति २ जेणेव भत्तघरे तेणेव उवा० २ तं सालतियं तितकडुयं च बहुनेहं घमम-  
रहस्स अणगारसम पडिगगहंसि सञ्चमेव निसिरहै, तते णं से घमरहै अणगारे अहापज्जतमिति कडु  
णागसिरीए माहणीए गिहातो पडिनिक्कवमति २ चंपाए नगरीए मज्जंमझेण पडिनिक्कवमति ३, जेणेव  
छुव्हमिभागे उज्जाणे तेणेव उचागच्छति २ घमयोजस्स अदूरसामते अत्रपाणं पडिक्कंसेहै ३, अत्रपाणं  
करयलंसि पडिक्कंसेति; तते णं ते घमयोसा धेरा तस्स सालइतस्स नेहावगाहसस गंधेण अभिभूया  
समाणा, ततो सालइयातो नेहावगाढा ओ पां यिंदुं गहाय करयलंसि आसादेति तितां खारं कडुयं  
अखलं अभोक्तं चिस्सद्युयं जाणिता घमरहै अणगारं एवं यदासी—जति णं तुमं देचाणु० ! पयं सालइयं  
जाव नेहावगाहं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवितातो चवरोविज्ञसि, तं मा णं तुमं देचाणु० ! इमं  
सालतियं जाव आहारेसि, मा णं तुमं अकाले चेव जीविताओ चवरोविज्ञसि, तं गच्छ णं तुमं देचाणु० !

नवाही-  
२०४०  
श्रीशावा-  
चमकथाहे

॥ २०४ ॥

हमं सालतियं एनांसाणांचाएः अचिते थंडिले परिदुखेहि २, अचिते फाचुयं प्रसणिजं असण ४, 'पडिगाहेचां आहारं आहारेहि; तते णं से धम्मरहं अणगारे धम्मघोसेण धेरेण एवं तुले समाणे धम्मघोसरस घेरस अंतियाओ पडिनिकवसति २, सुभूमिभागउजाणाओ अदूरसामंते थंडिल्हं पडिलेहेति ३; ततो सालहयातो एनं विदुगं गोहेह २, थंडिलंसि निसिरति; तते णं तस्स सालतियस्स तितकडुयस्स वहुनेहावगाडस संगचेण वहुणि पिपीलिगामहससाणि पाउ ० जा जहा य णं पिफीलिको आहारेति सा तहा अकाळे चेव जीवितातो चवरोविज्ञति, तते णं तस्स धम्मरहस्स अणगारस्स इमेयास्वे अनभविथए ५-जड ताच इमसस सालतियस्स जाव एगंमि विदुगंमि पवित्रतंत्रमि अणेगातिं पिपीलिकासहस्रादं चवरोविज्ञति, तं जति णं आहं एवं सालहयं थंडिलंसि सनंवं निसिरामि, तते णं वहणं पाणाणं है वहकरणं भविससति; तं सेयं चेलु ममेयं 'सालहयं जाव गां चयमेव आहारेत्तप, मम चेव एणां सरीरेण पिण्जाउ तिकडु एवं सपेहेति २, मुहपोचियं २, पडिलेहेति ३, सासीसोविरियं कायं पम्बेति ३, तं सालहयं तितकडुयं वहुनेहावगोंड विल- मिव पझाग भूतेण अपाणेण सनंवं सरीरकोडुसि पवित्रवति; तते णं तस्स धम्मरहस्स तं 'सालहयं जाव नेहावगांड आहारियस्स समाणरस सुहुतंतरेण परिणममाणंसि सरीरांसि वैयणो पांडुहस्रां उज्जलां जाव दुरहियासो, तते णं से धम्महाळी अणगारे अथामे अचेले जावीरिए अपुरिसेकारपरकमे अधारणिज्ञमि- तिकडु आणगारभंडगं एं ते ठवेह २ थंडिलं पडिलेहेति २ धंडमसेहासो लेहारेह २ इडधासेथारमे धुँडहलति २

१६-श्री-  
अपार०  
ज्ञाताह्य०  
वर्षमहिं-  
सुनि-  
वर्णन-  
ब्रह्म०

॥ २०४ ॥

पुरतथाभिसुहे संपलियंकनिसक्ते करयलपरिगहियं एवं व०-नमोऽस्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, णमो-  
ऽस्थु णं घर्मचोसाणं येराणं सम घर्मचायरियाणं घर्मचोवएसगाणं, पुडिवपि णं मए घर्मचोसाणं घेराणं  
अंतिए सब्बे पाणातिबाए पचकवाए जाव परिनगाहे; इयाणिपि णं अहं तेस्मि चेव भगवंताणं  
अंतियं सब्बं पाणाति० पचकवामि जाव परिनगाहं पचकवामि जावजीवाए, जहा खंदओ जाव चरिमेहि०  
उससासेहि ओसिरामितिकहु आलोइयपडिकंते समाहिपते कालगए, तते णं ते घर्मचोसा येरा घर्मचकहै०  
अणगारं चिरं गयं जाणिता समणे निगंये सदावैति२ एवं व०, एवं खलु देवाणु० ! घर्मचहस अणगारसस  
मासखमणपारणांसि सालहयसस जाव गाडसस पिसिरणहयए घहिया निगते चिराति तं गच्छह णं तुवभे  
देवाणु० ! घर्मचहस अणगारसस सब्बतो समंता मगणगवेसणं करेह, तते णं ते समणा निगंया जाव  
पडिचुर्णेति२ घर्मचोसाणं येराणं अंतियाओ पडिनिकवमंति२, घर्मचहस अणगारसस सब्बतो समंता  
मगणगवेसणं करेमाणा जेणेव धंडिलु तेणेव उवागच्छति२, घर्मचहस अणगारसस परिनिकवाणवाचियं  
निचेहुं जीवविष्टपजटं पासंति२, हा हा अहो अकज्ञमितिकहु घर्मचहस अणगारसस परिनिकवाणवाचियं  
काउसगां करेति, घर्मचहस आयारभंडगं गेहंति२, जेणेव घर्मचोसा येरा तेणेव उवागच्छति२,  
गमणगमणं पडिकमंति२, एवं व०-एवं खलु अमहे तुवभे अंतियाओ पडिनिकवमामो२ सुमृमिभागसस  
उ० परिपेरंतेण घर्मचहस अणगारसस सब्बं जाव करेमाणे जेणेव धंडिले तेणेव उवाह० ? जाव हहै

नवाही-

१०४० नवाही- तदा योग्या हृष्टवसागया, तं कालगए यं भन्ते । घममरहै अणगारे, इमे से आपारभंडए, ततो यं ते घममधोसा थेरा  
१०५० पुऱ्वगए उवओं गच्छेति२, समणे निरगंधे निरगंधीओ य सदाबेति२ एवं व०-एवं वलु अज्जो ! भम  
भीझाग- अंतेवासी घममरही नाम अणगारे, पगड़भदए जाच विणीए मासंमासेण अणिकिलखेण तबोकम्मेण  
घर्मकथाहै जाच नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविठ्ठे, तए यं सा नागसिरी माहणी जाच निसिरहै, तए यं से बर्मरु  
घममरहै अणगारे, अहापञ्चतमितिकहु जाच कालं अणवकंखेमाणे विहरति, से यं घममरहै अणगारे-  
१०५१ यहूण वासाणि सामवपरियां पाउणिता आलोइपउक्कहे समाहिषते सोहम्म जाच नागरोव- सोहम्म जाच सठवट्टसिद्धे महाविमाणे देवताए उचवदेल, तत्थ यं अजहणमणुकोसेण तेतीसं सागरोव- सुव्रम्  
साहं ठिती पक्तता, तथ घममरहृतसवि देवसस तेतीसं सागरोवमाहं ठिती पणता, से यं घममरहै देवे  
ताओ देवलोगाओ जाच महाविदेह वासे सिजिकहिति ॥ सुअम-११३ ॥ तं घिरत्यु यं अज्जो ! पागसिरीए  
माहणीए अपन्नाए अपुक्ताए जाच पिंयोलियाए जाए यं तहारहवे साह घममरहै अणगारे, मासखमण-  
पारणगंसि सालहएण जाच गाहेण अकाले चेवे जीवितातो ववरोचिए, तते यं ते समणा निरांथा घमम-  
योमाण थेराण अंतिए एतमदं सोचा पिसम्म चंपाए सिचाडगतिगजाच वहुजणसस एवमातिकवंति-  
घिरत्यु यं देवा० ! नागसिरीए माहणीए जाच 'फियोलियाए जाए यं तहारहवे साह साहरहवे सालतिएण  
जीविपाओ ववरोचेइ, तए यं तेसि समणाण अंतिए एयमदं सोचा' पिसम्म बहुजणो अबमकसस एवमा-

१०५२-श्र अपर० ज्ञाताच वर्मरु बर्मरु कालग कालग नादिवण कालग ब्रह्म

१०५३-श्र अपर० ज्ञाताच वर्मरु बर्मरु कालग कालग नादिवण कालग ब्रह्म



तरंसि उच्चहिता मच्छेषु उच्चवक्ता, तत्य यं सत्यवज्ज्ञा दाहवक्तिए कालमासे कालं किचा अहेसत्तमीए पुढवीए उकोसाए तितीसंसागरोवमठितीएसु नेरइएसु उच्चवक्ता, सा यं ततोऽपांतरं उच्चहिता दोबंपि मच्छेषु उच्चवज्ज्ञति, तत्यविय यं सत्यवज्ज्ञा दाहवक्तिए दोबंपि आहे सत्तमीए पुढवीए उकोसं तेतीस-सागरोवमठितीएसु नेरइएसु उच्चवज्ज्ञति, सा यं तओहितो जाव उच्चहिता तांबंपि मच्छेषु उच्चवक्ता, तत्यविय यं सत्यवज्ज्ञा जाव कालं किचा दोबंपि छडीए पुढवीए उकोसेण० तओऽपांतरं उच्चहिता नरएसु एवं जहा गोसाले तहा नेपांवं जाव रयणाप्यभाए सदसु उच्चवक्ता, ततो उच्चहिता जाव हमां खहयरविहाणां जाव अदुत्तरं च यं खरवायरपुढविकाहयत्ताते तेषु अणेनासतसहस्रसुतो ॥सत्त्रम्-११४॥

सर्वे सुगमं, नवरं 'सालहयं'ति-शारदिकं सारेण वा-रसेन चिंत-युक्तं सारचितं, 'तित्तालात्यं'ति-कुडकतुम्बकं 'चहुसंभारसंजुतं'-पहुभिः सम्यारद्वयैः-उपरि प्रक्षेपद्वयैस्त्वगोलाप्रमृतिभिः संयुक्तं यत्तच्चथा 'स्नेहावगां'-स्नेहव्यासं 'दूमगसत्ताए'ति-दुभगः सत्त्वः-प्राणी यस्या: सा तया, 'दूमगनियोलियाए'ति-निम्बगुलिकेव-निम्बफलमिव अत्य-नादेयत्वसाधम्यर्थि दुभगाणां मध्ये निम्बगुलिका दुभगनिम्बगुलिका, अथवा-दुभगाणां मध्ये निर्बोलिता-दुर्भ-गनिर्बोलिता, 'जाउयाउ'ति-देवराणां जाया भाया इत्यर्थः; 'चिलमिवेत्यादि, विलेहव-रन्मेहव पन्नगभूतेन-सपकलपेन आत्मना करणभूतेन सर्वे तदलाहु शरीरकोष्टके प्रक्षिपति, यथा किळ विलेह सर्प आत्माने प्रशिपति पार्वीन् असंस्पृशन् एवममी चदनकन्दरपाश्चान् असंस्पृशन् आहारेण तदसञ्चारणतदलाहु जठरचिले प्रवेशितवानिति भाव 'गमणागमणाए ॥ २०६ ॥

पदिकमंति' चि-गमनागमनं-इयपिधिर्भी, 'उचावयाहि' ति-सूराऽसि लभित्यादिभि-  
र्यवेनोः, 'उद्दंसणाहि' ति-दुकुलीनेत्यादिभिः कुलाधिपानपातनार्थैः, 'निच्छुहणाहि' ति-निःसास्मद्गोहादित्यादिभिः,  
, निच्छेडणाहि' ति-त्यजास्मदीयं वक्षादीत्यादिभिः, 'तालिंति' ति-श्वास्यसि पापे ! इत्यादिभणतः, 'तालिंति' ति-  
चोपटादिभिः, दीव्यमाना-जात्यायुष्टुद्गुरेन, स्विष्यमाना-मनसा जनेन, शशमाण।-उत्समक्षमेव  
तुज्यमाना-अङ्गुलीचालनेन त्रास्यसि पापे इत्यादिभणतः प्रव्यक्ष्यमाना-यथादिताडनेन विभिक्यमाणा-विक्षुददिविपयी-  
क्रियमाण। एवं भूत्क्रियमाणा, दण्डी-कृत्स्नध्यानं जीर्णवस्त्रं उस्य खण्डं निवसनं-परिधानं यस्याः सा तथा, खण्डमलुकं-  
खण्डश्वरावं गिशामाजनं खण्डघटकश-पानीयमाजनं ते हस्तयोर्गते यस्याः सा तथा, 'फुं' ति-स्फुटिरया स्फुटिरकेश-  
सञ्चयत्वेन विकीर्णिकेऽ, 'हडाहडं' ति अत्यर्थ-‘कीर्तुं’ शिरो यस्याः सा तथा, मध्यिकाचटकरेण-मध्यिकाममुदयेन अन्वीय-  
मानमार्गा-अतुगम्यमानमार्गी मलाविलं हि वस्तु मध्यिकामिवेष्यते एवेति, 'देह यलिमित्यतस्यालयानं देहवलिका तुया,  
अतुस्वारो नैपातिकः, 'सत्यवज्ञस्ति-शशवव्या जातेति गम्यते, 'दाहव्युत्कान्तया-दाहोत्यव्या-  
'वहयरविहाणाहि जाव अदुत्तरं चे'त्यत्र गो शालकाध्ययनमानं स्मृतं तत् एव दृश्यं, वहुत्वाचु न लिखितं ॥११४॥

१६-श्री-  
अपर० ब्राह्मण० सुकुमा-  
लिका-  
वर्णन-  
ब्रह्मा-  
द्वारा-  
जन्मादि-

इमं एताहर्वं गोत्र गुणनिष्ठवं नामधेजं कर्तृति-जन्महा यां अम्हं पसा दारिया सुकुमाला गगतालुयसमाणा  
तं होउ यां अम्हं इमीसे दारिया ए नामधेजे सुकुमालिया, तते यां तीसे दारिया! अम्मापितरो नामधेजं  
कर्तृति सुमालियति, तए यां सा सुमालिया दा० पञ्चधार्मपरिनगहिया तंजहा-बीरघार्हा० जाव गिरिकंदर-  
मल्हीणा हव चंपकलया निनवाए निनवाघायंसि जाव परिवहुह, तते यां सा सुमालिया दारिया उम्मुक्खाल-  
भावा जाव रुवेण य जोडवणेण य उकिडा उकिडुसरीरा जाता यावि होत्या ॥ सूत्रम्-११५ ॥

तथ यां चंपाए नयरीए जिणदर्ते नाम मत्थवाहे० अहु०, तरस यां जिणदर्तस भावा भारिया सुमाला  
हुट्टा जाव माणुस्सए काम भोए पचणुह भवमाणा विहरति, तरस यां जिणदर्तस युते भावा० भारिया० अत्तरा०  
सगरए नामं दारए सुकुमाले जाव चुर्लवे, तते यां से जिणदर्ते सत्थवाहे० अत्रदा० कदाई० सातो गिहातो  
पडिनिकवमति॒, सागरदर्तस गिहास्स अदूरसामेतें चीतीवगह इमं च यां सुमालिया दारिया एहाया  
चेडियासंयपरियुडा उट्टिप आगासतलगंसि॑ कीलमाणी॒ विहरति, तते यां से जिणदर्ते  
सत्थवाहे० सुमालियं दारियं पासति॒, लुमालियाए दारिया० रुवे॒ य ३ जायविमहा० कोडुंवियपुरिसे सथा-  
वेति॒, पर्वं च०-पस यां देवा० ! करस दारिया ? किं चा यामधेजं से ?, तते यां ते कोडुंवियपुरिसा जिण-  
वत्तेण सत्थवाहेण पर्वं चुता समाणा हठ करयल जाव पर्वं चयासी॑-पस यां देवाणु० ! सागरदर्तस्स, सत्थ-  
वाहस्स॒प्या॑-मदाए॒-अत्तरा॑, सुमालिया॑ नाम॑ दारिया, सुकुमालपाणिपाया जाव उकिडा॑; तते यां से जिण-

। दत्ते सत्थवाहे तेस्मि कोदुयियाणं अतिए पृथमदं सौचा जेणेव सागः गिहे लेणेवं उवा० २. पहाए जावः मित्त-  
-नाइपरियुहे चंपाए जेणेव सागरदत्तस्त गिहे लेणेव उवागच्छहि, तए णं सागरदत्ते सत्थ-  
-वाहे पञ्चमाणं पासह, पञ्चमाणं पासहत्ता, आसणाओ अबुड्डे २ त्ता, आसणोणं उवणिमंतेति ३, आसत्थं  
-वीसत्थं लुहासणवरगयं एवं वयासी-भण देवाणुषिपया ! किमागमणपओयणं ?, तते णं से जिणदत्ते  
सत्थवाहे सागरदत्तं सत्थवाहे एवं वयासी-एवं खलु अहं देवा० !, तव धूपं, भद्राए अतियं, सूमालियं,  
सागरस्म भारियत्ताए वरेमि, जति णं जाणाह देवा० ! ऊतं या पत्तं वा सलाहणिङ्गं वा सरिसो वा  
संजोगो ता दिज्जउ णं सूमालिया सागरस्स, तते णं देवा० ! किं दलयामो सुंकं सूमालिया ? तए णं से  
सागरदत्ते तं जिणदत्तं एवं वयासी-एवं खलु देवा० ! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्टा जाव  
किमंग पुण पासणयाए तं नो खलु अहं इक्कछामि सूमालिया ए दारियाए वयामवि विष्पओं, तं जति णं  
देवाणुषिपया ! सागरदारए मम घरजामाउए भवति, तो णं अहं सागरस्स - दारगरस्स सूमालियं दलयामि;  
तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेण एवं युत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवाग-  
च्छहि २ सागरदारगं सदावेति २ एवं च०-एवं खलु युत्ता ! सागरदत्ते स० मम एवं वयासी-एवं खलु देवा० !  
सूमालिया दारिया इट्टा तं चेय तं जति णं सागरदारए मम घरजामाउए भवह, ता दलयामि; तते णं से  
सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं युत्ते समाणे तुसिणीए, तते णं जिणदत्ते · स० अवदा कदाइ

१६-श्री-  
अपर० ज्ञागाय० सागरदर० दारकादि० वर्णन-  
संव० तुल्यावेति० ॥२॥ तुल्यावेति० ॥३॥ तुल्यावेति० ॥४॥

सोहणसि तिहिकरणे चिउलं असण ४ उचक्खडावेति० ३, मित्तणाई आमंतेइ जाव सम्माणिता सागरं दारगं पणायं जाव सङ्घवालंकारविभूतियं करेह २ पुरिसहस्रवाहिणि सीयं दुर्लहावेति०, मित्तणाई जाव संपर्दितुडे सनिवडीए सातो गिहाओ निवज्ज्ञावेति० २ चंपानयर्दिं मज्जंमज्जेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहेते तेणेव उचागच्छति० ३, सीयाओ पचोहहति० ३, सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उचणेति; तते णं सागरदत्तते सत्थ्यवाहे चिएलं असण ४ उचक्खडावेह २ जाव सम्माणेता सागरगं दारगं तुमालियाए दारियाए सर्दिं पद्धयं दुर्लहावेह ३ सेयापीतपर्दिं कलेसेहि० मज्जावेति० ३, होमं करावेति० २, सागरं दारयं तुमालियाए दारियाए पाणि० गेणहाविति० ॥ सुन्नम् १६ ॥ तते णं सागरदारए तुमालियाए दारि० इमं एयारुवं पाणिफासं पडिं संवेदेति से जहा नाम ए असिपते० ३ वा डतो अणिट्टतराए चेव पाणिफासं पडिं संवेदेति, तते णं से सागरए अकामए अवस्थवेसे० तं तुल्यालियित्तं संचिह्नति, तते णं से सागरदत्तते सत्थ्यवाहे सागरस्स दारगरणे मित्तणाई चिउलं असण ४ पुफ्फवत्थ जाव सम्माणेता पडिविसब्बति, तते णं सागरए दारए तुमालियाए सर्दिं जेणेव वासघरे तेणेव उचा० २ तुमालियाए दारियाए सर्दिं तलिंगसि निवज्ज्ञाह, तते णं ते सागरए दार० इमं एयारुवं अंगफासं पडिसंवेदेति, से जहा नामए असिपतेइ वा जाव अमणामयरागं चेव अंगफासं पचणुऽभवमाणे चिहरति, तते णं से सागरए अंगफासं असहमाणे अवस्थवसे० तुल्यालियित्तं संचिह्नति, तते णं से

सागरद्वारए सूमालियं दारिया तुहपचुतं जाणिता सूमालिया! दारिया पासाउ उडेति२, जेणेव सए सय·  
णिक्के तेणेव उवा० २ सयणीयंसि निवज्जह, तते णं सूमालिया दारिया तओ मुहुतंतरसस पडिबुद्धा  
समाणी पर्तिवया पइमणुरता पर्ति पासे अपस्समाणी तलिमाउ उडेति२ जेणेव से सयणिक्के तेणेव  
उवागच्छति२ सागरस पासे णुवज्जह, तते णं से सागरद्वारए सूमालिया! दारिया तुच्चपि इमं एयाह्वं  
अंगफकासं पडिसंबेदेति जाव अकामए अवसन्वसे मुहुत्तमित्तं संचिड्डिति, तते णं से सागरद्वारए सूमालियं  
दारियं सुहपचुतं जाणिता सयणिज्जाओ उडेह२ वासघरसस दारं विहाडेति२ मारामुके विव काए जामेव  
दिस्ति पाड़ब्बूए तामेव दिस्ति पडिगए॥ सूत्रम्-११७॥ तते णं सूमालिया दारिया ततो मुहुतंतरसस पडिबुद्धा  
पर्तिवया जाव अपासमाणी सयणिज्जाओ उडेति२ सागरसस दा० सूबतो समंता मरणणगवेसणं करेमाणी  
२ वासघरसस दारं विहाडियं पासह२ एवं व०-गए से सागरे तिकहू ओहयमसंकपा जाव क्षियायह, तते  
णं सा भदा सत्थवाही कह्लं पाउ० वासचेडियं सहावेति२ एवं व०-गच्छह णं तुमं देवाणुर्पिए ! वहुव·  
रसस उहसोहणियं उवणेहि, तते णं सा दासचेडी अहाए पर्वं युता समाणी एयमडं तहति पडिच्छुर्पांति,  
मुहभोवणियं गेणहति२ जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छति२ सूमालियं दारियं जाव क्षियायमाणी  
पासति२ एवं व०-किनं तुमं देवाणु० ! ओहयमणसंकपा जाव क्षियाहिसि ?, तते णं सा सूमालिया दारिया  
तं वासचेडियं एवं व० एवं खलु देवा० ! सागरए दारए मम मुहपचुतं जाणिता मम पासाओ उडेति२

१६-श्री-  
अपर०  
ब्राह्मण०  
सागर-  
दारकंणे  
भीमा-  
ता-  
र्थक्षणे  
॥ २०९ ॥

वासयरदुवारं अवगुणहति जाव पडिगए, तते णं ततो अहं मुहुचंतरस्स जाव विहाडियं पासामि, गेए णं से  
सागरए तिकहू ओहयमण जावः क्षियायामि; तते णं सा दासनेडी सूमालियाए दारि० एयमहू सोचा जेणेव  
सागरदते तेणेव उवागच्छहै २ चा। सागरदतरस्स एयमहू निवेएहौ, तते मं से सागरदते दासनेडीए अंतिए  
एयमहू सोचा निसम्म आसुकते जेणेव जिणदतरस्तथवाहगिहै तेणेव उवाच० २ जिणद० एवं व०-किणण-  
देवाणुटिया ! एवं जुतं चा, पर्तं चा, कुलाणुर्लवं चा, जनं सागरदारए सुमालियं दारिय-  
अदिद्दोसं पहवं पिपजहाय हहमागओ बहूहि विजाणियाहि य कंटणियाहि य उवालभति, तए णं जिण-  
दते सागरदतरस्स एयमहू सोचा जेणेव उवाच० २ सागरयं दारयं एवं व०-दुहूणं पुता !  
तुमेकयं सागरदतरस्स गिहाओ इहं हठवमागते, तेणं तं गच्छहूणं पुता ! एवमवि गते सागरदतरस्स  
गिहै; तते णं से सागरए जिणदते एवं व०-अवि यार्ति अहं ताओ ! गिरिपडणं चा, तरुपडणं चा, महुपवायं  
चा, जलपेवेसं चा, विसभक्खणं चा; वेहणसं चा, सत्थोवाडणं चा, पठवज्जं चा, विदेसगमणं चा,  
अबमुखगानिच्छजामि नोखलू ! अहं सागरदतरस्स गिहै गच्छज्जा, तते णं से सागरदते सत्थवाहै कुइंतारिए  
सागरस) एयमहू-निसमति२, लक्षिय विलीए निवै जिणदतरस्स गिहातो पठिनिक्खमई जेणेव सए गिहै०  
तेणेव उवाच० २ चुकुमालियं दारियं सदाचेह२, अंके निवेसेह२, एवं व०-किणणं, तव पुता ! सागरणं

दारपणं मुका १, आहं णं तुमं तस्स दाहामि जस्स णं तुमं इटा जाव मणामा अविस्ससिति चुमालियं दारियं  
ताहि इटाहि चागृहि- समासासेह २ पडिविसज्जेह । नएं णं से-सागरदते सत्थ० अदाया- उर्दिप आगासत-  
लांगसि- चुहनिस्सपोः रायमणं ओलोएमाणे २ चिट्ठिति, 'तते' णं से सागरदते एं महं दमगपुरिसं पासहै  
दंडिमंडनिवसणं; खंडगमल्लगायडगहत्थगायं, मंचित्यासहसेहि२, जाव' अक्षिक्षमाणमणं. तते णं से सागरदते  
कोहुं चियपुरिसे साहावेति२ एवं व०-तुन्में णा देवा० ! एयं दमगपुरिसं "विउलेणं" असण ४ पलोमेहि२, गिहं०  
अणुपवेसेह ३, खंडगमल्लगां खंडघडगां ते एंगते एडेह २, अलंकारियकमं कोरेह २; एहायं कथबलि० जाव  
सन्धालंकारविघृसियं करेह २-मणुणं असण ४; भोयाचेह २, ममा-अंतियं उवणेह; तएंणं कोहुं चियपुरिसा  
जाव, पडिचुणेति२ जेणेव-से-, दमगपुरिसे-तेणेव उवा० २. त्ता तं दमणं असणं उवपलो-मेति२ त्ता सयं  
गिहं अणुपवेत्सिति२, तं खंडगमल्लगं खंडगघडगां च तस्स दमगपुरिसस्स एंगते एडंति, तते णं से दमगे तं  
खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एंगते पडिक्षमाणंसि महया २ सदेणं आरसति, ता० णं से सागरदते तस्स  
दमगपुरिसस्स तं महया २ आरसियसदं सोचा निसमम् कोहुं चियपुरिसे एवं व०-किणां देवाणु० ! एस  
दमगपुरिसे महया २ सदेणं आरसति॒, तते णं ते कोहुं चियपुरिसा एवं व०-एस णं सामी ! तंसि खंडमल्ल-  
गंसि खंडघडगांसे एंगते पडिक्षमाणंसि महया २ सदेणं आरसह॑, तते णं से सागरद॒ से सत्थ० ते कोहुं-  
चियपुरिसे एवं व०-मा णं तुन्में देवा० ! एपस्स दमगस्स-तं खंड जाव एडेह पासे-ठवेह जहा णं पतियं

१६—अर्मी-  
अपर० अपर०  
झागा॒ झागा॒  
द्रमकेन द्रमकेन

भंवति, तेवि तहैव ठर्मिति; तए णं ते कोडुं चियपुरिसा तरस स दमगरस स अलंकारियकम्मां करेति २ सयपा॑-  
गसहसपागोहि॑ तिल्लेहि॑ अबंगेति अबंगेति अबंगेति उठवाहिति॑ २ उत्सिणो॑-  
दगांधोदणां सीतोदणों पहाणेति॑, पम्हलसुकुमालगांधकासाहि॑ गाया॒ लहंति॑ २ हंसलक्खणां पहुसाडुगं  
परिहंति॑ २, सङ्घालंकारविभूसियं करेति॑ २, विठ्ठलं अमण ४ ओयावेति॑ २ सागरदत्तस उचणेन्ति, तए  
णं सागरदत्ते सुमालियं दारियं पहायं जाव सङ्घालंकारमूसियं करिता तं दमगपुरिसं एवं १०—११ स णं  
देवा० मम धूपा इडा एयं णं अहं तव भारियत्ताए॑ दलामि भदियाए॑ भदतो भविज्ञासि, तते णं से दम-  
गपुरिसे सागरदत्तस एयमडुं पडिचुणेति॑ २ सुमालियाए॑ सर्दिं चासथरं अणुपविसति तुमा॑-  
लियाए॑ वा॑ सर्दिं तलिगंसि निवज्जहि॑, तते णं से दमगपुरिसे सुमालियाए॑ इमं एयाहवं अंगफासं पडि-  
संवेदेति, सेसं जहा॑ सागरस जाव सपणिज्ञाओ॑ अन्मुहेति॑ २ वासघराओ॑ निजगच्छति॑, खंडमल्हणों  
संवेदेति॑ य गहाय मारामुके॑ विव काए॑ जामेव दिसं पाउऱभूए॑ तामेव दिसं पडिगए॑, तते णं सा॑ समा-  
लिया जाव गए॑ णं से दमगपुरिसे तिकह॑ ओहयमण जाव छियायति॑ ॥सुअम्—१८॥ तते णं सा॑ भवा॑ कल्ह-  
पाउ० दासचेडि॑ सचावेति॑ २ एवं वयासी॑ जाव सागरदत्तस एयमडुं निवेदेति॑, तते णं से सागरदत्ते॑ तहैव  
संभंते॑ समाणे॑ जेणेव चासहरे॑ तेणेव उचा० २सुमालियं दारियं अंके॑ निवेसेति॑ २ एवं व-अहो॑ णं तुमं पुत्ता॑!

पुराणोराणेन जाव पचणुहभवमाणी विहरसि तं मा णं तुमं पुता ! ओहयमण जाव क्षियाहि तुमं णं पुता,  
मम महाणसंसि विपुलं असणं ४ जहा पुटिला जाव परिभाएमाणी विहराहि; तते णं सा सूमालिया  
दारिया एयमडं पडिसुणेति २ महाणसंसि विपुलं असण जाव दलमाणी विहरइ ! तेण कालेणं २ गोवा-  
लियाओ अज्ञाओ यहुस्तुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुनवयाओ तहेव समोसहुओ तहेव संघाडओ  
जाव अणुपविडं तहेव जाव सूमालिया पहिलाभित्ता एवं वदासी-एवं खलु अज्ञाओ ! अहं सागरसस  
अणिठा जाव अमणामा नेचछइ णं सागरए मम नामं चा जाव परिभोगं चा, जसस २ विय णं दिज्जामि  
तस्स २ विय णं अणिठा जाव अमणामा भवामि, तुन्मे य णं अज्ञाओ ! यहुनायाओ एवं जहा पुटिला  
जाव उचलदें जे णं अहं सागरसस दार० इटा कंता जाव भवेज्जामि, अज्ञाओ तहेव साविया  
जाया तहेव चिंता तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपुक्कल्लियाणं अंतिए पठवइया तते, णं सा  
सूमालिया अज्ञा जाया ईरियासमिया जावे वंभयारिणी वहर्हिं चउतथल्लियम् जाव विहरति, तते णं सा  
सूमालिया अज्ञा अवया कयाह जेणेव गोवालियाओ अज्ञाओ तेणेव उच्चा० २ बंदति नमं लाति २ एवं  
व०-इच्छामि णं अज्ञाओ ! तुम्हेहि अहमणुक्त्राया समाणी चंपाओ वाहि सुमूमिभागसस उजाणसस  
अदूर सामंते छहं छटेण अणिचित्ततेणं तचोकम्मेणं सुरामिशुही आयावेमाणी विहरितए, तते णं ताओ

अपरकहु-  
गुत्तं भवारिणीओ नो खबलु अमहे कपपति याहिया गामसस जाव सणिणवेसस वा छडु २ जाव विहरि-  
तप, कपपति नं अमहे अंतो उवरसयस्स वतिपरिकिखतसस संचाडियद्वियाए नं समतलपतियाए आया-  
वितए, तते नं सा सुमालिया गोवालिया एयमहं नो सदहति, नो पतियह, नो रोपति, एयमहं अ० ३

गोवालियाओ अजाओ सुमालियं पवं व०-अमहे नं अज्जे ! समणीओ निगंथीओ ईरियासमियाओ जाव  
गुत्तं भवारिणीओ नो खबलु अमहे कपपति याहिया गामसस जाव सणिणवेसस वा छडु २ जाव विहरि-  
तप, कपपति नं अमहे अंतो उवरसयस्स वतिपरिकिखतसस संचाडियद्वियाए नं समतलपतियाए आया-  
वितए, तते नं सा सुमालिया गोवालिया एयमहं नो सदहति, नो पतियह, नो रोपति, एयमहं अ० ३

सुभूमि भागसस उजाणसस अदूर सामंते छडु छहेण जाव विहरति ॥ सुत्रम्-१९ ॥

उकुमालकोमलिकां-अतपर्युकुमाराँ, गजतालुसमानाँ, गजतालुरुं शत्यर्थुकुमालं मरतीति, ‘ ऊतं चा ’ इत्यादि-  
युक्त-महरे, ‘ पत्ते ’ ति प्रामं प्राप्तकालं पातं वा गुणनामेष पुत्रः, शायनीयं वा महशो वा संयोगो विचाहयोरिति,  
‘ से जहा नामए असिपत्तेह चा ’ इत्यप्त यानहकारणादिंद्र द्रष्टव्य । ‘ करपत्तेह चा, खुरपत्तेह चा, कलंघचीरिगपत्तेह चा,  
सतिअमोति चा, कोतमोति चा, तोमरमोति चा, भिडिमालगोह चा, सूचिकलाचारदति चा, निच्छुपहंकेह चा, इगा-  
लेदति चा, गुम्फुरेति चा, अचीह चा, जालेह चा, अलाएति चा, सुदायणीह चा; मधेतारुवे ?, नो इणहे ममहे, एतो अणिहु-  
वराए चेन, अकंतवराए चेन, अधिपतराए चेन, अमणामराए चेन, अमणामराए चेन ’ति; तासिपत्रं-खहः; करपत्रं-ककचं,  
झापं-झुरः, कहमपरीरिकादीनि लोकहल्लाऽवत्सेयाति, ईश्विकहुः-‘ ईश्विकहुः ’-प्रतिकृष्णकारी वनस्पतिविशेषः;  
अहारो-प्रिजालोऽनिनकणः, सुमुरुः-प्रतिनकणमिश्रं भस्म, अर्द्धः-इन्धनप्रतिवद्वा उचाला उचाला तु-इन्धनचिठ्ठा अलातं-  
उल्घुकं, शुदापि:-अयस्मिपऽदानतरतोऽप्रिति ‘ अकामए ’ति अकामको-निरमिलापः, ‘ अवस्तववद्वः ’सि अपस्ववद्वः; ॥ २११ ॥

अपगतामत्त्रत्वं इत्यर्थः; ‘तलियसि निवज्जह’ च तद्ये-शयनीये निपथते-शेते ‘ पहवय 'ति पर्ति-मत्तरि वरु-  
यति-तमेवाभिगच्छामीत्येवं नियमं करोतीति पतिवता, पतिमत्तुरका-मत्तरि प्रति गागतीति, ‘ मारा मुकेविव काए’ चि-  
मार्यन्ते प्राणिनो यस्यां शालायां सा मारा-शूना तस्या मुको-यः स मारामुको मारादा-मरणान्मारकपुरुषादा मुको-  
विच्छुटिरः काको-चापसः, ‘ चहुवरस्स 'ति वधूश्च वरथ्य वधूवरं रुस्य, ‘ कुलाणुरुचं 'ति कुलोचितं बणिजां वाणिडय-  
पिष 'कुलसरिसं 'ति श्रीमद्भिजां इत्नवाणिडयमिष ‘ अदिडदोसवडियं 'ति न होइ-उपलभ्यस्वरूपे दोपे-दृपणे  
पतिता-समापत्ता अहएदोपतिता तां, ‘ खिज्जपियाहि 'ति खेदकियामिः रुणनकादिभिः-रुदिग्रकियामिः, ‘ मरुप-  
चायं च 'ति निर्जलदेशप्राप्तं ‘ सत्योचाडणं 'ति शुखेणाचपाटनं-विदारणमात्मन इत्यर्थः, ‘ गिरुपटं 'ति गृथस्पुं-  
ग्रैः; रप्तयं कडेवरणां मध्ये निपत्य गृह्वैरात्मनो भक्षणमित्यर्थः, ‘ अचसुदेज्जामि 'ति अम्यैपमि, ‘ पुरा पोराणाण  
मित्यत्र याचकरणादेवं दृष्टव्यं ‘ दुचिष्णाणं दुपरकंताणं कडाणं पाचाणं कम्माणं पाचाणं फलविचिचिविसेसं 'ति अयमर्थः-  
‘पुरा पोराण’ मित्यत्र याचकरणादेवं द्रष्टव्यं ‘दुचिष्णाणं पाचाणं कडाणं पाचाणं फलविचिचिविसेसं'ति  
अयमर्थः-पुरा-पूर्वमयेषु, पुरणानां-अतीतकाल भाविनां तथा दुशीण-दुश्विरं सूषाचादनपारदायीदि तदेतुकानि कमर्णियपि  
दुशीणिनि न्यपदिरपत्ते अतस्तेषामेव दुपराकान्तानां नवरं दुपराकान्तं-प्राणिधाताद् तापहारादि कृतानां प्रकृत्यादि मेदेन,  
पुरायन्दस्येह सम्बन्धः, पापानां-अपुण्यहृषणां, ‘ कर्मणां ’ ब्रानाचरणादीनां, पापकं-अशुमं ‘ कल्वृत्तिविशेषं ’ उदय-  
वर्तनमेन, ‘ प्रत्यनुभवन्ती ’-वेदयन्ती, ‘ विहरसि ’-वर्त्तसे, ‘ कर्पदं पं अम्हं ’ इत्यादि ‘ अम्हं 'ति अस्माकं मते

अपरकहा-  
जाताइयो  
देवदता-  
गणिकादि-

नवासी-  
५० श्रीज्ञाता-  
चर्मकायां

प्रवर्जिताया इति गमयते, अन्तः:-मध्ये 'उपाश्रयस्य' वमते ईश्चिपरिश्चिह्नस्य परेषामनालोकवत् इत्यर्थः; 'संघाटी' निर्यन्ति-  
कामच्छुदविशेषः सा चदा-निवेशिता काये इति गमयते यया सा संघाटीबद्धिका तस्याः; णमित्यलङ्कारे समर्तले द्वयोरपि  
भुवि विन्यस्त्वत्वात् पैदे-पादौ यस्याः सा समर्तलपदिका तस्या : 'आतापयितुं' आतापत्तां कर्तुं कलपते इति योगः ॥११९॥  
तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोट्टी परिवस्तति, नरवइदिणाचिप्रयारा अम्मापिहनियनिषिपवासा  
वेसमिवहारकयनिकेया नाणाचिह्नअविणायपहाणा अह्ना जाव अपरिभृया, तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नामं  
गणिया होत्था, चुकुमाला जहा अंडपाए; तते णं तीसे ललियाए गोट्टीए अन्नया पंच गोट्टिलगपुरिसा देव-  
दत्ताए गणियाए सर्विभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणस्सिरि पच्छुण्डभवमाणा विहरंति, तत्थ णं एगे  
गोट्टिलगपुरिसे देवदत्त गणियं उच्छंगे धरति, एगे पिठओ आयवत्तं घरेह, एगे पुष्फपुरयं राएह, एगे पाए  
रपह, एगे चामकरखेवं करोह; तते णं सा दुमालिया अज्ञा देवदत्तं गणियं तेहि पंचाहि गोट्टिलगपुरिसेहि सद्वि-  
उत्तरालाहं माणुससगाहं भोग भोगाहं सुंजमाणीं पासति २ इमेयास्त्वे संक्षेपे समुप्पज्जित्या-अहो णं इमा  
इतिथ्या युरा पोराणाणं कर्ममाणं जाव विहरह, तं जति णं केह इमस्स उच्चरियस्स तवनियमवं भवेरवास-  
स्स कल्पाणे फलविन्ति विसेसे अतिथ तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवत्तगहणेणं इमेयारुवाहं उरालालाहं जाव  
विहरिज्ञामि तिकडु नियाणं करेति २ आयावणाच्चुमिओ पचोरुहति ॥ सूत्रम्-१२० ॥ तते णं सा समालिया  
अज्ञा सरीरवयउसा जाया यावि होत्था, अभिकर्त्वाणं २ हत्थे घोवेह, पाए घोवेह, सीसं घोवेह, मुहं घोवेह, थणं-  
॥ २१२ ॥

तराइं घोबेह, कक्खंतराइं घोबेह, गोडुक्कंतराइं घोबेह; जत्थं पाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएति तत्थवि-  
यं पाणं पुङ्क्वामेय उदएणं अन्धुक्कवहत्ता ततो पच्छा ठाणं वा ३ चेएति, तते पां तातो गोबालियाओ अज्जाओ  
सूमालियं अज्जं एवं य०-एवं खलु देवा० ! अज्जे अम्हे समणीओ निगंथीओ ईरियासमियाओ जाव यंभ-  
वेरधारिणीओ, नो खलु कप्पति अम्हं सरीरवाडुसियाए होत्तए, तुमं च पां अज्जे ! सरीरवाडुसिया अभि-  
वालणं २ हत्ये घोबसि जाव चेदेसि, तं तुमं पां देवाणुपिप्प० ! तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि,  
तते पां सूमालिया गोबालियाणं अज्जाणं एयमठं नो आढाहि नो परिजाणमाणी अपरिजाणमाणी  
विहरति, तए पां ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खवणं २ अभिहीलंति जाव परिभवंति, अभि-  
यखणं २ एयमठं निवारति, तते पां तीए सूमालियाए समणीहि निगंथीहि हीलिङ्गमाणीए जाव चारिज्ज-  
माणीए इमेयारुबे अहभविथए जाव ससुप्पज्जित्या, जया पां अहं आगारवासमज्जे चसामि तया पां अहं  
अपवसा, जया पां अहं मुंडे भवित्वा पठवइया तया पां अहं परवसा, बुँड्व च पां ममं समणीओ आदा०  
यंति २ इयाणि नो आंदंति २ तं सेयं खलु सम कल्हं पाड० गोबालियाणं अंतियाओ पडिनिक्कवमित्ता  
पाडिएकं उवस्सं उवसंपज्जित्ताणं चिहरित्तए तिक्कहु, एवं संपेहेति २ कल्हं पा० गोबालियाणं अंति-  
याओ पडिनिक्कवमति २ सा पाडिएकं उवस्सं उवसंपज्जित्ता पां चिहरति, तते पां सा सुमालिया अज्जा  
अणोहट्टिया अनिचारिया सच्छंदमई अभिक्खवणं २, हत्ये घोबेह जाव चेएति; तत्थविय पां पास्तथा पास-

त्यविहारीं औसणा ओसणविहारीं, कुसीला २ संसदा २ बहुणि चासाणि सामणपरियां पाउणाति  
अद्भुमासियाए संलेहणाए तस्स ठाणस्स अणालोहय अपविकंता कालमासे काळं किचा ईसाणे कट्ये अण-  
यरंसि विमाणंसि देवगणियनाए उच्चणा, तत्थेगतियाणं देवीणं नव पलिओचमाह ठिती पणता, तत्य  
नं सुमालियाए देवीए नव पलिओचमाह ठिती पञ्चता ॥ सुत्रम्-१२१ ॥

‘लिय’ति कीडाप्रधाना, ‘गोहि’ति जनममुदायविशेषः, ‘नरवहिदिलपयार’ति-नृपानुज्ञातकामचारा ‘अम्मा-  
पिइनियगनिनिपचास’ति माशादिनिरेष्या ‘वेसविहारकथनिकेय’ति वेदयाविहारेषु-वेदयामन्दिरेषु ठुतो निकेतो-  
निचामो यया मा तथा, ‘नाणाविहअविणपट्पहाणा’ कण्ठयं ‘पुष्कपूर्वयं रपह’ति पुष्पयेत्वरं करोति, ‘पाए रपह’  
पादावलक्षादिना रुक्षयति, पाठान्तरे-‘रायेड’ति वृत्तजलाम्पयामार्दियति, ‘सरीरयाउसियं’ति षड्गुः-शुश्वलचरितः स च  
गरीरत उपकरणतश्वेत्युकं शरीरयक्षु-उद्दिष्टपात्रुवर्तिनीति, ‘ठाणं’ति कायोत्मणीस्थानं निपदनस्थानं वा ‘शारद्यां’-त्वचवर्तेन,  
वैपेधिकीं-स्वाच्छायायभूमि चेतयति-करोति, ‘आलोपहि जावे’त्वत् यावत्करणात् निन्दाहि पदिकमाहि विउ-  
हाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्धुडेहि अहारिह त्वोकर्म पापचिलं पदिवजाहि/ति हृदयमिति, तवालोचनं-गुरोर्निवेदनं  
निन्दनं-पञ्चाचापो गर्हणं-गुरुसमसं निन्दनमेव ग्रतिकमणं-मिथ्यादरक्ततदानलक्षुणं अकल्याचित्वर्तेन वा विनोटनं-अनुवन्ध-  
छुदेन विशेषं-व्रतानां गुरुनैशीकरणं यों कण्ठमिति, ‘पडिएकं’ति-पृथक्, ‘अणोहहिय’ति-अविद्यमानोऽपघडको-

प्रवर्चनाया। दस्तगाहादिना निवर्चको यस्या सा तथा, तथा नास्ति निवारको—मैत्रं कार्पीरित्येवं निषेधको  
प्रस्थाः सा तथा ॥ १२०—१२१ ॥

तेण काउण्ठं २ इहेव जंबुदीवे भारहे वासे पंचालेषु जणवएषु कंपिल्लपुरे नामं नगरे होत्या, बत्तओ,  
तस्य णं दुयए नामं राया होत्या, बत्तओ; तस्स पं चुलणी देवी घटजुणे कुमारे जुवराया, तए णं सा  
सुमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउव्वत्वएणं जाव चइसा इहेव जंबुदीवे २ भारहे वासे पंचालेषु  
जणवएषु कंपिल्लपुरे नपरे दुपयस्स रणणो चुलणीए देवीए कुन्डिल्लसि दारियत्ताए पचायाया, तते णं सा  
चुलणी देवी नवणहं मासाणं जाव दारियं पयाया, तते णं तीसे दारियाए निव्यत्तयारसाहियाए हमं पया-  
रहं ० नामं ० जमहा णं एम दारिया दुवयस्स रणणो थूया चुलणीए देवीए अचिया तं होउ णं अमहं हमीसे  
दारियाए नामधिक्के दोवहं, तए णं तीसे अकमापियरो हमं पयारहं गुणनिक्फक्के नामधेजं करिति  
दोयती, तते णं मा दोवहं दारिया पंचाहपरिगहिया जाव गिरिकंदरमल्लीण हव चंपगलया निवायति  
द्वयाघायंसि सुहंसुहेणं परिवहुहं । तते णं सा दोवहं रायवरकक्का जाव उफिळसरीरा  
जाया यायि होत्या, तते णं तं दोयति रायवरकलं अणयाया कयाहं अंतेउरियाओ एहायं जाव विमूसियं  
करेति २ दुपयस्स रणणो पायवंदिउं पेसंति, तते णं सा दोवती राय ० जेणेव दुवए राया तेणेव उवाग-  
च्छहं २ दुवयस्स रणणो पायगङ्गहणं करेनि, तए णं से दुवए राया दोवर्ति दारियं अंके निवेसेहं २ दोवहं०

रायवरकलाए रुदेण य जोबवणेण य लावणेण य जायविमहे दोवहं रायवरकलाए एवं च०—जस्स पां अहं  
पुता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलहस्सामि, तथं पां तुमं सुहिया वा दुविखया  
गा भविज्जासि, तते पां ममं जावजीवाए हिययडाहे भविस्सह, तं पां अहं तव पुता ! अज्जयाए संयंवरं  
विरयामि, अज्जयाए पां तुमं दिणां संयंवरा जेणां तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि से पां तव  
अत्तोर भविस्सह तिकहु ताहिं इहुहिं जाव आसासेह २ पडिविसल्लेह ॥ सुत्रम्-१३२ ॥ तते पां से दुवाए  
राया दृयं सदावेति २ एवं च०—गच्छह पां तुमं देवा० ! यारचहं नगर्त तथं पां तुमं कणहं वसुदेवं समुद-  
विजयपामोक्षे दस दसोरे, वलदेवपामुक्षे पंच महावीरे, उगसेणपामोक्षे सोलस रायसहस्रे, पञ्जुणण-  
पामुक्षवाओ अद्गद्वाओ कुमारकोठीओ, संयपामोक्षवाओ सट्ठि दुँहतसाहस्रीओ, कीरसेणपामुक्षवाओ  
इक्कीसं वीरपुरिससाहस्रीओ, महसेणपामोक्षवाओ छपक्षं यलयगसाहस्रीओ, अन्ने य घहेवे राईसरतल-  
वरमाडंधियकोइविपहभसिट्टिसेणावहस्तथाहपमिहओ करपलपरिगाहियं दसनहं सिरसावत्तं अंजलिन-  
मत्यए कहु जएण विजएण वद्वावेहि ३ एवं वयाहि-एवं खलु देवाणुरिपया ! कंपिछपुरे नयेरे दुवपरस-  
रणो धूयाए चुल्णीए देवीए अत्तयाए बहुज्जुणकुमारस भगिणीए दोवहए रायवरकणाए संयंवरे भवि-  
स्सह, तं पां तुम्भे देवा० ! दुवयं रायं अणुगिणहेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिछपुरे नयेरे समोसरह; तप-  
पां से दृप करयल जाव कहु दुवपरस रणो एषमहं पडिचुर्णेति २ जेपेव सप गिहे तेगेव सप गिहे तेगेव सप गिहे २

कोइंवियपुरिसे साथावेह २ एवं १०-सिष्यामेव भो देवाणुषिप्या ! चाउग्यंत आसरहं उत्तामेवं उवठयेह  
जाव उवठयेति, तए णं से दूए पहाते जाव अलंकार० सरीरे चाउग्यंत आसरहं दुरुहह ३, वहहि पुरिसेहि  
सदद्व जाव गहियाऽस्तुहपहरणेहि सद्वि संपरितुडे कंपिल्लुरं नगरं मजङ्गमजङ्गेण निगच्छति, पंचाल-  
जणवयस्स मजङ्गमजङ्गेण जेणेव देसपंते तेणेव उवागच्छह ५, उरुडाजणवयस्स मजङ्गमजङ्गेण जेणेव चार-  
चती नगरी तेणेव उवागच्छह ३, यारवहं नगरि मजङ्गमजङ्गेण अणुपविसह ५, जेणेव कणहस्स वासुदेवसस-  
वाहिरिया उरुडाणसाला तेणेव उवागच्छह ३ चा, चाउग्यंत आसरहं ठयेह ३, रहाओ पचोकहति ३, मणस-  
वाहुरापरिविलते पायचारविहारचारेण जेणेव कणहे वासुदेवे तेणेव उवा० ३, कणहं वासुदेवं समुद्दविजय-  
पासुकवे य दस दसरे जाव वलवगसाहस्रीओ करयल तं चेव जाव समोसरह । तते णं से कणहे वासु-  
देव तस्स दृप्यस्स अंतिए एपमहं सोचा निसमम हट जाव हियए तं दृयं सकारेह सम्माणेह ३ पडिविस-  
जेह । तए णं से कणहे वासुदेवे कोइंवियपुरिसं सदावेह ४०-गच्छह णं तुमं देवाणुषिप्या ! सभाए  
सुहम्माए सामुदाइयं भेरि तालेहि, तए णं से कोइंवियपुरिसे करयल जाव कणहस्स वासुदेवस्स एपमहं  
पडिउणेति २, जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाहया भेरि तेणेव उवागच्छह ३, सामुदाइयं भेरि महया ३,  
सोणेण तालेहि; तए णं ताए सामुदाहयाए भेरि तालियाए समाणीए समुद्विजयपामोकखा दस दसरा  
जाव महसेणपामुकखाओ छपणं यलवगसाहस्रीओ णहाया जाव विभूसिया जहा विभवहिसकार०

अपरकहु-  
ज्ञाताइयो  
कण्हे वासुदेवं जाएं चिजएं वद्वावेति, तए णं से कण्हे वासुदेवं कोङ्कियपुरिसे सहावेति २ एवं च०-

स्थितपामेव भो ! देवाणुपिया ! अभिसेकं हतिथरयणं पठिकप्पेह हयग्रय जाव अच्छिपिणांति, तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मञ्जुषणघेरे तेणेव उवाग० २ समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरिकुडसलिअं-  
गगवइ नरवई तुरहटे, तते णं से कण्हे वासुदेवे समुहविजयपामुक्खेहि दसाहि दसारेहि जाव अण्णासेणा-  
पामुक्खेहि, अण्णाराहि गणियासाहसीहि सद्दि संपुरियुहे सविवहीए जाव रवेण शारवहनयरि मञ्जु-  
मञ्जुषेण निगगच्छह २ सुराडाजणवपस्स मञ्जुमञ्जुषेण जेणेव देसपंते तेणेव उवागच्छह २, पंचालजण-  
वपस्स मञ्जुमञ्जुषेण जेणेव कंपिष्ठपुरे नयरे तेणेव पहरितथगमणाए । तए णं से दुवए राया दोबं दूयं  
सासावेह २ एवं च०-गच्छ णं तुमं देवाणुपिया ! हतिथणाउरं नगरं तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्रायं जुहि-  
द्विलं, भीमसेण, अज्ञुणं, नउलं, सहदेवं, दुज्जोहणं आहसयसमणं गंगेय विठुरं दोणं जयहहं सउणीं कीवं  
आसतथामं करयल जाव कहु तहेव समोसरह, तए णं से दुए एवं च०-जहा वासुदेव नवरं भेरी नहिथ  
जाव जेणेव कंपिष्ठपुरे नयरे तेणेव पहारेतय गमणाए २ । पणेव कमेणं तबं दूयं चंपानयरि तत्थ णं तुमं  
कण्हे अंगरायं सेलं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह । चउत्थं दूयं सुन्तिमइं नयरि तत्थ णं तुमं  
सिसुपालं दमयोससुयं पंचभाहसयसंपरियुहं करयल तहेव जाव समोसरह । पंचमगं दूयं हलधीसीसनयरं

तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल तहेव जाव समोसरह । छहं दूयं महुरं नयरि तत्थ णं तुमं धरं रायं  
करयल जाव समोसरह । सत्तमं दूयं रायगिहं नगरं तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासिंधुचुयं करयल जाव  
समोसरह । अहुमं दूयं कोडिपणं नयरं तत्थ णं तुमं रुदिप मेसगचुयं करयल तहेव जाव समोसरह ।  
नवमं दूयं खिराडनयरं तत्थ णं तुमं कियगं याउसयसमगं करयल जाव समोसरह । दसमं दूयं अवसे-  
सेहु य गामागरनगोरेमु अणेगाहं रायसहस्राहं जाव समोसरह । तए णं से दूए तहेव निगचछहं जेणेव  
हठ० तं दूयं सकारेति ३, समाणेति २, पडिविसज्जिति; तए णं ते चाचुदेवपासुक्तवा चहेवे रायसहस्रसा  
पत्तेयं २ एहाया सन्नाढहंतिष्ठवरगया हयगायरह० महया भडचडगरह पहकर० सदहि० २ नगरोहितो  
अभिनिगचछंति २ जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहोरेत्थ गमणाए ॥ त्वत्तम्-१२३ ॥ तए णं से दुवए राया  
कोहुवियपुरिसे सदाचेह० २ एवं च०-गच्छहं णं तुमं देवाणु० ! कंपिछुरं नयरे चहिया गंगाए महानदीए  
अदूरसामंते पृणं महं संयवरमंडवं करेह अणेगतं भसयसलिंविहं लीलटियसालंभंजिआं जाव पञ्चिपाणंति,  
तए णं से दुवए राया कोहुवियपुरिसे सदाचेह० २ एवं चयासी-खिटपामेव ओ देवाणुदिपया । चाचुदेव-  
पासुक्तवाणं घृणं रायसहस्राणं आवासे करेह, तेवि करेता पञ्चिपाणंति; तए णं दुवए चाचुदेवपासु  
क्तवाणं घृणं रायसहस्राणं आगमं जाणेता पत्तेयं २ हतिथं धजावपरिहुते आरायं च पञ्चं च गहाय

अपरकद्वा-  
शागाद्य०  
वासुदेवा-  
वाससं-  
धावारादि-  
वर्णनम् ।

सत्तिविद्विग्न कंपिलभुरा औ निगालच्छह २ जेणेव ते वासुदेवपांसुकखा चहेवे रायसहस्रा तेणेव उचागच्छह २,  
ताडं वासुदेवपांसुकखा हं अरेणा य पज्जेणा य सकारेति सम्माणोऽ २ तेस्मि वासुदेवपांसुकखाणं पतेयं २,  
आवासे विहरति, तए णं ते वासुदेवपांसुकखा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उचा० २ हित्यवंधाहितो  
पशोकहंति २ पतेयं खंधावारनिवेसं करेति २ सए २ आवासे अणुपविसंति २, सएलु ३, सएलु ३, आवासे सु  
आसणेदु य सयणेदु य सक्षिसत्ता य संस्तुपद्मा य वहाहिं गंधवेहि य नाडपहि य उवगिज्जमाणा य उवणचिज्ज-  
माणा य विहरति, तते णं से दुवए राया कंपिलपुरं नगरं अणुपविस्ति २ विउलं असण ४ उवक्खडावेह  
२ कोंडिवियपुरिसे सद्योवेह २ एवं च०-गच्छह णं तुल्मे देवाणुपिपया ! विउलं असण ४ सुरं च मज्जं च मंसं  
य सीरुं च पसणं च सुष्टुपुण्फवत्यगंथमल्लालेकारं च वासुदेवपामोकखाणं रायसहस्राणं आवासे सु  
साहरह, तेवि साहरंति, तते णं ते वासुदेवपांसुकखा तं विपुलं असण ४ जाव पस्तं च आसाएमाणा ४  
विहरंति, लिमियमुत्तुतरागयाविय णं समाणा आयंता जाय सुहासणवरगया वहहिं गंधनबेहि जाव  
विहरंति, तते णं से दुवए राया फुलवरण्हकालसमयंसि कोंडुयियपुरिसे सद्यावेह २ ल्ता, एवं च०-गच्छह  
णं तुमे देवाणुपिपया ! कंपिलपुरं संघडग जाव पहे वासुदेवपांसुकखाणं य रायसहस्राणं आवासे सु  
हित्यवंधवरगया महया २, सधेणं जाव उग्योसेमाणा २, एवं वदह-एवं खलु देवाणु० कल्पं पाउ० दुवयसस  
रणो धूयाए चुलणीए देवीए अतयाए घड्कजुणस्स भरिणीए दोबईए रायवरकण्णाए सयंवरे भवितसह, भवितसह,

तं तुन्मे णं देवा० ! दुवयं रायाणं अणुगिणहेमाणा पहाया 'जाव विभूसिया हतिथालंधवरगाया सकोरंट०  
 सेपवरचामर० हयगयरह० महया भडवरगरेणं जाव परिकिखत्ता जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवा० २  
 पतेयं नामकेतु आसणेतु निसीयह० २ दोबहं रायकण्णं पडिवालेमाणा २ चिडहौ, योसणं घोसेह० २ मम  
 एयमाणतियं पचाटिपणहौ, तए णं ते कोडुविया तहेव जाव पचाटिपणंति, तए णं से दुवए राया कोडुवियं  
 युरिसे सदा० २ एवं ब०-गच्छह णं तुन्मे देवाणु० ! सयंवरमंडपं आसियसंमज्जिओवलितं सुगंधवरगंधियं  
 पञ्चवणपुण्ड्रुनोवयारकलियं कालागरुपवरकुंडुरुकुलकुलाव गंधवहिम्मयं मंचाहमंचकलियं कोरेह० २  
 वासुदेवपासुकवाणं वहुणं रायसहस्रसाणं पतेयं २ नामंकाहं आसणाहं अत्युपपचत्तुयाहं रएह० २ पयमाण-  
 तियं पचाटिपणहौ, तेवि जाव पचाटिपणंति, तते णं ते वासुदेवपासुकवावा वहवे रायसहस्रसा कल्हं पाउ०  
 पहाया जाव विभूसिया हतिथालमराहि हयगय जाव परिबुडा सठिवहुई प-  
 जाव रेवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवा० २ अणुपविसंति २ पतेयं २ नामंकेतु निसीयति दोवहं रायवर-  
 कण्णं पडिवालेमाणा चिढंति, तए णं से पंडए राया कल्हं ठहाए जाव विभूसिए हतिथालंधवरगाए सकोरंट०  
 हयगय० कंपिष्ठपुरं मजङ्शंमजेणं निगाळचंति जेणेव सयंवरामंडवे जेणेव वासुदेवपासुकवावा वहवे राय-  
 सहस्रसा तेणेव उवा० २ तेस्मि वासुदेवपासुकवाणं करयल० वद्धावेता कणहसस वासुदेवसस सेयवरचामर-  
 गहाय उचवीयमाणे चिढंति ॥ सुत्रम्-१२४ ॥ तए णं सा दोवहं रायवरकत्ता जेणेव मज्जणघे तेणेव उवा०

अपरकद्वा-  
ज्ञाताद्य०  
जिन-  
प्रतिमा-  
वन्दनादि-  
स्वरूपम् ।

गच्छइ २ एहाया कयवलिकमा कयकोउयमंगलपापिचित्ता सुदृष्टपावेसाइं मंगलाइं चत्याइं पचर  
परिहिया मञ्जणचराओ पडिनिक्षबमह २ जेणेव जिणयेर तेणेव उचागच्छइ २ जिणघरं अणुपविसह २  
जिणपडिमाणं आलोए पमाणं करोइ २ लोमहथयं परामुसह एवं जहा सुरिया ओ जिणपडिमाओ अचेइ २  
तसेहेय भाणियन्वं जाव थूवं डहइ २ यामं जाणु अचेति दाहिणं जाणु घरणियलंसि पिवेसेति २ तिकखुतो  
मुद्दाणं घरणियलंसि नमेह २ ईसि पञ्चुणगमति करयल जाव कहु एवं वयासी—नमोऽस्युणं अरिहंताणं  
भगवंताणं जाव संपत्ताणं चंदइ नमंसह २ जिणघराओ पडिनिक्षबमति २ जेणेव अंतेउरे तेणेव  
उचागच्छइ ॥ सुत्रम्-१२५ ॥

‘अज्जयाए’ति अयप्रमृति, ‘अरं च’ति अर्थं पुजाद्रव्यणि, ‘पञ्जं च’ति पादहिं पादं—पादप्रथालन-  
लोहनोदरतनादि, मयनीषुप्रसन्नारह्याः सुरामेदा एव, ‘जिणपडिमाणं अचणं करोइ’ति एकस्यां चाचनायामेतावदेव  
दृश्यते, चाचनान्तरे तु ‘ण्हाया जाव मञ्जालंकारविभूमिया मञ्जणघराओ पडिनिक्षबमह २ जेणमेन जिणघरे तेणामेव  
उचागच्छति २ जिणघर अणुपविसह २ जिणपडिमाणं आलोए पणामं करोइ २ लोमहथयं परामुसह २ एवं जहा सुरियामो  
जिणपडिमाओ अचेति गहेन माणियठन जाव थूत उहइ ’सि उह यावस्करणात् अर्थत् इदं हवय—लोमहस्तकेन जिनप्रतिमा;  
प्रमाणितु सुरभिणा गन्योदकेन लपयति गोशीर्णकादतेनाचुलिम्पति चक्षणि तिचासयति, ततः पुण्याणा मालयानां—प्रथिताना-  
मित्यर्थः, गन्यानां चण्णिनां चक्षणामामरणानां चारोपरं करोति इम, मालाकलापानलम्बनं पुण्यपक्षर तन्मुलैर्दर्पणायाच्यटमह—  
॥ २१७ ॥

लालेखनं च करोति, ‘चामं जाणुं अश्वेहै’नि उहिषपतीत्यर्थः; दाहिणं जाणुं घरणीतलंभि निष्ठु-निहत्य स्थापयित्वे-  
त्यर्थः; ‘तिक्खुतो सुद्धाणं घरणीतलंसि निवेशयतीत्यर्थः; ‘उस्ति पञ्चुत्रमति २ करतलपरिग्रहित्य-  
अंजलि मत्थए कहु एवं वयासी-नमोत्थु णं अरहताणं जाव संपत्ताणं वंदति नमंसति २ लिणघराओ षडि-  
निष्ठामहै’चि तथ गन्दते चेत्यवन्दनविधिना यस्तिद्देन नमस्यति पथात् प्रणिथानादियोगेनेति शुद्धाः; न च द्रोपद्याः;  
प्रणिषातदण्डकमां चेत्यवन्दनमपिहितं चेवे इति सुवमात्रामाण्यादन्यस्यापि आवकादेस्त्रवावदेव गदिति मन्त्रवप्य, चरिता-  
तुगादहृपतगदस्य, न च चरितातुगादनचनानि विधितिपेयमाधरुनानि भवन्ति, अन्यथा सुरिकामादिदेववकठयताचां वहूनां  
गदादिवस्तुनामचिं श्रयते इति तदपि विषेयं स्यात्, किञ्च-अविरतानां प्रणिषातदण्डकमात्रमपि चेत्यवन्दनं सम्मावयते,  
यतो वन्दते नमस्यतीति पदद्वयस्य वृद्धान्तरव्यावध्यानमेवपुणदर्शितं जीवाभ्यगमयृत्तिकृता—“विरतिमर्गेन प्रसिद्ध-  
वेत्यवन्दनविधिर्भवति, अन्येणां तथाऽप्यपुणमपुरस्परकयोत्सर्गासिद्देः, वतो वन्दते सामान्येन नमस्करोति आशयवृद्धे:  
ग्रीत्युत्थानहृष्टनमस्करोते”ति किञ्च—“ममणेण मावण्ण य अवस्थ कायवयं हवह जमहा । अंतो अहो निमिस्म य वरहा  
आवस्थयं नाम ॥ १ ॥” तथा “ उण्णं ममणो वा समणी वा सामओ वा सारिया वा तविचिते लहेसे तमसो उभओ  
कालं आवस्थमए चिहुति तक लोउत्तरिए भावावस्थमए ” [ अमणेन आवकेण चावश्यं कर्तव्यं भवति यस्मात् । अन्तरहो  
निशायाश तस्मादावश्यकं नाम ॥ १ ॥ यत् अमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा तविचितः तन्मनाः वेष्टेत्यः  
उमयस्मिन् काले आवस्थयकाय तिषुति तत् लोकोसारिकं मागावस्थयं ] इत्यादेरत्युपोगद्वारवचनात्, तथा ‘ममयगदर्शन-

अपरकहा<sup>०</sup>  
ज्ञाता इय०  
कंपिल-

भूराव्  
द्रौपदीनि-  
र्गमनादि०

ममणः प्रवचनमकिमान् पद्मिवावद्यकनिरतः पद्मथानयुक्तश्च श्रावकस्य

पद्मिवावद्यकस्य सिद्धाचावद्यकान्तर्गते प्रसिद्धं वैत्यवन्दनं मिद्दमेव मवतीति ॥ १२५ ॥

तते णं से दोव॑ इ रायवरकहं अंतेउरियाओ सब्बचालंकारविभूसियं करेति किं ते ? वरणायपत्तणोउरा  
जाव चेडियाचक्कालमयहरगाविदपरिक्खता अंतेउराओ पडिणिकखमति २ जेणेव याहिरिया उवढाण-  
साला जेणेव चाउरयंटे आसरहे तेणेव उवा० २ किडुवियाए लेहियाए सद्दिं चाउरयंट आसरहे दूरहति,  
तते णं से घड्जल्जुणे कुमारे दोवतीए कणणाए सारत्थं करेति, तते णं सा दोवती रायवरकणा कंपिल्पुर-  
नयं भज्जंमज्जेणं जेणेव संयवरमंडवे तेणेव उवा० २ रहं ठवेति रहाओ पचोरुहति २ किडुवियाए  
लेहियाए य सद्दिं संयवरं मंडपं अणुपविस्तति करयल तेर्सि वासुदेवपात्रुक्खाणं वहूणं रायवरसहस्राणं  
पणामं करेति, तते णं सा दोवती रायवर० एगं महं सिरिदामगंड किं ते ? पाडलमल्लियचंपय जाव सत्त-  
च्छयाहैहं गंधद्वणि चुयंतं परमसुहफासं दरिसणिङ्गं गिषहति, तते णं सा किडुविया जाव सुरुवा जाव  
वामहत्येणं चिछुलगदपणं गहेऊण सललियं दरपणासंकतीवियं संदंसिए य से दाहिणेण हत्येण दरिसिए  
पवररायसीहे फुडिविसयविचुद्दरिभियांभीरमहुरभणिया सा तेसि सन्वेसि पतिथवाणं अममापिकणं चंस-  
सत्तासामत्थगोत्तविकंतिकंतिवहुविह आगममाहपरस्वजोड्वणगुणलावणकुलसीलजाणिया कित्तणं करेह,  
पदमं ताव चणिहुंगवाणं दसदसारवीरपुरिसाणं तेलोक्खलवगाणं सचुसपसहस्रमाणाचमहगाणं भव-

सिद्धिपवरपुंडरीयाणं चिल्लताणं चल्लीरियस्त्रजोऽवणगुणलावद्वक्तिया कित्ताणं करेति, ततो पुणो  
उग्नसेणमार्हाणं जायवाणं, भणति य-सोहउग्नस्त्रकलिए वरेहि वरपुरिस्तांघहत्थीणं । जो हुते होइ  
हियपदहओ, ततो णं सा दोवहै रायवरसहस्राणं मज्जांमज्जेणं स्त्रमतिलज्जमाणी २  
पुञ्कपणियाणेणं चोहज्जमाणी २ जेणोव पञ्च पंडवा तेणेव उच्चाऽ २ ते पञ्चपंडवे तेणं दसद्वयणेणं  
कुसुमदणेणं आवेदियपरिवेदियं करेति २ ता एवं बयासी-एण णं सप् पञ्च पंडवा वरिया, तते णं तेस्मि  
वासुदेवपामोक्तवाणं वहृणि रायसहस्राणिं महया २ सदेणं उरयोसेमाणा २ एवं बयंति-सुवरियं खल्ल  
मो ! दोवहृए रायवरकलाए २ त्तिकहु संयवरमंडवाओ पडिनिक्तव्यमंति २, जेणेव सया २ आवासा तेणेव  
उच्चाऽ, तते णं घट्टज्जुणे कुमोर पञ्च पंडवे दोवत्ति रायवरकणणं चाउग्नयं आसरह दुर्लहति २ चा  
कंपिल्लपुं मज्जांमज्जेणं जाव सयं भवणं अणुपविस्ति, तते णं दुवए राया पञ्च पंडवे दोवत्तीए य  
पट्टयं दुर्लहेति २ सेयापीएहि कलसेहि मज्जावेति २ अनिग्नहोमं कारवेति पंचपहं पंडवाणं दोवत्तीए य  
पणिगदहणं करावेह, तते णं से दुवए राया दोवत्तीए रायवरकणणयाए इमं एयाहवं फीतिदाणं दलयती,  
तंजहा-अठ हिरण्णकोडीओ जाव अठ पेसणकारीओ दासचेडीओ, अणों च चिपुलं घणकणग जाव  
दलयति तते णं से दुवए राया ताहं वासुदेवपामोक्तवाहं चिपुलेणं असण ४ वत्थगंध जाव पाठिविसज्जेति  
॥सुत्रम्-१२६॥ तते णं से पंडु राया तेस्मि वासुदेवपामोक्तवाणं वहृणं रा० करयल एवं व०-एवं खल्ल देवा० ।

अपरकद्वा  
शारात्प्र  
हस्तिनापु  
यण्डगादि  
प्रवेश्वर्णन  
स्वरूप ।

१६

तते एवं वृच्छाणं दोवतीए य देवीए कल्हाणं दोवतीए य देवा० ! ममं  
अणुगिणहमाणा अकालपरिहीण समोसरह, तते एं वासुदेवपामोक्तवा पत्तेयं २ जाव-पहारत्य गमणाए ।  
तते एं से पंडुराया कोहुंविष्णुरिसे सदा० एवं व०-गच्छह एं तुन्मे देवा० । हतिथणाउरे पञ्चणं पंडवाणं  
पंच पासागवाङ्गिसए कारे ह" अङ्गुणायम् सिय वणाओ जाव पडिल्लवे, तते एं ते कोहुंविष्णुरिसा पटि-  
सुण्णन्ति जाव करावेति६, तते एं से पंडुए पंचाहि पंडवेति७ दोवहीए देवीए सन्दि८ हयगयसंपरियुठे कंपिल्ल-  
उराओ पडिनिक्खवमइ९ जेषेव हतिथणाउरे तेस्मि वासुदेवपामो-  
क्तवाणं आगमणं जाणिता कोहुंवि० सदावेह २ एवं व०-गच्छह एं तुन्मे देवाणुष्टिपया । हतिथणाउरस  
नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्तवाणं वहुणं रायसहस्राणं आवासे कारेह अणेगतं मसय तहेय जाव  
पञ्चिपिण्णन्ति, तते एं ते वासुदेवपामोक्तवा यहवे रायसहस्रा जेषेव हतिथणाउरे तेषेव उवागच्छति, तते  
एं से पंडुराया तेस्मि वासुदेवपामोक्तवाणं आगमणं जाणिता हठयुठे ठहाए कथयलि० जहा दुपए जाव  
(जहारिह आवासे दलयति, तते एं ते वासुदेवपा० यहवे रायसहस्रा जेषेव सपाइ० २ आवासाइ तेषेव  
उवा० तहेव जाव विहरति, तते एं से पंडुराया हतिथणाउरं णयरं अणुपविसति१ २ कोहुंविष्य० सदावेति२  
एवं व०-तुन्मे एं देवा० । विउलं असण ४ तहेव जाव उवण्णति, तते एं ते वासुदेवपामोक्तवा यहवे राया

६ ई प्रस्तुत्यर्थत् पठ. श्री ग्रन्ती नास्ति । १ उपा० २., सा उ० आ ।

पहाया कथधलिकमा तं विषुङ् : असणं ४७ तदेव जाव विहरति,: तते णं से पंडुराथा पंच पंडवे दोवत्ति च  
देवि पद्यं- दुर्लहेति २ सीयापीर्वहि कल्लेसेहि गहावेति- २ कल्लाणकारं करेति २ ते वाचुदेवपामोक्खे वहवे  
रायसहस्रे- चिपुलेण असण ४ पुष्फवत्येणं सकारेति सम्माणेति जाव पाडिविसज्जेति, तते णं ताहं चाल्लु  
देवपामोक्खादं चहुहि जाव पाडिगयाति ॥ सुत्रम्-१२७ ॥ तते णं ते पंच पंडवा दोवतीए देवीए सर्विं अंतो  
अंतेउरपरियाल सर्विं कल्लाकाल्लिं वारंवारेण औरालाल्लिं भोगभोगाहं जाव विहरति. तते णं से पंडु राया  
अन्नया कथाहं पंचहि पंडवेहि कौतीए देवीए दोवतीए देवीए य सर्विं अंतो अंतेउरपरियाल सर्विं संपरि-  
युहे सीहासणवरगते यावि विहरति, इमं-च णं कल्लुल्लुल्लारए दंसणेण अहभदए विणीए अंतो २ य कल्लु  
सहियए मज्जश्वथोवतिथए य अल्लीणसोमपियदंसणे सुख्वे अमल्लसगलपरिहिए कालमियचम्मउत्तरासंग-  
रहययत्थे, दण्डकमण्डलहत्थे जडामउडदिचासिरए जदोवहयगणेनियमुंजमेहलयागलधेरे हत्थकयकन्छ-  
भीए पियांधवे घरणिगोपरध्यहाणे संवरणावरणओवयणउपयणिलेसणीहु . य संकामणि अभिओग-  
पणनिगमणीयंभणीहु य यहुहु विज्ञाहरीहु विज्ञाहरीहु विसुयजसे इहे रामसस य केसवसस य पञ्चुन्न-  
पइवस्तयअनिरुद्धिसहउम्मुयसारणगायसुहुमुहातीण . जायवाणं अद्गुट्टाण . कुमारकोहीणं हिययदहुए  
संपवए कलहुउद्धकोलाहलरिपए भंडणाभिलासी यहुहु य समरसयसंपराएहु दसणरए समंतओ कलह-  
मदकियणं अणुगवेसमाणे असमाहिकेरे दसारवरवीरपुरिसतिलोकयलघगाणं आमंतेऊण तं भगवत्तीं एक-

मणि गगणगमणदक्षं उपह ओ गगणमभिलंययंतो गा मागरनगरवेडकब्बुडभुडंवदोणमुह पहणसंचाहसह-  
ससमंहिं थिमियमेइणीतलं बसुहं ओलोइतो रस्मं हिथिणाउरं उवागए पंडुरायभवांसि अहवेगेण समो  
वडए, तते ण से पंडुराया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासति २ पंचहि पंडवेहि कुंतीए य देवीए सर्दि आस-  
णातो अव्युठेति २ कच्छुल्लनारयं सत्तद्वपयाइं पंडुगाळछह २ लिकहुतो आयाहिणपयाहिणं करेति ३  
यदति पामंसति भवहिरेण आसणेण उवणिमतेति, तते ण से कच्छुल्लनारए उदगपरिकोसियाए दडभोवरि-  
पच्चत्युयाए चिसियाए शिसीयति २ पंडुरायं रजे जाव अंतेउरे य कुसलोदंत पुच्छह, तते ण से पंडुराया  
कोतीदेवी पंच य पंडवा कच्छुल्लणारयं आहंति जाव पंडुच्चासंति, तए ण सा दोवड कच्छुल्लनारयं असं-  
जयं अविरयं अपडिहयपच्चकवायपावकममंतिकहु नो आढाति नो परियाणह नो अव्युठेति नो पञ्जु-  
वासति ॥ सूत्रम्-१२८ ॥ तते ण तस्स कच्छुल्लणारपस्स हमेयारुवे अहभतियए चितिए पहियए मणोगए  
संकप्ये समुन्पज्जित्या अहो ण दोवती देवी रुवेण अहो लावणेण जाव लावणेण य पंचहि पंडवेहि अणुवद्दा समाणी  
समं णो आढाति जाव नो पंडुच्चासह तं सेपं खलु मम दोवतीए देवीए चितिपयं करितपत्तिकहु एवं  
संपेहेति २ पंडुपराये आपुच्छह २ उपयणिं विजं आवाहेति २ नाए उकिकडाए जाव विज्जाहरगईए लक्षण-  
समुहं मज्जमज्जेणं पुरत्यामितुहे धीइवतिउं पयत्ते याचि होत्या । तेण कालेणं तेणं समएणं वायदसंहे  
यीवे पुरत्यमददाहिणहुभरहवासे अवरकंका णाम रायहाणी होत्या, तते ण अमरकंकाए रायहाणीए पउ-

मणामि णामं राया होत्था महया हिमवंत० यणाओ, तरस णं पउमनाभस्तु रक्षो सत् देवीस्त्याति  
ओरोहे होत्था, तस्स णं पउमनाभस्तु रणो सुनामे नामं उते ऊवरायायावि होत्था, तते णं से पउम-  
णामे राया अंतो अंतेउरंसि ओरोहसंपरिहुडे दिन्हासणवरगए विहरति, तए णं से कल्कुल्लुणारए जेणेव  
अमरकंका रायहाणी जेणेव पउमनाहस्तु भवणे तेणेव ऊवागच्छति २ पउमनाभस्तु एतो भवणंसि शांति २  
वेगेणं समोवद्दए, तते णं से पउमनामे राया कल्कुल्लुणारयं एखमाणं पासति २ आसणातो अनुभुद्देति २  
आनधेणं जाव आसेणां उवणिमंतेति, तए णं से कल्कुल्लुणारए उदयपरिफकोसियाए दवभोवरिपचत्युयाते  
विसियाए निसीयह जाव कुसलोदंतं आपुच्छइ, तते णं से पउमनामे राया णिअगओरोहे जायविमहए  
कल्कुल्लुणारयं एवं च०-तुम्भं देवाणुषिपया ! यहणि गामाणि जाव गेहाति अणुषिपसि, तं अलिध-  
याइ तं कहिणि देवाणुषिपया ! एरिसए ओरोहे दिद्धुन्वे जारिसए णं मम ओरोहे ?, तते णं से कल्कु-  
ल्लुणारए पउमनामेणं रक्षा एवं उते समाणे ईस्ति विहसियं करेह ? एवं च०-सरिसे णं तुम्भं पउम-  
णामा ! तस्स अगडदहुरस्तु, के णं देवाणुषिपया से अगडदहुरे ?, एवं जहा मल्लिणाए एवं खल्लु देवाऽ !  
जंयूद्दीते २ भारहे यासे हतियणाउरे दुपयस्तु रणो धूया चूलणीए देवीए अतया पंडुस्तु चुणहा पंचणह-  
पंडयाणं मारिया दोवती देवी रुद्धेण य जाव उफिडसरिया दोवर्हए णं देवीए छिकस्त्वि पांयगुडपस्तु अयं  
तय ओरोहे सतिमंपि कलंण आघोतित्तिकहु, पउमणामं आपुच्छति २ जाव पडिगए २, तते णं से पउम-

अपरकक्षा । ज्ञाता हयत् पश्चाम् समीपे नारदा-  
गमनादि ।

नामे राया कच्छुल्लभायस्स अंतिए एयमडं सोचा पिसस्म दोवतीए देवीए रह्वे य ३ मुचिछए ४ दोवहैए  
अज्ञोदवत्रे जेणेव पोसहसाला तेणेव उय ० २ पोसहसालं जाव पुच्चसंगतियं देवं एवं व०-एवं चलु  
देवा० ! जंयुधीवे २ आरहे वासे हिथणाउरे जाव सरीरा-तं इच्छामि यं देवा० ! दोवती देवी॒ इहमाणियं,  
तते यं पुच्चसंगतिए देवे पउमनाभं एवं व०-नो खलु देवा० ! एयं भूयं वा भव्यं वा भविसं वा  
जणां दोवती देवी॒ पंच पंडवे मोरण अन्नेणः पुरिसेण सर्वि॒ ओरालाति॑-जाव यिहरिस्सति॑-तहाविय यं  
अहं तव॑ पियहुतया॒ दोवती॒ देविं इहं हव्यमाणेमि तिकहु पउमणाभं आपुच्छह॒ २ ताए॒ उकिहुए॒ जाव  
लयणसमुदं मज्जामज्जेणां जेणेव हिथणाउरे णयेर तेणेव पहोरेत्थ गमणए॑-तेणां कालेणा॒ २ हिथणाउरे॑  
ज्ञहिटिले॑ शाया दोवतीए सर्वि॒ उटिप आगासतलंसि॑-सुहपचुते॑ यावि होह्या, तप यं से पुच्चसंगतिए॑ देवे॑  
जेणेव जुहिडिले॑ राया जेणेव दोवती॑ देवी॑ तेणेव उचाग० २ दोवतीए॑-देवी॒ ओसोवणियं॑-दलयह॒ २  
दोवती॑ देविं गिणह॒ २ ताए॒ उकिहुए॒ जाव जेणेव अमरकंका॑ जेणेव पउमणा॑भस्स भवणे॑, तेणेव॑-उचाग० २  
पउमणा॑भस्स भवणंसि॑ असोगवणियाए॑ दोवती॑ देवी॒ ठोवेड॒ २ ओसोवणि॑ अवहरति॑ २ जेणेव॑-पउमणा॑भे॑  
जेणेव॑ उ॒ २ एयं व०-एस यं देवा० ! मए॑ हिथणाउरा॑ओ दोवती॑ इहं हव्यमाणिया॑ तव॑-असोगवणियाए॑  
चिठ्ठिति॑, अतो परं तुमं जाणसि॑ तिकहु जासेव दिसि॑ पाउहभूए॑ तासेव दिसि॑ पडिगए॑ । तते यं सा दोवहै॑  
देवी॑ ततो॑ मुहुतंतरस्स-पडियुद्वा॑ समाणी॑ तं भवणं असोगवणियं॑ व अपच्चभिजाणमाणी॑ प॒ एवं व०-ज्ञो॑

खलुः अमहं पसे सए मयणो पो खलुः एसा अमहं सगा असोगवणिया, तं ण गजति णं अहं केणहै देविण  
‘या दाणवेण धा किंपुरिसेण वा किञ्चरेण वा महोरेण-वा गंधनवेण-वा अक्रस्स रणो असोगवणियं साह-  
रिय तिकडु ओहयमणसंकपा जाव छियायति, तते णं से पउमणामे राया ठहाए जाव सठ्यालंकारमृत्यिए  
अंतेउरपरियालसंपरियुडे जेयेव-असोगवणिया, जेयेव-दोवती देवी तेणेव उवा० २ दोवती-देवी ओहय०  
जाव‘छियायमाणी पासति २ चा एवं च०-किणों तुमं देवा० ! ओहय, जाव छियाहि ?, एवं खलु तुमं  
देवा० ! मम ठवसंगतिए देवेणं जंबुदीचाओ० ३ ,मारहाओ वासाओ हियणापुराओ नयराओ जुहि०  
डिल्लस्स रणों, अचणाओ-साहरिया तं, मा-णं तुमं देवा० ! ओहय० जाव, छियाहि, तुमं मए सद्दिविपु-  
लाहं भोगभोगाहं जाव‘विहराहि, तते णं सा दोवती देवी पउमणामं एवं च०-एवं खलु देवा० । जंबुदीवे  
२ ,मारहे चासे-यारवतिए णयरीए कणहे, णामं वासुदेवे ममटिपयभाउए परिवसति, तं जति णं से छणहै०  
चिडिस्तामि, तते णं से पउमे दोवतीए एषमठं पहिसुणेता० २ दोवतीं देविं कणणंतेउरे ठवेति, तते णं सा  
दोवती देवी छडुछडेण, अनिकिवचसेणं आयंविलपरिनगाहियं तवो कन्मेणं अप्याणं, भावेमाणी विहरति  
॥सुन्त्रम्-१२९॥ तते णं से छडुहिल्ले राया तओ सुहुकंतरस्स पडियुदें समाणे दोवतीं देविं पासे अपासमाणो  
सयणिज्जाओ उडेह २ चा दोवतीए देवीप सठ्य देवीए सठ्य देवीए समंता मगगणगवेसणं करेह २-ता-दोवतीए देवीए

कत्थाएः सुहं चा खुहं चा पवर्त्तिं चा अलभमाणे जेणेवं पंडुराया तेणेवं उच्या० २ चा पंडुरायं एवं च०-एवं  
खलू ताजो ! ममं आगासतलगांसि पसुतस्स पासातो दोवती देवी चा दाणवेण केणाह देवेण चा दाणवेण  
चा किलरेण चा महोरगेण चा गंधनवेण चा हिया चा णीया चा अवकिवत्ता चा १, इच्छाभिं णं ताओ० !  
दोवतीए देवीए सङ्घवतो समंता मणगणवेसणं कर्यं, तते णं से पंडुराया कोंडुविष्यपुरिसे सदावेह २ एवं च०-  
गच्छह णं तुन्मे देव्या० ! हतिधनाउरे नयरे सिंघाडगतियचउक्त्यचरमहापहपहेलु महया २ सदेण उग्योसे-  
माणा२ एवं च०-एवं खलू देव्या० ! ऊहिद्विल्लरस रणो आगासतलगांसि सुहपसुतस्स पासातो दोवती देवी  
चा किलरेण केणाह देवेण चा दाणवेण चा किलपुरिसेण चा किलरेण चा महोरगेण चा गंधनवेण चा हिया चा  
नीया चा अवकिवत्ता चा, तं जो णं देवाणुषिप्या ! दोवतीए देवीए सुहित चा जाव पविर्त्ति चा परिकहेति  
तस्स णं पंडुराया चिउलं अथसंपयाणं दाणं दलयति तिकडु घोसावेह २ एयमाणन्तियं पच्चिपणह,  
तते णं ते कोईषिपुरिसा जाव पच्चिपणांति तते णं से पंडु राया दोवतीए देवीए कहथति सुहं चा जाव  
अलभमाणे कोतीं देवीं सदावेति २ एवं च०-गच्छह णं तुमं देवाणु० ! यारवत्ति पायरि कणास्स वासुदेवस्स  
णयमहं णिवेदेहि, कणहे णं परं चासुदेवे दोवतीए मरगणनवेसेणं करेज्जा, अखहा न नज्जह दोवतीए देवीए  
सुतीं चा खुतीं चा पवर्तीं चा उबलभेज्जा, तते णं सा कोतीं देवीं पंडुरणा एवं उत्ता समाणी जाव  
पदिसुणेह २ एहाया कपयवलिकम्मा हतिधनवरगया हतिधनवरगया हतिधनवरगया हतिधनवरगया हतिधनवरगया २ कुन-

जाणवयं मज्जंमज्जेण जेणेव सुरहजणवए, जेणेव यारवतीणयरी, जेणेव अगुज्जागे, तेणेव उवा० २ हतिथ-  
 लंघाओ पचोरुहति २ कोङ्गिविषपुरिसे सदा० २ एवं व०-गच्छह णं तुन्मे देवा० ! जेणेव यारवई णयरि-  
 वारवतीणयरिआणुपविसह२, कणह वासुदेवं करयल एवं वयह-एवं खलु सामी ! तुन्मे पितुच्छा कोती-  
 देवी हतिणाउराओ नयराओ इह हवमानगया तुन्भं दंसणं कंखवति, तते णं ते कोङ्गिविषपुरिसा जाव-  
 कहेति, तते णं कणह वासुदेवे कोङ्गिविषपुरिसां अंतिए सोचा पिसम्मं हतिथबंधवरगए हयगय यार-  
 वतीए य मज्जंमज्जेण जेणेव कोती देवी तेणेव उ० २, हतिथबंधातो पचोरुहति २, कोतीए देवीए पाय-  
 गाहणं करेति २, कोतीए देवीए सद्दि हतिथबंधं दुरुहति २, यारवतीए णयरीए मज्जंमज्जेण जेणेव सए  
 गिहे तेणेव उवा० २, सयं गिह अणुपविसति । तते णं से कणहे वासुदेवे कोती देवि पहायं कयबलिकम्मं  
 लिमियशुदुतरागयं जाव चुहासणवरगयं एवं व०-संदिसउ णं पितुच्छा । किमानमणपओयणं ?, तते णं  
 पचुतस्स दोवती देवी पासाओ ण पञ्जति केणह अवहिया । जाव अवकिलता वा, तं इच्छामि णं पुत्ता ।  
 दोवतीए देवीए प्रगणगवेसणं कयं, तते णं से कणहे वासुदेवे कोती पितुच्छं एवं व०-जं पावरं पितुच्छा ।  
 दोवतीए देवीए कथह उहं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ वा अद्भवरहाओ वा

अपरकहु-  
आगाह्य०  
वासुदेवस्य  
कुन्तया सह  
वार्तालापा-  
दिव्यम्।

समंतओ दोवर्ति साहर्त्य उयणेभि तिकहु कोती पिडित्य सकारेति समागेति जाव पडिविसज्जेति, तते  
पां सा कोती देवी कणहेण वासुदेवेण पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसि पडिं० ।  
तते पां से कणहे वासुदेवे कोहुवियपुरिसे सदा० २ एवं च०-गच्छह पां तुम्हे देवा० ! वारचर्ति एवं जहा०  
पहु तहा घोसणां घोसावेति जाव पचाटिपणांति, पंडसस जहा, तते पां से कणहे वासुदेवे अक्रया अंतो अंते-  
उत्तरए ओरोहे जाव विहरति, इमं च पां कच्छुल्हए जाव समोवहए जाव पिसीहता० कणहे वासुदेवे  
कुसलोदंत पुच्छह, तते पां से कणहे वासुदेवे कच्छुल्हए कणहे च०-तुम्हं पां देवा० ! बहूणि गामा जाव अणु-  
पविससि, तं अतिथ यादं ते कहियि दोवतीए देवीए सुती वा जाव उवलद्वा०, तते पां से कच्छुल्हे कणहे  
वासुदेवं एवं च०-एवं चल्लु देवा० ! अक्रया श्रापतीसंडे शीवे पुरातिथमद्वं दोहिणहु भरहवासं अवरककाराय-  
हाँणि गण, तथ्य पां मए पउमनाभसस रको भवांसि दोवती देवी जारिसिया दिहुपुनवा यावि होतथा,  
तते पां कणहे वासुदेवे कच्छुल्हए कणहे च०-तुम्हं चेव पां देवा० ! एवं पुन्यकर्म, तते पां से कच्छुल्हनारए  
कणहेण वासुदेवेण एवं युते समाणे उपपर्यणि विजं आवाहेति २, जामेव दिसि पाउङ्ग्रुए तामेव दिसि  
पडिगए, तते पां से कणहे वासुदेवे दूयं सधावेह २, एवं च०-गच्छह पां तुम्हं देवा० ! हतिधानाउरं पंडुसस  
रको पपमट्ट निवेदेहि-एवं चल्लु देवा० ! 'धायहसंडे शीवे पुरचिलमद्व अवरकंकाए रायहाणीए पउमणाभ-  
भवांसि दोवतीए देवीए पउत्ती उवलद्वा, तं गच्छतु पञ्च पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सर्विचुडा ॥ २२३ ॥

पुरतिपमवेयालीए ममं पडिवालेमाणा चिंहु, तते णं से हृष जाव भणाति, पडिवालेमाणा चिंहु, तेवि  
 जाव चिंहुति, तते णं से कणहे वासुदेवे कोहुवियपुरिसे साशाबेह २ ता, एवं व०-गच्छह णं तुनमे देवा० ।  
 सक्षाहियं मेरि ताडेह, तेवि तालेति, तते णं तीसे सपणाहियाए मेरिए सदं सोचा समुद्विजयपामोक्तवा  
 दसदसारा जाव छपणां यलवयसाहस्रीओ सकाळ्यज्ज्ञ जाव गहियाउहपहरणा अपेगतिया हयगया  
 गयगया जाव वरगुरापरिकिवता जेणेव सभा लुधममा जेणेव कणहे वासुदेवे तेणेव ३, करयल जाव  
 यद्वावेति, तते णं कणहे वासुदेवे हतिथलंघवरगए सकोरेटमल्लदामेणं छतेण० सेयवर० हयगय० महया  
 भड्यडगरपहकरेणं यारवती पायरी मज्जेमज्जेणं पिण्णगच्छति, जेणेव पुरतिपमवेयाली तेणेव उवा० २,  
 पंचाहिं पंडवेहि सर्द्धि पगायओ मिलह ३, संघावारणिवेसं करेति ३, पोसहसालं अणुपविस्तति ३, चुट्ठियं  
 देवं मणसि करेमाणे ३, चिंहुति, तते णं कणहस्स वासुदेवस्स अडमभत्तसि परिणममाणंसि चुट्ठिओ  
 आगतो, भण देवा० । जं मए कायबंवं, तते णं से कणहे वासुदेवे चुट्ठियं एवं व०-एवं लल्लु देवा० । दोवती  
 देवी जाव पउमनाभस्स भवणंसि साहरिया तणं तुमं देवा० । मम पंचाहि पंडवेहि सर्द्धि अपच्छठस्स  
 छणं रहाणं लयणसमुद्दे मगं वियरेहि, जणं अहं अमरकंकारायहाणी वोवतीए कूर्व गच्छामि, तते णं  
 से चुट्ठिए देवे कणहे वासुदेवं एवं वयासी-किणहं देवा० । जहा चेव पउमणाभस्स रक्तो पुञ्चसंगतिएणं

देवेण दोवती जाव संहरिया तहा चेव दोवति देविं घायतीसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हृतियणापुरं साहरामि, उदाहु पउमणां रायं सपुरवलचाहणं लवणसमुदे पकिववामि ? , तते णं कणहे वासुदेवे चुटिंय देवं वं ब०-मा णं तुमं देवा० ! जाव साहराहि तुमं णं देवा० ! लवणसमुदे अपचछुटस्स छणहं रहणां मागं विपराहि, सयमेव णं अहं दोवतीए कूवं गच्छामि, तए णं से उठिए देवे कणहे वासुदेवं एवं चयासी-एवं होउ, पंचहि पंडवेहि सर्वि अपचछुटस्स छणहं रहणं लवणसमुदे मगं वितरति, तते णं से कणहे वासुदेवे चाउरंगिणीसेणं पडिविसज्जेति २, पंचहि पंडवेहि सर्वि अपचछुटहि छहि रहेहि लवणसमुदे मउंसंमउंसेणं धीतीवयति २, जेणेव अमरकंका रायहाणी जेणेव अमरकंका अग्रुजाणे तेणेव उचागच्छहि २, रहं ठवेह २, दारुयं सारहि सदावेति एवं व०-गच्छह णं तुमं देवा० ! अमरकंका रायहाणी अग्रुपविसाहि २, पउमणा भद्रस रणो वामेण पाएणं पायणीहं अकमित्ता कुलगोणं लेहं पणामेहि तिवलियं निउडिं पिडाले साहडु आसुनते कट्टे कुट्टे कुविए चंडिकिए पंच व०-हं भो पउमणाहा ! अपतिथयपतिथया दुरंतपंतलकबणा हीणपुत्रचाउहसा सिरीहिरीपतिविक्षिया अज्ज पा भवसि किळं तुमं ण याणासि कणहस्स वासुदेवस्स मगिणि दोवति देविं इहं हठं आणमाणे, ते एयमवि गए पच्छियणाहि णं तुमं दोवति देविं कणहस्स वासुदेवस्स अहवं णं ऊदसज्जे यिनगच्छाहि, एस णं कणहे वासुदेवे पंचहि पंडवेहि अपचछुटे दोवतीदेवीए कूवं एन्वपागाए, तते णं से दारुण सारही कणहेणं वासुदेवेणं एवं तुते समाणे हडतुटे जाव पडिखुणेह ३, अमरकंका-

रायहाणि अणुपविसति २, जेपेव पउमनाहे तेणोव उच्चा० ३, करयल जाव बद्रोवेत्ता एवं च०-एस णं सामी !  
मम विणयपठिवित्ती हमा अक्षा मम सामिस्स समुहाणन्ति चिकडु आसुहते वामपाएणं पायपीडु अणुकमति  
२, कोंतगोणं लेहं पणामति २ ता, जाव कूवं हूवमागए, तते णं से पउमणा॒भे दारुणोणं सारहिणा एवं  
बुत्ति समाणो आसुहते तिवलि भित्तिं निडले साहडु एवं च०-णो अटिपणामि णं आहं देवा० ! कणहस्स  
पासुदेवस्स दोवात्ति, एस णं आहं सगमेव ऊजशसज्जो गिन्गच्छु भावेति, तते णं से दारुए  
मो ! रायसतयेचु दृष्टे अवज्जेव चिकडु असकारिय असम्माणिय अवदारेण पिळच्छु भावेति, तते णं से दारुए  
सारही पउमणाभेणं असकारिय जाव पिळच्छु भावेति, तते णं से पउमणाभे चलवाउयं  
जाव एवं च०-एवं खलु आहं सामी ! तुवं वयणोणं जाव पिळच्छु भावेति, तते णं छेया-  
सहावेति २ एवं च०-खिप्पामेव भो देवाणु० ! आभिसेकं हतिधरयाणं पठिकपेह, तयाणांतरं च णं छेया-  
यरियउवदेसमहिकपणाविगदपेहि जाव उवणेति, तते णं से पउमनाहे सवाद० अभिसेगं दुर्लहति २,  
हयगय जेणेव कणहे चासुदेव तेणोव पहारेत्य गमणाए, तते णं से कणहे चासुदेवे पउमणाभं रायाणा  
एखमाणं पासति २, ते पंच पंडवे एधं च०-हं भो दारगा ! किंतु तुवं पउमनाभेणं सर्विद्व उजिक्कहिह  
उयहु पेचिकहिह २, तते णं ते पंच पंडवा कणहे चासुदेवं एधं च०-अम्हे णं सामी ! उजिक्कामो तुवंभे  
पेचिह, तते णं पंच पंडवे सणणद्व जाव पहरणा रहे दुर्लहति २ जेणोव उ० २, एवं

व०—अम्हे पउमणामे चा राय तिकहु पउमनामेण सद्दि संपलग्ना यावि होत्या, तते णं से पउमनामे राया ते पंच पंडवे लिघ्यामेव हयमहियपवरविवडियचिन्धद्यपडागा जाव दिसोदिसि पडिसेहेतिति, तते णं ते पंच पंडवा पउमनामेण रक्षा हयमहियपवरविवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्यामा जाव अथारणिक्षितिकहु जेणेव कणहे चासुदेवे तेणेव उवा०, तते णं से कणहे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं व०—कहणं तुऽमे देवाणु० ! पउमणामेण रक्षा सद्दि संपलग्ना०, तते णं ते पंच पंडवा कणहे वासुदेवं एवं व०—एवं खलु देवा० ! अम्हे तुऽमे हिअभणुक्षाया समाणा सबद० रहे दुर्लहामो॒ २, जेणेव पउमनामे जाव पडिसेहेति, तते णं से कणहे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं व०—जति णं तुऽमे देवा० ! एवं वयंता अम्हे णो पउमनामे राय तिकहु पउमनामेण सद्दि संपलग्नता तो॒ णं तुऽमे णो पउमणाहे॒ हयमहियपवर जाव पडिसेहेते, तं पेचलह णं तुऽमे देवा० ! अहं नो पउमणामे राय तिकहु पउमनामेण रक्षा सद्दि तुज्ञामि रहे दुर्लहति॒ २ जेणेव पउमनामे राया तेणेव उवा० २ सेयं गोखीरहारधवलं तणसोळ्हियसिदुवारकुँदे॑ दुस्त्रिगासं निययचलस्त हरिसजणनं रिउसेपणविणासकरं पंचवणणं संखं परासुसति॒ ३, मुहवायपूरियं करेति; तते णं तस्स पउमणाहस्स तेणं संखसद्यं वलति॒ आए हते जाव पडिसेहिप, तते णं से कणहे चासुदेवे घणुं परासुसति चेढो घणुं पूरेति॒ २, घणुसद्यं करेति; तते णं तस्स पउमनाभस्स दोखे यलति॒ आए तेणं घणुसदेण हयमहिय जाव पडिसेहिप, तते णं से पउमणामे राया तिभागवलावसेसे अत्यामे अवले॑ ॥ २२५ ॥

अपुरिसकारपरकममें अघारणिज्ज तिकडु सिंहां तुरियं जेणोच अमरकंका  
 अवीरिए अपुरिसकारपरकममें अघारणिज्ज तेणोब उ० २, अमरकंकं  
 रायहार्णि अणुपचिसति २, दारार्णि पिहेति २, रोहसज्जे चिडुति; तते णं से कणहे बाचुदेवे जेणोब अमरकंका  
 तेणोब उ० २ रहं ठवेति २, रहातो पचोस्त्वं चमोहणति; एगं महं पारसीहर्वनं  
 चिउवति २, महया २, सदेणं पाददद्व-  
 राणं कणहे बाचुदेवेणं महया २, सदेणं पाददद्व-  
 चिउवति २, महया २, सदेणं पाददद्व-  
 राणं कणहे बाचुदेवेणं अमरकंका रायहार्णि संभग-  
 सिरियरा सरसरस्स धरणियले सञ्चिवइया, तते णं से पउमणा मे राया अमरकंकं रायहार्णि संभग-  
 जाव पासिता भीप दोवाति देवि सरणं उवेति, तते णं सा दोवई देवी पउमनाभं रायं एवं च०-किणं  
 तुमं देवा० ! न जाणसि कणहस्स बाचुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स चिटिपयं करेमाणे ममं हह हठवमाणेसि, तं  
 एवमवि गण गच्छह णं तुमं देवा० ! पहाए उल्लपडसाडए अवचूलगच्छयणियथे अंतेउरपरियालसंपरियुक्ते  
 अगगाइं वराइं रयणाइं गहाय ममं पुरतो काउं कणहं बाचुदेवं करयलपायपडिए सरणं उवेहि, पणिचइय-  
 यच्छला णं देवाणुटिपया । उत्तमपुरिसा, तते णं से पउमनामे दोवतीए देवीए एयमहं पडिचुगेति २, पहाए  
 जाव सरणं उवेति २, करयल० एवं च०-दिट्ठा णं देवाणुटिपयाणं हड्ही जाव परकममे तं खामेमि मं देवाणु-  
 यच्छला णं देवाणुटिपया । जाव लमंठुं णं जाव णाहं भुज्बो २ एवंकरणयाए तिकडु पंजलियुक्ते पायचडिए कणहस्स बाचुदेवस्स  
 दोवति देवि साहत्यं उवेति, तते णं से कणहे बाचुदेवे पउमणाभं एवं च०-हं भी पउमणाभा ।

नवाही-  
१०८० अप्पतिथपतिथया ४ किणां तुमं ण जाणसि मम भगिणि दोवतीं दर्वीं इह हृवमाणमाणे तं एवमवि-  
शीझावा-  
षमकथाहे गए गतिथ ते ममाहितो इयार्णि भग्यमणा भं पडिविसज्जेति, दोवति देविं गिणहति २, रहं-  
कणेहि पंच पंडवे तेणेव उचा० २, पंचणहं पंडवाणं दोवति देविं साहित्य उचणेति; तते णं से-  
कणेहं पंचहि पंडवेहि सादि अपचल्हे छाहि रहेहि लवणसतुहं मज्जंमज्जेणं जेणेव जंयुदीते २, जेणेव  
भारहे यासे तेणेव पहरित्य गमणाए ॥ सुत्रम्-१३० ॥

‘सारत्थं’ति मारध्यं मारथिकम्, ‘तए णं सा किद्गुचिपं’त्यादौ यावत्करणादेवं दर्शयं-‘सामाचियहंसा चोहहजणसम-  
उसुप्यरुं गिचिचमणिरयणवद्गुच्छरुहं’ति, तत्र कीडापिका-कीडनघानी ‘साभाचियहंस’न्ति साङ्गाविकः:-अकैतवकुतो घपों-  
घपाणं यस्य म तथा तं दर्पणमिति गोगः, ‘जो हहुअणहस ऊसुप्यकरे’ति तरुणलोकस्य औसुप्यकरं-प्रेषुणलमप्तत्वकरं  
विचित्तमणिरयणवद्गुच्छकहं’ति विचित्रमणिरत्नेवदः छुरुको-मुष्टिप्रहणसथानं यस्य म तथा तं ‘चिल्हंगं’-दीप्यमानं  
दर्पण-आदर्शम्, ‘दर्पणसंकृतविच्यसंदंसिए य से’चि-दर्पणे सङ्कुत्त्वानि यानि राज्ञां विम्बानि-प्रतिविम्बानि तैः संद-  
चिंगाः-उपलभिगा ये ते तथा चांश्च से-तस्या दक्षिणहस्तेन दर्शयति इति प्रक्रमः प्रवरराजसिंहान्, स्फुटमथर्तो  
विग्रहं वर्णतः विशुद्धं चन्द्रार्थदोपरहितं रिभिरं-स्वरघोलनाप्रकारोपेत गम्भीरं-मेषशब्दवत् मधुरं-कण्ठसुखकरं भणितुं-भाषितं  
यस्याः कीडापिकायाः सा रथा तां, मारणितरो वंशं-दरिंश्वादिकं सुन्वं-आपत्सत्रवैकुन्धयकरमध्यवसानकरं च मामधर्य-वलं,  
गोंगं-गोरमगोप्रादि, विकान्ति-प्रभां, पाठान्तरेण कीति वा-प्रस्तुयाति बहुविधागमं-नानाविधाख्यात्वचि-  
॥ २२६ ॥

शारदमित्यर्थः; माहात्म्यं- महात्मानुभावतो, कुलं- वैशस्याबान्तरमेदं शीलं च-खमां जानाति या सा तथा कीर्तनं करोति स्मेति,  
युष्मित्यर्थः; यद्युपहचानां यद्युप्रधानानां दशारस्य वा-वासुदेवस्य ये वरा वीराश्च गुणास्ते  
तथा ते च ते श्वेतोक्तेऽपि बलवन्तश्चेति विग्रहस्तरस्तेषां, शत्रुघ्नसहस्राणां- एतिपुलश्चाणां- एतिपुलश्चाणां- मानसवस्तुदन्ति ये ते तथा तेषां,  
तथा मविष्यतीति मवा-माविनी सा सिद्धियेषां ते मवसिद्धिकास्त्रेषां मध्ये वरपुण्डरीकाणीच वरपुण्डरीकाणि ये ते तथा तेषां  
'चिह्नगाणं' ति-दीप्यमानानां तेजसा तथा चलं-शरीरं, वीर्यं-जीवप्रमाणं, हृष्णं-शरीरसोन्दर्यं, योवनं-तारुण्यं, गुणान्-सौन्दर्यान्-  
दीन्, लावण्यं च-स्पृहणीयतो कीर्तनं करोति स्म, पूर्वोक्तमपि किञ्चिद्दिशेषाभियानां-  
याभिविमिति न दुटं, 'समहृच्छमाणी' ति समतिक्रमन्ती, 'वसद्वचणेण' तीह श्रीदामगण्डेन पूर्वगृहीतेनेति सम्बन्धनीय  
'कण्ठुल्लानारए' ति-एवत्त्वामा तापसः, इदं  
'कष्ट्याणकारेचि-कल्याणकरणं महालकणमित्यर्थः; इमं च नं' ति इत्थ 'कण्ठुल्लानारए'  
कविचावत्करणादिदं इत्यर्थं, 'दंसणेण अइभद्रए' भद्रदशीन इत्यर्थः, 'विणीए अंतो य कलुमहियए'  
दृष्टिचित्तः केलीप्रियतादित्यर्थः, 'मञ्जस्तथउच्चतिथए य' माङ्यस्थर्यं- समवामम्युपातो ब्रह्मग्रहणत इति मावः, 'अल्लीण-  
सोमपिण्डसणे सुरुचेव' आलीनानां- आश्रितानां सौम्यं- अरोदं प्रियं च दश्चनं पर्य स तथा 'अमङ्गलसगलपरिहिए'  
अमलिनं सकलं- अखण्डं शकलं वा खण्डं वलकवास इति गमयते परिहितं- निवासिरं येन स तथा, 'कालमियचमत्तराए-  
संगरहयवत्थे' कालमुग्नाचर्म उचरासङ्केन रचितं वक्षसि येन स तथा 'दंडकमंडल्लहत्थे जडामउडदित्तसिरए-  
जन्मोवाङ्गणेतिथसुंजमेहलावागलधरे' गणेत्रिका-हुद्राक्षकृतं कलाचिकाभरणं शुद्धमेखला-मुझमयः कटीदवरकः

१६  
अपरकहुः-  
ज्ञाता इयो-  
विद्याचरा-  
दिपदानं-  
नम् ।

यदकलं-उहतवक, 'हत्यकयकहु भीए'-कल्लिपिका गदुप करणविशेष; 'पियगं घठवे'-गोत्रप्रिय; 'घरणिगोयरपहाणे'-आकाशगामितवात्, 'संचरणवरणउवयणिलेसणीसु य संकामणि अभियोगपणतिगमणीयं मणीसु य वहुसु विजाहीरीसु विजासु विसुष्यजसे' इह मञ्चरण्यादिविद्यानामर्थ; शब्दानुमारतो वाच्यः, 'विज्ञाहरिसु'नि-विद्याघरसम्बन्धिनीषु विशुवयशाः:-  
खणतकीर्ति:, 'इटे रामसस केसवसस य पञ्जुनपईवसंचय अनिकदनिसडउम्मयसारणगयसुमुहुडमुहाईणं जायवाणं अद्वटाणं कुमारकोडीणं हियपदइए' वल्लभ इत्यर्थी, 'संथवे' एतेषां संस्वावकः, 'कलहजुडकोलाह' लपिपए' कलहो-वाग्युदं युदं तु-आयुयुदं कोलाहलो-वहुजनमहावचतिः; 'भंडणाभिलासी'-भंडनं पिटातकादिभिः;  
'यहुसु प समरसंपराएसु'-समरसझामेभित्यर्थी, 'दंसणरए समंतओ कलहं सदचित्वणं' सदानमित्यर्थी;, 'अणुग्रावेसमाणे असमाहिरुर दसारवरधीरपुरिसतेलोक्यलवगाणं आमंतेजणं तं भगवत्ति एकमणी  
गमणत्थं उपपहओ गगणतलमभिलयपतो गगमागरनगरखेडकल्यदोणमुहपटणसंचाहसहसमंडियं  
थिमिगमेइणीयं शिळभरजनपदं वसुहं ओलोयंतो रस्मं हतिथणपुरं उचागए' 'असंजयअविरय अपदिहय-  
पचकत्तायपावकममेतिकहु' असंयतः संयमरहितवात् अविरतो विशेषतस्तप्यरतत्वात् न प्रतिहतवानि-न प्रतिषेषितवानि  
अतीरकालठतवानि निन्दनतः न ग्रत्याख्यातवानि च भविष्यत्कालमावीनि पापकर्माणि-प्राणातिपावादिक्रिया येन अथवा  
न प्रतिहतवानि सागरोपमकोटीकोट्यन्तःप्रवेशनेन यस्यकलवायतः न च ग्रत्याख्यातवानि सागरोपमकोटीकोट्याः; सह्यात-  
सागरोपमेन्यन्तराकरणेन सर्वविरतिलमतः पापकर्माणि-ज्ञानापरणादीनि येन च तथेति पदत्रयस्य कर्मचारयः, 'कृबं'ति-

ब्रह्मकृतं तदेवाभ्युपादनं तदेवाभ्युपादनं तदेवाभ्युपादनं ॥५॥ ब्रह्मकृतं तदेवाभ्युपादनं तदेवाभ्युपादनं तदेवाभ्युपादनं ॥६॥

कृजकं व्यावर्त्तकवलमिति माचः; 'सुहं' व 'ति'-शब्दः तां, 'सुति' व 'ति' सुति: छीक्काशादि-  
शब्दविक्षेप एव तों प्रयुक्ति-वार्ता, वाचार्यपर्यायाश्चेते इति, 'हिया' व 'ति'-हृगा प्रदेशान्तरे स्थापिता, 'स्थापिता' आकृतिः वाचार्यादि, इयमन्या अपरा मरीयस्वामिनः सम्बन्धिनी स्वस्थानं प्रापिता 'आकृतिः' आकृतिः, 'इमा' अपणोऽयादि, स्वमुखावृष्टिसि-  
विनयप्रतिपत्तिरिति वर्तते, 'समुहाणन्ति चिकट्ट', स्वसुखेन स्वकीयवदतेन भणिता आड्हास्ति:-शादेशः स्वमुखावृष्टिः-  
तितिकृत्वा-एवमभिधाय, 'आसुरुते 'ति कुद्दः, 'यलचाउपुरुषः' सैन्यव्यापासवान्, 'अभ्यसेक' निरु-  
यमिपेकमहर्तीत्यमिषेण मूर्दधिपिकमित्यथः; 'छेयागरियउत्तरासमद्विग्रहपेहि' ति-उक्तेको-निषुणो य  
आचार्यः-कलाचार्यः तस्योपदेशात्-उत्तरूचिकाया मते:-युद्धेयाः कलायनाः:-विकल्पाः कलात्मेदास्ते तथा तैरिति,  
इह यावत्करणादिदं इत्यं 'सुनिउणोहि' ति-सुनिषुणोत्तरीः, 'उज्जलतेवत्यहृवपरिवच्छयं' ति उज्जलतेवत्येन-  
निर्मलेषेण 'हृव' निति-शीघ्रं परिक्षितः:-परिगृहीतः परिषुद्धीतः यः स तथा तं 'सुसञ्जं'-सुन्दु प्रगुणं, 'वरिमय-  
सवद्वयद्वकवचिप्रयुक्तिः-वज्जगलयवरभूसणविरायंतं'-वरमधिनिषुक्ता वामिकास्तुः मनद्वः-  
कृतस्याहो यः स वामिकसबद्दः वद्वं कवचं-सन्नाहविशेषो यस्य स वदकवचकः, स एव वदकवचिकः, अयचा वर्षितः  
सबद्दः वदस्त्वकप्रणवन्धनात् कवचित्तश्च यः स तथा, मेदश्चेतेषां लोकतोऽवसेयः, एकार्याश्चेते शब्दाः सन्नद्वता-  
प्रकर्मियानायोक्ता इति, तथा उत्पीडिता-गाढीकृता कक्षा-हृदयरज्जुर्वेशसि यस्य स तथा ग्रेवेयकं-श्रीवामरणं वदं गले-

अपरकहु-  
ज्ञाताद्य०  
मरणादि-  
व्रीचा-  
नदानों  
व्याख्या-  
नम् ।

तचरकणापूरविराजितं पलयन्ते चूलसहुयरकयंधगारं' प्रलभ्यानि अवचलानि•करक(ट)न्यसताऽधोमुखकृचेकाः यस्य  
सः प्रलभ्यावचूलः मधुकरैः-भ्रमैर्मदजलगन्धाकृतेः कृतमन्धकारं येन स तथा, ततः कर्मधारयोऽतस्तं, चित्तपरिच्छेय-  
पच्छदं' चिशो-चिचित्रः परिच्छेको-लघुः प्रच्छुदो-चतुविशेषो यस्य स तथा ते, 'पहरणावरभरियज्ञुदसज्जं' प्रहरणानों-  
कुन्त्वादीनामावरणाना च-कहुटानां भृतो यः म तथा स च युद्धसज्जेश्वरि कर्मधारयः अतस्तं 'सच्छत्तं सञ्चं  
पैच्चामेलपरिमंडिययान्मिसामं' पञ्चभिरामय-सम्यो यः, 'ओसारियजमल-  
जुयलधंटं'-अवसारित-अवचलभित्तं यमलं-समं युगलं-द्वयं घटयोर्यन्न स तथा ते, 'विज्ञुपणिङ्गं च कालमेहं' व्यष्टा  
प्रहरणादीनामुज्जवलत्वेन विष्टकलपत्वात् इस्तिदेहस्य कालत्वेन महत्वेन वा मेघकलपत्वादिति, 'उत्पाइयपठवयं च  
चंकमंतं' चहुममाणमिचोत्तातिकर्पर्यते, पाठान्तरेण ओत्पातिकं पर्वतमित्य, 'सच्चतं'ति साक्षात्, 'मतं'ति-मदवनं 'गुल  
गुलंते', 'मणपवणजइण्वेगं' मनःपवनजयी वेगो यस्य स तथा ते, 'भीमं संगामियाजोनं' साक्षामिक आयोगः  
परिकरो यस्य स तथा ते, 'अभिसेकं हतिपरयणं पद्धिकरपंति २ उत्तरपेति'ति 'हयमहियपवरविविडियच्छयप  
लागे' हतमशिठा-अत्यर्थं हताः अथवा हताः प्रहरतो मरिथिताः मानमथनात् हतमशिताः तथा 'प्रबरा' विष्टिताश्वनहच्चजा-  
दयः पताकाश तदन्धा येषां ते तथा तुतः कर्मधारयोऽतस्तान्, यावत्करणात् 'किछुचोचगयपप्यो'ति हयं कष्टगतबीचित-  
वायनित्यर्थः, 'अम्बहे वा पठमनामे वा राय तिकहु' इति अस्माकं पवनामस्य च बलवच्चादिह सङ्गमे वयं वा मवामः  
पवनामो वा, नोमवेपामपीह संपुगे त्राणमस्तीतिकृत्वा-इति निश्चयं विष्टाय सम्प्रलभ्नः योद्धमिति शेषः, 'अम्बहे नो

पउमनाभे राय चिकड़े<sup>१</sup> बयमेवेह रणे जयामो न पद्मनाभो राजेति, यदि स्त्राविपे विजयनिश्चयं कुत्वा पद्मनामेन साद्व-  
 योद्दे सम्प्रालगिष्यथ ततो न पराजयं प्राप्तस्थ, निश्चयसारत्नात् फलप्राप्तेः, आह च—“शुभाशुभानि सर्वाणि, निमित्तानि  
 स्युरेकतः । एकतस्तु मनो याति, तदिक्षुदं जयावहम् ॥ १ ॥ तथा-स्याविश्वये रुतिष्ठानां, कार्यसिद्धिः परा वृणाम् । संयु-  
 यशुष्णचित्तानां, कार्ये संकीर्तिरेव हि ॥ २ ॥” शब्दविशेषणानि क्षचिद् हृत्यन्ते—‘सेयं गोखीरहरधचलं तणसोहिष्य-  
 सिदुचारकुंदेदुसनिगासं’, तणसोहिष्यन्ति गल्लिका सिदुचारो...निर्गुणिः, ‘निययस्त बलस्त हरिसज्जणं  
 रिउसेषणविणासकरं पञ्चजनणं’नित-पञ्चजनयामिघानं, ‘बेदो’ति—वेष्टकः एकवस्तुविषया पदपद्धतिः, स चेह धनुर्विषयो  
 जम्बूदीपप्रज्ञस्तिप्रसिद्धोऽच्येत्वयः, तथा—‘अइक्षगयनालचंददधृषुसनिकासं’ अचिरोद्धरो यो चालचन्द्रः—शुक्लपश्चिदि-  
 तीयाचन्द्रः तेनदधृतुपा च वक्रतया सत्तिकाशं—सदृशं यच्चतथा ‘वरमहिसदरियदप्यदधृणसिगगराइयसारं’ वरमहिपस्य  
 हस्तदपितस्य-सञ्जातदध्यपतितयस्य यानि दृढानि च शृङ्गाग्राणि ते रचितं सारं यच्चतथा, ‘उरगवरपवशगवलपवर  
 परहुभमरकुलनीलधंतघीयपद्मं’ उरगवरो—नगवरः प्ररगवालं—वरमहिपश्चृं प्रवरपश्चृतो—वरकोकिलो अमरकुलं—मधुकरनिकरो  
 नीली—गुलिका एतानीव लिंगं कालकानितमत् इमात्रमित्र इमात्रमित्र धौते च—निमेलं पृष्ठं यस्य  
 तच्चाया, ‘निउणोवियमिसिमिसितमणिरण्यं वेदियाजालपरिक्वित्वं’ निषुणेन शिलितानां ओपितानां—उज्जवलितानां मणिरत्न-  
 घणिटकानां यजालं तेन परिक्षिसं—वेदितं यत्तिरुणकिरणतवणिज्जयद्विच्छयं’ वहिदिव-विद्युदिव तरुणः—

अपरकहुा-  
शाराय०  
वासुदेवस्य  
गंखजन्द-  
शतणादि-  
ष्टम् ।

२०५०

भीजाता-  
धर्मकथाहे

॥ २२९ ॥

॥ २२९ ॥

प्रत्यग्ना: किरणः परस्य तत्त्वया तस्य तपनीपरस्य सम्बन्धीनि चदानि चिन्दानि-लाभठुनानि यत्र तत्त्वया । 'ददरमलयगिरिसि-

हरकेमरचालपद्मचंद्रिंशं' ददरमलयगिरिसि तत्सम्बन्धीनि ये केमरचालवाला:—  
सिंहस्कन्धनमरपुच्छुकेशः अर्द्धचन्द्राश्च तलुष्णानि चिह्नानि यत्र तत्त्वया, 'कालहरियरचपोयमुकिल्लचहुण्डालणिसंपिन्दजीयं'  
कालादिवणीः या लायवः:-शुरीरान्तर्बंधस्तामिः सम्पनदा-पद्मा जीवा-प्रत्यञ्जा। यस्य तत्त्वया 'जीवियान्तर्करं' ति शश्रण-  
मिति गम्यते, 'संभगे' लायदि, सम्पदानि प्राकारो गोपुराणि च-प्रतोदयः अद्वालकाश्च-प्राकारोपरिस्थानविशेषाः चरिका-  
च-नगरप्राकारान्तरेऽप्तहस्तो मार्गः तोरणानि च यस्यां सा तथा, पर्यस्तिवानि-पर्यस्तीकृतानि सर्वतः खिसानि हस्यर्थः प्रवर-  
मवनानि श्रीगुहाणि च-भाण्डागाराणि यस्यां सा तथा, तरः पदद्रयस्य कर्मचारयः, 'सरसरस्त' ति-अनुकरणशब्दोऽप्यमिति,  
'उद्धपडसारङ्ग' चि सयः लोनेत आदौ-ऐश्वर्याटको उचरीयपरिधाने यस्य स तथा, 'अवचूलगवत्थनियपथे' चि अन-  
चलं-यथोमुखचूलं सुकलाश्चलं यथा मनवीत्येवं चक्रं निविसितं येन स तथा, 'तं एवमविगद न तिथं ते ममाहितो  
इयाणि 'भयमतिथ्यति तत्-तस्मादित्थमपि गते अस्मिन् कार्ये नास्ति अयं पक्षो यदुर ते-तत्र मतो भयमस्ति-मवति ।  
तेणं कालेणं ३ धायति संहे दीवे पुरचित्तमद्देव भारहे चासे चंपा णामं णायरी होत्था, पुण्णाभ्वेदे चेतिए,  
तत्थं णं चंपाए नयरीए कविले णामं चासुदेवे राया होत्था, महया हिमवंतो यणा ओ; तेणं कालेणं २  
मुणिसुचुन्द्रए अरहा चंपाए पुण्णाभ्वेदे समोसदेव, कपिले चासुदेवे घर्ममं सुणेति, तते णं मे कविले चासुदेवे

वासुदेवस्स इमेयाहृवे अहभिथए समुपज्जितया—कि मणो धायहसंडे दीवे भारहे वासे दोचे वासुदेवे  
समुपपणो ? जस्स पां अयं संखसहे नमंपिच मुहवायपूरिते वियंभति, कविले वासु० सहाति॑ सुणो॒,  
उणिचुब्बए अरहा कविलं वासुदेवं पर्वं च०—से पूणं ते कविला वासुदेवा ! सम अंतिए घमं पिसामे॒  
मणस्स संखसहे आकणिणता॑ इमेयाहृवे अहभिथए—कि मने जाव वियंभह, से पूणं कविला वासुदेवा !  
अयमटे॒ समटे॒ ? हंता ! अतिथ, नो खलु कविला ! पर्वं भूयं वा॒ झ जन्नं एगे उगे एगे समए उवे॒  
अरहंता॒ वा॒ चक्षवही॒ वा॒ यलदेवा॒ वा॒ वासुदेवा॒ वा॒ उपज्जितु॑ उपज्जिति॑ उपज्जितसंस्ति॑ वा॒, एवं खलु॒  
आरहंता॒ वा॒ चक्षवही॒ वा॒ यलदेवा॒ वा॒ वासाओ॑ हहिथणाउरणयराओ॑ पंडुस्स रणो॑ सुणहा॑ पंडवचाणा॑  
वासुदेवा॑ ! जंबुदीवाओ॑ भारहाओ॑ चासाओ॑ हहिथणाउरणयराओ॑ पंडुस्स रणो॑ सुणहंसातिए॑ देवेण॑ अमरकंकाणपरि॑ साहरिया॑, तते पां  
आरिया॑ दोवती॑ देवी॑ तत्व पउमनाभस्स रणो॑ गुवसंगतिए॑ देवेण॑ अमरकंकं रायहाण॑ दोवती॑ देवी॑ ए कूचं  
से कणहे॑ वासुदेवे॑ पंचाही॑ पंडवेहि॑ सद्धि॑ अप्पछट्टे॑ छही॑ रहेहि॑ अमरकंकं रायहाण॑ दोवती॑ अयं  
हव्यमागए॑, तते पां तस्स कणहस्स वासुदेवस्स पउमणा॑ भेण॑ रणो॑ सद्धि॑ संगामं, संगामेमाणस्स अयं  
संखसहे॑ तत्व मुहवाया॑ हय हट्टे॑ कंते॑ इहेव वियंभति, तए पां से कविले॑ वासुदेवे॑ मुणिचुब्बवयं चंदति॑ २  
पर्वं च०—गच्छामि॑ पां अहं भंते॑ ! कणहं वासुदेवं उत्तमपुरिसं पासामि॑, तए पां मुणिचुब्बवयं  
अरहा कविलं वासुदेवं पर्वं च०—नो खलु॑ देवा० ! पर्वं भूयं वा॒ झ जणो॑ अरहंता॒ वा॒ अरहंता॒ पासंति॑, चक्षवही॒  
वा॒ चक्षयहि॑ पासंति॑, यलदेवा॒ वा॒ खलदेवं पासंति॑, वासुदेवं पासंति॑; तहविय पां तुमं कणहस्स

अपरकहु-  
जाताद्य० कपिल-  
वासुदेवं-  
समाधा-  
नादि-  
स्त्रृप्-  
सुत्रम्-  
य० २३० ॥

नवाही- या सुदेवस्स लवणसमुदं मज्जंमज्जेणं वीतिवयमाणस्स सेयापीयाहं धयगाति पासिहिषि, तते णं से कविले  
 २० ३० वा सुदेवे मुणिसुन्वयं चंदति ३, हलिथांधं दुर्लहति ३, सिगं ३, जेणोव वेलाउले तेणोव उ० ३,  
 भीड़ाता- वा सुदेवस्स लवणसमुदं मज्जंमज्जेणं वीतिवयमाणस्स सेयापियाहि धयगाति पासति ३, पूं वयह- एस  
 अर्थकथाहे णं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कणहे चासुदेवे लवणसमुदं मज्जंमज्जेणं वीतीवयति तिकहुं पंचयन्तं संखं  
 परासुसति मुहवायपुरियं करेति, तते णं से कणहे चासुदेवस्स संखसदं आयतेति ३,  
 ॥ २३० ॥ पंचयनं जाव पूरियं करेति, तते णं दोवि चासुदेवे संखसदसामायारि करेति, तते णं से कविले चासुदेवे  
 जेणोव अमरकंका तेणोव उ० ३ अमरकंक रायहाणि संभगतोरणं जाव पासति ३, पउणणां एवं व०-  
 किंदं देवाणुटिपया ! एसा अमरकंका संभग जाव सन्निवहया १, तते णं से पउमणाहि कविले चासुदेवं एवं  
 व०-पूं वलुं सामी ! जंयुदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हलवमागम्म कणहेणं चासुदेवेणं  
 तुड्डे परिमूय अमरकंका जाव सन्निवाडिया, तते णं से कविले चासुदेवे पउमणाहस्म अंतिए एषमट्ठ-  
 सोचा पउमणाहं एवं व०-हं भो ! पउमणाभा ! अपतिथपतिथया किंदं तुमं न जाणसि मम सरिस-  
 पुरिसस्स कणहस्स चासुदेवस्स विटिपयं करेमागे ?, आसुरते जाव पउमणाहं पिठिवसयं आणवेति,  
 १३२ ॥ तते णं से कणहे चासुदेवे लवणसमुदं मज्जंमज्जेणं वीतिवयति, ते पंच पड्डवे एवं व०-गच्छह णं

तुङ्गे देवा० ! गंगामहानदि उत्तरह जाव ताव आहं सुक्षिण्यं लवणाहिवहं पासाभिमि, तते णं ते पंच पंडवा  
कण्हेण वासुदेवेण एवं युत्ता समाणा जेणेव गंगामहानदी तेणेव उ० २ एगाडियाए पावाए मगाणगवेसणं  
करंति २ एगाडियाए नावाए गंगामहानदि उत्तरंति २ अणगमणणं एवं वयन्ति-पहूं पावा० ! कण्हे  
वासुदेवे गंगामहाणदि वाहाहिवं उत्तरितए उदाहुणो पश्चू उत्तरितए तिकडु एगाडियाओ नावाओ णमेति  
२ कण्हे वासुदेवे चुष्टियं लवणाहिवहं पासति २ जेणेव  
२ कण्हे वासुदेवे पडियालेमाणा २ चिरंति, तते णं से कण्हे वासुदेवे चुष्टियं लवणाहिवहं पासति २, एगाडियं अपासमाणे  
गंगा महाणदी नेणेव उ० २, एगाडियाए सङ्खओ समंता मगाणगवेसणं करेति २, एगाडियं आद्वजोगणं च  
एगाए याहाण रहं सतुरगं ससारहि गेणहह एगाए वाहाए गंगा महाणदि वासुदेवे गंगामहाणदीए वहुमउझदेव भागं संपत्ते  
विजिळतं उत्तरितं पयते याचि होत्था, तते णं से कण्हे वासुदेवस इमे एयारुवे अऽभिथिए  
समाणे संते तंते परितंते यद्देमेण जाए याचि होत्था, तते णं कण्हसस वासुदेवस इमे एयारुवे अऽद्वजोगणं  
जाव समुपज्जित्या-अहो णं पंच पंडवा महायलवगा जेहिं गंगामहाणदी वासुदेव जाव णो पडिसेहिए,  
व चिकिणणा। याहाहिवं उत्तिणा, इच्छतएहि णं पंचहि पंडवेहि पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए,  
तते णं गंगादेवी कण्हसस वासुदेवस इमं एयारुवे अऽभिथियं जाव जाणित्वा धाहं वितरति, तते णं से  
कण्हे वासुदेवे मुहुत्तंतरं समासासति २, गंगामहाणदि वावाहिट जाव उत्तरति २, जेणेव पंच पंडवा तेणेव  
उवा० पंच पंडवे एवं व०-अहो णं तुङ्गभेद्वे हिं गंगामहाणदी वासुदेव जाव

अपरकहा-  
शाता व्य० पाण्डवै-

उत्तिणा, इच्छंतपर्हि तुऽभेद्हि पुम जाव णो पडिसेहि, तते णं ते पंच पंडवा कण्हेण वासुदेवेण एवं  
बुत्ता समाणा कण्हं वासुदेवं पंच च०-एवं खलु देवा० ! अम्हे तुऽभेद्हि विसज्जिया समाणा जेणेव गंगा  
महाणदी तेगेव उवा० २ एगहियाए मगगणनवेसणं तं चेव जाव णसेमो तुऽभेद्हि पडिवालेमाणा चिट्ठामो,  
तते णं से कण्हे वासुदेवे तेसि पंचणहं पांडवाणं एयमठं सोचा पिसम्म आसुरुते जाव तिवलियं एवं च०-  
अहो णं जया मए लवणसमुदं दुवे जोयणसप्तसहस्रा विनिछणं चीतीवहृता पउमणाभं हयमहिय जाव  
पडिसेहित्ता अमरकंका संभगा० दोवती साहित्य उवणीया तया णं तुऽभेद्हि मम माहपं ण विषणायं  
इयाणि जापिरसह तिकहु लोहदंडं परासुसति, पंचणहं पंडवाणं रहे चरेति २, पिनिवसए आणवेति ३, तत्थ  
णं रहमष्टणे णामं कोहु पिपिहें, तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव वा सए खंधावारे तेणेव उवागच्छह ३, सएणं  
खंधावारेण सद्धि अभिसमझागए यावि होत्था, तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव चारवहृणयरी तेणेव उवा०  
२ अणपविसति ॥ सूत्रम्-१३२॥ तते णं से पंच पंडवा जेणेव हिथणाउरे तेणेव उवागच्छनित २ जेणेव पंहु  
तेणेव उ० २ करयल एवं च०-एवं खलु ताओ ! अम्हे कण्हेण पिनिवसया आणत्ता, तते णं पंडुराय  
पंडवे एवं च०-कहणं पुत्रा ! तुऽभेद्हि वासुदेवेण पिनिवसया आणत्ता ?, तते णं ते पंच पंडवा पंडुराय  
एवं च०-एवं खलु ताओ ! अम्हे अमरकंकातो पडिपियत्ता लवणसमुदं दोक्षि जोयणसप्तसहस्राहं वीति-  
वतित्ता(स्था) तए णं से कण्हे अम्हे एवं चपामि-गच्छह णं तुऽभेद्हि देवा० ! गंगामहाणदिउत्तरह जाव चिठ्ठह

ताव आहं पर्यं तस्मैव जाव चिट्ठामो, तते णं से कणहे वासुदेवे चुट्ठियं लवणाहिवं दहुण तं चेव सबंधं  
नवरं कणहस्स निंता ण ऊऱ (युच)ति जाव अम्हे पिनिवसप आणवेति, तप णं से पंच पंडवे  
पर्यं व०-तुहुणं पुता ! कण्यं कणहस्स वासुदेवस्स विरिपर्यं करेमाणेहि, तते णं से पंहृ गाया कोंति देविं  
सहायेति २ पर्यं व०-गच्छ णं तुमं देवा० ! यारवतिं कणहस्स वासु० पिनिवेदेहि-पर्यं खलु देवा० ! तुम्हे०  
पंच पंडवा पिनिवस्या आणता तुमं ज णं देवा० ! दाहिणहुभरहस्स सामी तं संदिसंतु णं देवा० ! ते  
पंच पंडवा कण्यरं दिस्स वा विदिसं या गच्छंतु०, तते णं सा कोंती पंहुणा० एवं युता समाणी हतिथं  
व॒ चुर्वहति २ जहा हेटा जाव संदिसंतु णं पितथा ! किमागमणपओपणं०, तते णं सा कोंती कणहं वासु०  
देवं पर्यं व०-एवं खलु पुता ! तुमे पंच पंडवा पिनिवस्या आणता तुमं ज णं दाहिणहुभरह जाव वि-  
दिसं व० गच्छंतु०, तते णं से कणहे वासुदेवे कोंति देविं एवं व०-अपूर्वयणा णं पितथा ! उत्तमपुरिसा  
वारुदेवा वलदेवा चकायटी तं गच्छंतु णं देवाणु० ! पंच पंडवा दाहिणिलं चेयालिं तत्य पंहुमहुरं पिनिवेस्तु०  
ममं अदिडसेवगा भवंतु सिक्कु कोंति देविं सकारेति सम्माणेति जाव पडिविसज्जेति; तते णं सा कोंती  
देवी जाव पंडुस्स एयमदं पिनिवेदेति, तते णं पंहृ पंच पंडवे सदायेति २ एवं व०-गच्छह णं तुम्हे पुता !  
दाहिणिलं चेयालिं तत्य णं तुन्हे पंहुमहुरं पिनिवेसेह, तते णं पंच पंहुवा पंहुस्स रणो जाव तद्वति पडिव-  
सुणेति सवलयाहणा हयगण० हतिथणाउराजो पडिणिकवामंति २, जेणेव दक्षिणापिण्डे वेयाली तेणेव

अपरकहु-  
ड्हारा छा-  
य० पाण्डवा-  
दीक्षादि-  
वर्णन-  
खत्रम् ।

उथा० २ पंडुमहुरं नगरिं निवेसेति २ तत्थ णं ते विपुलभोगसम्मितिसमणगया यावि होत्था ॥ सूत्रम्-  
१३३ ॥ तते णं सा दोवर्है देवी अक्षया कथाहै आक्षणसत्ता जाया यावि होत्था, तते णं सा दोवती देवी  
णवणहै मासणं जाव सुरहैं दारणं पगया सूमालं णिभवत्यारसाहस्स इमं एयारुवं जम्हा णं अम्हं  
एस दारए पंचणहैं पंडवाणं पुते दोवतीए अच्चए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जं पंडुसेणे, तते णं  
तस्स दारए पंचणहैं पंडवाणं करेह पंडुसेणति, यावत्तर्दि॑ कलाऊ॒ जाव भोगसमत्थे जाए  
जुवराया जाव विहरति, धेरा समोसहा परिसा निगगया पंडवा निगगया धम्मं सोचा एवं च०-जं णावरं  
देव्या० ! दोवत्ति देवीं आपुक्त्तामो पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो ततो पचङ्गा देव्या० ! अंतिए सुंहे भवित्ता  
जाव पञ्चवयामो, अहासुहं देव्या० !, तते णं ते पंच पंडवा जेनोव सए गिहे तेणोव उच्चा० २ दोवत्ति देवीं  
सष्टावेति २ एवं च०-एवं खलु देव्या० ! अम्हेहि॑ धेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पञ्चवयामो तुमं देवाणु-  
पिए॑ ! किं करेसि॑ ?, तते णं सा दोवती देवी॑ ते पंच पंडवे॑ एवं च०-जति॑ णं तुम्हे॑ देव्या० ! संसारभउ-  
चियगा पञ्चवयहै ममं के अणो आलंबे चा जाव भविससति॑ ?, अहंपि य णं संसारभउचियगा देवाणु-  
पिष्टहि॑ सद्दि॑ पञ्चवतिससामि॑, तते णं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव रज्जं  
पसाहेमाणे विहरति॑, तते णं ते पंच पंडवा दोवती य देवी अक्षया कथाहैं पंडुसेणं रायाणं आपुचंडति॑  
तते णं से पंडुसेणे राया कोइचियपुरिसे सदावेति॑ २ एवं वयासी-चित्पामेव झो॑ ! देवाणु॑ ! निकल-  
॥ २३२ ॥

मणाभिसेयं जाव उच्छवेह पुरिससहस्राहणीओ सिवियाओ उच्छवेह जाव पचोरुहंति जेणेव थेरा  
तेणेव ० आलित्ते णं जाव समणा जाया चोहस्स यासाणि छड्डमदसमदु-  
चालसेहि मासङ्गमासाचमणोहि अट्पाण भावेमाणा विहरंति ॥ २३४ ॥ तते णं सा दोबती देवी  
सीयातो पचोरुहंति जाव पच्यतिया सुन्वयाए अज्ञाए सिरिस्पीयत्ताए दलयति, हकारस्स अंगाहं  
अहिज्जह यहूणि यासाणि छड्डमदसमदुयालसेहि जाव विहरंति ॥ सुत्रम्-१३५ ॥ तते णं थेरा भगवंतो  
अप्पाक्याहं पुङ्गमहुरातो णपरीतो सहसंयवणाओ उज्जाणाओ पडिणिकवर्मंति २, वहिया जणावय-  
विहारं विहरंति, तेणं कालेण २, अरिहा अरिदुनेमी जेणेव सुरद्वाजणवए तेणेव उया० ३, सुरद्वाजणवयंसि  
संजमेणं तयसा अट्पाण भावेमाणे विहरंति तते णं यहुजणो अनमवस्स एवमातिकवह०-एवं खल्ल  
देवाणुटिप्या ! अरिहा अरिदुनेमी सुरद्वाजणवए जाव वि�०, तते णं से ऊहिडिल्लपामोकवा पञ्च अणगारा  
यहुजणस्स अंतिए पयमठं सोचा अनमन्नं सहावेति ३, एवं य०-एवं खल्ल देवाणु० ! अरहा अरिदुनेमी  
पुन्वाणु० जाव विहरह, तं सेयं खल्ल अम्हं थेरा आपुनित्ताआरहं अरिदुनेमि वंदणाए गमित्तए, अन्न-  
मचरस्स पयमठं पडिचुणेति २ जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उया० ३, थेरे भगवंते चंदंति णमंसंति २ चा,  
एवं य०-इच्छामो णं तुङ्मेहि अन्मणुद्वाया समाणा अरहं अरिदुनेमि जाव गमित्तए, अहासुहं देवा० १,  
तते णं ते ऊहिडिल्लपामोकवा पञ्च अणगारा थेरहि अन्मणुद्वाया समाणा थेरे भगवंते चंदंति णमंसंति २

अपरकक्षा-  
ज्ञाता व्यौ-  
पाणी-  
नामो-

धेराणं अंतियाओ पडिपिकवमंति मासंमासेणं अगिविलत्तेणं तवोकमेणं गामाणुगामं दूर्जमाणा  
जाव जेणेव हृथकर्त्त्वे नये तेणेव उचा० हृथकप्रस्त वहिया सहसंयवणे उज्जाणे जाव विहरंति, तते णं  
ते जुहिडिलवज्ञा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पदमए पोरसीए सज्जायं करंति वीयाए एवं जहा  
गोपमसामी णवरं जुहिडिलं आपुचंति जाव अडमाणा वहुजणसदं पिसामेंति, एवं खलु देवा० ।  
आरहा अरिट्टेमी उज्जितसेलस्तिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचवहि उचीसेहि अणगारसएहि साद्दि-  
कालगए जाव पहीणे, तते णं ते जुहिडिलवज्ञा चत्तारि अणगारा वहुजणसस अंतिए एयमहं सोबा हत्थ-  
कटपाओ पडिपिकवमंति २, जेणेव सहसंयवणे उज्जाणे जेणेव जुहिडिले अणगारे तेणेव उचा० ३, भत्त-  
पाणं पच्चुवेयवंति २, गमणागमणसं पडिकमंति २, एसणमणेसणं आलोएंति २, भत्तपाणं पडिदंसेति २,  
एवं च०-एवं खलु देवाणुपिया ! जाव कालगए तं सेयं खलु अम्हं देवाणुपिया ! इमं पुढवगहियं  
भत्तपाणं परिडुवेता सेतुज्ञं पठवयं सणियं सणियं दुरुहितए संलेहणाए झूसणा सियाणं कालं अणवकं-  
खमाणाणं विहरितणतिकदु अणगमणसस एयमहं पडिचुणेंति ३, तं पुढवगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्टवेति ३,  
जेणेव सेतुज्ञं पठवए तेणेव उचागच्छइ २ चा, सेतुज्ञं पठवयं दुरुहिति ३, जाव कालं अणवकंखमाणा  
विहरंति । तते णं ते जुहिडिलपामोकवा एवं अणगारा सामाइयमातियाति चोहस पुढवाहं बहुणि  
वासाणि दोमासिपाए संलेहणाए अत्ताणं छोसिता जस्ताणं कीरति पारगभावे जाव तमहमाराहेति २ ॥ २३३ ॥

अण्ठे जाव केवल वरणाणंदसणे समुदपत्रे जाव सिद्धा ॥ सूत्रम्-१३६ ॥ तते णं सा दोवती अज्ञा  
 सुन्ययाणं अक्षियाणं अंतिः सामाइयमहियाहं एकारस अंगार्ति अहिक्वति २ वहृणि वासाणि मासियाए  
 संलेहणाएः आलोइयपडिकंता कालमासे कालं किचा घंभलोए उच्चवाचा, तत्थ णं अहिप्रतियाणं देवाणं  
 दम सागरोवमाहं डिती प० तत्थ णं दुवतिसस देयसस दस सागरोवमाहं डिती पवता, से णं भेते ।  
 दुवाए देवे ततो जाव महाविदेहे वासे जाव अंतं काहिति । एवं खलु अंकु । समणेण सोलमस्स अथमठं  
 पणाते तियेमि ॥ सूत्रम्-१३७ ॥ सोलसमं नायउद्दयणं समतं ॥ १७ ॥

‘एगढिय’ चित नोः ‘नूर्मंति’ चिति-गोपयन्ति, शान्तः:-सिवा ॥ वान्तः:-गरकाण्डकाहावान् ॥ जातः: परिवान्तः:-सर्विया  
 लिकः एकार्पिका वेतो, ‘हच्छतपर्हि’ ति इच्छुया कयाचिदित्यर्थः, ‘चेयालीए’ ति वेलारटे इति । इहापि घृणे उपनयो न  
 इयते, एवं चासो द्रष्टव्यः—“युधुंपि वरकिळेसो नियाणदोषेण दृसिओ संतो । न सिचाय दोवतिए जह किळ दुक्कमालि-  
 याजमे ॥१॥” अयता—“अपशुसमपत्तीए पते दाणं मवे अण्ठयाप । जह कहुपतुंयदाणं नामसिरिभवंमि दोगदए ॥२॥”  
 ति [युधुरपि वपःकुणो निदानदोषेण दृपिवः चन् । न मिशाय द्रैपया यथा दुक्कमारिकाजन्मनि ॥ १ ॥ अमनोडुमगरयो  
 पात्रे दाणं मवेदनयाप । यथा कहुपतुम्यदाणं नामश्रीपत्रे द्रैपया अवि ॥२॥] समातं पोडुग्रावाइपयनविरामपृ ॥ १६ ॥

## १७-श्रीअश्वस्त्र्यं ज्ञाताट्ययनम् ।

अथ सप्तदशाट्ययनविवरणम् ॥ १७ ॥

१३४ ॥

अथ मपदां व्याख्यायते, अस्य च पूर्णं सहायमभिप्रवच्यः—इदानन्तराइपयते निदानात् कुतिसतदानादा अनर्थ उक इह विविन्दिरेम्योऽनियन्त्रितेभ्यः स उच्यते, इत्येवंमध्यद्विप्रिदम्—

जति णं भंते ! समणों भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण सोलसमस्तस पायद्वायणरस अपमट्टं पणते सत्तरसमस्तणं पायद्वायणरस के अडे पक्षते ? , एवं चलु जंत्रु ! तेणं कालेणं ३ हित्यसीसे नयरे होत्या, वणाओ, तत्य णं कणगकेऊणाम् राया होत्या, वणण ओ; तत्य णं हित्यसीसे नयरे चहवं संजुत्तणावायागियगा परिवसंति अहु जाव व्यहजणरस अपरि चूया यावि होत्या, तते णं तेसि संजुता-णावायागियगां अचया एगयओ जहा आरहणसमुदं अणेगाइ जोयणसयाहं औगाढा यावि होत्या, तते णं तेसि जाव व्यहण उपानियसयाति जहा मांगदियदारगाणं जाव कालियवाए य तत्य समुहितए तते णं सा णावा तेण कालियवाएं आयोलिक्षमाणी ३, संचालिक्षमाणी ३, संबोहित्वमाणी ३, तत्येव परि भमति; तते णं से पिज्जामए एडमतीते पाड़सुलीते पाड़सुण्णो मूढदिसाभाए आए

अश्वाख्य-

शारा व्ययो-

सप्तदशा-

ष्ययन-

संचन्व-

विवरण-

चक्रम् ।

॥ २३४ ॥

याचि होत्था, ण जाणाह कपर देसं चा, दिसं चा, विदिसं चा; पोयचहणे अवहित चिकडु औहयमणसंकर्पे  
जाच क्षियायति, तते णं ते बहेवे कुचिंधधारा य, कणाधारा य, गढ़िभृगा य, संजुताणायाचाणियगा य;  
जेणेव से णिजामए तेणेव उचाऽ॒२, एवं च०-किं तुमं देवा० ! ओहयमणसंकर्पा जाच क्षियायह ?,  
तते णं से णिजामए ते बहेवे कुचिंधधारा य ४, एवं च०-एवं चलु देवा० ! णाढमतीते जाच अवहिए चिकडु  
ततो ओहयमणसंकर्पे जाच क्षियामि, तते णं ते कणाधारा, तस्स णिजामयस्स अंतिए पयमइं सोचा  
णिमम्म भीया ५, पहाया कपयवलिकमा करयल बहूणं इंदाणा य खंधाण य जहा माल्हिनाए जाच उचाय-  
माणा २, चिंडति, तते णं से णिजामए ततो मुहुत्तंतरस्स लङ्घमतीते३, अमूढदिसाभाए जाए याचि  
होत्था, तते णं से णिजामए ते बहेवे कुचिंधधारा य ६, एवं च०-एवं लङ्घ अहं देवा० ! लङ्घमतीए जाच  
अमूढदिसाभाए जाए, अम्हे णं देवा० ! कालियदीवंतेण संचुडा, एस णं कालियदीवे आलोकति, तते णं ते  
कुचिंधधारा य ७ तस्स णिजामयस्स अंतिए सोचा हळवुडा पयकिल्वणाणुकूलेणं चापणं जेणेव कालीयदीवे  
तेणेव उचागच्छंति २ पोयचहणं लंयेति २ एगटियाहिं कालियदीवं उचरंति, तत्थ णं बहेवे हिरण्णगरे य  
चुवण्णगरे य रणगरे य बहरगरे य बहवे तत्थ आसे पासंति, किं ते ?, हरिरेणुसोणिसुत्तगा आईण-  
वेहो, तते णं ते आसा ते वाणियए पासंति तेसि गंधं अरथायंति ३, भीया तत्था उचिवरगमणा;  
ततो अणेगाईं जोइणाति उङ्भमंति, ते णं तत्थ पउरतणपाणिया निरुचिवरगा

सुहं सुहेणं चिहरंति, तए णं संजुत्ताणाचाचाणियगा अणामणां एवं च०-किपंहं अम्हे देवा० ! आसेहि॑ ?  
 इमे णं यहेवे हिरण्णगरा य, सुचणागरा य, रणगरा य, वहरागरा य; तं सेयं खलु अम्हं हिरण्णसस य,  
 सुचणसस य, रणसस य, वहरसस य, पोयवहणां भरित्तए निकहं पडिसुणेंति ३,  
 हिरण्णसस य, सुचणसस य, रणसस य, वहरसस य, अणसस य, कहसस य, पाणियसस य  
 पोयवहणं भरेति ३, पयकिलणाणकूलेणां वाएणं जेणेव गंभीरपोयवहणपट्टेणेव उ० २, पोयवहणं लंबेति  
 ३, सगडीसागडं सञ्जेति ३, तं हिरण्णं जाव चहरं च पगटियाहि॑ पोयवहणाओ संचारेति ३, सगडीसागडं  
 संजोहंति ३, जेणेव हिथसीसए नगरे तेणेव उवा० ३, हिथसीसयसस नयरसस चहिया अगुज्ज्वाणे सत्थ-  
 गिवेसं करेति ३, सगडीसागडं भोदंति ३; महत्थं जाव पाहुं गेणहंति ३, हिथसीसं च नगरं अगुपविसंति  
 ३, जेणेव कणगकेऽ तेणेव उ० ३, जाव उवणेति, तते णं से कणगकेऽ तेस्ति संजुत्ताणाचाचाणियगाणं तं  
 महत्थं जाव पडिच्छेति ॥ सूत्रम्-१३८॥ ते संजुत्ताणाचाचाणियगा एवं च०-तुव्वेणं देवा० । गामागर जाव  
 आहिडह लचणसमुदं च अधिकखणां ३, पोयवहणेणां ओगाहह तं अतिथ याहं केह भे कहिचि अच्छेरए  
 दिढुन्वे॑ ? तते णं ते संजुत्ताणाचाचाणियगा कणगकेऽ एवं च०-एवं खलु अम्हे देवा० ! इहेव हिथसीसे  
 नगरे परिचामो तं चेव जाव कालिपटीवंतेणां संचढा, तथं णं चहवे हिरण्णगरा य जाव बहवे तथ आसे,  
 किते॑ ? हरिरेणु जाव अणेगाहं जोयणाहं उभमंति, तते णं सामी ! अम्हेहि॑ कालियदीवे ते आसा अच्छेरए ॥ २३५ ॥

विद्धुन्वे, तते णं से कणगकेऊ तेसि संजतगाणं अंतिए पृथमदं सोचा ते संजुत्तए एवं च०-गच्छह णं  
तुङ्मे देवा० । मम कोहुवियपुरिसेहि सद्बिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह, तते णं से संजुत्ता० कणग-  
केऊ एवं देवा० । मम कोहुवियपुरिसेहि सद्बिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह, तते णं कणगकेऊ कोहुवियपुरिसे-  
हि सद्बिं एवं च०-पृथम तिकडु आणाए विणएण वयणं पडिसुणेति, तते णं कणगकेऊ कोहुवियपुरिसे-  
हि सद्बिं कालियदीवाओ भासे आणेह, तेवि  
सदावेति २ एवं च०-गच्छह णं तुङ्मे देवा० । संजुत्तएहि सद्बिं कालियदीवाओ भास-  
पडिसुणेति, तते णं ते कोहुविय० सगडीसागडं सज्जेति २, तत्थ णं वहूणं चीणण य, वल्लकीण य, भास-  
रीण य, कर्त्तुभीण य, भंभाण य, छहभासरीण य, विचित्रधीणण य; अनेसि च वहूणं सोर्तिदियपाउगाणा०  
दठवाणं सगडीसागडं भरेति २, वहूणं किणहाण य जाव सुकिलाण य कट्टकमाण य ४, गंथिमाण य ४,  
जाव संयाहमाण य अनेसि च वहूणं चार्किखदियपाउगाणं दठवाणं सगडीसागडं भरेति २, वहूणं कोहु-  
पुडाण य केयहुडाण य जाव अनेसि च वहूणं याणिदियपाउगाणं दठवाणं सगडीसागडं भरेति २,  
यहूरस खंडस्स य, गुलस्स य, सकराए य, मच्छंडियाए य, पुफुतरपउमुतर० अनेसि च जिहंभदियपाउगाण-  
दठवाणं भरेति २, वहूणं कोयवयाण य, कंयलाण य, पावरणाण य, नवतयाण य, मलयाण य, मस्त्राण य,  
सिलवदाण जाव हंसगढभाण य अनेसि च फार्सिदियपाउगाणं दठवाणं जाव भरेति २, सगडीसागडं  
जोएति २, जेणेव गंभीरए पोयडाणे तेणेव य उवा० ३, सगडीसागडं मोएति २, पोयवहूणं सज्जेति ३,  
तेसि उकिडाणं सद्वकरिसरसरस्वगंधाणं कट्टस्स य, तणस्स य, पाणियस्स य, तंदुलाण य, समियस्स य,

१७ श्री-  
अश्वाख्य-  
ज्ञाताच्य०  
श्रोत्रेन्द्रि-  
यादास०

वर्णन-  
काशादि-  
वर्णन-

गोरमस्स य जाव अक्रेस्मि च यहुणं पोयवहणपाउगणां भर्ति ३, दक्षिणाशुक्लेणं वारणं  
लेणेव कालियदीवे तेणेव उवा० ३, पोयवहणं लंयेति ३, ताहं उक्किडाइं सहफरिसरसरवांघाहं पुगड़ि-  
याहि कालियदीवे उत्तारेति ३, जहि० ३, च एं ते आसा आसयंति चा, चिंडति चा, सर्वंति चा, तुयहंति  
चा; तहि० २ च एं ते कोडुयियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव विचित्रवीणातो य अक्राणि बहुणि सों-  
दियपाउगणापि य दठवाणि समुहीरमाणा चिंडति, तेसि परिपेरंतेण पासए ठबैति २, पिचला पिएकंदा  
तुसिणीया चिंडति, जत्थ० २ ते आसा आसयंति चा तत्थ तत्थ एं ते कोडुविय० यहुणि  
किणहाणि य ५ कट्टकम्माणि य जाव संधाइमाणि य अक्राणि य चार्किवादियपाउगणाणि य दक्षवाणि  
ठबैति तेसि परिपेरंतेण पासए ठबैति २, पिचला पिएकंदा० चिंडति जत्थ० २, ते आसा आसयंति ४, तत्थ  
३, एं तेसि यहुणं कोडुयुडाण य अक्रेस्मि च घार्णिदियपाउगणां दठवाणं पुंजे य पियेरे य कर्तृति ३, तेसि  
परिपेरंते जाव चिंडति जत्थ० २, एं ते आसा आसयंति ४, तत्थ० ३, गुलस्स जाव अक्रेस्मि च यहुणं जिहिभ-  
दियपाउगणां दठवाणं पुंजे य निकोरे य कर्तृति २, वियरए ल्लंणंति ३, गुलपाणगास्स लंडपाणगास्स पार-  
पाणगास्स अक्रेस्मि च यहुणि पाणगाणं वियेरे भर्ति० ३, तेसि परिपेरंतेण पासए ठबैति जाव चिंडति० जहि०  
२, च एं ते आसा आस० तहि० २, च ते यहुवे कोययपा य जाव सिलाचाहया अणाणि य कासिंदिया-  
पाउगाहं अत्युपप्रचल्युपाहं ठबैति ३, तेसि परिपेरंतेण जाव चिंडति० तते एं आसा जेणेव पते उकिडा०

२३६ ॥

सहकरिसरस्त्वगंधा तेणव उवा० २, तत्थ णं अत्येगतिया आसा अपुनवा णं इमे सहकरिसरस्त्वगंधा  
इतिकहु तेचु उकिहु सहकरिसरस्त्वगंधेहु अमुनिल्या ४, तेसि उकिट्टाणं सह जाव गंधाणं दूरदूरेण  
अवश्मति, ते णं तत्थ पउरगोपरा पउरतणपाणिया गिलभया गिलभया आसा उकिहु सहकरिसरस्त्व-  
गंधाणाडसो ! जो अम्हं पिणगंधो वा ३, सहकरिसरस्त्वगंधा णो सज्जति से णं इहलोए चेव यहूणा सम-  
णाणं ४ अचणिज्जे जाव वीनिवयति ॥ सूत्रम्-१३०॥ तत्थ णं अत्येगतिया आसा जेणेव उकिहु सहकरिसरस्त्व-  
गंधा तेणव उवा० २ तेचु उकिहु सहकरिस ५, बुचिल्या जाव अज्जोववणणा आसेचिउं पयरते  
गवि होत्या, तते णं ते आसा ए उकिहु सह ५, आसेवमाणा तेहि यहूहिं कृडेहि य पासेहि य गलाण्छु  
ग यउक्षंति, तते णं ते कोडुयिया ए आसे गिणहंति २ एण डियाहि योपवहूणे संचारंति २, तणस्स कङ्कस्स  
जाव भरंति, तते णं ते संजुत्ता दक्षित्वणाणुकृलेणं वाएणं जेणेव गंभीरपोपदुणे तेणव उवा० ३, पोपवहूणं  
लंबंति २, ते आसे उत्तारंति २, जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छन्ति  
२ चा करपल जाव वद्वाचंति २, ते आसे उवणंति; तते णं से तेसि संजुत्ताचाणियगाणं उस्तुक्षं चितरति  
२ सक्षारंति संमाणोति २ चा, पहिविसज्जेवति, तते णं से कणगकेऊ कोडुयियपुरिसे सद्वायेह ३, सकारेति०

१७ श्री-  
अशालय-  
ज्ञाता च ॥  
इन्द्रिया-  
सक्ताश्वक-  
दर्थनादि-  
वर्णन-  
धनम् ।

पासांचेहि य बालं येहि य सुखं येहि य कडगं येहि य अहिलणं येहि य पढियाणेहि य चलिणं येहि य अंकणाहि य वेलपहारेहि य चित्पहारेहि य कसपहारेहि य चित्पहारेहि य यंति २, कणगकेउस्स रक्षो उच्यन्ति ३; तते णं से कणगकेउ ते आसमधए सकारेति २, पढिविसज्जेति, तते णं ते आसा चहाहि चुहं येहि य जाव चित्पहारेहि य यहणि सारीरमाणसाणि दुक्खान्ति पारेति, एवामेव समणाडसो ! जो अम्हं पिण्यांथो वा २, पठवहए समाणे हडेसु सहफरिस जाय गंयेसु य सज्जंति रज्जंति गिजंक्षंति मुजंक्षंति आज्ज्वोवज्जंति से णं इहलोए चेव यहूणं समणाण य जाव साचियाण य हील-  
णिज्जे जाव अणुपरियटिसति ॥ दृच्छम् - १४० ॥

यां चुगां, नवरं नहमतीएति-चक्षुझीनस्य विषयानिश्चायकत्वात् नष्टश्चिको-निर्यामकगालेण दिगादिविवेचनस्य करणे अशक्तत्वात्, नएसंझो मनमो भ्रान्तत्वात्, किमुकं मवति ?-मुदः-अविनिश्चितो दिशां भागो-विभागो यस्य स मृदहिमाग; कुक्षिधारादयो यातपात्रहयापरविशेषनियोगिनः, 'हिरण्यागरे' यादि, हिरण्याकरांश्च सुवर्णकरांश्च रत्नकरांश्च वैराकरांश्च वदुपतिभूमिरित्यर्थः, चहं यात्राश्वान्-घोटकान् पद्यनिति स्म, 'किंते' चि किंप्रतान् ? अब्रोच्यते- 'हरी' त्यादि, 'आहन्नेहो' चि-आकीण-जातया! अश्वः तेषां 'वेढो' चि-वर्णनार्था वाक्यपद्यतिराकीणवेष्टकः, स चाय- "इरिरेणुमोणिसुचग सकविलमज्जारपायकुक्कडवौडसमुग्यसामवक्षा । गोहुमगोरंगगोरीपाडलगोरा पवालन्तगा य धूमवण्णा य केह ॥१॥ तलपञ्च-  
दिहुचण्णा सालोवक्षा य भासवक्षा य । केहं जपियतिलकीडगा य सोलोयरिहुगा य पुंडयहया य कणगपड्हा य कणगपड्हा य केह ॥२॥

चक्कागपिदुचणा सारसचणा य हंसचणा य केहि । केहत्थ अहमनवा पकतलमेहवना य बहुवन्वा य केह ॥३॥ संसाणुराग-  
सरिमा सुयमुद्धुं जदरागमरिस्तथ केहि । एलापाडलगोरा सामलन्यागवलसामला पुणो केह ॥४॥ यहवे अनें अणिदमा  
सामाकासीमरत्तदीया अचंतिचिपुद्विचिय पं आहण नाहुकुलविणीयापमन्तरा हयवरा जहो वएप्रकमचाहिणोऽविय पं सिखवा-  
विणीयविणया लेषणनगणश्वानवण्योरणचिर्हजहृणसिकिवयगद, कि ते ?, मणसावि उविहंताहं अणेगाहं आससयाहं पासंति”  
ति तत्र हरिदेणवथ-नीलवण्योसवः श्रोणिद्वत्कं च-यालकानं चमादिदवरकरुपं कटीद्वत्र, तद्विग्रायः काळं मधति, सह  
कपिलेन-पश्चिमिशेण यो माजारी-विडालः य च तथा यादकुड़िः-कुड़ुटविशेषः स च तथा योहं-कपासीकलं तद्य सुहु-  
गकं-समपुटपामिनावस्थं कपसीकलमित्यर्थः, तच्चति दन्दस्तत एपामिन वयामो वणो येपां ते तथा, इह च सर्वत्र द्वितीयार्थं  
प्रथमा, अवस्तानिति, तथा गोधुमो-घान्यविशेषः वदइ गोरमङ्ग येपां ते तथा गोरी या पाटला-युणगतिविशेषस्तद्य गो-  
रास्ते तथा ततः पद्दयस्य कर्मधारयः, गोधुगोराहुगोरापाटलागोरास्ताच्, तथा प्रचालवणीश्च-विठुमवणनिः अभिनवपछु-  
ववणनिः वा रक्तानित्यर्थः, यूमवणीश्च-यूमवणनिः पाठुरानित्यर्थः, ‘केहि’चि-कांश्चिन्सवनिलर्थः, इहं च हरीत्यत आर-  
म्य बोणउबद्दे कविताहृहपकं मधति । ५ । तुलपत्राणि-गलामिधानषुउपणीनि रिष्टा च-मदिरा तद्वद्धणो येपां ते तलपत्र.  
रिष्टावणीस्तिरु, तथा शालिवणीश्च शुक्लानित्यर्थः, ‘भासवणणा य’चि-भसमवणीश्च मापो वा पश्चिमेपस्तद्गणीश्च कांश्चि-  
दित्यर्थः, ‘जंपिपतिलकीडगाय’नि यापिता:-काळानतरप्रापिता ये तिरुः:-धान्यविशेषास्तेषां ये कीटकाः:-जीवविशेषास्तु-  
द्वद् ये वर्णसावभयात् ते तथा तोश यारिद्वया य’ति-सावलोक्त-सोयोर्तं पद्रिष्टकं-रत्नविशेष-

१७ श्री-  
अश्वाख्य-  
व्रातार्थ्य○  
चक्रवाका-  
दिपदानो-

स्तद्वये वर्णमाध्यरथति ते साचलोकरिष्टासाथ 'पुण्डपहया च' ति-पुण्डानि-बदलानि पदानि-यादा येषा ते तथा ते एव पुण्ड-  
पदिकास्तीथ, तथा कनकपृष्ठान् कांशिदितिलपकं ॥२। 'चक्रागपिण्डचण्ण' ति-चक्रवाकः-पश्चिमेष्टस्तपुष्टपेष्य वर्णो येषो  
ते तथा तान् मारसवणांश्च हंसवणान् कांशिद इति पश्याद्, 'कोतित्य अवभयएणो'ति कांशिदशाश्रवणान् 'पक्तलमेह-  
चण्णा य' ति-पक्तपत्रो यसतलः-गलवृक्षः स च मेषधेति विग्रहतस्त्रो वर्णो येषा ते तथा तान्, 'पचिरलमेहचण्ण' ति-  
क्षचित्पाठः; तथा 'यहुचण्णा केह' ति-यमुखण्णन् कांशिदित्पद्मानित्यर्थः, याहुचण्णनिति कनित्र दद्यते, लपकमिदं ३। तथा  
'संशाणुरगसरिस' ति-संशाणुरामेण महशान् वर्णत इत्यर्थः, 'सुपमुहुंजद्वरगसरिसत्य' केह' ति-शुक्रमुखस्य  
गुडादेस्य च प्रतीतस्य रागेण-सदयो रागो येषां ते तथा तान्, अत्र-इह कांशिदित्यर्थः, 'एलापाढलगोर' ति एलापाढ-  
ला-पाटलविशेषोऽथा एला च पाटला च रहदत गौरा ये ते तथा तान्, 'सामलयानवलसामला वुणो केह' ति-उपा-  
मलता-प्रियहुलता गवलं च महिष्यहुं तद्वत् द्यामलन् द्यामलन् पुनः कांशिदिति लपकं ॥४। 'यहेवे अहे य निहेस' ति-  
एकनानेनाल्पदेशपानित्यर्थः; अत एवाह 'सामाकासीसरतपिय' ति-द्यामकाश्च काशीसं-रागद्रव्यं तद्यते ते कासीमा-  
स्ते च रक्ताश्च पीताश्च ये ते तथा तान् शुभलानित्यर्थः, 'अर्बंतविचुद्वाविय णं' ति-निहेसंश्राल्यर्थः णमित्यलहरि 'आह-  
ताश्च गतमस्तराश्च-परस्परामहनवर्जिता निमसका वेति तथा तान्, 'हयचर' ति-हयानां-उभानां महये वरान् प्रधानानि-  
त्यर्थः; 'जहोचदेसकमवाहिणोऽविष्य णं' ति-यथोपदेशकमग्निच-उपदिष्टपरिषाखनतिकमेषेव चोदुं शीलं येषा ते तथा वा-

विनीतः...अचासः विनये  
नपि च णमित्यलङ्कारे, 'सिफलाचिपीयविणाय' चि-शिखेव-अशदमकुल्यग्निशाकरणादिव विनीतः...अचासः विनये  
पेत्ते तथा तान्, 'लंघणाचरणाधावणात्रोरणतिवैज्ञाणस्तिविवरणह' चि-लक्ष्मनं गच्छादिनो बहानं..कहिनं घायनं'  
वेगवद् गमनं धोरणं..चतुरत्वं परिविषयं विषदी..मछुसेव रक्षभूष्यां गतिविकेपः एवद्रूपा जविनी..वेगवती विशिष्टेव गि-  
द्विता गतिविद्वे तथा गान्, कि ते इति किमपरं, 'मणसाद्वि उद्विहंताह' ति-मनसाऽपि..वेगवाडिपि न केवलं बपुण  
उद्विषहताह' ति उत्तरविनिर्गतिवैज्ञाणनेकेकग्रः अपि हु अस्त्रवरनि पद्मनिति स्मेति,  
गमनिकामाग्रमेतदस्य चर्णकस्य गावार्थस्तु पद्मशुभ्रवेद्य इति । 'पउरगोयर' ति-प्रचुरचरणसेत्राः, 'वीणाणं ये' लादि,  
वीणादीनो चन्द्रीसद्यादिकुर्वो विशेषः, भंगा-दक्षा 'कोढपुडे' लादि, कोष्ठुटे वे पञ्चनते ते कोष्ठपुटाः..वासविक्षेपाः तेषा  
च, इदं यावरकरणादिवं दर्शय- 'पत्रमुडाण य'-पत्राणि वरमालपत्रादीनि 'चोयपुडाण य'; 'चोय' ति-त्वक्षुटं-पत्रादिमयं  
चद्रुमाजनं 'तगरपुडाण य एलापुडाण य चंदणपुडाण य कुंकुमपुडाण य ओस्त्रिपुडाण य  
चंपणपुडाण य मरुआगपुडाण य दमणपुडाण य जातिपुडाण य महिलापुडाण य  
गन्धदर्ढयाणि गान्धिष्ठकप्रसिद्धानि, हिरियेर- वालकः उसीरं..वैरणीमूलं, केचित्तु पुण्य जातिविमेषाः लोकप्रसिद्धाः, पुण्यजातयस्य  
ग्रामो यथापि चहुदिनशुमा न भवन्ति तथाऽप्यपायतः कतिपयद्विनशुमाः सद्मान्यन्ते, न च शुक्रवारपापमि तामो गर्विया  
सुग्रामामाव इति तद्युग्रदणमिद्वद्विमिति, तथा 'यदुरस्त' चि-घडोः खण्डादेः पुण्योत्तरा पशोत्तरा च यक्षिरामेदावेष, 'कोय-

१७ श्री-  
अश्वाख्य-  
ज्ञाताइय०  
इन्द्रिया-  
सर्क-  
वीचाना०-  
कदर्थ-  
स्वरूप-  
व्याख्या-  
नम् ।

‘ब्रगाण य’ति-रुतपृतपटानां प्राचरणविशेषा- प्राचरणानि- ब्रीतानि मलयानि- अथवा-  
मलयानि-मलयदेशोत्पन्नाः वक्षविशेषाः, पाठन्तरेण ‘मस्तगाण य’ति मशुकाः--कृतिमिठुराः: वक्षविशेषाः: शिलापद्माः:-  
मस्तुणशिलाः, ‘समियस्त’ति-कणिकायाः, ‘खलिणयंधेहि य’ति-खलिनैः--कविकैः, ‘उचीलेनेहि य’ति-अचपीडना-  
भिर्विन्द्यनविशेषैः, पाठन्तरे ‘अहिलाणेहि’-मुखवन्धनविशेषैः, ‘पडियाणएहि य’ति-पटगानकं पयणिणियाधो यदीयते इति  
शेषं प्राप्यः प्रसिद्धं । अथेन्द्रियासंहृतानां स्वरूपस्वेन्द्रियासंभद्रोरस्य चाभिवायकं गायथ्रकदम्बकं वाचनान्तरेऽधिकमु-

पलम्यते, तत्र—

कलरिभियमहुरतंतीतलतालवंसकउहाभिरामेचु । सदेषु रज्जमाणा रमंती सोहंदियवसदा ॥ १ ॥  
सोहंदियदुहन्तत्तणसस आह एतिओ हवति दोसो । दीविगरुपमसहंतो वहयंधं तितिरो पतो ॥ २ ॥  
थणजहणवयणकरचरणणयणगठिवयविलासियगतीचु । स्वेषु रज्जमाणा रमंति चकिंचवदियवसदा ॥ ३ ॥  
चकिंचवदियदुहंतत्तणस आह एतिओ भवति दोसो । जं जलणंभि जलंते पडति पंयगो अबुदीओ ॥ ४ ॥  
अगुरवरपवरधूवणउउयमलाणुलेचणविहीचु । गंधेषु रज्जमाणा रमंति वाणिंदियवसदा ॥ ५ ॥ वाणिं-  
दियदुहंतत्तणस आह एतिओ हवह दोसो । जं ओसहिंगंधेण विलाओ निर्दावती उरगो ॥ ६ ॥ तित्त-  
कदुधं कसायंच महुं वहुवज्जपेक्षेलहोस्तु । आसायंभि उ शिदा रमंति जिन्भिंभदियवसदा ॥ ७ ॥ जिन्भ-  
दियदुहंतत्तणसस, आह एतिओ हवह दोसो । जं गललगुकिकवत्तो कुरह थलविरहिओ मच्छो ॥ ८ ॥ उत्त-

‘मयमाणाद्युहै य सविभवहि यगतमणनिवृहकरेतु । कासेतु रज्जमाणा रमंति कासिदियवसदा ॥ ९ ॥  
फासिदियदुर्दंततणस आह पतिओ हवह दोसो । जं गवणह मत्थं कुंजरस लोहंकुसो तिक्खो ॥ १० ॥  
कलरिमियमहुरतंतीतलतालंवसकउहानिरामेतु । सोवेतु जे न गिद्वा वसहमरणं न ते मरए ॥ ११ ॥  
घणजहणवयणकरन्यरणगनिवयविलासियगतीतु । लवेतु जे न रचा वसहमरणं न ते मरए ॥ १२ ॥  
आगरपयरयूणउयमळाणुलेयणविहीतु । अंवेतु जे न गिद्वा वसहमरणं न ते मरए ॥ १३ ॥ तित-  
कदुयं कसांप महुरं वहुनवपेक्खेतु । आसाये जे न गिद्वा वसहमरणं न ते मरए ॥ १४ ॥ उउभ-  
यमाणसुहेतु य सविभवहियमणनिवृहकरेतु । कासेतु जे न गिद्वा वसहमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥  
सदेतु ग भद्रपावणादु सोपविसयं उयगएतु । तुटेण व कटेण व समणेण सया ण होयन्वं ॥ १६ ॥ रुवेचु  
ग महगपावणादु चक्कुविसयं उयगएतु । तुटेण व कटेण व समणेण सपा ण होयन्वं ॥ १७ ॥ गंधेचु य  
भद्रपावणादु घाणविसयं उयगएतु । तुटेण व कटेण व समणेण सया ण होयन्वं ॥ १८ ॥ रसेचु य भद-  
यपावणादु जितभविसयं उयगएतु । तुटेण व कटेण व समणेण सया ण होयन्वं ॥ १९ ॥ फासेचु य भद-  
यपावणादु कायविसयं उयगएतु । तुटेण व कटेण व समणेण सया ण होयन्वं ॥ २० ॥ एवं ग्वलु जंक्वृ ।  
समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण सत्तरसमसपायज्ञस्यणसम अपमढे पत्रते तियेति ॥ सुअम्-  
१४२ ॥ सत्तरसमं नागज्ञसयं समतं ॥ २१ ॥

अश्वारुप-  
कलावन्तः-परिणामवन्त इत्यर्थः रिभिवाः-स्वरघोलनाप्रकारवन्तः। मधुरा-श्रवणसुखकरा ये तन्मीवलतालवंशाः। ते तथा,  
भीज्ञावा-  
दिभिः शुद्धधर्मेनिशेषिता: शब्दकारणत्वात् च ते ककुदाः। अथवा तलाः।-हस्तवालाः। अथवा तलाः।-कंसिकाः। चंगाः।-वेणवः; इह च तन्त्रयादयः कला-  
वानां व्या-  
कलादिप-

नवाही-  
कलरिभियमहुरत्तितालवंसकुहाभिरामेसु'ति-कलाः।-अव्यक्तच्वनिस्पा अथवा  
कलावन्तः-परिणामवन्त इत्यर्थः रिभिवाः-स्वरघोलनाप्रकारवन्तः। मधुरा-श्रवणसुखकरा ये तन्मीवलतालवंशाः। ते तथा,  
तत्र तन्मी-वीणा तलतालाः।-हस्तवालाः। अथवा तलाः।-कंसिकाः। चंगाः।-वेणवः; इह च तन्त्रयादयः कला-  
वानां व्या-  
कलादिप-  
रमन्ति-रति कुर्वन्तीति इति योगः, 'सदेसु रज्जमाणा रमंति सोऽंदिद्यवसद्भिः-मनोऽच्वनिषु श्रोतोविषेषु  
रज्जमाणा-सागवन्त्वा श्रोतेन्द्रियस्य वरेन-वलेन करुणाः।-पीडिग्नाइति विग्रहः; ये शब्देषु रज्जपते-तत्कारणेषु तन्त्रयादिषु  
श्वयानम्। ॥ २४० ॥  
श्रोतेन्द्रियवशाद्रमन्ते इति वाक्यार्थः, अनेन च कार्यतः श्रोतेन्द्रियस्वरूपस्तु अह पस्ति और  
हस्त दोसो। शीविष्टुष्मसहंतो वहंयं च तिचिरो पत्तो' ॥ २ ॥ कण्ठ्या, नवरं शाङ्कनिकपुण्डस्वत्वात्वी पञ्चरस्य-  
तिक्रो दीपिका उच्चपते तस्य यो रचस्त्रमसद्भान, श्वनिलयाभिरतो वर्धं-मरणं चन्धं च-पञ्चरञ्चन्धं प्राप्त इत्यर्थः।  
'यणाऽऽध्यावप्यणकरच्छरणनयणनविलासियगैसु'ति-स्तत्तनादिषु तथा गवितानां-सौमायमानवतीनां स्त्रीणां  
या विलसिता-ज्ञातविलासाः सविकारा गतयस्तवासु वेत्यर्थः। 'रुवेसु रज्जमाणा रमंति चर्चिक्खदिद्यवसद्भाः' प्रतीतमेव,  
'चर्चिक्खदिद्यदुंहत्वणस्स अह पतित्रो हवर दोसो। जं जलणंभि जलंते पद्म यंगो अबुद्दीओ ॥ ३ ॥' कण्ठ्या, अगुरुवर-  
पवरपूर्वणउपमङ्गाणलेवणविहीसु। गंगेषु रज्जमाणा रमंति वाणिदिद्यवसद्भाः ॥५॥' कण्ठ्याः, नवरं अगुरुवर॥-कृष्णागरुः  
प्रवरपूर्वनानि-मन्त्रवृहत्पुण्डेवविरचिता घृपविकेषा; 'उत्तर्य'ति-कर्तृ॒ २ यात्मुपचिरतिति गानि आर्तवानि मादयानि-  
॥ २४० ॥

जात्योदिक्षुमानि अबुलेपनानि च-श्रीखेठकुड़मारीनि विषयः-एतत्रकारा इति ॥ ‘धार्णिदियदुहन्ततंणर्हस’ आहे  
 पतिओ भवति दोसो । जं ओसहिंयेण घिलाओ निढावई उलगो’ ॥६॥ कण्ड्या; तितकडुअं कसायंव महुरं  
 बहुवज्जपेज्जलेज्जेस्तु । आसायंयि उ निढा रमंति जिडिभवसदा’ ॥७॥ पूर्ववत्, नवरं तिकानि-निम्बकडु-  
 कारीनि कडुकानि-शहदेवरादीनि कपायाणि-मुदगादीनि अम्लानि-तकादिसंस्करतानि मधुगाणि-खण्डादीनि खायानि-  
 कूरपोदकादीनि पेयानि-जलमधुवाधादीनि लेद्यानि-मधुशिखरिणीप्रमृतीनि आस्वादे-रसे ॥ ‘जिन्मिदियदुहन्ततेणस्म अहे  
 पतिओ मवह दोसो । जं गललगुविश्वचो फुह थलविरेळिओ मन्जो’ ॥८॥ कण्ड्या, नवरं गलं-घिडियं तत्र लगः कण्ठे  
 विद्वत्पात् उत्तियो-जलादुकृतस्ततः कर्मचारयः, स्फुरति-स्पन्दते स्थले-भूतले ‘विरेळिओ’नि प्रसारितः खिस इत्यर्थः  
 यः स तथा ॥ ‘उठुभयमाणस्तु य सविभवहियमणनिन्दुइकरेस्तु फासेस्तु रज्जमाणा रमंति कासिदिय  
 वसादा’ ॥९॥ कण्ड्या, नवरं क्रहुपु-हेमन्तादिपु मज्यमानानि-सेभयमानानि उखानि-सुखकराणि तानि तथा तेषु;  
 मविमवानि-समृद्धियुक्तानि महाघनानीत्यर्थः, हितकानि-प्रकृत्यनुकूलानि सविभवानां वा-श्रीमतां हितकानि यानि तानि  
 तथा यनसो निर्वृतिकराणि यानि तानि तथा ततोः पदश्वयस्य वा कर्मचारयोऽस्तेषु, तक्षचन्दनाङ्गनावेसन-  
 त्वयादिपु द्रव्येभिति गम्यते, ‘कासिदियदुहन्ततेणस्म अह एचिओ हवैह दोसो । जं खण्डी मतथयं कुञ्जरस्स लोहकुमो  
 तिकसो’ ॥१०॥ माधवा प्रतीरुच, अयेन्दियाणां संबरे गुणमाह-‘कलरिमियमहुरतंतीतलालंगकुहामिरामेषु’ । सदेषु  
 जे न गिदा वसद्यमाणं न ते मरए’ ॥११॥ पूर्ववत्, नवरमिह तन्त्रयादयः शुद्धकारणत्वेनोपचाराच्छब्दाः एव विचक्षिता

१७ श्री-  
अश्वारुप-  
ज्ञाता इय०  
अश्वारुप-  
ज्ञाता इय०  
अश्वारुप-  
ज्ञाता इय०

अतः कुदेत्वित्येतस्य विशेषणतया व्याख्येयाः; तथा चरोन्-इन्द्रियपारतन्त्येण ऋताः:-पीडिता वशाचारीः वर्णं वा-विषय-  
पारतन्त्रं कृताः:-प्राप्ता वशाचारीः, तेषां मरणं वशाचं मरणं वशर्चमरणं वा न ते 'मरण'ति ग्रियन्ते छान्दसन्नादेकवचन-  
प्रयोगेऽपि बहुवचनं व्याख्यातमिति, 'थणजयणवयणकरवरणनयणगवियविलासियगद्दिषु। रुवेषु जे न रचा वस्तुमणं न ते  
मरए ॥ २ ॥' एवमन्यास्तिसो गाथाः पूर्वोक्तार्थी वाह्याः, उपदेशमिन्द्रियाश्रितमाह-‘सदेषु य महयपावण्यु सोयविसयं  
उवगएसु । हुडेण व रुडेण व समणेण सया न होयत्वं ॥१६॥' कण्ठ्या, नवरं मद्रकेषु-मनोषेषु पापकेषु-अमनोषेषु क्रमेण  
तुटेन-रागवता रुटेन-रोपवतेति, एवमन्या अपि चतुर्लोऽध्येतनया इति । इह विशेषोपतयमेवमाचक्षते-“जह सो कालियदीनो  
अणुवमसोक्ष्मो तदेव जहयमो । जह आसा तह साहू वणियवृष्ट्युक्तकारिजणा ॥ १ ॥ जह सदाहअगिदा पक्षा नो पास-  
चंथणं आसा । तह विसएसु अगिदा वज्जंति न कमणा माहू ॥ २ ॥ जह सञ्चंदिविहारो आमाणं तह य इह वरमुणीणं ।  
जरमरणाहं विवज्जिय संपत्ताणंदनिवाणं ॥ ३ ॥ जह सदाहसु गिदा बद्दा आसा तदेव विस्परया । पावेति कममंधं परमा-  
सुहकारणं घोर ॥ ४ ॥ जह ते कालियदीना फीया अन्तर्थ दुहणं पक्षा । तह धमपरिळमड्डा अधममपक्षा इहं जीवा ॥५॥  
पावेति कममनरचइवसया संसारवाहयालीए । आसप्पमहएहि व नेरइयाहहि दुक्खाई ॥ ६ ॥" [ यथा स कालिकदीपोऽनुपम-  
सौख्यस्तथा यतिघमः । यथाऽश्वास्तथा साधवः वणिज इवातुरुक्तकारिणो जनाः ॥ १ ॥ यथा शब्दाद्येषु अगृदा: प्राप्ता न  
पाशवन्धनं अश्वाः । तथा विषयेषु अगृदा चल्यन्ते न कर्मणा साधवः ॥ २ ॥ यथा स्वच्छन्दविहारोऽश्वानां तथाचेह वर-  
मुनीनां । जरामरणानि विवर्ज्य संप्राप्तिस्तनन्दं निचर्ण ॥ ३ ॥ यथा शब्दादिषु गृदा चदा अश्वास्तथैव विषयताः ।

प्राप्नुवन्ति कर्मपन्थं परमासुखकारणं योरम् ॥ ४ ॥ यथा ते कालकद्वीपाद् नीता अन्यत्र दुःखगणं प्राप्तः । तथा घर्षपरिग्रामः  
अघमप्रग्रामा इह जीवाः ॥ ५ ॥ प्राप्नुवन्ति कर्मनरपतिवशगताः संसारवाहालो अश्वमदकैवित्र नेरयिकादिभिर्द्वयानि ॥६॥

इति सप्तदशं ज्ञातं विवरणः समाप्तम् ॥ १७ ॥

## १८—श्रीमुसुमारह्यं ज्ञाताद्युध्यनम् ।

अथादश्यमारह्यते, अस्य चायं पूर्णं सहायमस्मिन्द्वयः—पूर्वस्मिन्द्वयवश्यवित्तिनामित्रेषां चानयेत्तरावृक्ताविह ए  
लोभवश्यवित्तिनामित्रेषां च तोचेवोन्वेते इत्येवंसम्बद्धमिदम्—

जगति णं भंते । समर्पणं० सत्तरसमस्स अयमद्वै पण्णन्ते अट्टारसमस्य के अड्डे पत्रते॑, एवं खलु जंचु ।  
तेण कलेणं॒ २ रायगिहे पामं नयेर होत्था, वणणओ, तथ णं घणणो सत्थवोहे भावा भारिया, तस्स णं  
घणणसस्स सत्थवाहसस्स पुच्छा अहाए अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था, तं०—घणणे घणणपाले घणदेवे घणगोवे  
घणरविवए, तस्स णं घणसस्स सत्थवाहसस्स धूया भवाए अत्तया पंचणहु पुस्ताणं अणुमानगजातीया सुंचु-  
माणामं दारिया होत्था सुमालपणियाया, तस्स णं घणणसस्स सत्थवाहसस्स चिलाए नामं दासचेडे होत्था  
अहीणपञ्चिदियसर्हे मंसोवचिए यालकीलावणकुसले यावित्र होत्था, तते णं से दासचेडे सुंचुमाए दारियाए  
यालउगाहे जाए यावित्र होत्था, सुंचुमं दारियं कडीए गिणहति॒ २, वहहिं दारएहि॑ य दारियाहि॑ य दिंभ-

१८ श्री-  
सुसुमा ल्य-  
ब्राह्मा इय०  
चिकाति-  
वणन-  
ब्रह्म० ।

एहि य हिन्दिभियाहि य कुमारपाहि य सहिं अभिरममाणो २ विहरति, तते ण से चिलाए दासचेड़ तेसि वहूणं दारियाण य ६ अपेगतियाणं खल्लुए अवहरति, एवं बढ़ए आडोलियांतो तेउसंए गोखुल्लुए साडोल्लुए अपेगतियाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरति अपेगतिया आउससति एवं अवहसह० निछोडेति निडभच्छेति तद्वेति अपेऽ ३ तालेति, तते ण ते यहवे दारगाय ५, रोयमाणा ण ५, साण २, अम्मापिकाणं पिवेदेति; तते ण तेसि वहूणं दारगाण य ६, अम्मापियरो जेणेव घणो सहथवाहे तेणेव उवाह ० घणं सहथवाहं वहूहि खेळणाहि य उवलंभणाहि य खेळमाणी य ढंटमाणी य उवलंभेमाणा य घणासन एयमढं पिवेदेति, तते ण घणो सहथवाहे चिलाएं दासचेड़ एयमढं खुज्जो ८, पिचारेति गो चेव ण चिलाए दासचेड़ तेसि वहूणं दारगाण य ६, अपेगति-  
याणं खुल्लुए अवहरति जाव तालेति, तते ण ते यहवे दारगाय ६, रोयमाणी य जाव अम्मापिकाणं पिवेऽ  
देति, तते ण ते आसुरुता ५ जेणेव घणो सहथवाहे तेणेव उवा० २ तो, वहूहि खिज्ज जाव एयमढं पिवेऽ  
देति, तते ण से घणो सहथवाहे वहूणं दारगाणं ६, अम्मापिकाणं अंतिए एयमढं सोचा आसुरते चिलाय-  
दासचेड़ उचावयाहि आउसपाहि उद्दसति निछोडेति तद्वेति उचावयाहि ताल-  
णाहि तालेति सातो शिहातो पिछुभति ॥ सुअम्-१४२ ॥ तते ण से चिलाए दासचेड़ सातो शिहातो  
निछोडेसमाणे रायगिहे नयरे स्तियाडेऽ जाव पहेचु देवकुलसु य समासु य पवासु य उपचलेष्टु य ॥ २४२ ॥

नवाही-  
३० श्री-  
ब्रीजाता-  
र्थमेकयाहै

॥ २४२ ॥

चिलाए दासचेडे रायगिह वहाँ हि य चोजाभिसंकीहि य दाराभिसंकीहि य घणिएहि य  
चेसायरसु य पाणधरएसु य सुहंसुहेण परिवहुति, तते ण से चिलाए दासचेडे अणोहटिए अणिवारिए  
सच्छंदमई सहरपयारी मज्जपसंगी चोज्जपसंगी चेसापसंगी जूयपसंगी चेसापसंगी परदारएपसंगी नामं चोर-  
यावि होत्था, तते ण रायगिहस्स नगरस्स अहुरस्समंते दाहिणपुरतिथमे दिसि चाए सीहगुहा नामं चोर-  
पल्ली होत्था विस्मगिरिकडगकोड्यसंनिविडा चंसीकलंकपागारपरिकिवत्ता छिणसेलविसमपवायफरि-  
होवग्रहा पागदुवारा अणेगावंडी विदितजणणिगमपवेसा अहिभतरपाणिया सुउल्लभजलपेरंता सुबहुरसविक-  
कवियवलस्स आगयस्स दुरपहंसा यावि होत्था, तत्थ णं सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णामं चोरसेणावती  
परिवसति अहिमए जाव अथमें केऊ सुमुटिए बहुणगरणिगयजसे सुरे दढपहारी साहसीए सद्वेवही,  
से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचणहं चोरसयाणं आहेवचं जाव विहरति, तते णं से विजए तकरे  
चोरसेणावती यहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिक्केयगाण य खत्तखणगाण य राय-  
घगारिण य अणधारगाण य चालघायगाण य चीसंभधायगाण य जुयकोराण य खंडरकवाण य अशेसिंच  
यहूणं छिन्नभिन्नहिराहयाणं कुँडगे यावि होत्था, तते णं से विजए तकरे चोरसेणावती रायगिहस्स  
दाहिणपुरचिलमं जणवयं चहृहिं गामयाएहि य नगरचाएहि य चंदिगगहणेहि य पंथ-  
कुँडणेहि य खत्तखणेहि य उचीलिमाणे ३, चिंदसेमाणे ३, पितथाणं णिडणं करेमाणे विहरति; तते णं से  
चिलाए दासचेडे रायगिह वहाँ हि य चोजाभिसंकीहि य दाराभिसंकीहि य घणिएहि य

१८ श्री-  
मुस्ताख्य-  
शारीर्य ०  
नैदाता-  
मिक्षाते-  
२४३ ॥

जहांकरेहि य परभवमणे २ रायगिहाओ नगरीओ शिगचलति २ जेणेव सीहगुफा चोरपल्ली तेणेव उचा० २ विजयं चोरसेणावतां उवसंपज्जितां विहरति, तते णं से चिलाए दासेनेड विजयस चोरसेणावहस अर्गो असिलहुगाहे जाए यावि होतथा, जाहेविय णं से विजए चोरसेणावती गामधायं वा जाच पंथकोहिं वा काउं वचति ताहेविय णं से चिलाए दासेनेड सुबहुंपि हु कृवियथलं हयविमहिय जाच पडिसेसिहिति, पुणरविलद्धेन कयकज्जे अणहसमग्रे सीहगुहे चोरपल्ली हववमागचलति, तते णं से विजए चोरसेणावती चिलायं तकरं घहहओ चोरविजाओ य चोरमते य चोरनिगडीओ य सियखावेहं, तते णं से विजए चोरसेणावहि अन्नया कयाइ कालघम्मुणा संजुते यावि होतथा, तते णं ताइं पंचवोरसयाति विजयस चोरसेणावहस महया २, हहीसकारसमुदायणं पीहरणं करेहि २, जाव विगयसोया जाया यावि होतथा, तते णं ताइं पंच चोरसगाति अन्नमतं सदावेति २ एवं ७०-एवं खलु अम्हं देचा० । विजए चोरसेणावहि कालघम्मुणा संजुते अयं च णं चिलाए तकरे विजएणं चोरसेणावहणा घहहओ चोरविजाओ य जाच सियखाविए तं सेयं खलु अम्हं देचाणुरिपया । चिलायं तकरं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावहताए अभिन्निचित्तए चिति कहु अन्नमतस एयमदं पडिसुलेति ३, चिलायं तीए सीहगुहाए चोरसेणावहताए अभिन्निचत्ति, तते णं से चिलाए चोरसेणावती जाए अहिमए जाच विहरति,

तए नं से चिलाए चोरसेणावती चोरणायगे जाव कुड़ंगे यावि होत्या, से नं तत्य सीहगुहाए चोरपल्लीए  
पंचपहं चोरसयाण य पंच जहा विजओ तहेव सन्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरचिडभिल्हं जणवयं जाव  
गितथाणं निढंगं करेमागे विहरति ॥सूत्रम्-१४३॥ तते नं से चिलाए चोरसेणावती अवाया कयाहं विपुलं  
असण ४, उचकबडावेता पंच चोरसए आमंतेह तओ पचछा पहाए कययलिकमे भोयणमंडवंसि तेहि  
पंचहं चोरसएहि सर्दि विपुलं असणं ४ सुरं च जाव पसणं च आसाएमाणे ४, विहरति; जिमिय-  
मुहुरतरागए ते पंच चोरसए चिपुलेण धूचपुकरांथमझालंकारेणं सफारेति सम्माणेति २, एं च ०-एवं बल्लु  
देया० ! रायगिहे णयेर धणो णामं सत्थयाहे अहे, तस्स नं धूया भद्राए अत्या पंचपहं उत्ताणं  
अणुमनगजानिया सुंचुमाणामं दारिया यावि होत्या अहीणा जाव चुरुवा, तं गच्छामो नं देया० !  
पणस्स सत्थयाहस्स गिहं विलुंपामो तुवं विपुले घणकणग जाव सिलपवाले ममं सुंचुमा दारिया,  
तते नं ते पंच चोरसया चिलायस्स० पडिचुणेति, तते नं से चिलाए चोरसेणावती तेहि पंचहं  
चोरसएहि सर्दि अल्लनमं चुरुहति २, पुढ्यावरणहकालसमयंसि पंचहि चोरसएहि सर्दि सणद्व जाव  
गहियाउहपहरणा माझयगोमुहिएहि कलएहि णिकट्टाहि असिलहीहि अंसगएहि तोणेहि सजीवेहि  
पणहि समुक्षिकवत्तेहि सरेहि समुद्धालियाहि दीहाहि ओसारियाहि उरुधंटियाहि चिरपत्रेरहि वज्जमाणेहि  
महया २ उकिटसीहणायचोरकलकलरवं जाव सदरवभूयं करेमाणा सीहगुहातो चोरपल्लीओ पडिनि-

१८ श्री-  
सुमुमार्य-  
ज्ञाता इय०  
शुमुमादि-  
ग्रहण-  
वर्णन-  
स्वत्रम् ।

कलमति ३, जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उचा० २, रायगिहस्स अदूरसामंते एगं माहं गहणं अणुपविस्ति  
२, दिवसं लवेमाणा चिढ़ति, तते ऊं से चिलाए चोरसेणावई अद्वरचकालसमयसि निसंतपडिनिसंतसि  
पंचहि चोरसणहि सर्दि माइयगोमुहितेहि कलएहि जाव मृहआहि उरवंटियाहि जेणेव रायगिहे  
पुरतिथमिले दुवारे तेणेव उचा० २, उदगवहिय परामुसति आयंते ३ ताळुग्याडणिविजं आवोहेह २,  
रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएणं अचलोडेति कवाडं चिहाडेति २, रायगिहं अणुपविस्ति २, महया ३,  
सदेणं उजघोसेमाणे ३, एवं १०-एवं बलु अहं देवा० ! चिलाए यामं चोरसेणावई पंचहि चोरसणहि  
सर्दि सीहुहातो चोरपळीओ इह हव्यमागए घणणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उचा०  
णवियाए माउयाए दुदं पाउकामे से ऊं निगाळजउ ति कहु जेणेव घणणस्स सत्थवाहस्स गिहे  
२, घणणस्स गिहे चिहाडेति, तते ऊं से घणो चिलाएणं चोरसेणावतिणा पंचहि चोरसणहि सर्दि गिहे  
याइज्जमाणं पासति २, भीते तत्त्वे ४, पंचहि पुतेहि सर्दि एगांतं अवकंभति, तते ऊं से चिलाए चोरसे-  
णावती घणणस्स सत्थवाहस्स गिहे घाएति २ सुयहुं घणकणग जाव सावएजं चुचुमं च दारियं गेपहति  
२ चा रायगिहाओ पडिणिकव्रमति २ जेणेव सीहुहा तेणेव पहारेत्य गमणाए ॥ सुत्रम्-१४४ ॥  
मवं सुगमं नवरं ‘चुल्लए’ति-कपर्दकविशेषान् ‘वर्तकान्’-जत्वादिमयगोलकान् ‘आडोलियाउ’ति-रुदा उमाईया-  
इति वा योन्यते, ‘तंदूसए’ति-कन्दुकान्, ‘पोचुल्लए’ति-वस्त्रमयपुत्रिका अथवा ‘परिवानवचाणि, ‘साडोछाट’ति-

उत्तरीयवस्थाणि, 'खेजणाहि य' 'ति-खेदनाभिः-सेदसंख्चिकाभिः वाभिः; रुदनादिभिः-हृदितप्रायमिल्हपालभ्यनाभिः:-  
युक्तमेतद्वाहशामित्यादिभिरिति 'अणोहट्टए' ति-अकार्ये प्रवर्तिमानं तं हस्ते शुहीत्या योऽपहरति-न्याखर्षेपति तदमावा-  
दनपदर्तकः अनपघटको वा वाचा निवारितुरमावादनिवारकः, अत एव स्वच्छन्दमतिः-निर्गुणलृद्धिरत एव स्वैरप्रचारारी  
स्वच्छन्दविदारी, 'चोज्जपसंगे' ति-चौर्यप्रसक्तः, अथवा 'चोज्ज' ति-आश्वेषु कुहेटकेषु प्रसक्त इत्यर्थः, 'विसमगिरिकडग-  
कोलंयसस्त्रिचिह्न' ति-विषमो योऽसौ गिरिकटकस्य-पर्वतनिरम्बस्य कोलम्बः:-प्रान्तस्तरत्र सञ्चिविष्टा-निवेशिता या सा तथा,  
कोलम्बो हि लोकेऽधनं वृक्षशाखाश्रमपुलयते इह चोपचारतः कटकांग्रं कोलम्बो भयाल्यातः, 'वंसीकलंकपाणारपरि-  
किवरत' ति वंशीकलङ्कः-वंशजालीमयी वृत्तिः सेव प्राकारस्तेन परिशिष्टा-वेष्टिता या सा तथा, पाठान्तरे एव वंशीकल-  
प्राकारेति, 'चिह्नसेलचिसमप्यचायपरिहोवगृह' ति-छिंबो-विमक्तोऽप्रयवान्तरापेक्षया यः शैलस्त्रस्य सम्बन्धिनो ये  
विषमाः प्रयाता-गच्छः त एव परिका तयोऽगृहा-वेष्टिता या सा तथा, एकद्वारा-एकप्रवेशनिर्गममाणी, 'अपेगांवंडिति'-  
अनेकनङ्यचरनिर्गमापद्वारा विदितानामेव-प्रतीतानां जनानां निर्गमप्रवेश्ये यस्यां हेरिकादिभयात् सा तथा, अङ्गन्तरे पानीय-  
यस्याः सा तथा, सुदुर्लभं जलं पर्यन्तेषु-वहिःपाशेषु यस्याः सा तथा, सुव्योरपि 'कूचियचलस्स' ति-मोपन्यावर्चकसेन्य-  
स्यागतस्य दुष्प्रचंस्या, वाचनान्तरे पुनरेवं पल्यते- जटथ चउरंगचलनिउत्तावि कूचियचला हयमहियपवर्चीर-  
चाइयनिवडियचिन्धप्यचडया कीरंति 'ति-अत्र चतुर्णामङ्गानां हस्त्यस्त्रथपदातिलक्षणानां यद्वलं-सामर्थ्यं तेन  
नियुक्तानि-नितरां मङ्गतानि यानि तानि तथा, 'कूचियचल 'ति-निवर्तकसेन्यानीति, 'अघमिमए' ति-अघमेण चरतीत्य-

नम् ।

श्रीगाल्या-  
वर्णकरण-  
२४५ ॥

श्री-  
गुम्भार्य-  
जातार्य०  
अधार्मिका-

धार्मिकः, यावत्करणात्, 'अधिकरणे' अवस्थितिशयेन निर्देशम् कारित्वात्, 'अथमक्ष्याई'-अथमया-  
लयात् शीलं यस्य स तथा, 'अथममाण्णु'-अथमोदनं यस्य सोऽधमितुः: अथमातुगो वा  
'अथमपलोहै', अथममेव प्रलोकयितुं शीलं यस्यामावधामपलोकी 'अथमपलज्जणे'-अथमप्रायेण कर्मसु यक्षेण  
जज्यते हस्यथमेव्रजनः, रलयोक्यमितिकला रस्य स्थाने लकारः, 'अथमसीलस्तुदायारे'-अथमस एव शीलं-स्वभावः  
समुदाचारश्च यतिक्षेत्रात्मानं यस्य स तथा, 'अथममेण चेव विचित्रं कर्मप्रमाणे विहरति'-अथमेण-पापेन सावधा-  
उष्टुनेनैव ददनाङ्गननिलकृत्तादिना कर्मणा वृत्ति-वर्तिनं कर्मप्रम-कृतियो विहरति-आस्ते सम 'हणाञ्छिद्दिवियतार'-  
इन-विनाशय छिन्द-दिवा कुरु भिन्द-कुरुदिना मेदं विषेहीत्येवं प्राप्नन्वि श्रेयन् प्राणिनो विनिष्ठन्दिविन्द-  
विकर्मकः, इनेत्यादप्यः शुद्धाः संस्कृतेऽपि न विलक्षा; अतुकरणरूपत्वादेषाः, 'लोहियपाणि'-माणविकर्मनो (नतो )  
लोहितो रक्तकरतशा पाणी-हस्तो यस्य स तथा, 'चंडे'-चण्डः उद्गटरोपत्वात्, 'कोदे'-कोदे निस्त्रेत्वात्, कुदः  
शुद्धकर्मकारित्वात्, सादसिकः-'अममीक्षितकारित्वात्, 'उक्तंचण्डचणमायानियातिकवडकूडसाइसंप्रोगच्छुले'  
उत्कृक्षनपुक्तोचा, मुखं प्रति तदश्विलपदानादिकमदुव्यवहारं कर्तुं प्रशुचस्ति वश्शणमयाद् क्षाणं यस्तदकरणं  
तदुक्षनमित्यन्ये, चञ्चनं-प्रतारणं माया-प्रतारणं माया-कुरुदिकरणं अधिकोपचारकरणेत परच्छुलन-  
मित्यन्ये मायाप्रल्लादनाथं मायान्तरकरणमित्यन्ये कर्पण-वैपादिविपर्यंप्रकरणं कूटं कार्यापणहुलाव्यवस्थाप्रादीनामन्यथा-  
करणं 'साइ'ति-अविश्वमः, परां सम्ब्रयोगः-प्रत्यंतेन वहुलः स वा वहुलो यस्य स तथा, 'निरसीले'-अपगतशुभ-

स्वमानः ‘निवृत्य’-अशुद्धतरहितः, ‘निर्गुणो’-गुणवत्तरहितः, ‘निष्पत्रकवचाणपोस्तहोववासे’-अविषयमानपौरुषयादि-  
प्रत्यालयानोऽप्तपूर्वेक्षित्वाप्यभेत्यर्थः, ‘नहूणं दुपयचउपयमियपसुपविवसिरीमज्जाणं यायाए वहाए उच्छायणयाए अवधम-  
केकुमसुहुड्हे’ति प्रतीतं नवरं वातुः-प्रहारो चयो-हिमा व्यपत्ययो वा उच्छादना-जातेरपि व्यवच्छेदनं गदर्थं ‘अघमसिकेतुः’  
पापप्रयानः केतुः-प्रहविदेयः स ह्व यः म तथा, द्विपदादिमन्वानां द्वि ध्याय यथा केतुश्रेष्ठः नमुहुच्छुति तथाऽऽयं ममुहियत  
इति मावना, बहुनगरेषु निर्भाति-जनमुखाश्रितःसुरं गग्नः-ल्पयतिर्यस्य म तथा, चूरो-विकम्भी दद्वप्रहारी-गद्वप्रहारः, शब्द-  
लक्षीकृत्य विष्यति यः सः शब्दवेधी, चौरादीन्वेकादशप्रदानि प्रतीतानि, नवरं ग्रन्थिमेदकाः-न्यामकान्ययाकारिणः  
पूर्युकादिना वा वे ग्रन्थीन् छिन्नदन्तिः, सन्धिकृत्वेदका वे गृहसितिपञ्चीन् विद्वायन्ति, शाश्रवानका वे सन्धानवार्जतमितीः  
काणयन्ति, ‘अणाधारयं’ति क्रणं-न्यवहरकंदं य दण्डं रथे तेषां घारयन्ति, संडरध्वा-दण्डपाणिकाः, तथा छिन्ना-हस्तादिषु  
मिका नासिकादी वायाः देशाद् आहुता-दण्डादिभिः तरो दुन्दः, कुण्डं-चंगादिगहनं तदयो दुर्गमत्वेन रक्षार्थमाश्रयणीय-  
त्वमाधम्यति म तथा, ‘नित्याणं’ति-स्थानश्राद्ध, ‘अग्नाअस्तिलटिगाहि’ति-पुरस्तात् खद्वयस्त्रिगाहः अयवा अद्यः-प्रधानः,  
‘अल्पचम्पं दुर्लहति’ति आदृचम्पमिहति माहुहपाप्येमिति, ‘माहय’ति-कुसारस्य इत्यादिवाल-  
युक्ततात् पक्षमलानि तानि च तानि ‘गोमुहीअ’ति-गोमुखवद्वुरःप्रच्छादकत्वेन कुतानि गोमुखितानि चेति कर्मधारय-  
स्तरस्ते: कलकैः-स्फुरकैः; अशाय वाचनान्तराण्यपि मन्त्रि तानि च विमर्शनीयानीति, गमनिकेवेषं, नित्यामिः-कोशा-  
ददहित्वगमिरसियहिमिः असहस्रैः-एकन्धावस्थितैस्तद्वैः-ग्रामसादिमिः सबीचैः-कोश्यारोपितप्रत्यश्चैर्दद्युमिः समुत्यस्ते:-

१८ श्री-  
नवाहृ- सुमुमाख्य-  
४० शू० ग्रावाध्य०  
श्रीझाता- चौराष्ट्रक्त्यपेक्षया अन्यथा चोरसेनापतिप्रकारादेकवचनमेव स्यादिति ।

तते णं से घणो सत्यवाहे जेणोव सए गिहे तेणोव उवा० ३, सुबहुं घणकणगं सुंसुमं च दारियं अव-  
हरियं जाणिता महत्यं ३, पाहुडं गहाय जेणोव णाररघुतिया तेणोव उवा० २, तं महत्यं पाहुडं जाव उवणेंति  
२ एवं ३०-एवं नलू देवा० । चिलाए चोरसेणावती सीहगुहातो चोरपल्लीओ इहं हठवमानाम् पंचाहि-  
चोरसएहि सर्द्धि मम गिहं घाएचा सुबहुं घणकणगं सुंसुमं च दारियं गहाय जाव' पडिगए, तं हच्छामो  
णं देवा० । सुंसुमादारियाए कूवं गमित्तए, तुळमे णं देवाणुपिया ! से चिपुले घणकणो ममं सुंसुमा  
दारिया, तते णं ते णायरघुतिया घणणस्स एयमांडं पडिसुषेंति २, सखद जाव गहियाउहपहरणा महया २,  
उपिहु० जाव समुद्रवमूर्यपिव करेमाणा रायगिहाओ पिणगच्छेंति २, जेणोव चिलाए चोरसेणावती  
चिलाएणं चोरसेणावतीणा संद्वि संपलुग्ना याचि होत्या, तते णं णायरघुतिया घिलायं चोरसेणावती  
हयमहिया जाव पडिसेहेति, तते णं ते पंच चोरसया णायरगोतिएहि हयमहिय जावि पडिसेहिया सम्माणा  
तं चिपुलं घणकणगं चिलाहुमाणा य 'सखतो सम्भासा चिप्पलोहत्था, तते णं ते  
णायरघुतिया तं चिपुलं घणकणगं जेणहेति २ जेणोव रायगिहे तेणोव उधाँ, तते 'णा से खिलाए तं भोरसेणों

तेहि पापरगुतिपिंहि हपमहिय जाव भीते तत्वे सुंसुमं दारियं गहाय एं महं आगामियं दीहमदं अडवि  
 अणुपिंहि, तते नं घणो सत्यवाहे सुंसुमं दारियं चिलाएं अडवीमुहि अवहीरमाणि पासिताणं षंचलि  
 पुतेहि सर्वि अपच्छट्ट सद्वयदृ चिलापरस्स पदमगविहि अभिगच्छति, अणुग्जेमाणे हकारेमाणे  
 पुकारेमाणे अभितज्जेमाणे अभितासेमाणे पिठओ अणुगच्छति, तते नं से निलाए तं घणो सत्यवाहं  
 षंचलि उत्तेहि अपच्छट्ट सद्वयदृ समणुगल्डमाणं पासति ३, अत्थामे ४, जाहे नो संचाएति सुंसुमं  
 दारियं शिव्याहितए ताहे संते तंते परिसंते नील्पलं अस्ति परामुसति २ सुंसुमाए दारियाए उत्तमंग  
 चिदति २ तं गहाय तं आगामियं अडवि अणुपिंहि, तते नं निलाए तीसे आगामियाए अडवीए तणहाते  
 अभिभूते समाणे पमहुठदिसाभाए सीहगुहं चोरपहिं असंपत्ते अंतरा चेव कालगाए ! एवामेव समणा-  
 उसो ! जाय पहव्यतिए समाणे हमस्स ओरालियसपिरस्स चंतासवस्स जाव चिदंसणधमस्स वणणहेउं  
 जाय आहारं आएरेति से नं हहलोए चेव यहूणं समणाणं ४, हीलिणिक्के जाव अणुपरियविसति जहा  
 य से चिलाए तकोरे ! तते नं से घणो सत्यवाहे षंचलि उत्तेहि अपच्छट्ट निलायं परियाड्माणे २,  
 तणहाए छुहाए य संते तंते परिसंते नो संचाहए निलातं चोरसेणावति साहत्य गिरिहत्तए, से नं तओ  
 पडिनियतह ३, जेणेय सा सुंसुमा दारिया निलाएं जीवियाओ चवरोविलिया तेणांतेणेय उवागळलति ३,  
 सुंसुमं दारियं चिलाएं जीवियाओ चवरोवियं पासह ३, परसुनियतेव चंपगपायवे, तते नं से घणो

१८ श्री-  
सुसुमार्थ्य-  
शावाइय०  
सुसुमा-  
मरणादि-  
वर्णन-  
व्रतम् ।

सरथचाहे अपचहुं आसथे कुयमाणे केदमाणे विलयमाणे महया २, सदें कुह ३, सुपहने चुचिरं कालं  
बाहमोकबं करेति, तते णं से घणों पं चहि पुतेहि अपचहुं चिलायं तीसे आगामियाएः सठवतो समंता  
परियाडेमाणा तपहाए हुहाए य परिनं(रङ्गं)ते समाणे तीसे आगामियाएः अडवीए सवतो समंता उद-  
गस्स मरणगवेसणं करेति ३, संते तंते परितंते पिठिवेते तीसे आगामियाएः अडवीए उदगस्स मरणगण-  
गवेसणं करेमाणे नो चेव णं उदगं आसादेति, तते णं उदगं अणासाएमाणे जेणेव चुंसमा जीवियातो  
चवरोपल्लिया तेणेव उया० ३, जेदुं पुतं घणो सप्पावेह २ एवं वयासी-एवं खलु पुता ! चुंसुमाए दारियाए  
अडाए चिलायं तकरं सठवतो समंता परियाडेमाणा तपहाए य अभिभूया समाणा हमीसे आगा-  
मियाएः अडवीए उदगस्स मरणगवेसणं करेमाणा पो चेव णं उदगं आसादेमो, तते णं उदगं अणा-  
साएमाणा पो संचाएमो रायगिहं संपाविच्चाए, तणां तुङ्मं ममं देव्या० ! जीवियाओ चवरोवेह मंसं च  
सोणियं च आहारेह २ तेणं आहारेणं अवहिडा समाणा ततो पच्छा इमं आगामियं अडवीचि षित्थरि-  
हिह रायगिहं च संपाविहिह मित्तणाइय अभिसमागच्छहिह अतथरस य धर्मस्स य पुण्णस्स य  
आमारी भविस्तह, तते णं से जेढपुते घणेणं एवं युते समाणे घणं सठथवाहं एवं व०-तुङ्मे णं ताओ० !  
अमंहं पिया गुरुजणया देवयमूया ठायका पतिडावका संरक्ष खागा संगोवगा तं कहणं अमहे तातो ! तुङ्मे  
जीवियाओ चवरोवेमो तुङ्मं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो ? तं तुङ्मे णं तातो ! ममं जीविय-

वचरोवेह मंसं च सोणियं च आहारेह आगामियं अडविं पित्तरह तं चेव सब्वं भणह जाव  
अत्थस जाय पुण्णस आभागी भविससह, तते णं घणं सत्थ० दोचे पुते एवं व०-मा णं  
ताओ ! अम्हे जेठं भायरं गुरं देवयं जीवियाओ वचरोवेमो तुम्हे णं ताओ ! यम जीवि-  
याओ वचरोवेह जाव आभागी भविससह, एवं जाव पंचमे पुते, तते णं से घणं सत्थवाहे  
एवं पुचाणं हियहक्कियं जाणिता ते पंच पुते एवं व०-मा णं अम्हे पुता ! एगमचि जीवियाओ  
वचरोवेमो एम णं सुंसुमाए दारियाए सरीरए णिप्पणे जाव जीवविपपजहे तं सेयं खलु पुता ! अम्हे  
सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेचाए, तते णं अम्हे तेणं आहारेण अवत्थद्वा समाणा राय-  
गिंह संपाडणिससामो, तते णं ते पंच पुता घणेणं सत्थवाहेणं एवं पुता समाणा एयमहं पडिलुणेति,  
तते णं घणो सत्थ० एच्छहि पुतेहि सद्धि अरणि करेति ३, सरगं च करेति ३, सरएणं अरणि महेति ३,  
अर्णि पाडेति ३, अर्णि संपुक्खेति ३, दारुयाति परिक्खेवेति ३, अर्णि पञ्चालेति ३, सुंसुमाए दारियाए  
मंसं च सोणियं च आहारेति, तेणं आहारेण अवत्थद्वा समाणा रायगिंह नयरि संपत्ता मित्तणाईअभि-  
समणागया तस्स य विउलस्स घणकणतरयण जाव आभागी जायाविहोत्या, तते णं से घणो सत्थ-  
वाहे सुंसुमाए दारियाए पहहं लोहयाति जाव विगयसोए जाए यावि होत्या ॥ सूत्रम्-१४६॥ तेणं काळेण  
३, समणे भगवं महावीरे गुणसिलए चेहए समोसहै; से णं घणो सत्थवाहे संपत्ते घमं सोचा पठवतिए

नवाही-  
३० दु  
भीडाता-  
र्गमिकार्थि

२४८ ॥

एकारसंगवी मासियाए संलेहणाए सोहेमे उच्चणो महाविवेहे थासे सिद्धिक्षहिति, जहाविय पां जंय् ।  
धणोणं सत्यवाहेणं णो कणहेउं वा नो रुवहेउं वा गो बलहेउं वा सुंसुमाए वारियाए  
मंससोणिए आहारिए नवलय पणाए रायगिहं संपावणड्याए, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंयो  
वा २ इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवरस्स पितासवरस्स सोणियासवरस्स जाव अवस्सं  
विष्पजहियवस्स वा, नो घणहेउं वा, नो रुवहेउं वा, नो चल० चिसपहेउं वा, आहारेति नवलय  
एगाए सिद्धिगमणासंपावणड्याए; से पां इहभवे चेव यहुणं समणाणं २ यहुणं साविगणां  
अचणिक्के जाय वीतीवतीरसति, एवं खलु जंय् ! समणोणं भगवया अडारसमस्स अयमेहं पणाते त्तिवेमि  
॥ सुत्रम्-१४६ ॥ अडारसमं पायज्ञयाणं समाते ॥ १८ ॥

१८ श्री-  
शुभमारुण-  
वातावा०  
वन्यसाय  
वाहस्यादि-  
सावस्यादि-  
वर्णन-  
ब्रह्म ।

‘मृहयाहि’ ति-मूकीकृष्णामिनि:शब्दीकृताभिरित्यर्थः, ‘उदरावतिथि’ति-उलभूतदत्तिः जलाधारचरम्मीमयमाजन-  
मित्यर्थः, ‘जो गं णवियाए ’त्यादि, यो हि नविकायाः-अप्रेतनगमप्राविन्याः: मातुरुंधं पातुकामः स निर्गच्छतु, यो  
मुपर्णित्यर्थः, ‘आगामियं’ति अग्रामिकं ‘दीहमदं’ति दीर्घमाणं, ‘पचमगविहि’ति-पदमार्गप्रचार, ‘पमहुट-  
दिसाभाए’ति-विस्मृतदिग्भागः, ‘अंतरा चेव कालगण॑’ति-इह यतावदनोपयोगीति आवश्यकादिप्रसिद्धं तदीयं  
शेषचरितं सापुदण्ठेनोपशमायुपदेशेन सप्तक्त्वपरिमावनवज्ञतुपडकीटिकामध्याणदेवलोकगमनलक्षण नोकमिति न विरोधः  
सम्माचतीयः, उपनयग्रन्थः, पूर्ववत्; ‘वाहपामोकावं’ति-अश्वविमोक्तनं; ‘दिया’इत्यादी, शेषोपचारतो लोकेऽ-  
॥ २४८ ॥

न्योऽपि रुदो, यदाह—॥ जनेता चौपेता च, यस्तु विद्यां प्रयच्छति । अन्वदाता भयश्चाता, पञ्चेते पितरः स्मृतः  
 ॥ १ ॥ इति जनकप्रहणं स्थापकाः—यहस्यधर्मे दारादिमध्यहणात् प्रतिष्ठापकाः—राजादिसमस्थं स्वपदनिवेशनं संरक्षकाः—  
 नानाव्यग्नेभ्यः सहोपकाः—यहच्छाचारितायां संवरणात्, 'अरण्णि'ति—अरणिरेः उत्पादनार्थं निर्मल्यते यद्वाल 'सरणं  
 करोह'ति—श्रको निर्मल्यते तद्येनेति, 'नो चक्षोहेतु'मित्यादि, अनेन च किमुक्तं भवति ?—'नव्रत्य'चि एकद्याः सिद्धि-  
 गमनप्रापणार्थतया अन्यत्र नाहारमाहारयति, तर्तुं वर्जयित्वा कारणन्तरेण नाहारयतीत्यर्थः;—“जह सो चिन्लाहपुतो सुनुम-  
 गतेयः प्रापणलक्षणोऽर्थः ग्रासित्यर्थः तस्य भावस्तुता तस्या इति, इह चैव विशेषोपनयः;—“जह सो चिन्लाहपुतो सुनुम-  
 गिद्वो अक्षउपडियदो । धणपारद्वो पतो महाउवि वसणसयकलियं ॥ १ ॥ तह जीवो विसयसुहे लुद्वो काऊण पावकिरियाओ ।  
 कम्मचरोणं पावह मयाडगीए महादुक्कतु ॥ २ ॥ धणसेहुविव गुरुणो पुत्रा इव साहवो मवो आडवी । सुयमंसमिवाहारो रायगिद-  
 इह सिवं तेयं ॥ ३ ॥ जह अडविनयरनियरणपावणलयं रएहि सुयमंसं । सुतं तहेह साहु गुहण आणए आहारं ॥ ४ ॥  
 मयलंपणसिवपावणहेतुं भुक्तंति ण उण गेहीए । वणयलरुवहेतुं च मावियप्पा महासचे ॥ ५ ॥ अजद्ययणं सममतं ॥ १८ ॥

१॥ यथा स चिलालिपुः चुकुमायदोऽकार्यप्रतिष्ठदः पञ्चेन प्रारम्भः प्रासो महाटवी व्यष्टुनशतकलिताम् ॥ १ ॥ तथा औवो विषयमुखे छुपः  
 २॥ चुतासांचमिवाहारो राजगंद इह  
 कृत्वा पापकिया: । कर्मचंदनं प्राप्नोति गचाटभ्यो महाडुःखम् ॥ ३ ॥ धनबेहेव गुरवः पुत्रा इव साधवो भवोइत्वा ।  
 विव रेयम् ॥ ४ ॥ यथाडविनीनिरतरणगरप्रापणार्थं तेः चुतासांसेः । भुक्तं तयेह साधवो गुरुणामासयाऽऽहार ॥ ५ ॥ भवलघुनदिवश्रापणहेतुंअनित न  
 गुरुणेदप्पा । गण्डलहंहेतोय गावितानां महासच्चाः ॥ ५ ॥ ] अथादता शावदिवरणं उपासम् ॥ १८ ॥

१९ श्री-  
पुण्डरी-  
कारख्य-

ज्ञानाध्य०  
अध्ययन-  
स्य पूर्णिप-  
संवयादि-  
सूक्ष्म०

## १९—श्री पुण्डरीकारख्यं ज्ञाताद्यस्मनम् ।

१० ई०  
भीजाता-  
चर्मकथाम्

॥ २४९ ॥

अथेकौनविशितिमं व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण महायमभिमवन्वः—पूर्वत्रासंबृताश्रवस्य चान्तर्थेतरातुकाविह तु  
विरं संषुट्ठाश्रवो भूत्याऽपि यः पश्चादन्यथा स्थाचरस्य अल्पकालं संबृताश्रवस्य च तातुन्येते इत्येवंसम्बद्धमिदम्—  
ज्ञाति णं भंते समणोणं भगा० म० जाव संपत्तेण अद्वारसमस्स नायज्ञस्यायणस्स अयमहं पत्रते एगणा-  
वीसहमस्स नायज्ञस्यायणस्स के अहं पत्रते १, पूर्वं खलु जंबू ! समणोणं भगावया महावीरेण तेणं कालेण  
२ इहेव जंबूहीवे दीवे पुठव्यविदेहे सीयाए महाणदीए उत्तरिल्लेक्ष्ये नीलचंतस्स दाहिणेण उत्तरिल्लस्स  
सीतामुहवणसंडस्स पन्डितमेण एगसेलगस्स वक्खवारपञ्चव्यप्यस्स पुरतिथमेण एतथ णं पुक्खललावहै णामं विज्ञए  
पत्रते, तत्थ णं पुण्डरिणी पाणामं रायहाणी पत्रता णावजोयणविजित्पणा दुवालसजोयणायामा जाव  
पचक्खं देवलोयभूया पासातीया ४ । तीसे णं पुण्डरिणीए पायरीए उत्तरपुरुचित्तमेदिसिभाए पालिणि-  
वणोणामं उल्लाणे, तत्थ णं पुण्डरिणीए रायहाणीए महापउमेणामं राया होत्था, तस्स णं पउमावती  
णामं देवी होत्था, तस्स णं महापउमस्स रक्षो पुत्रा पउमावतीए देवीए अचया दुवे कुमारा होत्था, तं०—  
पुण्डरीए कंडरीए य सुकुमालपाणिपाया०, पुण्डरीयए जुवराया तेणं कालेण ३, येरागमणं महापउमे  
रापा पित्रगए घम्मां सोचा पौडरीयं रख्ये ठवेता पव्वतिए, पौडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया, महापउमे

आणगारे चोहसपुत्रवाहं अहिज्ञाह, तते णं थेरा धहिया जगवयविहारं विहरति, तते णं से महापउमे, बहूणि  
चासाणि जाव सिद्धे ॥ सुत्रम्-१४७॥ तते णं थेरा अक्षया कथाहं पुणरवि पुङ्डरिगिणीए रायहाणीए णलिणचणे  
उज्ज्वाणे समोसहा, पौडरीए राया णिरगए, कंडरीए महाजणसहं सोचा जहा मह०यलो जाव पञ्जुवासति,  
थेरा घमं परिकहेति, पुङ्डरीए समणोचासए जाए जाव पडिगते, तते णं कंडरीए उडाए उडेता  
जाव से जहेयं तुनमे वदह जं पाचरं पुङ्डरीयं रायं आपुच्छामि तए णं जाव पञ्चयामि, अहासुहं देवाणु-  
पिया !, तए णं से कंडरीए जाव थेरे वंदड नमंसह०, अंतियाओ पडिनिक्खमहं तमेव चाउयंतं आसरहं  
बुरुहति जाव पचोरुहइ जेपेव पुङ्डरीए राया तेणेव उवागच्छति करयल जाव पुङ्डरीयं एवं वयासी-एवं  
लालु देवा० ! मए थेराणं अंतिए जाव घमं से निसंते से घममे अभिरुहए तए णं देवा० ! जाव पञ्चवइतए, तए  
णं से पुङ्डरीए कंडरीयं एवं वयासी-मा णं तुमं देवाणुपिया ! इदाणि सुहं जाव पञ्चयाहि अहं णं तुमं महया  
२ रायामि केदणं अभिस्तिचयामि, तए णं से कंडरीए पुङ्डरीयसस रणणे एयमहं णो आढाति जाव तुसिणीए  
संचिडति, तते णं पुङ्डरीए राया कंडरीयं दोचंपि तचंपि एवं च०-जाव तुसिणीए संचिडति, तते णं पुङ्डरीए  
कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएति यहूहि आयवणाहि पणवणाहि य ४, ताहे अकामए चेव एयमहं अणु-  
मनित्या जाव णिक्खमणामिसेएनं अभिस्तिचति जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयति, पवतिए अणगारे जाए  
एफारसंगविठ, तते णं थेरा अगचंतो अचया कथाहं पुङ्डरीगिणी औ नयरीओ णलिणीचणाओ उजाणाओ

१९ श्री-  
पुण्डरी-  
कार्लय-  
षावाइ०

पुण्डरीयस्ति विहरति ॥ सूत्रम्-१४८ ॥ तते णं तस्त कंडरीयस्स आणगारस्स तेहि०  
अंगेहि य पंतेहि य जहा सेलगस्स जाव दाहवांतीए पावि विहरति, तते णं थेरा अन्नया कपाई० जेणेव  
पोङ्डरिगिणी तेगेव उचागच्छइ० २ णालिणिवणे समोसदा, पोङ्डरीए फिरगए घम्मं चुणेति, तए णं पोङ्डरीए  
राया घम्मं सोचा जेणेव कंडरीए अणगारे तेगेव उचाइ० कंडरीय चंदति णामंसति ३, कंडरीयस्स आणगारस्स  
सरीरां सच्चावाहं सरोयं पासति ३, जेणेव थेरा भगांयंते चंदति णामंसह० २

कस्य  
रोगादि-  
बर्णन-  
ख्रम् ।

पुण्डरीयस्स आणगारस्स अहापचतेहि० ओसह भेसलेहि० जाव तेहचं आउद्दामि०  
अंगेहि० अहणणं खंते० कंडरीयस्स आणगारस्स पडिसुणेति २, जाव  
तं तुव्वेण अंते० मम जाणसालाहु समोसरह, तते णं थेरा भगांयंतो पुण्डरीयस्स पडिसुणेति २, जाव  
उच्यसंपज्जिताणं विहरंति, तते णं पुण्डरीए राया जहा मंडए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए, तते णं थेरा  
भगांयंतो पोङ्डरीए रायं पुच्छति ३, यहिया जणवयविहारं विहरंति, तते णं से कंडरीए ताओ रोयांयंकाओ  
विष्णमुके समाणेतंसि मणुणांसि असुणपाणस्वाइमसाइमंसि सुचित्तिए गाहिए अजझोचवणेणो णो संचाएह  
पोङ्डरीए आएुचित्ता यहिया अब्मुखएनं जणवयविहारं विहरित्तए, तत्येव ओसणेणो जाए, तते णं से  
पोङ्डरीए इमीसे कहाए लद्दहु समाणो पहाए अंतेउपरियालंपरियुहे जेणेव कंडरीए अणगारे तेगेव उचाइ०  
२ कंडरियं तिक्कुतो आयाहिणं पयाहिणं करेह० २ चंदति णामंसति २ एवं व०-घवेसि णं तुमं देवाइ० ! कयट्टे  
कयपुते कयलक्ष्मणे सुलदे णं देवाइ० ! तथ माणुससए जम्मजीवियफले जे णं तुमं रज्जं च जाव अंतेउरं

च छुड़ता विगोचहस्ता जाव पहवतिए, अहं नं आहणं उक्खुने रखें। जाव अंतेउरे य माणुससएसु य  
काम भोगेचु मुच्छिए जाव अज्ञोचवले नो संचाएमि जाव, पठ्यतित्तेए, तं घक्केसि नं ठुमं देवा० ! जाव,  
जीवियफलेले, तते नं से कंडरीए अगांवे बुँडीयस्स एपमट्ट नो आढाति जाव संचिडति, तते नं कंडरीए  
पोँडरीएनं दोचंपि तचंपि एवं ठुते समण अकामए अवस्सवसे लज्जाए गार्वेणा य पौडिंव रायं, आमु-  
च्छति २ येरहि सद्धि वहिया जाणवयविहारं विहरति, तते नं से कंडरीए येरहि सद्धि कालं उरग-  
उरगेणं विहरति, ततो पचला समणत्तणणिविवेणे समणत्तणणिविवेणे समणत्तणणिविवेणे  
फजोगी थेराणं अंतियाओ सणियं २, पचोसकति २, जेणेव पुँडरिनिगी गयरी जेणेव बुँडरीयस्स मवणे  
तेणेव उया० असै, नाणियाए असोगवरपायवस्स ऐं बुँडविसिलापहांसि पिसीयति २, ओहयमण-  
संकप्पे जाव क्षियायमाणे संचिडति, तते नं तरस पैँडरीयस्स अममयाती जेणेव असोगवलिया तेणेव  
उया० २, कंडरीए अणगारं असोगवरपायवस्स अं बुँडविसिलावहावहु ओहयमणसंकप्पे  
माणं पासति २, जेपैव पौडरीए राया तेणेव उया० २, पौडरीय रायं एवं च०-एवं खल्ल देवा० ! तव पितु-  
भाउ१ कंडरीए अणगारे असोगवलिया० असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे बुँडविसिलावहु ओहयमणसंकप्पे  
जाव क्षियायति, तते नं पौडरीए अममयाहाए पृथमट्ट सोचा पिसाऱ्म तहेव संभंते समाणे उड्डाए  
उड्डेति २, अंतेउरपरियालसंपरियुद्ध जेणेव असोगवणिया जाव कंडरीय तिक्कहुतो० एवं व०-ध०नेसि

१९ श्री-  
पुण्डरी-  
कार्घ्य-  
वाग्ना॒  
मग्नपरिणा॒  
सिफुरी॒  
कस्यजी॒  
वनचया॒  
दिवर्णन॒  
बुधम् ।

॥ २५१

१० तुमं देवा० ! जाव पठवहस्तैः०, तं घनेऽसि णं तुमं देवा० ! जाव  
जीवियफले, तते णं कंडरीए उंडरीए एवं तुते समाणे तुसिणीए संचिह्निं दोचंपि तचंपि जाव चिह्निति,  
तते णं उंडरीए कंडरीए एवं य०-अटो भंते ! भोगेहि ? , हंता ! अटो, तते णं से पौंडरीए राया कोडंचिं-  
यगुरिसे सदावेह ३, एवं य०-खिपामेव भो देवा० ! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवठवेह  
जाव रायाभिसेणं अभिसिंचति ॥ सूत्रम्-१४९ ॥ तते णं उंडरीए सयमेव पंचमुद्धियं लोयं करेति सय-  
मेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्ज्वति २, कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेहहति ३, हमं पयारूचं अभिगगहं  
अभिगिह-कटपति मे थेरे चंदिता णमंसिता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जिता णं ततो पञ्चला  
आहारं आहारित्वं चिकहु, हमं च पयारूचं अभिगगहं अभिगिहेता णं पौंडरिगिणीए पडिनिकावमति २  
उच्चाणुनिय चरमाणे गामाणुगमं दृहज्जमाणे थेरा भगवंतो तेषोव पहोरत्थ गमणाए ॥ सूत्रम्-१५० ॥ तते णं  
तस्स कंडरीयस्स रणो तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स स माणस स अतिजागरिणा य अहभोयणाप्य-  
संगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमह, तते णं तस्स कंडरीयस्स रणो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि  
उच्चरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउङ्गुया उज्जला चित्तला पगाढा जाव दुरहियासा पित्त-  
ज्जरपरिगयसरीरे दाहवकंतीए यावि चिहरति । तते णं से कंडरीए राया रेळे य रड्डे य अंतेउरे य जाव  
अज्ञाओववेत्त अडुदुद्दवसद्वे अकामते अवसरवेस कालमासे कालं किचा अहे सत्तमाए पुढवीए उकोस-

नवाही-  
शीज्ञाता-  
र्थकथाहे

॥ २५२ ॥

कालहित्यंसि नरयंसि नरहयत्ताए उवचणे । एवामेव समणाउसो ! जाव पठवतिए समागे पुणरवि-  
 माणसए कामभोगे आसाहए जाव अणपरियहिसति जहा व से कंडरीए राया ( सुत्रम्-१९१ ) तते णं से-  
 पौढरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवा० २, येरे भगवंते वंदति नमसति २ थेराणं अंतिए दोचंपि-  
 चाउज्जामं घमं पठिवज्जति, छुखमणपारणांसि पहमाए पोरिसीए सज्ज्ञायं करेति २ जाव अडमाणे सीय-  
 लुक्कं पाणभोयणं पडिगाहेति २, अहापल्लत्तमि तिकहु पडिणियतति, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवा० ३,  
 भत्तपाणं पडिदंसेति २, येरहि भगवंतेहि अब्मणुद्वाए समाणे अमुच्छिते ४, विलमिव पणणगम्मणं अटपणेणं  
 तं फारएसणिङ्गं असण ४, सरीरकोहुगांसि पविक्खवति, तते णं तस्स बुङ्डरीपस्स अणगारस्स तं कालाहक्कते  
 अरसं विरसं सीपलुक्कं पाणभोयणं आहारियस्स बुङ्डरीपस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा-  
 जागरमाणस्स से आहोरे णो समं परिणमति, तते णं तस्स पुङ्डरीपस्स दाहवंतीए विहरति, तते णं से पुङ्डरीए अण-  
 पाउङ्गूया उज्जला जाव दुरहियासा पित्तजरपरिग्रायसरीरे दाहवंतीए विहरति, तते णं से पुङ्डरीए अण-  
 गारे अत्थामे अथले अवीरीए अपुरिसक्कारपरकमे करयल जाव एवं च०-णमोऽत्थु णं अरिहंताणं जाव  
 संपत्ताणं णमोऽत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम घममायरियाणं घममोवएसयाणं पुङ्डिवपि य णं मए थेराणं  
 अंतिए सङ्डवे पाणातिवाए पचक्कवाए जाव मिळादंसणसल्ले णं पचक्कवाए जाव आलोहयपडिक्कते काल-  
 मासे कालं किचा सङ्घट्टसिद्धे उवचेने । ततो अणांतरं उवचट्टा महाविदेह वासे सिजिहृषिति जाव

वाही-  
० २० त्रिविकरणमंतः काहिति । एवामेव समणाउसो ॥

सन्धवदुक्तवाणमंतः काहिति । एवामेव समणाउसो ॥ जाव पव्यतिए समाणे माणुससएहि कामभोगेहि ॥  
गो सज्जति नो रज्जति जाव, तो विपङ्गियायमावज्जति से णं हृहभवै चेव यहूणं समणाणं यहूणं समणीयं ॥  
यहूणं सावयाणं यहूणं साविगाणं अचयिगाणं देवयं चेहयं चेहयं पञ्चयासालिङ्गे चिक्षिति वहूणिं दंडणिं कल्हाणं, मंगालं  
देवयं चेहयं पञ्चयासालिङ्गे चिक्षिति वहूणिं दंडणिं कल्हाणं, मंगालं  
गाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंतं संसारकंतारं जाव वीतीधहस्ति, जहा-य से, पौडरीए अणगारे । पवं,  
वल्ल जंदू ! समणेण भगवया महावीरेण आदिगरेण, तिथगरेण जाव चिद्रिगडणामवेळं ठाणं संपत्तेण,  
एगणवीरमहस्त नायङ्गहयणसस, अयमहूं पदत्ते । एवं, खल्ल जंदू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव चिद्रि-  
गडणामवेळं ठाणं संपत्तेण छडुसस अंगसस पढमसस चुपक्खं घरस, अयमहूं पणत्ते त्तिवेमि ॥ सूत्रम्-१५३ ॥  
१५३ ॥ एगुणवीरीसं, अजहयणाणि एकससरगाणि एगुणवीरीसाए दिवसेमु समपत्ति ॥ सूत्रम्-

सवं सुगम, नवर उपनयविशेषोऽप्यम्—“वाससहस्रसंपि जई, काळणं संवं सुविउलंपि । अंते किलिदुमावो न विसुज्जहै, केह  
रीउब ॥१॥ तथा-अप्येणवि कालेण केह जहागहियसीठसामणा । साहिति निययकज, पूँडरीयमदारियिद, जहा ॥२॥” [वर्पसहस-  
मपि यति; छत्या संयमं सुविपुलमपि । अन्ते क्लिटमावो न विशुद्धपति कृष्णरीक इव ॥१॥ अल्पेनापि कालेन केचित्, यथागृहीय-  
गीलसपुकाः । साव्यन्ति निजकार्यं यथैर पूँडरीकमहपि ॥२॥] इत्येकोनविश्वितम ब्रातंविवरणतः प्रथमश्रुदस्कर्मवः समाप्तः ॥

१९ श्री-  
पूँडरी- काख्य-  
वाहा- व्यागा व्या ॥  
देवयं चेहयं पञ्चयं काल्हाण- यव्ययनो-  
देवयं चेहयं पञ्चयं काल्हाण- पांहरणा-  
देवयं चेहयं पञ्चयं काल्हाण- दिवर्णन-  
देवयं चेहयं पञ्चयं काल्हाण- क्षवम् ।

॥ २५२ ॥

## २. श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्के-द्वितीयश्रुतस्कन्धविवरणम्।

अथ द्वितीयो व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायमयिमस्थवन्धः:-पूर्वजासोपालमभादिभिज्ञतिर्थमर्थं उपनीयते, ॥५६॥ तु

स एव साधारकथाभिरभिवीयते इत्येवंसम्बन्धोऽयम्—

तेण कालेण २ रायगिहे नामं नयरे होत्था, वण्णओ, तस्स पां रायगिहस्स वहिया उच्चरपुरन्धितमे दिसिमाए तथं पां गुणस्तीलए पासं वेहए। होत्था, वण्णओ, तेण कालेण २ समणस्स भगवत्तो-महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहस्मा गासं थेरा, अगवंतो जातिसंपत्ता कुलसंपत्ता जाव चउहसपुढ्वी चउणाणोवगया चुहंचुहेण विहरु-पंचहि अणगारस्यहि सद्विं संपरित्युडा पुढ्वाणपुन्हिव चरमाणा गामाणुगामं दुइज्जमाणा। चुहंचुहेण भावेमाणा। विहरंति, माणा जेणेव रायगिहे पायरे जेणेव गुणसीलए चेहए जाव संजमेणं तवसा, अपाणं भावेमाणा, तेण कालेण ३ परिसा निगया, धर्मो कहिओ, परिसा जामेव दिसि पुडिगया, तेण कालेण ४ अज्जसुहस्मस्स अणगारे, जाव, पञ्जुवासमाणे एवं व०-जति पां भंते ! समणेण, जाव संपत्तेण, छहस्स, अगस्स पठमसुप्यक्षवंधस्स पायसुयाणं अयमडे पञ्चते दोच्चस्स पां भंते ! चुयक्षसंधस्स-धर्मकहाणं समणेण, जाव, संपत्तेण के, अडे पञ्चते ?, एवं खलु, जाव, ॥५७॥ समणेण-जाव

शु० प्रथमवर्गे  
सीं चउत्तेष्ये वर्गे ४  
प्रथमांड्ययन-  
प्रारम्भ॥

संपत्तेण धर्मकहाणं दस चगा पं०, तं०-चमरस्स अगमहि सीं पहमे- वर्गे २ बलिस्स  
वहरोपणिदस्स वहरोयणरक्तो अगमहि सीं वीए वर्गे २ असुरिदवज्ञाणं इंदाणं अगमहि  
सीं चउत्तरिल्लाणं असुरिदवज्जियाणं भवणवासिःइंदाणं अगमहिसीं चउत्तेष्ये वर्गे ४  
तहए वर्गे ३ उत्तरिल्लाणं अगमहिसीं वाणमंतराणं इंदाणं अग-  
दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अगमहिसीं पचमे वर्गे ५ उत्तरिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग-  
महिसीं छट्टे वर्गे ६ चंद्रस्स अगमहिसीं सचमे वर्गे ७ सूरस्स अगमहिसीं आठमे वर्गे ८  
महिसीं छट्टे वर्गे ९ ईसाणस्स अगमहिसीं दसमे वर्गे १० । जति ण भंते ! समणेण  
सकस्स अगमहिसीं पचमे वर्गे ११ ईसाणस्स अगमहिसीं दसमे वर्गे १२ । जाव संपत्तेण के अट्टे  
जाव संपत्तेण धर्मकहाणं दस चगा पं० पहमस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्टे-काली राहे  
पत्तेण, एवं खलु जंचु ! समणेण जाय संपत्तेण पहमस्स चगास्स पंच अज्ञापणा पं० तं०-काली राहे  
रयणी विज्ञु मेहा, जह ण भंते ! समणेण जाव संपत्तेण पहमस्स चगास्स पंच अज्ञापणा पं० पहमस्स  
ण भंते ! अज्ञापणस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्टे पं० ? , एवं खलु जंचु ! तेण कालेण २ रायगिहे  
णयेर गुणसीलए चेहए सेणिए राया चेलणा देवी सामी समोसरिए परिसा पिगया जाव परिसा पञ्जु-  
चासति, तेण कालेण २ काली नामं देवी चमरचंचाए रायहाणीए कालबाँड़सगभवणे कालंसि सीहासणांसि  
चउहि सामाणियसाहसीहि चउहि मयहरियाहि सपरिचाराहि तिहि परिसाहि सत्ताहि अणिएहि  
सत्ताहि अणियाहिचतीहि सोलमाहि आपरक्षदेवसाहसीहि अणोहि बहुएहि य कालबाँड़सगभवण-  
॥ २५३ ॥

वासीहि असुरकुमारेहि देवीहि य सद्विं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरह, हमं च णं केवलकर्पं  
जंवुधीयं २ विउलेणा ओहिणा आभोएमाणी २ पासह, तथ्य समणं भगवं महावीरं जंवुधीवे २ भारहे-  
वासे रायगिहे नगरं गुणसिलए नेहए अहापडिरुवं उरगहं उरिगाहिहता संजमेणं तवसा अपपाणं भावेः  
माणं पासति २ चा हड्डुहचित्माणंदिया फीतिमणा जाव हयहियया सीहासणाओ अङ्गुच्छति २ वामं जाणु-  
पायपीडाओ पचोरहति २ पाउया ओमुषयति २ तित्थगराभिमुही सतड पथाहं अणुगच्छति २ ईस्तं पञ्चुण-  
अंचेति २ वाहिणं जाणु घरणियलंसि निहडु तिकखुचो चुद्धाणं घरणियलंसि निवेसेति २ ईस्तं पञ्चुण-  
मह २ कठपतुडियंभियातो शुयातो साहरति २ करयल जाव कहु एवं व०-णमोडत्यु णं अरहताणं जाव  
संपताणं णमोडत्यु णं समणस्स भगवं महावीरस्स जाव संपावित्कामस्स चंदामि णं भगवंतं तथ-  
चरंसि पुरथाभिमुहा निसणा, तते णं तीसे कालीए देवीए इमेयाख्वेजे जाव समुपज्जित्या-सेयं खलु मे-  
गयं हह गए पासउ मे समणे भगवं महावीरे तथ्य गए हह गयंति कहु वंदति २ नमंसति २ सीहासण-  
संपताणं णमोडत्यु एवं संपेहेति २ आभिओगिए देवे सद्वावेति २ आणत्तियं देह जाव दिव्व-  
समणं भगवं महावीरं चंदिता जाव पञ्चुवासित्तए तिकहु एवं संपेहेति २ आणत्तियं देह जाव दिव्व-  
एवं व०-एवं खलु देवा० ! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सुरिया ओ तहेव आणत्तियं देह जाव दिव्व-  
सरवराभिगमणजोगां करोह २ जाव पचाटिपणह, तेवि तहेव करेता जाव पचाटिपणांति, पावरं जोयणसह-  
स्सविच्छिणां जाणं सेसं तहेव तहेव णामगोयं साहेह तहेव नदिविहि उवदंसेह जाव पडिगया । भंतेति

२. द्वितीय-  
देवीही ३ कहिं गया० कृष्णारसालादिहंतो, अहो णं भंते ! काली देवी महिल्या, कालिए णं  
भंते ! देवीए सा दिनवा देविही ३ किणा लद्वा किणा पत्ता किणा अभिसमणगाया ? , एवं जहा  
सुरिया भस्त जाव एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेण २ इहेव जंबुदीवे २ भारहे वासे आमलकपा-  
णाम णयरी होत्था घणणओ अंदसालवणे चेहए जियसत् राया, तत्थ णं आमलकपाए, नयरीए काले-  
नामं गाहावती होत्था अहु जाव अपरिच्छृ, तरस णं कालस्त गाहावतिस्त धूया कालस्ती णामं भारिया  
होत्था, सुकुमाल जाव सुख्लवा, तरस णं कालगरस्त गाहावतिस्त धूया कालस्ती ए अचया  
काली पामं दारिया होत्था, चड्डा चड्डुकुमारी जुणा जुणाकुमारी पठियपुरत्थणी पिठिवचवरा  
घरपरिचज्जियाचि होत्था, तेणं कालेण २ पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा बढ़माणासामी यावरं  
णवहत्युसेहे सोलसहि समणसाहस्रसीहि अहुत्तीसाए अज्जियासाहस्रसीहि सर्द्धि संपरितुहे जाव अंय-  
सालवणे समोसहे परिसा णि० जाव पज्जुवासति, तते णं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्वहा समाणी  
हट जाव हियया लेणेव अम्मापियरो तेणेव उचा० २ करयल जाव एवं च०-एवं खलु अम्मयाओ ! पासे  
अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विवरति, तं हच्छामि.णं अम्मयाओ ! तुहमेहि अन्मण्ड्राया समाणी  
पासस्त अरहओ पुरिसादाणीपरस्त पायवंदिया गमिच्छै, अहाचुहं वेचा० । मा पठियंधं करेहि, तते णं

कय-  
सा कालिया दारिया अम्मापिंहि अन्धशुब्राया समाणी हट जाव हिया पहाया कथ्यलिकम्मा कय-  
कोउपमंगलपायचिलता मुद्रपवेसाहं मंगलाति बलयार्ति पवर परिहिया आपमहर्या भरणालीकियस्तरीरा  
चेडियानकवालपरिकिणा सातो गिहातो पडिणिकवलमति २ जेणेव चाहिहिया उवडुणसाला जेणेव  
घमिमय जाणपवरे तेणेव उचा० २ घमिमयं जाणपवरं दुरुद्दा, तते णं सा काली दारिया घमिमयं जाण-  
पवरं पवं जहा दोवती जाव पज्जुवासति, तते णं पासे अरहु पुरिसादाणीयस्स  
महतिमहालयाए परिसाए घमं कहेह, तते णं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स तिकवहुतो वंदति नमंसति  
अंतिए घमं सोचा णिसम्म हट जाव हिया पासं अरहु पुरिसादाणीयं तिकवहुतो वंदति नमंसति १  
२ एवं च०-सहहामि णं भंते । णिमंगंयं पावयाणं जाव से जहेयं तुन्मे ययह, जं पावरं देवा० ।  
अम्मापियरो आपुच्छामि, तते णं अहं देवाणुष्टिपयाणं अंतिए जाव पठवयामि, अहाचुहं देवा० ।, तते णं  
सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं तुता समाणी हट जाव हियया पासं अरहं चंदति  
२ तमेव घमिमयं जाणपवरं दुरुहति २ पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियातो अंवसालवण्णाओ  
चेह्याओ पडिणिकवलमति २ जेणेव आमलकटपा नयरी तेणेव उचा० २ घमिमयं जाणपवरं ठंवेति २ घमिमयाओ जाणपवराओ  
जेणेव चाहिहिया उवडुणसाला तेणेव उचा० २ घमिमयं जाणपवरं ठंवेति २ घमिमयाओ । मए पासस्स  
पणोफहति २ जेणेव अम्मापियरा तेणेव उचा० २ करपल एवं च०-एवं लालु अम्मयाओ ।

२. द्वितीय-  
श्रृंग  
कालिकृत  
प्रवृत्त्या-  
ग्रहणादि-  
सत्रम् ।

अरहे १ अंतिए घम्मे पिंसेते सेविय घम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुतिए, तए पां अहं अमयाओ !  
संसारभउठिवगा भीया जम्मणमरणाणं इच्छामि पां तुन्मेहि अहभुग्नाया समाणी पाससस अरहतो  
अंतिए मुँडा भविता आगारातो अणारियं पव्यतितए, अहासुहं देवा० ! मा पडिबंध क०, तते  
पां से कोले गाहावहं चिपुलं असां ४ उचक्खडवेति २ मित्तणाहण्यगसयणसंबंधिपरियणं  
आमंतेति ३ ततो पच्छा पहाए जाय चिपुलेण पुण्यवतथंघमल्लालंकारेण सकारेता सम्माणेता  
तसेव मित्तणातिण्यगसयणसंबंधिपरियणसस पुरतो कालियं दारियं सेयापीएहि कलसेहि पहावेति  
२ सव्वालंकारविश्वसियं करेति २ उरिससहस्रचाहिणीयं सीयं दुरुहेति २ मित्तणाहण्यगसयण-  
संबंधिपरियणों सद्दिं संपरियुडा सकियहीए जाव रवेण्यं आमलकपं नयरि मज्जंमज्जेणं पित्तणाळति  
२ जेणेव अंयसालवणे चेह्हे तेणेव उवा० २ उत्ताइए तिथगराहसए पासति २ सीयं ठवेहे २ कालियं  
दारियं अमापियो उरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवा० २ चंदह नमंसह २  
त्ता एवं च०-एवं खलु देवा० ! काली दारिया अमंह धूगा इट्टा कंता जाव किमंग पुण पासणयाए १, एस  
पां देवा० ! संसारभउठिवगा इच्छह देवाणुपियाणं अंतिए मुँडा भवित्ताणं जाव पव्यहतए, तं एयं पां  
देवाणुपियाणं सिस्तिणिभिक्षं दलयामो पडिच्छंतु पां देवाणुपिया ! सिस्तिणिभिक्षं, अहासुहं

३५५ ॥

देवाणुरिप्या । मा पठियं च, तते णं काली कुमारी पासं अरहं चंदति २ उत्तरपुरचित्तमं दिसिभागं अवक-  
मति २ सयमेव आभरणमल्लांकारं ओमुष्यति २ सयमेव लोयं करेति २ जेणोव पासे अरहा गुरिसादाणीए  
तेणेव उच्चा० २ पासं अरहं तिक्खुस्तो चंदति २ एवं व०-आलिते णं भंते ! लोए एवं जहा देवाणंदा  
जाव सयमेव पठवाविउं, तते णं पासे अरहा गुरिसादाणीए कालि सयमेव गुफक्खूलाए अज्ञाए स्तिहिसणि-  
यत्ताए दलयति, तते णं सा गुफक्खूला अज्ञा कालि कुमारि सयमेव पठवावेति, जाव उवसंपज्जित्ताणं  
विहरति, तते णं सा काली अज्ञा इरियासमिया जाव गुत्तवंभयारिणी, तते णं सा काली अज्ञा  
गुफक्खूलाअज्ञाए अंतिए सामाइयमाहयाति एकारस अंगाहं अहिज्जहं घृह्णिं चउथ जाव विहरति, तते  
णं सा काली अज्ञा कयाति सरीरवाउसिया जाया याचि होत्था, अभिक्खरणं २ हत्ये घोवह पाए  
घोवह सीसं घोवह सुहं घोवह अणंतराहं घोवह कक्षवंतराहं घोवह जल्थ २ विय णं  
ठाणं वा सेद्धं वा णिसीहियं वा चेतेह तं गुनवामेव अवमुक्खेता ततो पच्छा आसयति वा सप्यह वा, तते  
णं सा गुफक्खूला अज्ञा कालि अज्जं एवं व०-नो खलु कर्पति देवा० ! समणीणं णिरगंधीणं सरीरवाउ-  
सियाणं होत्तए तुमं च णं देवाणुरिप्या ! सरीरवाउसिया जाया अभिक्खरणं २ हत्ये घोवसि जाव

२. द्वितीय-  
नवाही-  
३०४० अवसरणंति अभिकवाणं २ हीलेन्ति पिंगंदंति गरिहंहति शु।  
भीज्ञाता-  
पर्मकथाहे संयम-  
स्थित-  
कालि० आर्तच्या-  
नादि० स्वहृष्ट् ।

तते णं तोओ पुण्कचूलाओ अज्ञाओ कालिं अज्ञं अभिकवाणं २ हीलेन्ति पिंगंदंति गरिहंहति शु।  
अवसरणंति अभिकवाणं २ एयमद्वं निचारिति, तते णं तीसे कालीए अज्ञाए समणीहि पिजांशीहि  
अभिकवाणं २ हीलिज्जमाणीए जाव. चारिज्जमाणीए हमेयाह्वे अब्भतिथए जाव समउपज्जित्याजया णं  
अहं आगारवासं मज्जे चसित्या तया णं अहं स्यंवसा जटिपिभिं च णं अहं सुंडे भवित्वा आगाराओ  
अणगारियं पञ्चवतिया तप्पभिं च णं अहं परवसा जाया, तं सेयं खलु मम कल्हं पाउपपभायाए रयणीए  
जाव जल्लेते पाडिकियं उवस्सयं उवसंपज्जित्वा णं चिह्नित्वा त्ति कहु पवं संपेहेति २ कल्हं जाव जल्लेते पाडि-  
एकं उवस्सयं गिणहति, तत्य णं अणिचारिया अणोहहिया सच्छंदमती अभिकवाणं २ हत्ये घोवेति जाव  
आसपह चा सयह चा, तप णं सा काली अज्ञा पासत्थविहारी ओसणाचिवहारी  
कुसीला २ अहाढुंदा २ संसत्ता २ वहणि चासाणि सामवपरियां पाउणह २ अद्वमासियाए संलेहणाए  
अत्ताणं क्लूसेति २ तीसं भत्ताहं अणासणाए छेषह २ तस्स ठाणस्स अणालोहय अपडिकंता कालमासे काल  
फिच्चा चमरचंच्चाए रायहाणीए कालचड्डिसए भवेण उवचायसभाए देवस्यणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स  
असंखेज्जाह मागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्ताए उवचण्णा, तते णं सा काली देवी अहुणोवचण्णा  
समाणी पंचविहाए पञ्चतीए जहा सरियाओ जाव भासामणपञ्चतीए, तते णं सा काली देवी चउणह  
सामाणियसाहस्रीणं जाव अणेस्सि च बहुणं कालवडेसगभवणवासीणं अचुरकुमाराणं देवाण य देवीण य ॥ २५६ ॥

आहेचं जाव विहरति, एवं खलु गो० । कालीए देवीए सा दिव्या देविती ३. लक्ष्मा पत्ना अभिसमणागाया,  
कालीए णं भंते॑ । देवीए केवतियं काळं ठिती पक्कता ? , गो० । अहुहज्जाहं पलिओवमाहं ठिर्ह पक्कता,  
महाबिदेह वासे सिद्धिश्चहिति, एवं खलु जंयू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पहमवगस्स पहमउक्षयणस्स.  
अपमेढं पणते ति वेमि । घरमकहाणं पहमउक्षयणं समर्चं ॥ सूत्रम्-१५४ ॥  
सर्वः सुगमः, नवरः 'किणा लङ्द'ति प्राकुरत्वात् केन हेतुना लङ्घा-मवान्तरे उपार्जिता प्राप्ता-देवमवे उपनीता  
अभिसमन्वयागता-परिमोगतः उपयोगं ग्रासेति, 'चरु'ति युहती वयसा सैव युहत्वादपरिणीतत्वाच युहत्कुमारी जीर्णं शरीर-  
जरणाद्युदेत्यषः; सेर नीर्णत्वापरिणत्वामयं जीर्णकुमारी जीर्णकुमारी जीर्णकुमारी जीर्णकुमारी जीर्णकुमारी जीर्णकुमारी  
निरिणाथ यस्याः-परिणेतारो यस्याः सा निरिणवसा अत एव वरपरिवर्जितेति शेषं चतुर्सिद्धम् ॥

जति णं भंते॑ । समणेणं जाव, संपत्तेणं घरमकहाणं पहमउक्षयणस्स वगस्स पहमउक्षयणस्स अपमेढं प०  
यितियस्स, णं भंते॑ । अज्ज्वयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेण के० अट्ठे पणते॑ ? , एवं  
खलु जंयू ! तेणं काळेणं २ राहु देवी, घरत्यंच्याए राष्ट्रहाणीए एवं जहा काली तहेव, आगाया णद्यविहि  
चासति, तेणं काळेणं २ राहु देवी, घरत्यंच्याए राष्ट्रहाणीए एवं खलु गो० । तेणं काळेणं २ आमलकपा  
उचदंसेत्ता पठिगाया, भंतेति भगवं गो० । युष्मवपुच्छा, एवं खलु गो० । युष्मवपुच्छा, एवं खलु गो० ।

२. द्वितीय-

श्रू०

प्रथम-  
वर्गीय-  
द्वितीया-  
द्वितीयनादि-

णयरी अंवसालवणे चेहए जियसन् राया राई दारिया पाससस समो-  
सरणं राई दारिया जहेव काली तहेव निकबंता तहेव सरीरवाडसिया तं चेव सबं जाव अंतं काहिति ।  
भीझाग-  
धर्मकथाहे-  
जंवू ! विहयज्ञयणसस निकबेवओ २ । जति णं भंते ! तहयज्ञयणसस उकबेवतो, एवं खलु

गाहावती रयणसिरी चारिया रयणी दारिया विज्ञुदारिया सेसं तहेव ४ । एवं मेहावि आमल-  
कपणा नयरी विज्ञुसिरी भारिया विज्ञुदारिया सेसं तहेव ५ । एवं खलु समणेण जाव संप-  
तयरीए मेहे गाहावती मेहसिरि भारिया मेहा दारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ६ । एवं खलु जंवू समणेण जाव संप-  
तेण धर्मकहाणं पहमसस वगगसस अयमेहु पणणाचे ॥ सूत्रम्-१५५ ॥ जति णं भंते ! समणेण जाव संपतेण  
दोचरसस वगगसस उकबेवओ, एवं खलु जंवू ! समणेण जाव संपतेण दोचरसस पंच अडक्षयणा पं०,  
तं०-सुःभा निसुंभा रंभा निरुंभा मदणा, जति णं भंते ! समणेण जाव संपतेण धर्मकहाणं दोचरसस  
वगगसस पंच अडक्षयणा पं०, दोचरसस णं भंते ! वगगसस पहमज्ञयणसस के० अटे पं० ? एवं खलु जंवू !  
तेणं कालिणं ३ रायगिहे णयरे गुणसीलए चेहए सामी समोसहो परिसा णिगगया जाव पज्ञुवासति, तेणं  
कालिणं २ सुंभा देवी वलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमणं जाव  
णदुविहि उवदंसेता जाव पडिगया, पुढवभवपुडणा, सावत्थी णयरी कोडए चेहए जियसन् राया सुंभे

॥ ३५७ ॥

नवाझी-  
१० श०

॥ ३५७ ॥

गाहावती सुंभसिरी भारिया चुंभा दारिया सेसं जहा कालिया णवरं अद्भुतिं पलिओबमाईं हिती,  
एवं खलु जंचू ! निक्खेवओ अजक्षयणस्स एवं सेसावि चत्तारि अजक्षयणा, सावत्थीए नवरं माया पिया  
सरिसनामया, एवं खलु जंचू ! निक्खेवओ चितीयवगरस्स २ ॥१५६॥ उक्खेवओ तहयवगरस्स एवं  
खलु ! समणों भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण तहयरस्स वगरस्स चउपणं अजक्षयणा पवाता,  
तं०-पढ़मे अजक्षयणे जाव चउपणतिमे अजक्षयणे, जति णं भंते ! समणों जाव संपत्तेण के अडे-  
पणाते १, एवं खलु जंचू ! तेण कालेण २ रापगिहे णयरे गुणसीलए चेहए सामी समोसहे परिसा णिजगया  
जाव पज्जुवासति, तेण कालेण ३ इला देवी धरणीए रायहाणीए इलावडंसए भवणे इलंसि सीहासणंसि  
एवं कालीगमणं जाव णटुविहि उवदंसेता पडिगया, पुठवभवपुच्छाला, वाणारसीए पायरे काममहावयण  
चेहए इले गाहावती इलसिरी भारिया इला वारिया सेसं जहा कालीए णवरं धरणस्स अगमहिसित्ताए  
उववाओ सातिरंग अद्भुपलिओबमठिती सेसं तहेव, एवं खलु पिक्खेवओ पहमजक्षयणस्स, एवं कमा सतेरा  
सोयामणी इदा घणा चिज्जुयावि, सहवाओ एयाओ धरणस्स अगमहिसीओ एव, एते छ अजक्षयणा वेणु-  
देवरसवि अविसेसिया भाणियवा एवं जाव घोसससवि एवं चेव छ अजक्षयणा, एवमेते दाहिणहाण इंदाण  
चउपणं अजक्षयणा भवंति, सहवाओवि वाणारसीए काममहावणे चेहए तहयवगरस्स पियवेवओ॥१५७॥

१५७ ॥ चउत्थपस्त उक्खेवओ, एवं खलु जंचु । समणों जाव संपत्तेण धम्मकहाणं चउत्थवगगरस चउ-  
पणं, अज्ञापणा पं०, तं०-पहमे अज्ञायणे जाव चउत्थपणाहमे अज्ञायणे, पढमस्स अज्ञायणस्स उक्खेव-  
वओ ॥ एवं खलु जंचु ! तेण कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पञ्जुवासति, तेण कालेणं २-  
खम्मकयाहे भीड्याग-  
र्भम्मकयाहे रायहाणी, रुयगचिंसए, भवणे रुयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा, नवरं पुन्व-  
रुया देवी रुयाणंदा रायहाणी, रुयगचिंसए, भवणे रुयगंसि भारिया रुया दारिया सेसं तहेव, जावरं रुयाणंद-  
भवे चंपाए पुण्णभवे चेतिए रुयगगाहाचर्व हयगगाहाचर्व रुहयाविरुहयंसाविरुहयावतीवि  
अगगमहिसिताए उवयाओ देसुणं पलिओवमं ठिर्द्धिग्क्खेवओ, एवं खलु सुरुयाविरुहयंसाविरुहयावतीवि  
रुयकंताविरुयप्रभावि�, एपाओ चेव, उत्तरिलाणं इंदाणं भाणियहाओ जाव महायोसस्स, पिक्खेवओ  
चउत्थपवगगरस ॥ सुन्नम्-१५८ ॥ पंचमवगगरस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंचु ! जाव यत्तीसं- अज्ञायणा, पं०,  
तं-कमला कमलप्पभा चेव, उत्पला य सुदंसणा । रुववती घहुरुवा, सुरुयाविय ॥ १ ॥ पुण्णा  
पहुपुतिया चेव, उत्तमा भारियाविय । पउमा वसुमती चेव, कणगा, कणगप्रभा, ॥ २ ॥ वडेसा केउमती,  
चेव, वहरसेणा रयिदिपया । रोहिणी नमिया चेव, हिरी उप्फवतीतिय, ॥ ३ ॥ सुरुया सुरुयावती चेव,  
महाकच्छाऽपराहया । सुयोसा विमला चेव, सुससरा य सरससती ॥ ४ ॥ उक्खेवओ पढमउक्खयप्रस्स,  
एवं खलु जंचु ! तेण, कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पञ्जुवासति, तेण कालेणं २ कमला, देवी,  
कमलाए रायहाणीए कमलचडेसए, भवणे कमलंसि सीहासणंसि, सेसं जहा, कालीए तहेव णवरं पुन्वभवे,

तागपुरे नयरे सहसंचवणे उज्जाणे कमलस्त गाहावतिरस कमलस्तीए आरियाए कमलस्ता दाररया कमला दाररया कमलस्त  
अंतिए निकलंता कालस्त पिसायकुमारिंदस्त अगमहिसी अद्वपलिओवमं ठिती, एवं सेसावि अज्ञ-  
यणा दाहिणिद्धाणं चाणमंतरिदाणं, भाणियन्वाओ सन्वाओ णागपुरे सहसंचवणे उज्जाणे माया पिया  
धूया सरिसनामया, ठिती अद्वपलिओवमं । पंचमो वरगो समतो ॥ सुत्रम्-१५९ ॥ छटोवि वरगो पंचम-  
वरगसरिसो, णवरं महाकालिंदाणं उत्तरिल्लाणं हंदाणं अगमहिसीओ पुन्वभवे सागेयनयरे उत्तरकुरु-  
उज्जाणे माया पिया धूया सरिसणामया सेसं तं चेव । छटो वरगो समतो ॥ सुत्रम्-१५० ॥ सत्तमस्त  
पंकरा, पहमउक्षणास्त उक्खेवओ, एवं खलु जंदू । तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा-  
पञ्चकरा, पहमउक्षणास्त उक्खेवओ, एवं खलु जंदू । तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा-  
पञ्चकरा, पहमउक्षणास्त, तेणं कालेणं २ सुररप्पमा देवी सुरंसि विमाणंसि सुररप्पमा दारिया  
पञ्चुवासह, तेणं कालेणं २ सुररप्पमा देवी सुरंसि विमाणंसि सुररप्पमा दारिया  
तहा णवरं पुन्वभवो अरक्खुरीए नयरीए सुररप्पमस्त गाहावइस्त सुरसिरीए भारियाए सेसा-  
सुररप्पमस्त अगमहिसी ठिती अद्वपलिओवमं पंचाहि वाससपरहि अवभहियं सेसं जहा कालीए, एवं सेसा-  
ओवि सव्वाओ अरक्खुरीए नयरीए । सत्तमो वरगो समतो ॥ सुत्रम्-१६१ ॥ अठमस्त उक्खेवओ, एवं  
खलु जंदू । जाव चत्तारि अज्ञयणा पं०, तं०-चंद्रप्पमा दोसिणामा अचिमाली पंभंकरा, पढमस्त  
अज्ञयणास्त उक्खेवओ, एवं खलु जंदू । तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पञ्चुवासह,

२. द्वितीय-

शुभं  
अष्टमवर्गी-  
याष्ट्यना-  
दिवर्णन-  
सत्रम् ।

तेण कालेण २ चंद्रप्रभंसि सीहासंसि सेसं जहा कालीए,  
पावरं पुलवभवे महुराए पायरीए भंडिवडसए उज्जाणे चंदसि गाहावनी चंदसि री भारिया  
चंद्रप्रभा दारिया चंद्रस अग्रमहिसी ठिती अदृपलिओवमं पणास्ताए वाससहस्रेहि अङ्गमहियं सेसं  
जहा कालीए, एवं सेसाओवि महुराए पायरीए मायापियरोवि धूयासरिसणामा, अट्टमो चरगो समतो ।  
॥ सूत्रम्-१६३ ॥ णवमस्त उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव अट्ट अज्ञायणा पं०, तं०-पठमा सिवा सती  
अंजु रोहिणी पायमिया अचला अचला अचला, पहमज्ञायणस्त उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेण कालेण रायगिहे  
समोसरणं जाव परिसा पञ्जुक्कासह, तेण कालेण २ पठमवडसए करपे पठमवडसए विमाणे  
समोसरणं जाव परिसा पञ्जुक्कासह, तेण कालीए २ पठमवडसए कालीगमएणं नायन्वा,  
पावरं सुहम्माए पठमंसि सीहासंसि जहा कालीए एवं अड्डवि अज्ञायणा कालीगमएणं नायन्वा,  
पावरं सावहथीए दो जणीओ हिथणाउरे दो जणीओ कंपिल्लपुरे दो जणीओ सागेयनगरे दो जणीओ  
पठमे पियरो विजया मायराओ सव्वाओइवि पासस अंतिए पठवतियाओ सक्कस्त स अग्रमहिसीओ ठिई  
सत्र पालिओवमाइ महाविदेह वासे अंत काहिति । पावमो चरगो समतो ॥ सूत्रम् १६३ ॥ दसमस्त  
उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव अट्ट अज्ञायणा पं०, तं०-कणहा य कणहराती रामा तह रामरकिलया  
वसु या । वसुगुता वसुमित्ता वसुंधरा वेव ईसाणे ॥ २ ॥ पहमज्ञायणस्त उक्खेवओ, एवं खलु जंबू !  
तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पञ्जुक्कासति, तेण कालेण २ कणहा देवी

१ २५९ ॥

इमाणे फट्टे कण्ठचडेंसर विमाणे समाए उहमाण कण्ठसि सेसं जहा कालीए एवं अद्वि  
अङ्गयणा कालीगमणों गोपन्या, पावं पुन्यभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो  
जणीओ सावलधीए नयरीए दो जणीओ कोसंधीए नयरीए दो जणीओ रामे पिया घमाया सव्याओऽधि  
पारतस अरहओ अंतिए पुक्कचलाए अब्बाए सिहिपणीयताए ईसाणसस अरगमहिसीओ छिती  
पाव पलिओवमाइं महाविदेष वासे सिनिक्षाहिति चृष्णहुक्लाणं अंतं काहिति । एवं  
गर्व जंदू ! शिरोवरो दम्मवगागसस । दसमो वगो समचो ॥ सूत्रम् १६४ ॥ एवं खलु जंयू ! समगेण  
भगवणा पश्चात्तिरेण आविगरेणं तित्यगरेणं संयंसंवुद्धेण पुरिसोत्तमेणं जाव संपत्तेण० । घम्मकहा चुपक्षवंघी  
समचो दम्महि वरोहि नायायमकहाओ समत्ताओ ॥ सूत्रम्-१३५ ॥ समाप्तोऽयं द्वितीयः शुतरक्तयः ॥  
नमः धीर्दमानाय, श्रीपार्षीपगो नमः । नमः श्रीमत्वरसत्ये, सहायेभो नमो नमः ॥ १ ॥ इह हि गमनिकार्थं  
यनया लग्नहोक्तं, किमपि सगयहीनं गदिग्नीज्ञं सुयीगिः । नहि मगति नियेया संयाऽस्मिन्नुपेश्या, दयिरजिनमतानं  
गणिनी चादियोगे ॥२॥ परेष्व दुर्लभ्या मरनि हि विषया ॥ स्फुटपिंद, नियेयाद्य युदानामतुलनचनवृनमहसाय् । निरासायाधीभिः  
सुवरितां गारजतैस्ततः शायाखं मे चतनमतं दुर्लभिह ॥३॥ तरः मिदान्तरपाणी, च्वपसूषः प्रसत्तः । न पुनरसम-  
दावत्यान, एव ग्रामो निषेगतः ॥४॥ उपायि माऽस्तु मे वापं, सहमत्युपवीरनाम् । वृद्धन्यायातुमारित्वादिगायं न प्रवृत्तिः  
॥५॥ तपाहि-किमपि द्वितीयतिह स्फुटेऽपर्युतः, समरपिदेशो निषेगतनामेऽपि यद । समर्थपदसंश्वपादिगुण-

२. द्वितीय-  
श्रू० अष्टमवर्गी-  
याज्ञवल्यना-  
दिवर्णन-  
सूत्रम् ।

तेणं कालेण २ चंद्रप्रभादेवी चंद्रप्रभंसि विमाणंसि चंद्रप्रभंसि सीहासणंसि जहा कालीए,  
गवर्तु गुह्यभवे महुराए प्रयरीए चंद्रिवडेसए उज्जाणे चंद्रप्रभे गाहावती चंद्रसिरी भारिया  
चंद्रप्रभा दारिया चंद्रसस अगमहिसी ठिती अद्रपलिओवमं पण्णासाए चाससहस्रेहि अङ्गहियं सेसं  
जहा कालीए, एवं सेसाओवि महुराए प्रयरीए मायापियरोवि धूयास्त्रित्यामा, अट्टमो वरगो समत्तो ।  
॥ सूत्रम्-१६२ ॥ णवमस्तउक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव अठ अज्ञयणा पं०, तं०-पउमा सिवा सती  
अंजु रोहिणी पायमिया अचला अचला, पहुमज्ञयणास्त उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण रायगिहे  
समोसरां जाव परिसा पञ्जुवासह, तेणं कालेण २ पउमावर्द्देवी सोहम्मे करपे पउमवडेसए विमाणे  
सभाए सुहम्माए पउमंसि सीहासणंसि जहा कालीए एवं अठवि अज्ञयणा कालीगमणं नायन्वा,  
गवर्तु सावत्थीए दो जणीओ हियणाउरे दो जणीओ कंपिल्लपुरे दो जणीओ सगेयनयरे दो जणीओ  
पउमे पियरो चिजपा मायराओ सव्वाओइवि पासस्त अंतिए पञ्चतियाओ सकस्त अगमहिसीओ ठिई  
सत्त पालिओवमाइ महाविदेह वासे अंतं काहिति । पावमो वरगो समत्तो ॥ सूत्रम् १६३ ॥ दसमस्त  
उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव अठ अज्ञयणा पं०, तं०-कणहा य कणहराती रामा तह रामरक्षया  
यसू॒ या । वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा चेव ईसाणे ॥ १ ॥ पहुमज्ञयणास्त उक्खेवओ, एवं खलु जंबू !  
तेणं कालेण तेणं समएं समोसरां रायगिहे समोसरां जाव परिसा पञ्जुवासति, तेणं कालेण २ कणहा देवी

इसाणे कण्ठे कण्ठवडेसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणोसि ससज्जहो काला॒ १०४५  
अजशयणा कालीगमणं चेष्टव्या, नवरं पुन्वयवे वाणारसीए नयरे दो जणीओ रामे पिया घम्मा माया सह्याओऽवि  
ज्ञणीओ सावत्रीए नयरीए दो जणीओ कोसंधीए नयरीए दो जणीओ रामहिसीओ छिती  
पासस्स अरहो अंतिए पनवहयाओ एुफचूलाए अज्ञाए सिरिसणीयत्वाए ईसाणस्त अग्नामहिसीओ छिती  
नव पलिओयमाहं महाविदेहे वासे सिजिक्षाहिति बुद्धिहिति सहवदुक्खाणं अंतं काहिति । एवं  
बलुं जंचु । णिकबेवओ दसमवगस्स । दसमो बग्गो समत्तो ॥ सूत्रम् १६४ ॥ एवं बलुं जंचु । समणेणं  
भगवया महाविरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सञ्चसंवुद्देणं पुरिसोत्तमेणं जाव संपत्तेणं० । धम्मकहा सुयकवधो  
समत्तो दसहि वर्गेहि नायाघमकहाओ समत्ताओ ॥ सूत्रम्-१६५ ॥ समाप्तोऽयं द्वितीयः श्रुतस्कन्थः ॥  
नमः श्रीवर्दमानाय, श्रीपार्श्वप्रभवे नमः । नमः श्रीमत्सरस्वत्ये, सहायेभ्यो नमो नमः ॥ ३ ॥ इह हि गमनिकार्थं  
यन्मया व्युहयोक्तं, किमपि समयहीनं तदिश्योऽयं सुधीभिः । नहि मवति विद्या सर्वथाऽस्मिन्नुपेष्या, दधितजिनमवानां  
गणितां चाद्विष्णो ॥ २ ॥ परेषां दुर्लभ्या मवति हि विष्णाः स्फुटमिदं, विशेषाद् शुद्धानामतुलवचत्वानमहसाम् । निराज्ञायाधीभिः  
पुनरतिवरं माहशजनेस्तरः शास्यार्थं मे चचनमनधं दुर्लभमिद ॥ ३ ॥ तरः सिद्धान्ततत्त्वद्वै; स्वयम्भूः प्रयत्नः । न पुनरस्म-  
दावयात, एव ग्राहो नियोगतः ॥ ४ ॥ तथापि माऽस्तु मे पापं, सहमत्युपनीवनात् । वृद्धन्यायातुमारित्वाद्वित्ताय च प्रहृतिः ।  
५ ॥ तथाहि-किमपि चक्षुरीठवमिद स्फुटेऽप्यर्थतः, सकष्टमविदेशतो विविष्या चनातोऽपि यत् । समर्थपदसंशयादिगुण-

२. द्विरेप-  
शु० शु०

वृत्तिकार-  
प्रशस्त्यादि-

VIOY! RBYA  
—

पुरतकेम्भयोऽपि यत्, परात्महितत्वेऽनभिनिवेशिना चेतमा ॥ ६ ॥ यो जैनाभिमंतं प्रमाणमनधं व्युत्पादयमासित्वात्, प्रस्थानैतिविधैनिरस्य निविलं वौद्वादि सम्बन्धित्य तत् । नानावृत्तिकथाकथाप्रथमतिकान्तं चक्रे तपो, निःमम्बन्धविहारम् ॥ ७ ॥ प्रतिहतं गाहानुमाराचया ॥ ८ ॥ तस्याचार्यजिते वरस्य मदवदादिप्रतिस्पद्दिनः, तदन्धोरपि वृद्धिसागर इति ख्यातस्य योर्मुद्दीप्ते चतुर्थनिवदवन्धुरवचःशुद्धादिमछुमणः, श्रीसंविग्रहिदारिणः श्रुतनियेशारित्रचूडामणे: ॥ ९ ॥ शिवेणा समय-देवार्थयम्बृतिणा विष्युतिः कृता । ज्ञाताधर्मकथाक्षम्य, श्रुतप्रकृत्या समामतः ॥ १० ॥ निर्वितककूलनमस्तलचन्द्रदोणार्थयम्बृत-मुख्येन । पण्डितगुणेन गुणवत्तिप्रयेण संशोधिता चेयम् ॥ १० ॥ प्रत्यधरं गणनया, प्रथमानं विनिधित्वम् । अतुदुमा सहस्राणि, श्रीषेवाएष्टतानि च ॥ ११ ॥ एकादशशु चतुर्पथ विश्वत्यधिकेषु विकमसमानाम् । अणहिलपाठकनगरे विजयदग्धमयो च मिदेयम् ॥ १२ ॥ समाप्ता चेयं श्वाताधर्मकथाप्रदेश्यटीकेति ॥

॥ समाप्तमिदं चन्द्रकूलनमस्तलोद्धपतिप्रभश्रीमदभयेदेवद्विवृतविवरणयुतं श्रीज्ञाताधर्मकथाइम् ॥

२. द्वितीय-  
प्रस्थानैर्तिर्थे गते, परात्महितहेतवे इनमिनिवेशिना चेरवा ॥ ६ ॥ यो जेनाभिमतं प्रमाणमनयं व्युत्पादयमासिचान् ,  
प्रस्थानैर्तिर्थे गते, नितिं वौद्वादि सम्बन्धित तत् । नानाष्टुचिकथापथमतिकान्तं चक्रे रपो, निःसम्बन्धविहारम् ॥  
प्रतिहं शाखाउपागातया ॥ ७ ॥ तस्याचार्यजिने ब्रह्म यद्यद्वादिप्रतिस्पद्धिनः, तदन्योरपि शुद्धिसागर इति रूपातस्य  
यर्थं चर्मि । छन्दोचन्मनिवद्वचन्युवचःशब्दादिमलमणः, श्रीसंविषयविहारिणः श्रुतनिषेधारित्रचूडामणः ॥ ८ ॥ शिष्येणा यय-  
द्यात्मप्रश्निणा विवृतिः कृता । ब्रातायर्थक्याकास्य, श्रुतमक्षत्या समाप्तेः ॥ ९ ॥ निर्वृतकक्षुलनमस्तलचन्द्रदोणारूप्यस्थरि-  
मुखेन । पण्डितगुणेन गुणविप्रयेण संशोधिता चेपम् ॥ १० ॥ ग्रत्यक्षरं गणनया, मन्थमनं विनिश्चितम् । अनुगुणो  
महसाणि, श्रीष्णेचाएष्यतानि च ॥ ११ ॥ एकादशयु शतेवय विश्वतप्यधिकेषु विकससमानाम् । अणहिलपाठकनगरे  
विनयदग्नया । च सिद्धेयम् ॥ १२ ॥ समाप्ता लेयं ब्राह्मणमंकथाप्रदेश्यटीकेति ॥

नवादी-  
४० ५०  
धीग्राम-  
र्मिकपादे-

। २६० ।

। २६० ॥ समाप्तमिदं चन्द्रकुलनमस्तलोऽपतिमभश्रीमदभयदेवसूरिविष्वत्विवरणयुतं श्रीज्ञाताथमेकथादम् ॥

